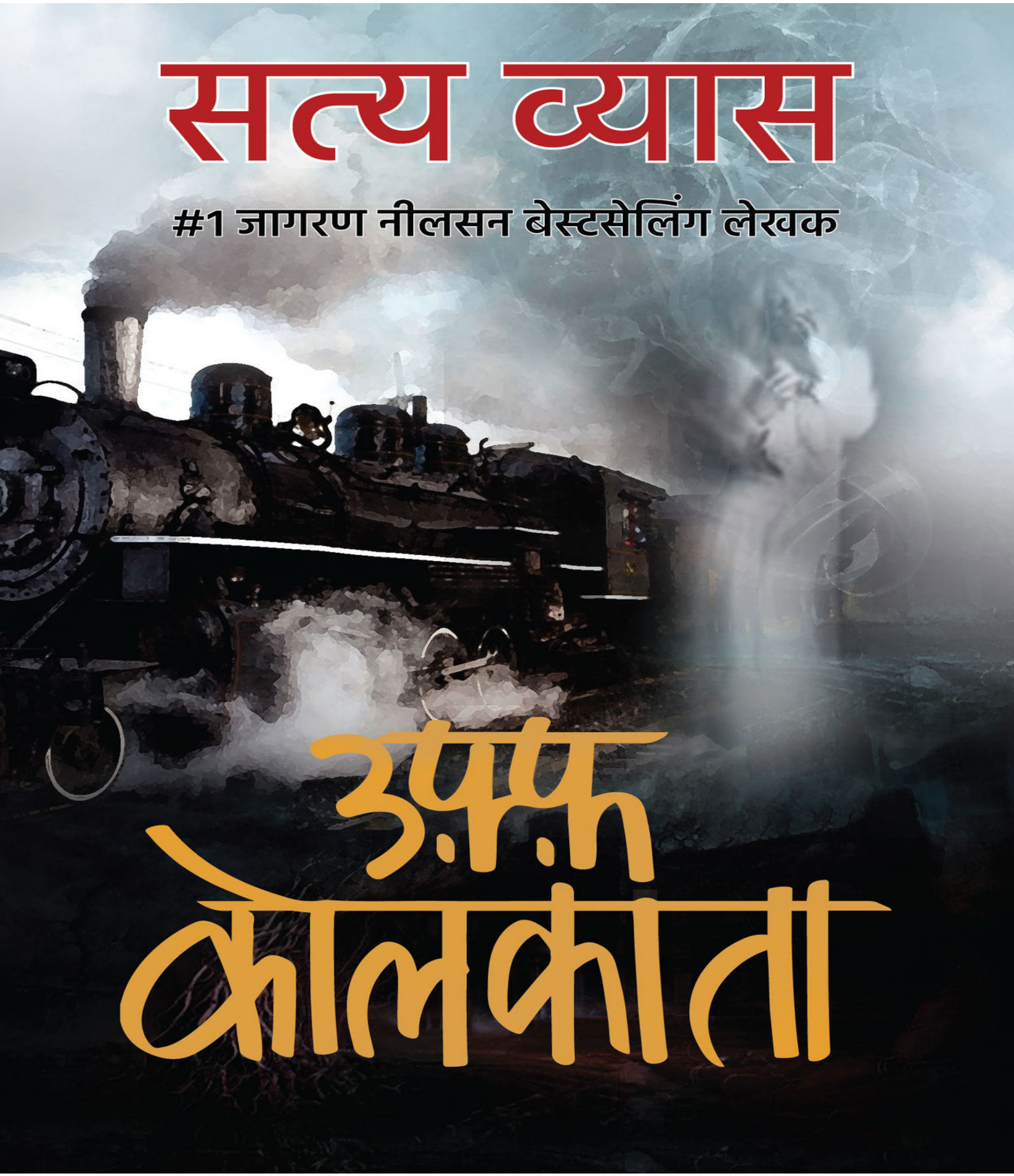

सत्य व्यास
#1 जागरण नीलसन बेस्टसेलिंग लेखक
उफ़्फ़
कोलकाता

# उफ़्फ़ कोलकाता

(उपन्यास)

इस पुस्तक के सभी पात्र और घटनाएँ काल्पनिक हैं। किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति से समानता मात्र संयोग है। वस्तु और स्थान इत्यादि का नाम कहानी को रुचिकर बनाने के लिए किया गया है। पुस्तक का उद्देश्य किसी भी अंधविश्वास को पोषित करना नहीं है। लेखक किसी भी तरह के अंधविश्वास का हामी नहीं है, सिवाय इसके कि वह अपनी किताबों के नाम शहरों के नाम पर रखता है।

प्रस्तुत पुस्तक भी कॉपीराइट @ 2020 के अधीन पंजीकृत है। कॉपीराइट का उद्देश्य लेखकों और कलाकारों द्वारा हमारी संस्कृति को समृद्ध बनाने तथा रचनात्मक कार्यों हेतु प्रोत्साहित करना है। पूर्व अनुमति के बिना इस पुस्तक की स्कैनिंग, अपलोडिंग, गैग्समेकिंग और वितरण लेखक की बौद्धिक संपदा की चोरी है। यदि आप पुस्तक से सामग्री का उपयोग करने की अनुमति चाहते हैं (समीक्षा उद्देश्यों के लिए), तो कृपया अनुमति के लिए info@satyavyas.com पर संपर्क करें। लेखक के अधिकारों के आपके समर्थन के लिए धन्यवाद।

ISBN : 978-81-946538-3-7
प्रकाशकः
हिंद युग्म
सी-31, सेक्टर-20, नोएडा (उ.प्र.)-201301
फ़ोन- +91-120-4374046
कला-निर्देशन ः विजेन्द्र एस विज
पहला संस्करण ः दिसंबर 2020
© सत्य व्यास
Uff Kolkata
A novel by *Satya Vyas*
Published By
Hind Yugm
C-31, Sector-20, Noida (UP)-201301
Phone : +91-120-4374046
Email : sampadak@hindyugm.com
Website : www.hindyugm.com
First Edition : Dec 2020

शिकस्ता मकबरों पे टूटती रातों को इक लड़की
लिए हाथों में बरबत, जोग में कुछ गुनगुनाती है
कहा करते हैं चरवाहे कि जब रुकते हैं गीत उसके
तो एक ताजा कबर से चीख की आवाज आती है

-अज्ञात

*बरबत- एक पुरातन फारसी वाद्ययंत्र

नैना के लिए,
जो हर रात ठीक तीन बजे आकर मेरा लिखा मिटा जाती है।
पाठकों के लिए,
जो हर रात तीन बजे के बाद भी मुझे लिखने का हौसला देते हैं ।

# अध्याय

किस्सा-ए-तोता-मैना
बंद दरवाजा
वो कौन थी
कब्रिस्तान
अमावस की रात
वो आ गई है
डाक बंगला
काला जादू
खौफ की रात
मैं वही हूँ
सामरी
सन्नाटा
दहशत
जब अँधेरा होता है
रात के अँधेरे में
राज
तीस साल बाद
फिर वही रात
वो फिर आएगी

# किस्सा-ए-तोता-मैना

कोलकाता के हावड़ा जिले से हल्दिया की ओर जाते हुए एक औद्योगिक कस्बा कोलाघाट है। सड़क के एक ओर जहाँ अब विकास अपने पाँव पसार रहा है वहीं सड़क के दूसरी ओर जंगल और इनके साथ ही लगती हुई रेल लाइन कोलकाता को आगे की ओर जोड़ती है। दिन में भी वीरान रहने वाले इस इलाके की रात का तो मंजर ही डरावना हो जाता है। इन्हीं जंगलों में एक बरगद की टहनी पर बैठी एक मैना बहुत व्यग्र थी और बार-बार भयातुर होकर अपने पंख फड़फड़ाए जाती थी। वहीं से उड़कर जाते हुए एक तोते ने जब उसे देखा तो वह भी उसी डाल पर आ बैठा। उसके डाल पर आकर बैठते ही मैना अत्यधिक क्रोधित हुई और क्रोधावेश में ही चिल्लाई-

"ओ तोते! तू यहाँ कैसे बैठ गया?" तोते को इस प्रकार के आचरण की आशा नहीं थी। उसने तो सुन रखा था कि मैना बहुत मीठा बोलती है। वह पहले तो सकपकाया; मगर फिर दिल कड़ा करते हुए बोला-

"अरी मैना! नाराज न हो! मैं इधर से गुजर रहा था। देखा कि तू भयभीत है। सोचा कि तू परेशान है। अब क्योंकि मैं भी परेशान हूँ, इसलिए उतर आया कि दोनों साथी एक-दूसरे की परेशानी सुन लेंगे।"

"खबरदार जो मुझे साथी कहा! मैं तुम जैसे मर्दों को अच्छी तरह जानती हूँ। सारे मर्द कुत्ते होते हैं।" मैना गुस्से से बोली।

"मेरी बात सुन! सारे मर्द कुत्ते नहीं होते, कुछ तोते भी होते हैं। अब मुझे ही देख! मेरी क्या गलती थी! मेरी तोती मुझे छोड़कर पड़ोसी के तोते के साथ भाग गई।"

"भाग नहीं गई, उड़ गई। औरतों के लिए इज्जत लाओ अपनी भाषा में पहले। तुम्हारी इसी मर्दवादी सोच से परेशान होकर भागी होगी।"

"नहीं मेरी मैना!" तोते ने इतना ही कहा था कि मैना ने फिर टोक दिया, "खबरदार! जो मुझे 'मेरी' कहा।"

"सॉरी मैना! मगर वह मुझे इसलिए छोड़कर चली गई क्योंकि मैं हरे राम हरे राम बोलता था जो उसे पसंद नहीं था। पड़ोसी का तोता 'भीगे होंठ तेरे' गाता था। बस इसी कारण से फुर्र हो गई।" कहकर तोता उदास हो गया। उसकी बात सुनकर मैना भी एक हिस्सा पिघली मगर फिर शेष निन्यानवे हिस्सा कठोर करती हुई बोली-

"जो भी हो। लेकिन तुम यहाँ नहीं रह सकते। मैं मर्द जात पर भरोसा ही नहीं कर सकती।"

"लेकिन मैना, मर्द जात ने ऐसा क्या किया है जो तू हमसे इतनी नाराज है। और यह भी बता कि तू इतनी डरी हुई क्यों है?"

"डरना तो हम औरतों को मर्द जात की बुरी परछाईं से ही चाहिए। मगर इस वक्त मैं तुझसे ज्यादा एक दूसरी बात से भयभीत हूँ।"

"ओ मैना! शायद तेरा डर भी थोड़ा कम हो जाए। मुझे भी अपने दिल की बात

बता।" कहते हुए तोता जरा करीब आ गया।

"एक किस्सा है जो सुनाऊँगी तो तुझे भी विश्वास हो जाएगा कि मर्द जात बेवफाई का दूसरा नाम है।" मैना ने मुँह दूसरी ओर घुमाते हुए कहा और फिर थोड़ा ठहरकर कहना जारी रखा-

"मैं जो कहानी सुनाने जा रही हूँ, वह ऐसी है जिससे तेरे मन में कई सवाल उठेंगे। लेकिन मुझे बीच में टोकना नहीं। और यदि बीच में तू टें बोल गया तो शुक हत्या का पाप मेरे ऊपर नहीं आएगा, ऐसा वचन दे।"

"वचन देता हूँ!" तोते ने कहा।

"ठीक है। अब मैं कहानी शुरू करती हूँ। वह सामने जो बिल्डिंग देख रहा है न। वह कवि गुरु भारती यूनिवर्सिटी है। वहीं रहता है हमारी कहानी का नालायक..." मैना ने अभी आधा ही कहा था कि तोता बोल उठा, "नालायक!"

"देख! मैंने तुझसे पहले ही कहा था न कि तू बीच में नहीं टपकेगा!" मैना कुपित होकर बोली।

"अच्छा-अच्छा सॉरी।" तोते ने फौरन पंख उठाकर माफी माँगी।

"हाँ तो वहीं रहता है हमारी कहानी का नालायक नायक– सिद्धार्थ!

तोते, आशिकों की कई नस्ल होती है। जैसे प्यासा आशिक, तमाशा आशिक, जरा-सा आशिक, मरा-सा आशिक, भला-सा आशिक, दिलासा आशिक और रूआँसा आशिक। और भी बहुत से होते होंगे मगर यह नालायक अलग ही नस्ल का आशिक है। लड़कियों की ख्वाहिश होती है कि उनका प्रेमी घुटनों पर बैठकर, हाथों में फूल लेकर उन्हें प्रपोज करे। सिद्धार्थ इससे आगे की चीज है। वह मंगलसूत्र लेकर प्रपोज करता है। लड़कियाँ इसका थाह ही नहीं पातीं, तर जाती हैं। इतना भोला, इतना सच्चा! इसी सच्चाई से सिद्धार्थ अपने माँ का कंगन बारह कलाइयों में घुमा चुका है। देह आकर्षक है, रंग साँवला और लंबाई इतनी कि ऊँटनी का मुँह चूम ले। सो जवानी के उन दिनों में जब हर तीसरी लड़की अच्छी लगती है, सिद्धार्थ को हर दूसरी लड़की भा जाती है।

उसका दोस्त चेतन एक शांत, मगर दब्बू लड़का है। जो हमेशा सिद्धार्थ के प्रभाव में ही रहता है। इतना कि सिद्धार्थ के कहने पर ही वह लॉ पढ़ने भी आ गया था, वरना वह हिस्ट्री में ऑनर्स करने के बाद शोध करना चाहता था। बड़ी मुश्किल से रजनी नाम की एक लड़की से दोस्ती हुई है। मगर क्योंकि यह कहानी रजनी की नहीं है इसलिए उसकी ज्यादा चर्चा की जरूरत नहीं है। दोनों ही दोस्तों के पहले साल की पढ़ाई खत्म हो गई है। हॉस्टल बंद होने के कारण दोनों अपने घर हावड़ा गए थे।

परसों से इनके हॉस्टल खुल जाएँगे और ये यहाँ धमक पड़ेंगे। इसलिए कहानी आज से ही सुनानी पड़ेगी। आज ये दोनों अपने शहर में एक शादी की रिसेप्शन में शामिल होने के बाद दुल्हन के कमरे के ठीक बाहर खड़े हैं। दुल्हन जो सिद्धार्थ के मुताबिक उसकी गर्लफ्रेंड थी और अब किसी और से शादी कर रही थी।

किस्सा कोताह यूँ था कि-

दीपक और पूजा का रिसेप्शन था। दीपक ने इंटर के बाद ही होटल मैनेजमेंट का कोर्स कर लिया था और ग्रेजुएट होकर बेकार होते-होते वह किसी होटल में काम पर लग भी गया था। इसलिए थोड़े ही दिनों में मोहल्ले में उसकी धाक जम गई। पूजा, सिद्धार्थ की प्रेमिका थी। ऐसा सिद्धार्थ कहता था। हालाँकि चेतन को भी लगता था कि वह उसकी भी प्रेमिका है और उसे ही क्या, सारे मुहल्ले को यही बदगुमानी थी।

खैर! पूजा को दीपक से सिद्धार्थ ने ही मिलवाया था। तेईस-चौबीस साल की उम्र जो आम लड़कों के लिए बेरोजगारी की होती है ठीक वही उम्र लड़कियों के माँ-बाप के लिए विवाह की चिंता की भी होती है। पूजा यह बात जानती थी। वह जानती थी कि उसके घर वाले उसके लिए लड़का ढूँढ़ने में लगे हैं। पूजा ने घर वालों की यह तकलीफ आसान कर दी। उसे दीपक में भविष्य दिखा। दीपक को पूजा की खूबसूरती। सो सिद्धार्थ टापते रह गए। दीपक और पूजा की शादी हो गई। और आज रिसेप्शन भी संपन्न हो गया था। दुल्हन तमाम गिफ्ट समेत सुहागरात वाले कमरे में पहुँचा दी गई थी। दूल्हे का इंतजार था। दूल्हा अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को विदा करने में मशगूल था। ठीक इसी वक्त चेतन और सिद्धार्थ किसी और घटना को अंजाम देने ठीक दुल्हन के कमरे के बाहर खड़े थे।"

***

# बंद दरवाजा

"गलत हो रहा है भाई!" चेतन ने काँपते हाथों से कोल्ड ड्रिंक की ट्रे पकड़े हुए कहा। दीपक के रिसेप्शन में दोस्त होने के नाते कोल्ड ड्रिंक बाँटने का काम उसे ही मिला था।

"आशिकों के साथ गलत ही होता है भाई। उसकी गलती न दिखी तुझे? मेरी गलती दिख रही है!" सिद्धार्थ ने सजावट के टँगे हुए सैटिन के घुमावदार फीतों में से एक लाल फीता उखाड़ते हुए कहा।

"उसकी क्या गलती है! शादी माँ-बाप फिक्स किए हैं।" चेतन ने बात पर बात कही।

"अच्छा! कह नहीं सकती थी बाप से कि सिद्धार्थ से मुहब्बत करते हैं!"

"मुहब्बत! अबे, बाप से कोई मुहब्बत जैसा वर्ड कैसे बोलेगा!" चेतन ने हँसते हुए कहा। उसके हँसने से कोल्ड ड्रिंक के गिलास हिल गए।

"जैसे हमसे दिन में तीन टाइम तुतला के बोलती थी वैसे, और कैसे?" सिद्धार्थ ने हाथ में ही उँगलियों के बीच फीते को सीधा किया।

"जाने दे। जीने दे दोनों को। वैसे भी दीपक दोस्त ही तो है।" चेतन ने उसे कोल्ड ड्रिंक देकर ठंडा करने की कोशिश की।

"यही तो गलती हो गई। दोस्त समझ के मिला दिए। साला दगा कर दिहिस। ले उड़ा होटल का जमादार।" सिद्धार्थ ने गुस्से में उबाल खाते हुए कहा।

"जमादार नहीं है। एक्जिक्यूटिव है।" चेतन ने दीपक की तरफदारी की।

"जो भी है! होटल जाएँगे तो सलामी देगा न?" सिद्धार्थ बिफरा।

"हाँ!" चेतन ने जवाब दिया।

"तो ठीक है। चल हम भी देकर आते हैं।" सिद्धार्थ ने कहा। चेतन ने सवालिया नजर से उसे देखा। सिद्धार्थ ने फौरन बात बदलकर हँसते हुए कहा- "सलामी बे! सलामी देकर आते हैं।" कहकर वह दुल्हन के कमरे में घुसने लगा।

उसे घुसते देख चेतन ने फिर टोका, "गलत हो रहा है।"

"सुन! कोई पूछे तो ठंडा पिला दियो और कहियो कि हनीमून बेड के डेकोरेशन की लास्ट मिनट तैयारी चल रही है। कारीगर लगे हैं। कोई भीतर न आने पाए।" कहकर वह रुका; फिर उँगलियों पर कुछ जोड़ता हुआ बोला-

"दो प्लस दो और दो। हाँ! ठीक पाँच-छह मिनट बाद वो पीछे वाली खिड़की की तरफ मोटरसाइकिल ले के मिल।"

"अभी न चला जाऊँ!" चेतन वाकई डरा हुआ था।

"भक साले! अच्छा दो मिनट बाद चले जाना। दो मिनट तो दे सकता है!"

चेतन ने हामी भरी। उसके हामी भरते ही सिद्धार्थ ने तेजी से कमरा खोलकर धीमे से भीतर से साँकल लगाई। साँकल लगने से पहले दुल्हन के शरमा के सिमटने से गहनों के खनकने की आवाज बाहर चेतन ने भी सुनी।

सॉकल लगाकर सिद्धार्थ ने जैसे ही कमरे में प्रवेश किया, दस किलो के लहँगे और उतने ही किलो के जेवर से लदी दुल्हन और सिकुड़ गई। सर्दियों की रातों को और मादक कर देने वाली ब्लैक ऑर्किड परफ्यूम की तेज गंध दुल्हन के जिस्म से बिखरती हुई हवाओं में घुल गई थी। सिद्धार्थ जानता था कि यह परफ्यूम ही पूजा की पसंदीदा है। साँस भर हवा भीतर कर सिद्धार्थ धीमे-धीमे चलता हुआ दुल्हन के पीछे गया और उसकी आँखों पर वह सजावट का रेशमी फीता बाँध दिया। दुल्हन भी नयी उम्र की ही थी, उसने भी नये जमाने देखे ही थे। वह फौरन इस खेल का मर्म समझ गई और खुद को निढाल छोड़ दिया। सिद्धार्थ ने सजावट की बिखरी लड़ियाँ दुल्हन के मुँह पर लपेट दी। दुल्हन उन्माद में नीमहोश होने लगी। सिद्धार्थ के पास वक्त वैसे भी कम था। उसने फिर ज्यादा वक्त नहीं लिया। सुहाग सेज की चादर सलवटों से भर गई। फूल जिस काम के लिए थे, काम आ गए।

सिद्धार्थ फिर धीमे से उठा। दुल्हन का माथा चूमा। बिना आवाज किए दरवाजे का साँकल खोलकर वापस आया और फिर पिछली खिड़की से कूद गया।

'अरे बाप रे बाप!' की एक आवाज झाड़ियों से आई। चेतन समझ गया कि सिद्धार्थ नीचे आ चुका है। पहुँचा तो देखा कि सिद्धार्थ के दाहिने पाँव की एड़ी सूज गई है।

"हॉस्पिटल चल! साला लगता है कि पैर गया।" सिद्धार्थ ने दर्द से कराहते हुए भी उठने की कोशिश की।

"गाड़ी पर बैठ पाएगा?" चेतन ने उसे सहारा देते हुए पूछा।

"साले, हम कहाँ-कहाँ बैठ के आ रहे हैं तुम्हें क्या पता? चलो।" सिद्धार्थ किसी तरह गाड़ी पर बैठा।

गाड़ी पर बैठकर भागने या खिड़की से कूदने से पहले सिद्धार्थ यह नहीं देख पाया था कि होंठों के बीच गुलाब का डंठल दबाए कमरे में घुस रहे दूल्हे मियाँ ने खुली खिड़की पर कुछ हलचल महसूस की थी।

बहरहाल, किसी के लिए यह शरारत थी। किसी के लिए मौज, किसी के लिए गलती और किसी के लिए अक्षम्य पाप।

गलतियों की माफी होती है। पाप की सजा। पाप मगर हो चुका था। सजा कोई और तय कर रहा था।

***

# वो कौन थी

कविगुरु भारती यूनिवर्सिटी। कोलकाता के बाहरी आवरण को छूते कोलाघाट में स्थित बारह एकड़ में फैली यूनिवर्सिटी। परंपरागत और व्यावसायिक दोनों तरह के पाठ्यक्रम इस हरे-भरे आवासीय विश्वविद्यालय में पढ़ाए जाते हैं। पहले साल की पढ़ाई खत्म हो चुकी थी। दूसरे साल यानी तीसरे सेमेस्टर के लिए लड़के हॉस्टल लौटना शुरू कर चुके थे। कॉलेज के दिनों में सेमेस्टर ब्रेक के बाद कॉलेज लौटने की व्यग्रता पहली डेट पर जाने की व्यग्रता से भी ज्यादा होती है। लड़कों को हॉस्टल की स्वच्छंदता का स्वाद लग गया होता है और अब घर की बंदिशें काटने को दौड़ती हैं। सिद्धार्थ और चेतन को भी घर की बंदिशों से आजाद होकर फिर हॉस्टल लौटने की जल्दी थी; इसीलिए उन दोनों ने रात वाली ट्रेन ही ले ली थी जो उन्हें भोर के मुँह अँधेरे ही कोलाघाट पहुँचा देती।

एसी तीसरे दर्जे की बोगी में सबसे अभागी सीट होती है सीट नंबर सात जो सिद्धार्थ की सीट थी और चेतन को पंद्रह नंबर सीट मिली थी। सिद्धार्थ अपनी तैयारी के साथ था और चेतन बस सिद्धार्थ के भरोसे। दोनों घर से खाना खाकर ही चले थे। और अब रात के ग्यारह बजे भी दोनों की आँखों से नींद गायब ही थी जबकि बाकी सारे लोग चादर ओढ़े कब्र के मुर्दे की तरह लेटे हुए थे।

"बहुत बोर ट्रेन है यार!" सिद्धार्थ ने बोतल से पानी पीते हुए कहा।

"हाँ! नेट भी काम नहीं कर रहा। ला पानी दे।" चेतन ने कहा।

"अबे, अपनी फैकल्टी वाली संजना भी तो इसी ट्रेन से आने वाली थी ना?" पूछते हुए सिद्धार्थ की आँखें चमकीं।

"हाँ! बी-3, सीट नंबर 48, साइड अपर बर्थ। ला पानी पिला।" चेतन ने बोतल की ओर हाथ बढ़ाया। सिद्धार्थ ने पानी की बोतल पीछे कर ली और औचके से बोला-

"भाई, तो पहले क्यों नहीं बताया! तेरे साथ वक्त बर्बाद कर रहा हूँ।" कहते हुए सिद्धार्थ कोच नंबर बी-3 की ओर बढ़ने को हुआ।

"मत जा कोई फायदा नहीं!" चेतन ने बुझे लहजे में कहा।

"क्यों! क्यों फायदा नहीं?"

"क्योंकि बी-3, सीट नंबर 47, साइड लोवर पर उसका बाप है और बाप को इनसोमनिया* है। पानी दे यार!" अंतिम बात बोलते-बोलते चेतन खीझ-सा गया था।

"अरे यार! ये कोई उम्र है बाप के साथ घूमने की!" सिद्धार्थ का मन खिन्न हो गया।

"शरीफ लड़की है!" कहते हुए चेतन ने सिद्धार्थ के हाथों से पानी की बोतल छीन ली।

"हाँ! देखी है शराफत। दो पैग में 'योर प्लेस ऑर माइन' पूछने लगती है।" सिद्धार्थ के कहते-कहते चेतन ने पानी की बोतल में मुँह लगा दिया और दो घूँट के साथ ही तीसरी घूँट फचाक की आवाज के साथ सिद्धार्थ की टीशर्ट पर ही उगल दिया। और फिर बुरा-सा मुँह बनाते हुए बोला-

"भेंचो, ये करेले का जूस क्यों पी रहा है?"
"करेले का जूस नहीं है!" सिद्धार्थ ने टीशर्ट साफ करते हुए कहा।
"तो!" चेतन के चेहरे से कड़वाहट के भाव अभी गए नहीं थे।
"दारू है।" सिद्धार्थ ने बोतल लेते हुए इत्मीनान से कहा।
"दारू! ये दारू है! तू ट्रेन में दारू पी रहा है!" चौंकने के कारण चेतन की आवाज ऊँची हो गई।
"हाँ! तो अब तू थाली बजा-बजाकर पूरी बोगी को बताएगा क्या?"
"तुझे पुलिस का भी डर नहीं!" चेतन ने हथेलियों की उँगलियाँ सवालिया लहजे में घुमाते हुए पूछा।
"उन्हीं से तो मँगवाई है!" सिद्धार्थ ने हँसते हुए ही कहा।
"और तूने मुझे भी दारू पिला दी?" चेतन की सूरत रोनी-सी हो गई।
"फालतू बात मत कर! मैंने नहीं पिलाई, तूने खुद लूट के ली है।"
"पापा ने अपने सिर पर हाथ रखकर कसम दी थी कि शराब कभी मत पीना। अब उनसे क्या कहूँगा!" चेतन ने ट्रेन में वाश बेसिन के ठीक उल्टी वाली दीवार पर पीठ टिकाते हुए उदासी से कहा।
"कह देना कि रैगिंग में जान बचाने के लिए एक दफे पीनी पड़ी है बस।" सिद्धार्थ ने घूँट लगाते हुए कहा। उसकी यह बात सुनकर चेतन का चेहरा चमक गया।
"हाँ ये ठीक कही तूने। जीनियस आदमी तो है ही तू। ला फिर और दे दे। प्यास से मरने से तो अच्छा है कि पी के मर जाएँ।" कहते हुए चेतन ने और पाँच-छह घूँट लगा ली। पाँच-छह घूँट के बाद चेतन बात करने की स्थिति में भी नहीं रहा। वह तो यूँ भी पापा की कसम टूट जाने का सोचकर दुखी था। इसलिए थोड़ी ही देर में वह थके कदमों से चलकर बिना कोई हंगामा किए चुपचाप अपनी सीट पर जाकर सो गया।
नींद बहरहाल सिद्धार्थ की आँखों से कोसों दूर थी। उसकी सात नंबर की सीट के कारण उसे यह भी मालूम था कि देर रात तक आते-जाते लोग दरवाजा खोल-खोलकर उसे सोने नहीं देंगे। इसलिए वह सोने जाने के बजाय ट्रेन के दरवाजे पर ही खड़ा रहा।
थोड़ी ही देर में सिद्धार्थ को हल्का नशा-सा हुआ और उसे ताजी हवा की जरूरत हुई। वह आगे बढ़ा और ट्रेन के दरवाजे का हैंडल घुमा दिया। दरवाजा एक-दो झटके के बाद खुल गया। बाहर से एक धूल भरी सर्द हवा भीतर प्रवेश कर गई। एक तेज सिहरन भर देने वाली बर्फीली हवा। सिद्धार्थ के नशे को हवा लगी। उसे अच्छा भी लगा और अजीब भी। गर्मी इतनी ज्यादा होने के कारण ही उसने एसी में टिकट कराया था क्योंकि बाहर गर्मी नाकाबिल-ए-बर्दाश्त थी। फिर ऐसे मौसम में ऐसी बर्फीली सर्द हवा कहाँ से आई?
खैर, जहाँ से भी आई हो उसे अच्छी लगी। उसने बाहर झाँककर देखा। ट्रेन के पहिये धूल उड़ाते हुए भागे जा रहे थे। पहियों से उड़ती धूल ने बाहर की फिजा मटमैली कर दी थी। रात काला लबादा ओढ़े चारों ओर फैल ही चुकी थी। हजारों

सितारे वहशी लकड़बग्घों की चमकती आँखों की तरह ताक रहे थे जिस कारण ऐसा लगता था कि आसपास उदासियों का बसेरा है। इतनी उदासी जैसे नौहे पढ़े जा रहे हों। पेड़-पौधों की ऐसी झूम जैसे वह भी किसी बात का मातम मना रहे हों।

और इसी भूरे उदास धूल के गुबार के बीच कुछ खौफनाक हुआ। नसों को जमा देने वाला!

पानी की बोतल में भरी शराब खत्म हो चुकी थी। धूल भरी आँधी से बंद हो गए दरवाजे को दुबारा खोलकर सिद्धार्थ को अपनी खाली बोतल बाहर फेंकनी थी। दरवाजा खोलकर सिद्धार्थ अभी प्लास्टिक की बोतल दरवाजे से बाहर फेंकने को दरवाजे पर झुका ही था कि धूल भरी खामोशी के बीच ही एक सफेद सायानुमा औरत लहराते हुए ट्रेन के दरवाजे पर खड़े सिद्धार्थ के चेहरे के ठीक पास चीखी। हौलनाक तरीके से चीखी।

धड़कनों को रोक देने वाली यह एक लंबी, शदीद चीख थी, इतनी तेज, इतनी तड़पती हुई कि ट्रेन के गिर्द गूँजती चली गई। एसी कंपार्टमेंट के दरवाजे अगर बंद न होते तो भीतर सोए लोग भी यह सुन पाते। चीख जैसे कि कोई असंतुष्ट आत्मा दरिंदों से बचकर भाग रही हो! चीख जैसे कोई जान की अमान के लिए पुकार लगा रहा हो, बिलकुल वैसे ही डरी हुई, उतनी ही घुटी हुई चीख।

पलछिन से भी कम समय में सफेद पैरहन में लिपटी वह औरत चीखी और ट्रेन की रफ्तार से हारती हुई, पीछे जाती हुई धुआँ हुई, अदृश्य हुई या मर गई, यह सिद्धार्थ नहीं देख पाया। वह तो वहशत के मारे ट्रेन की फर्श पर ही पीछे की ओर गिर गया था।

सिद्धार्थ को बस यह ध्यान रहा कि अभी-अभी उसने एक चीख सुनी है। एक औरतनुमा साये की चीख। उसे जो याद आया वह यह था कि उसे दरवाजे के खुलते ही एक सफेद साया अजीब-सी चीख के साथ दरवाजे पर दिखा और फिर ट्रेन की गति के कारण पीछे की ओर गायब हो गया। उसके बाद की बात याद करने के लिए सिद्धार्थ के पास कुछ नहीं था। डर और हदस के मारे सिद्धार्थ लगभग दो मिनट तक यूँ ही पड़ा रहा। फिर उसे इस बात का एहसास हुआ कि वह वाश बेसिन के सामने गिरा पड़ा है और अगर कोई बाथरूम के लिए आ गया तो उसे बेवड़ा ही समझ लेगा। यही सोचकर वह अपने बेजान और काँप रहे घुटनों पर हाथ रखते हुए उठा। जब उसने अपने होश पर काबू पाया तो उसे एहसास हुआ कि ज्यादा नशा हो जाने और अचानक हवा लगने से उसके नशे में और इजाफा हुआ है और उसी नशे की वजह से उसे ऐसी बातों का भ्रम हुआ। उसे खुद पर ही हँसी आई। फिर भी उसकी धड़कन इतनी बढ़ गई थी कि उसने अपने सीट पर आकर आराम करने में ही अपनी भलाई समझी।

नींद सिद्धार्थ की आँखों से कोसों दूर थी। उसका दिमाग उसके शरीर को यह विश्वास दिला चुका था कि ट्रेन के लगातार हिलते रहने के कारण उसे नशा लग गया है। मगर उसके दिल से वह साया नहीं जा रहा था। कारण यह भी था कि वह उसके

इतने पास से गुजरा था कि सिद्धार्थ ने उसे साफ-साफ महसूस किया था। उसके बेतरतीब कपड़े, उसकी पुर-खतर आँखें, सब सिद्धार्थ के आगे से गुजरे थे। और तो और उसके उड़ते हुए बाल तो सिद्धार्थ की नाक को छूते हुए गए थे। ऐसी चीख का भ्रम कैसे हो सकता है जो बिलकुल कानों से गुजरी हो? उसका दिमाग खुद से ही सवाल-जवाब करता जा रहा था। फिर अचानक उसे लगा कि वह जितना सोचेगा उतना ही उलझता जाएगा; इसलिए बेहतर यही है कि सोने की कोशिश की जाए। जब उसे लगा कि उसी के खयाल उसे उलझाकर रख देंगे तो उसने करवट बदल ली। थोड़ी ही देर में ट्रेन के हिचकोले में अबकी उसकी आँख लग गई।

नींद और नशे के बीच सिद्धार्थ को यह पता भी नहीं चला कि गाड़ी थोड़ी ही दूर आगे चलकर एक बियाबान और वीरान स्टेशन पर रुक गई। और जो दरवाजा सिद्धार्थ नशे के खुमार में खुला छोड़ आया है उसी दरवाजे से एक सफेद पैरहन में ढकी काया दबे पाँव बोगी में घुस आई। एसी बोगी का वह तीसरा दर्जा लोगों के सफेद चादर ओढ़कर सोए रहने से किसी मुर्दा घर का आभास दे रहा था। डिब्बे में अब भी अँधेरा ही था और इधर-उधर से छनकर आती हुई रौशनी की किरचें भी साये की परछाइयाँ ही बना रही थीं। पाँव दबाकर घुस आए उस साये के आने की आहट ट्रेन की फर्श तक को न हुई। आमतौर पर बाहर से आए लोगों को अँधेरे में देखने में परेशानी होती है। मगर उसे ऐसी किसी रौशनी की जरूरत महसूस नहीं हुई। उसने अपनी अंबरीन आँखों से ही पहली बोगी की सारी सीट देखी। और फिर उसकी आँखें आकर सातवीं सीट पर ठहर गईं। सातवीं सीट! यानी सिद्धार्थ की सीट। सातवीं सीट पर उसे सिद्धार्थ के पाँव के पास थोड़ी-सी जगह दिखी। उसका काम हो गया था।

लगभग आधे घंटे बाद सिद्धार्थ ने जब करवट ली तो उसका पाँव फैला। उसे आभास हुआ कि उसका पाँव किसी दूसरे के पाँव से टकराया है और किसी ने अपने पाँव जल्दबाजी में समेट लिए हैं। उसे यह भी आभास हुआ कि सीट पर सिर्फ उसका ही वजन नहीं है। उसे लगा कि उसे सोया जानकर कोई बैठ गया है। अनमने ही सिद्धार्थ ने डाँटने को कंबल से चेहरा निकाला तो अपनी पाँव की ओर देखकर उसका हलक सूख गया। उसने देखा कि उसकी सीट की दूसरी तरफ एक लड़की अपने घुटनों के बीच सिर दिए बैठी हुई है और उसके बिखरे हुए बाल लड़की के घुटनों के दोनों ओर लहरा रहे हैं। वह हड़बड़ाकर उठ बैठा और सीट की दूसरी ओर सिकुड़ गया। दरअसल वह चिल्ला भी देता, अगर उसके हलक में जान होती। मगर वह तो पहले ही सूख चुकी थी।

उसके ऐसे हड़बड़ाकर उठने से लड़की के शरीर में भी हलचल हुई। मगर वह अब भी कुछ नहीं बोली। यूँ ही बैठी रही। बस हल्की-सी जुंबिश के बाद अपना चेहरा उठा दिया।

कंपार्टमेंट के उस अँधेरे में भी उसके चेहरे को देखकर सिद्धार्थ ठगा-सा रह गया। लड़की की अंबरीन आँखों पर सिद्धार्थ ने सबसे पहले गौर किया। उसके खुलते-बंद

होते होंठ कुछ कहते-कहते बंद होकर रह गए। अचानक ही ट्रेन किसी रौशन जगह से होकर गुजरी और भागती स्ट्रीट लाइट की मेहरबानी से खिड़की के शीशे से छनकर आती रौशनी में सिद्धार्थ ने उसे देखा। पहली दफा देखा। लड़की हर जाविए से खूबसूरत थी।

सो अब तक जो लड़की सिद्धार्थ को भूत-पिशाच का फरेब दे रही थी अब अचानक ही परी चेहरा लगने लगी। सिद्धार्थ ने बात बढ़ाने की गरज से कहा-

"लिसेन! ये मेरी सीट है।"

"जानती हूँ!" रूहानी मगर सर्द-सी आवाज आई। सिद्धार्थ की इच्छा हुई कि लड़की बोलती रहे। मगर लड़की को जितना कहना था, उसने कह दिया था। हाँ, उसकी थकी-थकी-सी आँखें अब सिद्धार्थ पर से हटकर खिड़की के बाहर देखने लगी थी। दो पल की खामोशी रही। लड़की के जवाब ने आगे बात बढ़ाने की संभावना ही बंद कर दी थी। और इसी बात से सिद्धार्थ खीझ भी उठा था। उसने फिर भी उसी स्वर में कहा-

"जानती हो तो फिर बैठी क्यों हो? अपनी सीट देखो! या फिर विदाउट टिकट हो?"

"यही मेरी सीट है।" लड़की ने बाहर देखते हुए ही अनमने से जवाब दिया।

"अच्छा! देन लेट द टी.टी.ई. डिसाइड!" कहकर सिद्धार्थ कंबल से बाहर निकलने लगा।

"उसने ही बैठाया है!" लड़की ने सिद्धार्थ के चेहरे को एक ठहरी हुई निगाह डालते हुए देखा। उसकी निगाह में सादापन था और वह निगाह इतनी देर तक सिद्धार्थ के चेहरे पर जमी रही कि सिद्धार्थ कुछ तय ही नहीं कर सका। जब लड़की की नजरें हटकर वापिस खिड़की के बाहर झाँकने लगीं तब वह अपना गुस्सा किसी अनदेखे पर निकालते हुए भुनभुनाया-

"दिस होल ब्लडी सिस्टम इज करप्ट। ठीक है! लेट मी कॉल आरपीएफ देन।" कहते हुए सिद्धार्थ कंबल से बाहर निकल आया।

"सुनो!" लड़की की रूहानी आवाज थोड़ी तेज हुई।

"कहो!" सिद्धार्थ तो यही चाहता था कि लड़की किसी बहाने से ही बात करे।

"दो-तीन घंटे का सफर रह गया है। क्यों बिला वजह..." लड़की ने जो आधी बात कही, सिद्धार्थ उसे पूरी तरह समझ गया और बोला-

"हाँ तो ऐसे कहो ना!" कहते हुए सिद्धार्थ फौरन कंबल में घुस आया। उसे अब बचे हुए दो-तीन घंटे खुशगवार गुजरने की उम्मीद बँध गई थी। लड़की उसकी इस बात से मुस्कुराकर रह गई थी।

"ठंड बहुत है! लगता है अटेंडेंट ने टेम्परेचर काफी कम कर दिया है।" सिद्धार्थ ने फिर बातों का सिरा खोलना चाहा।

"हम्म!" लड़की ने मामला मुख्तसर कर दिया।

"आप कंबल में पाँव डाल सकती हैं।" सिद्धार्थ ने फिर बात का सिरा खोला।

"मुझे ठंड नहीं लगती।" लड़की ने अजीब-सा जवाब दिया और पाँव ऊपर कर बैठ

गई।

"आप क्या करती हैं?" सिद्धार्थ ने अब बात का सिरा बदला। उसे इस बात का जवाब मिलने की उम्मीद थी।

"पढ़ती हूँ!" लड़की ने खिड़की के बाहर फिर से नजर जमाते हुए कहा।

"कहाँ?"

"जहाँ यह ट्रेन जा रही है।"

"मतलब कोलाघाट!"

"हाँ!"

"कविगुरु में?" सिद्धार्थ के सवाल खत्म होने का नाम नहीं ले रहे थे। लड़की ने एक ऊबी हुई मुस्कुराहट के साथ कहा- "आप रातभर यूँ ही बोलते रहेंगे क्या!"

लड़की की यह बात सुनकर सिद्धार्थ थोड़ा झेंप गया और वही झेंप मिटाते हुए उसने जवाब दिया-

"सॉरी! इफ यू वांट टू स्लीप, प्लीज स्लीप। मुझे लगा कि दो-एक घंटे की बात है, बातें करते निकल जाएगा वक्त।"

"मैं रातभर की जागी हूँ!" कहते हुए लड़की ने आँखें बंद कर ली। सिद्धार्थ ने भी अपने पाँव समेट लिए। लड़की थोड़ा और निढाल हुई और सीट की टेक लगाकर ही अधलेटी-सी हो गई। सिद्धार्थ एकटक लड़की के नोक-पलक निहारता रहा। उसकी खूबसूरती की खुमारी या शराब के नशे में दुबारा कब उसकी आँख लगी उसे पता ही नहीं चला। उसकी आवाज सीधे चेतन की कर्कश आवाज से खुली।

"चल बे! उठ। ससुराल आ गया।" चेतन ने सिद्धार्थ को झकझोरते हुए कहा। सिद्धार्थ की आँख खुली और उसने चेतन को हटाकर हतप्रभ होते हुए कहा- "वो कहाँ गई!"

"कौन कहाँ गई?" चेतन ने साइड लोवर की सीट से सिद्धार्थ का भी बैग निकालते हुए पूछा।

"वो लड़की, जो यहाँ..." सिद्धार्थ ने आधा ही कहा कि चेतन ने टोक दिया- "साले, तुझे रेलवे की सीट भी हनिमून-बेड ही दिखती है! रुद्र प्लेटफॉर्म पर ढूँढ़ रहा होगा। मैं उतर रहा हूँ। जल्दी आ जइयो।"

सिद्धार्थ ने चेतन की इस बात का जवाब नहीं दिया। वह अजीब पसोपेश में था। और इसी स्थिति में पड़े हुए ही वह रात की बात याद करने लगा। शराब, दरवाजा, काया, चीख और फिर वो लड़की। उसने अपना माथा पकड़ लिया जो अब भारी था। फिर भी उसे सारी बातें ठीक-ठीक याद थीं। इसका अर्थ था कि वह सपना नहीं देख रहा था। लड़की को उसने सीट दी थी। शिष्टाचारवश भी वह उसे जगा सकती थी। शुक्रिया कह सकती थी। मगर ऐसा कुछ नहीं हुआ। मायूस-सा वह उठा और अपना बैग कंधे पर लादकर ट्रेन से नीचे उतर गया।

प्लेटफॉर्म पर उतरकर चेतन और सिद्धार्थ ने देखा कि रुद्र पिछले कोच में उन्हें ढूँढ़ रहा है, चेतन ने रुद्र को आवाज दी और दोनों रुद्र की ओर ही बढ़ गए। दो महीने की

छुट्टी के बाद मिले दोस्त बरसों से बिछड़े आशिकों की तरह गले मिले और गले मिलने के इसी क्रम में सिद्धार्थ ने कुछ ऐसा देखा कि उसकी आँखें फैलती चली गईं।

सिद्धार्थ ने देखा वह लड़की अब ट्रेन से उतर रही है। सिद्धार्थ को अपनी हड़बड़ी पर हँसी आई। उसे दुख भी हुआ कि उसने यह क्यों नहीं सोचा कि लड़की शायद वाशरूम भी जा सकती है। इतना सब देखते-समझते ही उसने अपने दिमाग में ही कुछ पकाया और रुद्र से अलग होते हुए कहा-

"बेटा चेतन, तुम रुद्र की मोटरसाइकिल से निकलो।"

"और आप पापा जी?" चेतन ने माकूल सवाल किया।

"हम ऑटो से आ रहे हैं। सामान लेकर। इतना सामान लेकर मोटरसाइकिल से जा नहीं पाएँगे।" कहते हुए सिद्धार्थ ने अपने दोनों बैग लिए और आगे की ओर बढ़ गया। लड़की ट्रेन से उतरकर ऑटो स्टैंड पर ऑटो का वेट कर ही रही थी कि सिद्धार्थ पीछे पहुँच गया।

"दे दो!" सिद्धार्थ ने पहुँचकर पीछे से ही कहा।

"क्या?" लड़की पीछे घूमी और सिद्धार्थ को देखते हुए अचरज से पूछा।

"तुमने थैंक यू तक नहीं कहा तो मैंने सोचा कि सीट के पैसे ही माँग लूँ। लाओ दो!" सिद्धार्थ ने इस भाव से कहा कि लड़की मुस्कुरा पड़ी। मगर बोली कुछ नहीं। ऑटो का इंतजार करती रही। सिद्धार्थ ने देखा कि बातचीत के सभी रास्ते बंद हो रहे हैं तो उसने फिर एक मौका लेते हुए कहा-

"अच्छा सुनो! यहाँ अभी शेयर्ड ऑटो मिलेगी नहीं। मेरे पास सामान ज्यादा है तो मैं ऑटो रिजर्व ही करूँगा। तुम्हें कहाँ जाना है?"

"तुम्हारे रास्ते में ही।" लड़की ने धीमी आवाज में ही कहा।

"तो फिर चलो। आई मीन, अगर तुम ठीक समझो तो चलो! वैसे तुम ठीक समझ सकती हो। मैं अच्छा लड़का हूँ।"

"जानती हूँ।" लड़की ने फिर रहस्यमयी बात की। सिद्धार्थ को बहरहाल उसके रहस्य से कोई मतलब नहीं था। वह उसके साथ थोड़ा और वक्त बिताना चाहता था और अबकी दफा जागे हुए बिताना चाहता था।

सिद्धार्थ ने हाथ देकर ऑटो बुला लिया। उसने अपना सामान ऑटो की पीछे वाली जगह में ठूस दिया और फिर दोनों ही ऑटो की पिछली सीट पर बैठ गए। ऑटो के चलते ही सिद्धार्थ को उससे बातचीत की उम्मीद थी। मगर वह कुछ नहीं बोली। इसका अर्थ यह नहीं था कि वह सिद्धार्थ की उपेक्षा कर रही थी। बाहर देखते हुए जब वह अपनी नजर भीतर की ओर करती और उसकी आँखें सिद्धार्थ से मिल जातीं तो वह मुस्कुरा भर देती। बस इतना ही। बोलती कुछ नहीं। सिद्धार्थ अपनी तरफ से कोशिश कर हार चुका था। इसलिए उसने अबकी जल्दबाजी नहीं दिखाई। एक बोझिल खामोशी के बीच ही दोनों वक्त गुजारते रहे। ऑटो थोड़ी देर तक इसी खामोशी के साथ चलती रही। सिद्धार्थ लड़की के हाथ, उसके बाल, झुमके देखता रहा और लड़की बाहर के लैंपपोस्ट गिनती रही।

"बस यहीं रोक दीजिए!" थोड़ी देर बाद लड़की ने अचानक ही कहा। उसके कहते ही ऑटो वाले ने गाड़ी किनारे लगाकर रोक दी।

लड़की अपनी ओर से धीमे से ही ऑटो से उतर गई। यूँ सिद्धार्थ चाहता भी था और शिष्टाचारवश भी उसका उतरकर लड़की को 'गुड बाय' कहना बनता था। सो वह भी ऑटो से नीचे उतर आया। और नीचे उतरते ही जगह और माहौल देखकर उसके रगों में हजारों चीटियाँ-सी रेंग गईं। ऑटो मेचेदा चौक के ठीक बाहर वाले क्रिस्तानी कब्रिस्तान के बाहर रुकी थी।

"तुम यहाँ रहती हो!" सिद्धार्थ ने असमंजस में ही पूछा।

"हाँ!" लड़की ने फिर सादा जवाब दिया।

"मजाक मत करो!" सिद्धार्थ ने हल्की हँसी के साथ कहा।

"मैं कभी मजाक नहीं करती।" लड़की ने बात तो हँसकर कही; मगर बात खत्म करते-करते उसके जबड़े तन गए। उसने सिद्धार्थ से नजर हटाते हुए ड्राइवर पर नजर गड़ाई और अपनी मुट्ठी में दबे नोट ऑटो वाले की ओर बढ़ा दिए। ऑटोवाले ने नोट का हाल देखा और उसे बिना छूए हुए ही बोला-

"मैडम, ये बाबा आदम के जमाने का नोट कोई नहीं लेगा।" सिद्धार्थ ने देखा कि नोट सचमुच पुराना था और लड़की के हाथ में पड़े-पड़े और भी बदतर हो चुका था।

ऑटोवाले के इतना कहते ही सिद्धार्थ ने लड़की से कहा, "रहने दो! यूँ भी ऑटो मैंने रिजर्व की थी। मैं दे दूँगा।"

"तुम्हारा उधार रहा!" लड़की ने फिर रहस्यमयी ढंग से जवाब दिया और मुड़कर अपने रास्ते चल दी।

"सुनो!" सिद्धार्थ ने जाती हुई लड़की को टोका। वह रुकी, उसने अपनी गर्दन घुमाई और सिद्धार्थ के सवाल का इंतजार करने लगी।

"ये उधार चुकता करना हो तो कहाँ मिलोगी?" सिद्धार्थ ने ऑटो में घुसते हुए पूछा।

"यहीं कहीं ढूँढ़ लेना।" लड़की ने कहा और फिर उसी रहस्यमयी मुस्कुराहट के साथ आगे बढ़ गई। सिद्धार्थ चलती ऑटो में से भी सिर निकालकर उसे तब तक देखता रहा जब तक वह श्मशान के सामने वाले रास्ते पर ओझल न हो गई।

भोर होने में अब भी घंटे भर की देरी थी।

***

# कॉब्रेस्तान

रुद्र शर्मा! तिगड़ी के तीसरे दोस्त। दर पढ़ाकू। पढ़ने का बहाना चाहिए होता है। कुछ भी पढ़ जाते हैं। हाथ में रखते हैं पेन स्कैनर और किसी भी लाइब्रेरी में बैठकर पूरी किताब स्कैन कर जाते हैं। घर आकर उसे पढ़ते हैं। दिमाग में जितनी शिराएँ हैं उतनी किताबें भरी हैं। कॉलेज के पहले साल ही हादसे के शिकार हो गए। हादसा जज्बाती था। सो अब हादसों से बचकर चलते हैं।

दरअसल, हुआ ये कि दो मसले एक साथ पेश आए। एक बड़ा और एक छोटा। बड़ा यह कि असगर अली को हॉस्टल का वार्डेन बना दिया गया और छोटा यह कि रुद्र को उर्दू सीखने का मियादी बुखार चढ़ आया। उसका कारण था और कारण भी मुनासिब ही था। बकौल रुद्र जहाँ उन्हें वकालत करनी है वहाँ की बड़ी आबादी मुसलमानों की थी। इसलिए जब वकालत को करियर बनाने की बात उन्होंने सोची थी तो यह मुनासिब फैसला लिया कि उर्दू सीख ली जाए और उर्दू सीखने के लिए यूनिवर्सिटी के उर्दू सर्टिफिकेट कोर्स में दाखिला ले लिया।

यह वजह रुद्र शर्मा बताते हैं जो कि झूठी है। सच्ची वजह है– हादसाती इश्क। जी, इश्क! हुआ यह कि एडमिशन के वक्त फीस भरने के लिए रुद्र शर्मा लाइन में लगे हुए थे। उनसे ठीक आगे जो लड़की लाइन में लगी थी उसके इत्र की खुशबू रुद्र को बेचैन कर रही थी। वैसे भी सरकारी स्कूल में पढ़े और अब तक केवल पढ़ते ही आए रुद्र की किसी भी लड़की से इतनी नजदीकी पहली बार ही हुई थी। वह उसके गेसुओं की हवा से लरजा हो ही रहे थे कि एक पुरकशिश आवाज ने उन्हें चौंका दिया-

"सुनें!" लड़की ने पीछे मुड़कर कहा था।

"आँय!" रुद्र शर्मा पहली बार में ही गड़बड़ा गए। लड़की ने बहरहाल हँसी अपने होंठों के पीछे बंद करते हुए अपनी बात कही- "आपके पास कलम होगी क्या! नामुराद मेरी कलम की रौशनाई ने धोखा दे दिया।"

'नामुराद! कलम! रौशनाई!'

यह कौन-सी भाषा है! ऐसी जुबान तो उसके कस्बे, उसके शहर के मुसलमान भी नहीं बोलते। दुआ, सलाम और अल्लाह के अलावा, उनमें और खुद में उसने कभी कोई अंतर महसूस ही नहीं किया।

बहरहाल, यह भाषा जो भी है, इस लड़की की जुबान से निकलकर कैसी शहद जैसी लग रही है! लड़की ने जो फिल्म चलाई, उसका केवल फर्स्ट हाफ ही रुद्र के काम का था। सो उन्होंने कलम फौरन निकाली और लड़की की ओर बढ़ा दिया।

लड़की मुड़ी। कुछ दस्तखत सरीखा किया। और इससे पहले कि कलम वापस कर पाती, पीछे से चिल्लाती इंतजारियों की भीड़ ने उसे धक्का-मुक्की के बीच ही बाहर निकल जाने पर मजबूर कर दिया। पीछे से लड़कों ने जब रुद्र को कोंचा तो उन्होंने गालियों में ही उनसे नजदीकी रिश्तेदारियाँ निकालीं और उसी लड़की के तसव्वुर में

खोए काउंटर से बाहर निकल आए।

बाहर निकलते ही उन्होंने एक ही दिन में दूसरा चमत्कार देखा। उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने एक साइकिल स्टैंड की छाँव में लड़की को इंतजार करता पाया। लड़की ही धीमे-धीमे चलकर रुद्र के पास आई और कलम वापस करते हुए बोली-

"मशकूर हूँ आपकी। रश्क-ओ-रकाबत में मुब्तिला इस दुनिया में आप जैसे अच्छे लोग भी हैं।"

"आँय!" रुद्र शर्मा एक ही दिन में दूसरी बार गड़बड़ाए और अचरज का सबसे बड़ा सवाल सबसे छोटे लफ्जों में किया। लड़की उनकी परेशानी समझ गई और मुस्कुराते हुए बोली- "धन्यवाद आपका। ईर्ष्या से भरी इस दुनिया में आप जैसे अच्छे लोग भी हैं।"

रुद्र को यह पूरी बात किसी अस्पष्ट अनुच्छेद की तरह लगी। किसी तरह वह इस अनुच्छेद में छेद कर पाए और बस 'अच्छे लोग' ही समझ पाए। वह थोड़े शरमाए और फिर बोले- "आप यह किस भाषा में बात कर रही हैं?"

लड़की को कदरन बुरा लगना चाहिए था, मगर लगा नहीं, वह वापस मुस्कुराई और बोली-

"उर्दू! आपको भी सीखनी चाहिए। प्यारी जुबान है, आपकी तरह।" कहकर लड़की ने आदाब जैसा कुछ किया और लौट गई।

रुद्र शर्मा नहीं लौट पाए। उनका दिल वहीं कहीं अटककर रह गया। अगले दिन वह उर्दू के सर्टिफिकेट कोर्स में एडमिशन लेने के लिए फॉर्म भरने की लाइन में फिर लगे थे।

मगर एक दिन में दो बार हुआ चमत्कार तीसरी बार नहीं हुआ। छह महीने तक रुद्र शर्मा इस भरोसे उर्दू विभाग के चक्कर लगाते रहे कि लड़की दिख जाए। मगर वह नहीं दिखी। रुद्र शर्मा ने क्लास करने के चक्कर में अपनी शनिवार-रविवार की छुट्टियाँ तक खराब की, दोस्तों का मूड खराब किया, फिल्में नहीं देखी। बस उर्दू विभाग के आस-पास मँडराते रहे। मगर सब बेकार।

चमत्कार अगर अचानक होते हैं तो बिजलियाँ भी बताकर नहीं गिरतीं। उस नामुराद दिन बिजली गिरी और अकेले नहीं गिरी अपने संग दरख्त भी लिए आई। एक दिन हुआ यूँ कि रुद्र शर्मा उर्दू विभाग का चक्कर लगाकर आ ही रहे थे कि किसी मर्दाना आवाज ने उन्हें रोका। रुद्र शर्मा पीछे मुड़े। आवाज मर्दाना ही थी। मगर उसके साथ जो जनाना थी, रुद्र शर्मा की रुचि वहाँ थी। पहली बिजली वहीं गिरी। लड़की वही थी। मगर हाय! अपने शौहर के साथ थी। उसकी शादी आसनसोल में कहीं हुई थी और शौहर अपने ससुराल कोलकाता आए हुए थे। लड़की उन्हें अपनी यूनिवर्सिटी घुमाने के गरज से आई थी।

"तुम... मेरा मतलब है आप... आपने क्लास नहीं किया इस साल?" रुद्र ने जैसे-तैसे सवाल किया।

"कैसी क्लास! मैं तो पार साल ही फारिग हो गई थी।" लड़की ने हॅसी बिखेरते हुए कहा।

"तो उस रोज... ऑफिस काउंटर पर!" रुद्र ने माकूल सवाल किया।

"वो तो मैं कॉशन मनी निकलवाने आई थी।" लड़की ने दूसरी बिजली गिरा दी। उछलकर मोटरसाइकिल पर बैठी, गरारा सँभाला और शौहर, मोटर समेत हवा हो गई।

उस शाम से रुद्र शर्मा के कमरे में अताउल्लाह खान के गाने बिला नागा बजने लगे।

छह और महीने बीते तो रुद्र को खयाल आया कि जब एडमिशन ले ही लिया है तो उसकी याद में ही सही, सर्टिफिकेट भी ले ही लिया जाए। सो इसी गरज से वह वार्डन असगर अली के घर पहुँचे और सीधे ही मुद्दे की बात कही- "सर! मुझे उर्दू में पास करा दीजिए।"

"तुम्हें शौक है?" असगर अली रोमांच से भर आए।

"जी सर!"

"ये तो बहुत अच्छी बात है! तुम जैसे नौखेजो को तो जरूर ही यह जुबान सीखनी चाहिए।"

"इसलिए तो आपके पास आया हूँ।" रुद्र ने बिलकुल सुबोध बनते हुए कहा।

"दिक्कत ही कोई नहीं है। कल से रोज सुबह 8 बजे आ जाया करो! आधे घंटे। जल्द ही सीख जाओगे।"

"लेकिन सर!"

"देखो। आगाज में ही लेकिन लगा दी। ऐसे कैसे सीखोगे?" असगर अली ने माथे पर पेंच लाते हुए कहा।

"सर! कल सुबह 8 बजे..." रुद्र पूरी बात कह ही देता कि असगर अली ने फिर टोक दिया- "उठ नहीं पाओगे यही ना! अरे बरखुरदार, कुछ तो खोना पड़ेगा कुछ पाने के लिए।"

"सर वो बात नहीं..."

"तो फिर?"

"कल सुबह 8 बजे उर्दू की परीक्षा है मेरी।" रुद्र ने पिंजरा खोल दिया था।

"क्या!" असगर अली के तोते उड़ गए थे।

"जी सर!" रुद्र ने असगर अली की हवाइयाँ उड़ती देखकर कहा।

"बदतमीज! हमसे मजा लेने आए हो!" असगर अली बिफर उठे।

"नहीं सर। क्वेश्चन पेपर लेने!" रुद्र ने शांति से कहा।

"क्या मतलब?"

"उर्दू वाले उस्ताद जाफर हुसैन साहब आपके दोस्त हैं, ऐसा सुना है।" रुद्र ने मन की बात की।

"दफा हो जाओ! तुम जैसे लोग इस जुबान से दूर ही रहें तो ठीक है।" असगर अली

तमतमाते हुए बोले।

"सर, कुछ कर दीजिए! फेल हो जाएँगे।" रुद्र ने कहा। असगर अली थोड़े संयत हुए। मगर मदद के लिए नहीं, जहर उगलने के लिए।

उन्होंने फौरन पूछा, "जोश मलीहाबादी का नाम सुना है?"

"जी सर। आम बेचते थे।" रुद्र ने फौरन से भी पहले जवाब दे दिया।

"शाबाश! तुमसे यही उम्मीद थी। शायद इसलिए तो जोश भी नाउम्मीद थे। उन्होंने देख लिया था कि हिंदी के पीछे उर्दू खत्म कर दी जाएगी। इसलिए उन्होंने कहा था!" बात खत्म होने के बाद असगर अली को रुद्र से सवाल की उम्मीद थी।

रुद्र मगर चुप रहा तो असगर अली खुद ही खौफ में बलबलाते हुए बोले-

"उन्होंने कहा था कि यह कैसी जुबान हम पर लाद दी गई जिसे सुनो तो लगता है कि कानों में पिघले शीशे उतर रहे हों।"

अब तक बात उर्दू पर हो रही थी। रुद्र के नाकारेपन पर हो रही थी। रुद्र सुन रहा था। बात अब वहाँ से फिसलकर हिंदी की बेइज्जती पर आ गई थी और यही बात नाकाबिले-बर्दाश्त हो गई। परीक्षा, सर्टिफिकेट, लड़की सब बेमायने हो गए। रुद्र तमतमाया और इससे पहले कि वह कुछ बोल जाता उसे याद आया कि वह कहाँ खड़ा है।

उसके भीतर एक गंदी-सी गाली उमड़ी। मगर उसने उसे रोक लिया। सामने वाला अगर मेरी जुबान की इज्जत न करे तो यह जरूरी तो नहीं कि मैं भी उसके जुबान की इज्जत न करूँ। मगर गर्दन तक आ चुके गुस्से को निकालना भी तो जरूरी है वरना सिर की नसें फट जाएँगी।

सो उसने जुबान को पूरी इज्जत दी। भीतर से आ रहे गाली के शब्द बदल दिए और कहा- "सर!"

"बको!" असगर फुफकारे।

"सर, आपके जज्बात को सलाम!" रुद्र ने इतना ही कहा और बात का मतलब ढूँढ़ता छोड़ बाहर निकल आया। असगर अली उस रोज से इन चार शब्दों को उर्दू के हर कवायद पर बैठाकर देख चुके हैं। उन्हें इसका कोई अर्थ नहीं मिला। मगर रुद्र को इसका अर्थ मिल गया था। सो उस रोज से जब भी उसे खीझ उतारनी होती है वो 'जज्बात को सलाम' कर देता है।

...और आज उसी तिकड़ी के तीसरे कोने, यानी रुद्र शर्मा के कमरे में चेतन अपनी गिटार पर कुछ धुन निकाल ही रहा था, जब रुद्र ने परेशान होते हुए कहा-

"राजे! ये कर्ज वाला गाना 'एक हसीना थी' गिटार वालों का नेशनल एंथम है ना!"

"क्या बेहूदा बात है!" चेतन ने गिटार के तार को कसते हुए कहा।

"और क्या! उसके अलावा तुम लोगों को आता क्या है! जब कुछ बजाने को कहो तो रवि वर्मा की आत्मा घुस जाती है तुम लोगों में।"

"साले! सिद्धार्थ से पूछना! कल ही उसको 'विश यू वर देयर' सुनाए हैं।" चेतन ने गिटार पर झन्न से एक हाथ मारते हुए कहा।

"सिद्धार्थ से याद आया, वो आजकल है कहाँ? पिछले तीन-चार दिन से दिखा नहीं।" रुद्र ने पूछा।

"आ रहा है। उसी से पूछ लो!" कहते हुए चेतन ने आते हुए सिद्धार्थ की ओर इशारा किया।

"आओ राजे! आजकल कहाँ हातिमताई बने फिर रहे हो!" रुद्र ने सिद्धार्थ के बैठने की जगह बनाते हुए कहा।

"बेटा! हम शहजादी हुस्नबानो को ढूँढ़ रहे थे!" सिद्धार्थ ने भी बैठते हुए तुर्की-ब-तुर्की जवाब दिया।

"कौन हुस्नबानो पापा?" चेतन ने चौंकते हुए पूछा।

"अबे वही जो उस दिन ट्रेन में मिली थी, जिसके साथ हम ऑटो से आए थे।" सिद्धार्थ ने याद दिलाने की कोशिश की; जिस पर चेतन भड़क गया-

"बाड़ा! तुई आबार हेल्यूसिनेट कोच्चिस! दारू पीकर और स्प्लैटर्स* फिल्में देखकर तुम्हें ट्रेन की सीट पर भी लड़की दिखती है? पागल हो जाओगे!" चेतन ने गुस्से में उबाल खाते हुए कहा।

"मत मानो! हमें क्या! लेकिन उस रोज ट्रेन में लड़की थी और मैंने उसे रास्ते में ड्रॉप भी किया था।" सिद्धार्थ ने मुँह बिचकाते हुए कहा।

"हमें बताओ लाले!" रुद्र ने बीच में पड़ते हुए कहा- "लड़की से संबंधित कोई भी बात हो, हम मान लेंगे, बिना इफ-बट के। हमें बताओ तो!"

"अबे! उस रोज ट्रेन में एक लड़की मिली थी। जिसे हम रास्ते में ड्रॉप किए थे।" सिद्धार्थ ने इतना ही कहा और आगे कहना चाहता ही था कि चेतन ने फिर बीच में टोका- "कोई लड़की नहीं थी। तुम्हारा वहम था।"

"तुम चुप रहो बे वज़ीर! बादशाह कह रहे हैं कि मलिका थी तो मलिका थी।" रुद्र ने टोकते हुए कहा- "हाँ राजे, तू आगे बता।"

"आज की रात मिलने जा रहे हैं!" सिद्धार्थ ने सफेद झूठ कहा।

"पता मिल गया है क्या?" रुद्र ने उत्सुकता से पूछा।

"हाँ। पता मिल गया है, बस घर ढूँढ़ना है। उसी सिलसिले में तो इतना दौड़ रहे थे।" सिद्धार्थ ने फिर झूठ कहा।

"राजे, हमें भी ले चलो!" रुद्र गिड़गिड़ाया।

"तुम साले क्या करने जाओगे?" चेतन ने चिढ़ते हुए कहा।

"हम देखेंगे! ये स्प्लैटर्स* फिल्म वाला है। हम वॉईयर** फिल्म वाले हैं। हम ताक-झाँक से ही हाई हो जाते हैं। तुम्हें कोई दिक्कत!" रुद्र ने बात पर विराम लगाते हुए कहा।

फिर भी चेतन ने हिदायत दी- "मत जाओ इसके साथ! हम बचपन से जानते हैं इसको। हम बता रहे हैं। फँसाएगा!"

"इसकी बात मत सुन और रात 10 बजे तैयार रहना। साथ चलेंगे। अब चल कॉमन रूम चलते हैं।" सिद्धार्थ ने कहा और चेतन को कमरे में ही छोड़कर दोनों टेबल

टेनिस खेलने कॉमन रूम की ओर चल पड़े।

***

बरसात के महीनों में कोहरा कम ही दिखता है। मगर जब दिखता है तो जानेलेवा ही होता है। हवा की नमी का असर क्या इंसान, क्या मशीन सब पर ही दिखता है। ट्रकों और दूसरे भारी वाहनों की हेडलाइट और फिर सरकारी बिजली के लट्टुओं की रौशनी के सहारे ही सिद्धार्थ और रुद्र आज मेचेदा कब्रिस्तान की ओर बढ़े जा रहे थे। सिद्धार्थ जानता था कि कहाँ जाना है। रुद्र बस साथ था और सपने में किसी घर, किसी बंगले, किसी हॉस्टल या किसी होटल की कल्पना किए हुए था और इसी कल्पना में डूबते-उतराते उसने सिद्धार्थ से कहा- "यार सिद्धार्थ!"

"हाँ!"

"कुछ खा के चलते हैं यार!" रुद्र ने अपनी समझ से वाजिब सवाल किया।

"क्यों?" सिद्धार्थ ने पूछा।

"अब लड़की को कहाँ पता कि हम दो लोग आ रहे हैं! मान लो, हम लोगों ने उसका घर खोज लिया। और उसने बुला भी लिया। अब रात का वक्त है। यार खाने के टाइम पर जा रहे हैं। अच्छा नहीं लगता। मान लो, हमने घर ढूँढ़ लिया। और ढूँढ़ लिया क्या! जब मैं साथ हूँ तो समझो ढूँढ़ ही लिया। अब अगर हम घर गए। लड़की और तुम्हारे ससुराल वाले सब खाना-वाना खा के टाइट हों, तो कैसा लगेगा यार! लड़की की बेइज्जती हो जाएगी न!"

रुद्र ऐसी ही उलजुलूल बातें बकता रहता जिस पर सिद्धार्थ ने कुछ कान दिया, कुछ नहीं दिया। बस हूँ-हाँ करता रहा। मोटरसाइकिल बहरहाल कोहरे को चीरती आगे बढ़ती रही।

कोहरे ने मोटरसाइकिल और उसके दोनों सवारों को अब तक बर्फ के गिर्द लिपटे बोरे की तरह सर्द कर दिया था। गाड़ी ठीक कब्रिस्तान के पिछले हिस्से में रुकी थी। बाहर एक पीली रौशनी वाला बल्ब लकड़ी के ही दीमक खाए लैंपपोस्ट पर जल रहा था। और अगर किसी के पास खाली वक्त हो तो वह गिनकर बता पाए कि हर तीन सेकंड काँपकर बंद होने के बाद दो सेकंड को जल जाता था। बहरहाल आस-पास जो भी रौशनी थी बस उसी लाइट से थी।

टिड्डियों की अजीब चरचराहट रुकती तो मेढकों की आवाज माहौल को और डरावना बना देती। आसमान की ओर देखने पर तेजी से भागते बादल डरावनी शक्लों में बनते-बिगड़ते दिखते। और ठीक इसी वक्त सिद्धार्थ ने जब गाड़ी रोकी तो रुद्र ने उतरते हुए पूछा- "क्या हुआ! गाड़ी चोक ले ली क्या?"

रुद्र के इस सवाल के जवाब में सिद्धार्थ कुछ नहीं बोला; बस मोटरसाइकिल को रोड के किनारे करने लगा। रुद्र को लगा कि वह गाड़ी को देखने के लिए किनारे कर रहा है। उसने कब्रिस्तान के बाहर का माहौल देखा। कमर सीधी करने को उसने सिर उठाया तो सिर के ऊपर से भागते हुए बादलों की खौफनाक शक्ल ने उसे हिला दिया। उसने फौरन आँखें नीचे कर ली और हड़बड़ी में ही कहा-

"अबे! इस 'जज्बात के सलाम' को थोड़ा टेढ़ा करके हिलाओ-डुलाओ। गलत जगह पर बंद हो गई है।"

"जगह सही है। हमें यहीं आना था!" सिद्धार्थ ने रूखा-सा जवाब दिया।

"क्या मतलब?" रुद्र इस जवाब से हतप्रभ था।

"मतलब, वो लड़की उस दिन यहीं उतरी थी।" सिद्धार्थ ने गाड़ी से चाभी निकालते हुए कहा।

"क्या बकवास है ये!" रुद्र ने अविश्वास से सिद्धार्थ की ओर देखा। सिद्धार्थ ने मुस्कुराते हुए बेचारगी से कंधे उचका दिए। रुद्र अब कुछ-कुछ बात को समझा और समझते ही बोला-

"और यही तुम्हारा एड्रेस था?" जिसके जवाब में सिद्धार्थ क्या कहता, बस अँग्रेजी फिल्मों के बोर्डिंग के लड़कों की तरह सिर हिलाकर हामी भरी।

"तुम्हारे जज्बात को सलाम! तुम हमें फुसलाकर इस कब्रिस्तान में लाए हो!" रुद्र को अब भी विश्वास नहीं हो रहा था।

"टाइम खराब करने का कोई फायदा नहीं है भाई। अभी उसे खोजना भी है।" सिद्धार्थ ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा। जिसे रुद्र ने झटक दिया और अपने घुटनों पर दोनों हाथ रख झुकते हुए बोला-

"इससे ज्यादा क्या टाइम खराब होगा साले? आजकल में फर्स्ट ईयर का रिजल्ट आना है। हॉस्टल में, फैकल्टी में, सब कह रहे हैं कि रुद्र टॉपर रहेगा अबकी साल। और हम! हम यहाँ कब्रिस्तान के बाहर टाप रहे हैं।"

"अब चल भी!" सिद्धार्थ ने उसकी बात पर ध्यान न देते हुए अपनी ही बात की।

"कहाँ चल? तुम्हारे जज्बात को सलाम! रुद्र शर्मा यहाँ से हिलेंगे भी नहीं। जल्दी गाड़ी स्टार्ट करो और वापस चलो फटाफट।"

"सुन! उसे ढूँढ़े बिना तो नहीं जाऊँगा। दिन में ढूँढ़कर देख लिया है। रात में कोशिश कर लेने दे।" सिद्धार्थ ने दृढ़ता से कहा।

"कहाँ ढूँढ़ेगा लाले? उस रोज से तेरे इंतजार में यहाँ रोड पर बैठी होगी क्या वो!" रुद्र ने समझाते हुए कहा।

"अबे इस कब्रिस्तान के उस पार कोई कॉलोनी जरूर होगी! अभी इधर से पार होकर ही तो पता चलेगा ना!" सिद्धार्थ ने कहा। सिद्धार्थ अभी समझा ही रहा था कि उसने थोड़ी दूर जहाँ से सेमेटरी का इलाका शुरू हो जाता था, उधर से किसी के गुजरने की आवाज सुनी। उसके कान खड़े हो गए। सिद्धार्थ ने गाड़ी में फिर चाभी लगाई और गाड़ी को स्टार्ट कर दोनों स्टैंड पर लगा दिया और रुद्र से कहा-

"सुन भाई! मैं आता हूँ। तू यहीं रहना! और कोई खतरा दिखे तो बस ये हॉर्न बजा देना।"

"यहीं रहूँगा राजे! जा ही कहाँ सकता हूँ। पापा ठीक कहते थे, मोटरसाइकिल चलानी सीख लो। बुरे वक्त में काम आएगी। उन्हें भी किसी हरामजादे ने ऐसे ही फँसाया होगा!" रुद्र भुनभुनाता रहा।

और सिद्धार्थ कब्रिस्तान की ओर बढ़ गया।

वक्त जो नुकसान करता है उसकी भरपाई कठिन है। मेचेदा का वह कब्रिस्तान कभी ग्रेनाइट पत्थर और नक्काशीदार कब्रों से सजा रहा होगा; मगर अब वह कब्रों के बीच उग आए इमली के पेड़ों, गाँजे के पौधे और ऐसे ही लावारिस कँटीली झाड़ियों से भरा हुआ था। यह कँटीली झाड़ियाँ ही अब उस कब्रिस्तान की एक मात्र मुहाफिज थीं। सिद्धार्थ उन्हीं कँटीली झाड़ियों में से जगह बनाते हुए दबे पाँव कब्रिस्तान के भीतर घुस गया। उसे उम्मीद थी कि इस पुरानी उजाड़ कब्रिस्तान की दीवार के दूसरी ओर रिहाइशें होंगी। कोई दो या एक ही परिवार हो, मगर होना चाहिए। मगर उसका अनुमान गलत था। उस ओर रिहाइश जरूर थीं; मगर वह बगल के कच्चे रास्ते से होकर गुजरती थीं। जिस रास्ते सिद्धार्थ दाखिल हुआ था वह कब्रिस्तान ही था। जिसके चारों ओर पसरे माहौल से ऐसा लगता था कि खामोशियों का शहर ही आबाद हो। दूर से रह-रहकर किसी अजीब परिंदे की घुटी हुई आवाज सिहरन पैदा कर जाती थी।

सिद्धार्थ के पाँव भी सूखे पत्तों पर सावधानी के बावजूद आवाज कर ही जाते थे। उसने देखा कि सामने थोड़ी दूर पर लोहे का एक दरवाजा है जो संभवतः कब्रिस्तान में घुसने का प्रवेश द्वार था। उसे लोहे के दरवाजे के उस पार रिहाइश दिखाई दी तो उसे खुद पर गुस्सा आया। आखिर क्यूँ नहीं उसे कब्रिस्तान के बगल से जाती वह सड़क दिखाई दी। किस बेवकूफाना सोच के तहत कब्रिस्तान में वह लड़की खोजने आया। इन्हीं सोचों में गुम वह कमर पर हाथ धरे खड़ा ही था कि उसे अपने ठीक पीछे किसी के खड़े होने का आभास हुआ। उसने अपने पीठ पर किसी के साँसों की आवाज महसूस की। वह झटके से पीछे मुड़ा और ठीक पीछे अपनी आँखों में झाँकती एक जोड़ी आँखें देखीं। आँखें धुली-धुली, जुल्फें जैसे चेहरे को ढक लेने को आमादा और मुस्कान बिछड़े प्रेमी के अचानक मिल जाने जैसी आकस्मिक। सामने वही लड़की खड़ी थी।

"होली शिट! तुमने तो मुझे डरा ही दिया था।" सिद्धार्थ ने छाती पर हाथ रखते हुए कहा।

"मुझे एहसास था कि तुम जरूर आओगे।" लड़की ने उसी सर्द मुस्कुराहट के साथ जवाब दिया।

"पिछले एक हफ्ते में तुम्हें कहाँ-कहाँ नहीं ढूँढ़ा!" सिद्धार्थ ने साँसों पर काबू पाते हुए कहा।

"यहीं आ जाते! मैंने तो कहा था। यहीं कहीं ढूँढ़ लेना।" बर्फीली आवाज थोड़ी पिघली।

"मुझे लगा था कि तुमने मजाक किया होगा।"

"मैंने कहा ना, मैं कभी मजाक नहीं करती।" लड़की के चेहरे पर फिर एक गंभीर रहस्य तैर गया।

"तुम्हारा नाम जान सकता हूँ?" सिद्धार्थ ने हिचकते हुए ही पूछा।

"मोहिनी।" लड़की ने बालों की लट उँगलियों से पीछे करते हुए कहा।

"मोहिनी! मोहिनी! मीन्स एनचांट्रेस।" सिद्धार्थ खुद में ही बड़बड़ाया। मोहिनी उसकी बात सुनकर मुस्कुरा दी।

"तुम इस वक्त यहाँ क्या कर रही हो?" सिद्धार्थ ने सबसे जरूरी सवाल किया।

"मैं तो इस वक्त हर रोज ही यहाँ आती हूँ।" मोहिनी ने फिर कोई अबूझ जवाब दिया।

"इस वीराने में! क्या करने?" सिद्धार्थ इस जवाब से अचंभित था।

"कुछ तलाशने।" मोहिनी ने फिर अबूझ-सा जवाब दिया।

"तलाशने!" सिद्धार्थ खुद में फिर बुदबुदाया। उसे सबकुछ असामान्य-सा तो लगा; मगर इन सब बातों को मजाक कहने पर मोहिनी के नाराज हो जाने का डर था। सिद्धार्थ यह जोखिम इस वक्त नहीं ले सकता था, सो उसने बात बदली-

"खैर! कहीं बाहर चलें?" कहकर सिद्धार्थ जवाब का इंतजार करने लगा। मोहिनी ने उसे अपलक देखा और मुस्कुराते हुए बोली-

"चलती! अगर तुम अकेले आए होते।" मोहिनी ने कहा और इशारों से उधर देखा जिधर मोटरसाइकिल की आड़ में रुद्र खड़ा था।

"ओह! तुम्हें कैसे पता?" सिद्धार्थ ने झेंपते हुए कहा।

"इधर खामोशियों की चलती है। थोड़ी-सी भी आवाज दूर तक और देर तक ठहरी रहती है।" मोहिनी ने कहा। मोहिनी के इतना कहते-कहते ही सिद्धार्थ को छींक-सी आ गई। उसे छींकते ही एहसास हुआ कि थोड़ी दूर पर बेतरतीब लगी झाड़ियाँ सरसरा गई। उस सरसराहट ने न सिर्फ सिद्धार्थ का ध्यान खींचा बल्कि मोहिनी को भी बेचैन कर दिया। उसने उसी बेचैनी में कहा-

"मुझे लगता है तुम्हें अब जाना चाहिए। तुम्हारा दोस्त इंतजार कर रहा है।"

"और मैं जो तुम्हारा इंतजार कर रहा हूँ, उसका क्या!" कहते हुए भी सिद्धार्थ की नजर झाड़ियों की तरफ ही रही। उसने देखा कि गूलर की तरह लाल एक जोड़ी आँखें उसे घूर रही हैं। किसी जानवर की आँखें। सिद्धार्थ ने अंदाजा लगाया कि यह संभवतः कोई कुत्ता है।

"अब नहीं करोगे!" मोहिनी ने सिद्धार्थ की बात का रहस्यमयी जवाब उसी रहस्यमयी मुस्कान के साथ दिया और आगे की ओर बढ़ चली।

"कहाँ मिलोगी अगली दफा?" सिद्धार्थ ने फिर लौटते हुए पूछा।

"यहीं आ जाना या फिर वहाँ जहाँ पहली बार मिले थे।" मोहिनी ने फिर हँसते हुए जवाब दिया।

"यह जगह तुम्हें वियर्ड नहीं लगती, मिलने के लिए?" पूछते हुए सिद्धार्थ की आवाज थोड़ी ऊँची हो गई, जिसके जवाब में इशारे से ही मोहिनी ने अपने होंठों पर तर्जनी रखी और कहा-

"श्श्श्श! धीमे बोलो!" कहकर वह एक पल को रुकी और फिर बोली-

"नहीं! यहाँ की खामोशी मुझे पसंद है और यूँ भी यहाँ आए बगैर मेरा काम भी नहीं

चलता।"

"अच्छा! कहाँ रहती हो, ये तो बता दो!" सिद्धार्थ ने गुजारिश की।

"सब मैं ही बता दूँ? तुम भी तो कुछ करो!" कहते हुए मोहिनी फिर मुस्कुराई। सिद्धार्थ फिर अबस हो गया।

"आता हूँ।" कहते हुए सिद्धार्थ पीछे की ओर ही चलने लगा।

"आना, हाँ! और हाँ, अगली दफा जब आना तो अकेले आना।" कहकर मोहिनी आगे बढ़ चली और पेड़ों और लंबी झाड़ियों के झुरमुटों में खो गई।

बाहर निकलते ही सिद्धार्थ ने रुद्र को वैसे ही पाया जैसा वह उसे छोड़कर गया था। मगर सिद्धार्थ को एकमुश्त आता देख रुद्र के चेहरे पर कान से कान तक की मुस्कुराहट तिर गई।

"आ गया भाई तू! तुझे जिंदा देखकर कितनी खुशी हो रही है। चल जल्दी से गाड़ी स्टार्ट कर मेरे दोस्त।" सिद्धार्थ ने रुद्र के कहने का इंतजार नहीं किया। उसने गाड़ी को स्टैंड से उतारा और बंद करके धकेलकर आगे ले जाने लगा। रुद्र ने जब यह देखा तो हतप्रभ रह गया। मगर कुछ सोचकर बोला-

"अच्छा! गाड़ी का इंजन गरम हो गया होगा न!"

"नहीं!"

"फिर! इसको धकेल के क्या बॉडी बनानी है?"

"नहीं भाई, उसने कहा है कि यहाँ सब काफी दिनों से सोए हैं। इंजन की आवाज से उनकी नींद में खलल पड़ती है।" कहते हुए सिद्धार्थ गाड़ी को धकेलकर कब्रिस्तान से आगे ले आया था।

"किसने कहा?" रुद्र ने चलते हुए ही आश्चर्य से पूछा।

"मोहिनी ने।" कहते हुए सिद्धार्थ ने गाड़ी स्टार्ट की।

"मोहिनी! नाम तो सवा सेक्सी है राजे। ये कहाँ मिल गई?" रुद्र ने पीछे बैठते हुए पूछा।

"यहीं! कब्रिस्तान में।" सिद्धार्थ ने गाड़ी रोड पर चढ़ाते हुए कहा।

"क्या! कब्रिस्तान में! सचमुच कोई लड़की थी?" रुद्र दरअसल सीट पर ही काँपकर रह गया था।

"हाँ! और इतना मत हिलो!"

"और उसका नाम मोहिनी था?" रुद्र ने अबकी ऐसी धीमी आवाज में कहा मानो उसके गले में जान ही न हो।

"हाँ बे! पहचानते हो क्या?" सिद्धार्थ ने उत्सुकतावश पूछा। जिसका कोई जवाब रुद्र की ओर से नहीं आया। बस वह कुछ भुनभुनाता रहा।

"हम जानते हैं कि अब तुम क्या पूछोगे!" सिद्धार्थ ने मुस्कुराते हुए ही कहा और रुद्र से सवाल की उम्मीद करने लगा। रुद्र की ओर से जब कुछ क्षणों तक कोई सवाल नहीं आया तो उसने खुद ही कहा-

"तुम साले पूछोगे कि वो कब्रिस्तान में मिली। थोड़ा अजीब नहीं है! है; अजीब है।

थोड़ा नहीं; बहुत अजीब है। मगर यार वो इतनी खूबसूरत है न कि उसे देखने के बाद आस-पास का खयाल ही किसे रहता है! अगली बार पता है, कहाँ मिलना है?"

सिद्धार्थ ने फिर सवाल की उम्मीद की। मगर रुद्र का कोई सवाल नहीं आया, हाँ, उसका भुनभुनाना थोड़ा और तेज हो गया।

"यहीं मिलना है! और घबराओ मत, अगली बार तुमको तकलीफ नहीं देंगे। अकेले बुलाई है।" सिद्धार्थ ने गाड़ी की एक्सलेटर बढ़ाते हुए कहा और फिर कहना जारी रखा- "बोलते क्यों नहीं हो साले! और ये क्या भुनभुना रहे हो?"

सिद्धार्थ के चिल्लाने पर आवाज रुद्र तक गई और अब रुद्र की सुनी जा सकने वाली आवाज सिद्धार्थ के कानों में पड़ी। रुद्र दरअसल हनुमान चालीसा पढ़ रहा था। मारे डर के उसकी हालत खराब थी। सिद्धार्थ बेसाख्ता हँस पड़ा-

"साले पीजन हार्ट!" कहते हुए सिद्धार्थ ने गाड़ी चलाना जारी रखा और रुद्र ने हनुमान चालीसा पढ़ना। बीच में थोड़ी देर की खामोशी रही जिसे तोड़ते हुए सिद्धार्थ ने ही कहा-

"जानता है बे! शी इज वर्थ डाइंग! उसके लिए मरा भी जा सकता है। वो अपना सस्ता शायर, चेतन; कैसे तो कहता है न कि बनाने वाले ने खुद ही तराशे हैं तेरी जुल्फें, तेरी आँखें, तेरे अबरू, तेरे लब..."

"और पाँव!" रुद्र आखिरकार बोला।

"मतलब?" सिद्धार्थ ने चिहुँककर पूछा।

"तूने उसके पाँव देखे?" रुद्र ने इस तरह बात रखी कि माहौल में सिहरन-सी दौड़ गई। सिद्धार्थ के हाथों के रोवों में करंट-सा छू गया। वह रुद्र की बात का अर्थ समझ गया और फिर पूरी राह कोई कुछ नहीं बोला।

***

# अमावस की रात

रिजल्ट। अपने-आप में यह एक शब्द ही अच्छे-अच्छों का भूत उतार देने वाला मंतर है। दूसरे सेमेस्टर का रिजल्ट आ गया था। रुद्र अपेक्षानुसार कॉलेज में टॉप पर रहा था। चेतन ने भी अपने सारे पेपर्स निकाल लिए थे। दस विषयों में से सिद्धार्थ के चार विषयों में लाल निशान थे, जिसका फर्क उस पर कम और उसकी माँ पर ज्यादा पड़ा था। खानदानी लोग थे; जहाँ फेल होना सरे-बाजार बेलिबास होना माना जाता है। जहाँ बच्चे के जन्म के साथ ही उसके करियर का ब्लूप्रिंट तैयार कर दिया जाता है। सो उसी ब्लूप्रिंट के अनुसार सिद्धार्थ को यहाँ से एलएलबी करनी थी और उसके बाद हॉर्वर्ड यूनिवर्सिटी से मास्टर्स करना था। और फिर ग्रीन कार्ड लेकर अमेरिका में सेटल हो जाना था।

मगर हरे कार्ड की चाह रखने वाली माँ ने जब रिजल्ट पर लाल निशान देखे तो पहले पीली पड़ गईं और फिर सफेद। बताया गया कि खून की सख्त जरूरत है। ब्लड ग्रुप जो चाहिए था वह यूँ अत्यंत दुर्लभ था, मगर बेटे का ही था। सो आनन-फानन में ही सिद्धार्थ को बुलाया गया। और जो वह आया तो फिर दो महीने रहकर ही गया। माँ की तीमारदारी में सिद्धार्थ पिछले दिनों हुई सारी बातें भूल गया। उसे दो-एक दफा मोहिनी की याद तो आई; मगर फिर माँ की चढ़ती-उतरती तबीयत ने उसे सोचने का मौका ही नहीं दिया। दो महीने किसी तरह गुजरे। माँ की तबीयत ठीक हुई तो उन्हें ग्रीन कार्ड की याद फिर आई। लेकिन उन्हें अबकी लगा कि उनके बेटे और उसके हरे कार्ड के बीच कुछ काला है, जिसे सफेद करने के लिए उन्होंने नीला पत्थर बेटे को पहना दिया और पढ़ाई के लिए अपनी कसम देते हुए सिद्धार्थ को इस ताकीद के साथ हॉस्टल भेजा कि अब वो हफ्ते-दस दिन पर उसकी पढ़ाई देखने हॉस्टल आती रहेंगी। सिद्धार्थ जानता था कि कोलकाता शहर से कोलाघाट इतनी दूर भी नहीं है कि उसकी माँ न आ सके।

मगर बेटा आखिर सिद्धार्थ था। हॉस्टल पहुँचते ही उसने सबसे पहले पहनी अँगूठी उतार फेंकी। दिन में रुद्र और चेतन के साथ मिलकर फ्रेशर्स की रैगिंग ली और रात में गाड़ी लेकर दो रात लगातार मेचेदा के कब्रिस्तान में गया। देर रात तक बैठा और फिर उदास लौट आया। उदासी के उन्हीं दिनों में उसने याद करने की कोशिश की, मोहिनी की अजीब बातें। यहीं मिलूँगी! या फिर वहाँ जहाँ पहली बार मिले थे। पहली बार! यानी ट्रेन में। ट्रेन में वह किस स्टेशन पर चढ़ी थी? सिद्धार्थ को याद नहीं। क्योंकि वह तो नशे के खुमार में था। मगर जब वह उसके पाँव के छुअन से जागा तो भोर के तीन बज रहे थे। उस ट्रेन के ज्यादा स्टॉपेज नहीं हैं। तो अगर वह आधा घंटा पहले भी आई हो तो एक ही स्टॉपेज है। तमलुक स्टेशन।

मतलब वह तमलुक स्टेशन से ही सवार हुई थी। और वहीं दुबारा मिल सकती है। सोचते और गुनते ही सिद्धार्थ की आँखें चमक उठी और फिर उसी दिन कमरे में दोस्तों के साथ बैठे हुए उदासी के इसी नीरस माहौल को तोड़ने की गरज से उसने

कहा-

"बेटा आज नाइट आउट पे चलते हैं!"

"किस खुशी में पापाजी? चार सब्जेक्ट में तो आप लाल हैं।" चेतन ने तंजिया ही कहा।

"मेरा बड्डे है।" सिद्धार्थ ने उसकी बात पर ध्यान न देते हुए कहा।

"अभी तीन महीने पहले ही तो पार्टी दी थी तूने बड्डे की।" चेतन ने चौंकते हुए कहा।

"अबे यार! ये इन्स्टॉल्मेंट में पैदा हुआ था। तुझे कोई दिक्कत!" रुद्र ने बीच में पड़ते हुए कहा जिससे चेतन को हँसी आ गई। उसने हँसते हुए ही रुक-रुककर कहा- "नहीं, कोई दिक्कत नहीं! मगर ये साला श्मशान-कब्रिस्तान वाली जगह ले जाएगा। वहाँ नहीं।"

"नहीं, वहाँ कौन जाएगा!" रुद्र ने एक साँस में कहा। जिस पर सिद्धार्थ मुस्कुरा दिया और बोला-

"घबराओ मत! अबकी एकदम मस्त जगह चलेंगे। कोई टंटा नहीं। एकदम शांत। चेतन, तू अपनी गिटार भी ले लेना।"

"पक्का! बियर मेरी तरफ से।" चेतन गिटार की बात सुनकर ही हाई हो गया था।

"चिकेन और स्नैक्स मेरी ओर से। और यही टॉप करने की पार्टी भी मान लेना। दुबारा नहीं दूँगा। पूरे हॉस्टल को खिलाते-खिलाते कंगाल हो गए हैं। साली जितने की कमाई नहीं उतने का तो लहँगा फट गया।" रुद्र ने अपने अंदाज में बात खत्म की।

"ठीक है, गाड़ी का इंतजाम मैं करता हूँ।" सिद्धार्थ ने कहा और उठ गया। उसके निकलते ही बाकी दोनों भी अपने हिस्से का सामान लाने निकल पड़े।

और जब देर रात तीनों मिले तो चेतन के हाथ में बियर की क्रेट थी। रुद्र के दोनों हाथों में स्नैक्स और खाने से भरे पोलिथीन थे। मगर सिद्धार्थ खाली हाथ ही था। सिद्धार्थ को खाली हाथ देखकर दोनों को आश्चर्य नहीं हुआ; क्योंकि उसे कुछ लाना नहीं था। उसे मँगवानी थी गाड़ी; जो कि दूर-दूर तक नदारद थी।

"क्या हुआ? गाड़ी कहाँ है?" देर तक हाथ में क्रेट लिए चेतन ने कलाई के दर्द से परेशान होकर कहा।

"गाड़ी तो नहीं मिली।" सिद्धार्थ ने बुझे मन से कहा।

"अरे इसके जज्बात को सलाम! हम जानते थे ये साला धोखा देगा।" खीझते हुए रुद्र ने खाने की पोलिथीन जमीन पर पटक दी।

"ऐसे ही करोड़पति थोड़े बना है इसका बाप! ऐसे ही लूट-लूट के पैसा जमा किया है।" चेतन ने भी क्रेट जमीन पर रख दी।

"पूरे मूड की जज्बात का सलाम कर दिया यार!" रुद्र खीझता हुआ बोला।

"मुझे भी कुछ बोलने दोगे?" सिद्धार्थ ने हाथ जोड़ते हुए कहा।

"अब ये कहेगा कि हॉस्टल की छत पर ही खा लेते हैं यार!" चेतन ने रुद्र की ओर देखा।

"गाली दे देंगे तो चुपचाप सुन लोगे?" सिद्धार्थ ने अब जरा तल्ख होकर कहा।

सिद्धार्थ के त्योरियाँ चढ़ाते ही दोनों सचमुच चुप हो गए।

सिद्धार्थ ने कुछ पल तक अपनी साँस, गुस्सा और आवाज तीनों सँभाली और फिर बोला- "गाड़ी है।"

"गाड़ी है! कहाँ है?" चेतन उत्सुक होकर बोला।

"वहाँ!" सिद्धार्थ ने अपनी दाहिनी ओर इशारा किया। और जिस तरफ इशारा किया उधर देखकर दोनों का उल्लास फिर ठंडा हो गया।

"ये!" चेतन ने उदास भाव से कहा।

"हाँ बे! यही। असगर अली की मारुति!" सिद्धार्थ ने उत्साह से कहा।

"गेट योर इन्फोर्मेशन करेक्टेड। ये असगर अली की मारुति नहीं। उसके भी बाप की मारुति है। 1987 मॉडल।"

"तो क्या हुआ! चलती तो है!" सिद्धार्थ ने कहा।

"हाँ चलती ही है! मगर कार को तो दौड़ना चाहिए न!" चेतन ने तंज किया।

"और वो भी असगर अली के बीवी और बच्चे धक्का मारते हैं तब इस 'जज्बात के सलाम' का इंजन गरम होता है।"

"इंजन गरम है। आज शाम ही पेट्रोल भरवा के लाया है असगर।" सिद्धार्थ ने खुलासा किया।

"तो क्या तू सचमुच सीरियस है?" चेतन ने आश्चर्य से पूछा।

"अबे पता चल गया तो हॉस्टल से हाथ धो बैठेंगे।" रुद्र ने भी मामले की गंभीरता को समझते हुए कहा।

"डिग्री से भाई, डिग्री से हाथ धो बैठेंगे।" चेतन ने पूरी बात की।

"कुछ नहीं होगा। शाम में असगर अली ओल्ड चाइना बाजार गया था। असली इंपीरियल अफीम चाट के आया है। रात भर नहीं उठेगा। भोर तक हम लोग आ ही जाएँगे।" सिद्धार्थ ने हाथ मलते हुए कहा।

"ये असगर अली अफीम चाटता है?" चेतन का मुँह खुला रह गया।

"अच्छा है ना। यहाँ तो लोग पता नहीं क्या-क्या चाट लेते हैं।" रुद्र ने कहा और इससे पहले कि कोई समझकर हँस देता, उसने कहना जारी रखा- "खैर तू बता लाले, गाड़ी कैसे स्टार्ट होगी? चाभी कहाँ है? दरवाजा कैसे खुलेगा कार का?"

"जोर से खींचने पर दरवाजा बाहर आ जाएगा, तुम खुलने की बात करते हो! और चाभी इसमें परमानेंट रहती है। एक बार फँस गई है सो निकलती ही नहीं।" कहते हुए सिद्धार्थ ने धीमे से हैंडल घुमाकर कार का दरवाजा खोल दिया।

"अबे! इसके जज्बात को सलाम! ये तो खुल गई!" रुद्र के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा।

"जल्दी बैठ!" कहते हुए सिद्धार्थ ड्राइविंग सीट पर काबिज हो गया। दोनों दोस्त भी खाने-पीने का सामान घुसाकर पीछे की सीट पर पसर गए। गाड़ी एक-दो घनघनाहट के बाद स्टार्ट हो गई।

"वोआआ..." चेतन चिल्लाया।

"अबे! ये तो सचमुच स्टार्ट हो गई बे!" रुद्र भी खुशी से झूम-सा गया। दोनों ने स्थिर होने के बाद खाने-पीने का सामान पाँव के सामने रखा और आँखें बंद कर औंधे पड़ गए। गाड़ी हॉस्टल का रोड छोड़कर मेन रोड पर आ गई थी।

"अबे, चोरी की गाड़ी से निकलने में अजब ही थ्रिल आ रहा है।" चेतन ने किलकते हुए कहा।

"बियर निकाल!" सिद्धार्थ ने गाड़ी चलाते हुए ही हाथ पीछे बढ़ाया।

"अभी नहीं! चुपचाप गाड़ी चलाओ। पी के साले कहीं भिड़ा दोगे।" चेतन ने कहा। सिद्धार्थ बात समझकर गाड़ी चलाने लगा। दो मिनट की शांति बनी रही और फिर अचानक ही रुद्र पागलों की तरह हँसने लगा और हँसता ही गया। उसे बेबात देर तक हँसते हुए देखकर चेतन ने ही टोका– "तुमको क्या हुआ बे?"

"कुछ नहीं एक बात याद आ गई!" रुद्र ने हँसते और खाँसते हुए ही कहा।

"हमें भी बताओ!" कहते हुए सिद्धार्थ ने एक च्विंगम की टिकिया मुँह की ओर उछाली।

"वो अपना हज्जाम है न। जो हॉस्टल में आकर हेयर कट करता है। वो एक दिन बता रहा था..." कहकर रुद्र फिर हँसने लगा।

"बताओगे साले कि अपने हँसोगे!" चेतन ने रुद्र को एक धौल जमाते हुए कहा। रुद्र ने किसी तरह अपनी हँसी रोकी और कहना शुरू किया-

"चार-पाँच साल पहले की बात है। हॉस्टल के सीनियर्स एक कबाड़ी वाले को ले आए।"

"फिर?" सिद्धार्थ ने पूछा।

"असगर अली की गाड़ी दिखाकर कबाड़ी वाले से कहा कि इसे बेचना है। कबाड़ी वाले ने चोखा माल देखते हुए हामी भरी कि खरीद लेंगे। तो सीनियर्स ने असगर अली का दरवाजा दिखाते हुए कहा कि इसके मालिक वहाँ रहते हैं। जाकर रेट बता दो।"

"फिर?" अबकी चेतन ने उत्सुकता से कहा।

"कबाड़ीवाला घर गया और घंटी बजाई। दरवाजा असगर के बाप ने खोला, जो तब जिंदा थे।"

"फिर?"

"फिर क्या, कबाड़ी ने आव-ताव देखा नहीं; सीधा बोल दिया।"

"क्या बोल दिया?"

"बोला कि पहिया निकालकर 400 किलो लोहा होगा। 2 रुपए के हिसाब से 800 रुपया दूँगा।"

"भाक साले!" कहते हुए चेतन के मुँह से लगी बियर कार के दरवाजे के बाहर चली गई।

"अबे हँसाओ मत। एक्सीडेंट हो जाएगा।" सिद्धार्थ ने भी गाड़ी धीमे करते हुए कहा।

"सही राजे। उसके बाद जो असगर का बाप कबाड़ी को चमरौधा जूता लेकर

दौड़ाया तो कबाड़ी को समझ ही नहीं आया कि उसकी गलती क्या है?" रुद्र ने कहा और फिर कार एक दफा ठहाकों से गूँज गई।

कहकहों का दौर चलता रहा। ऐसे ही हँसी-मजाक की बातें निकलती रहीं। लगभग एक घंटे के सफर के बाद गाड़ी तमलुक स्टेशन के बाहरी इलाके में पहुँच गई। सिद्धार्थ ने हाइवे थोड़ी देर पहले ही छोड़कर गाड़ी अब एक कच्चे अंजान रास्ते पर उतार दी थी। दो बोतल बियर के बाद ही पीछे बैठे चेतन और रुद्र के अवरोध की शक्ति खत्म हो गई थी। अब वो सिद्धार्थ के हवाले थे और यह पूछने से भी गाफिल थे कि वह जा किधर रहे हैं। बहरहाल थोड़ी दूर और कच्चे रास्ते पर चलकर एक घने दरख्त के नीचे गाड़ी रुक गई।

"चल उतर!" सिद्धार्थ ने गाड़ी का इग्नीशन बंद करते हुए कहा।

"आ गए क्या?" रुद्र ने आँखें मीचते हुए कहा।

"हाँ साले! आ गए।" सिद्धार्थ ने कहा।

"मगर ये कौन-सी जगह है जीजाजी!" चेतन ने रिश्ता बनाते हुए कहा।

"तमलुक के बाहर वाला जंगल है।" कहने के साथ ही चेतन और रुद्र ने पहली दफा देखा कि सिद्धार्थ मजाक नहीं कर रहा। वो किसी जंगलनुमा जगह पर ही उतरे हैं। किसी निर्जन रेलवे ट्रैक से 100 मीटर की दूरी पर। बीयर की क्रेट उतारकर रुद्र ने जब बरगद के उस पेड़ के नीचे पटका तो बरगद के पेड़ पर बैठे अंजान से पक्षी फड़फड़ाकर भाग उठे। उनकी फड़फड़ाहट में भी चेतन ने पहली बार ये बात गौर की। वह यह कि पेड़ के पत्ते वैसे ही शांत वैसे ही अचल रहे मानो किसी से डरे हुए हों या फिर किसी के संकेत पर चुप हों। वातावरण में एक अजीब-सी सिहरन थी। एक अजीब-सा अनमनापन। चेतन ने अपने भय को जुबान देते हुए कह ही दिया-

"अबे तू किसी खजाने की तलाश में है ये तो बता दे। तीनों भाई मिल के ढूँढ़ेंगे। ऐसे कभी श्मशान में, कभी कब्रिस्तान में कभी वीराने में मत लाया कर भाई।"

"बैठो! नाइट आउट का यही तो मजा है। फुल माहौल बना हुआ है।" सिद्धार्थ ने खाने का सामान नीचे रखते हुए कहा।

"घंटा माहौल बना हुआ है! न साकी है न बाला है। लग रहा है किसी की श्राद्ध का पीने आए हैं। हम पहले ही कहे थे इसकी बात मत सुनो। मछरी काट के भोग लगाए, अजब जात बंगाली।" रुद्र ने मुहावरों की दुकान खोली। बहरहाल अब और कोई चारा भी नहीं था और नशे का खुमार चेतन और रुद्र पर तारी था। वह लोग उसी बरगद के पेड़ के नीचे बैठ गए। वातावरण में अजीब-सी नमी तो थी ही जो चेतन को बेचैन कर रही थी। उसने अनजाने भय से कहा-

"बड़ी डरावनी जगह मालूम हो रही है भाई। भूत-पिशाच ऐसी ही नमी वाले वीराने में रहते हैं।"

"मुर्गे पे ध्यान लगाओ! भूत-पिशाच कुछ नहीं होते।" सिद्धार्थ ने खाने का सामान खोलते हुए कहा।

"लेकिन हमारे दादा जी बताते थे कि चुड़ैल होती हैं।" चेतन ने एक चिकेन पीस

उठाते हुए कहा।

"अच्छा! और उसे तो तेरे दादा जी ने खुद देखा होगा!" सिद्धार्थ ने कटाक्ष किया।

"और क्या! दादा जी जब खेतों पर मचान पर पहरा देते थे तो एक चुड़ैल रोज आती थी।" चेतन ने बात में गंभीरता लाने के लिए रुक-रुककर कहा।

"अच्छा! और कैसी दिखती थी वो!" सिद्धार्थ ने दाँत से ही बियर का ढक्कन खोलने की कोशिश की।

"घुटने तक खुले हुए बाल और बिलकुल न्यूड! जो भी ढका-छिपा होता था उसके बालों से ही होता था।" चेतन ने हाथ के इशारे से बालों की लंबाई बताई।

"बहुत बढ़िया। ठीक सीन बन रहा है। और आकर करती क्या थी?" रुद्र ने अपनी दोनों हथेलियाँ अपनी जाँघों पर रगड़ते हुए बेचैन होकर कहा।

"रोज आती थी!" चेतन ने बीयर की घूँट चढ़ाकर कसैला-सा मुँह बनाते हुए कहा।

"और और!" उत्सुकता से पूछते हुए रुद्र ने बीयर से सारा मुँह भर लिया।

"और दादा जी को तेल लगाती थी।"

"भाक्क साले! हँसाओ मत!" कहते हुए सिद्धार्थ हँसी के मारे लोट गया। घास के तिनके उसके कपड़े से चिपक गए। उधर रुद्र के मुँह में बीयर सरक गई।

"मत मानो! लेकिन हम जानते हैं। दादा जी झूठ नहीं बोलते।" चेतन को उन लोगों की हँसी बुरी लगी थी। सिद्धार्थ ने यह ताड़ लिया था सो उसने बात बदलने के अंदाज से कहा- "अच्छा और क्या करते थे दादा जी?"

"तेल लगवाते थे।" रुद्र ने दुबारा हँसी का गुब्बारा छोड़ दिया। अबकी दफा चेतन को भी हँसी आ गई। हालाँकि चेतन ने बात बढ़ाते हुए कहा-

"हाँ, तो करते क्या! दादा जी कहते थे कि हिलते तो मार देती।"

"मतलब वैसे ही लेटे रहते थे। कुछ नहीं हिलता था?" रुद्र ने बहुत गंभीरता से पूछा।

"हाँ! एकदम शांत! दादा जी पड़े रहते थे।" चेतन ने भूमिका बाँधी।

"जब कुछ नहीं हिलता था तो इससे तो अच्छा था कि मर ही जाते।" रुद्र ने फिर हँसते हुए कहा। सिद्धार्थ ने भी बमुश्किल अपनी हँसी रोकी और चेतन से मुखातिब हुआ-

"भाई! मेरी सुन। अब मैं एक राज की बात बताता हूँ। जो तेरे दादा जी कभी नहीं बता सकते।"

"बोलो! तुम भी बोलो।" चेतन ने बीयर की बोतल लगभग खत्म करते हुए कहा।

"वो चुड़ैल नहीं, रखैल थी। तेरे दादा जी की। ऐसी बात दादा जी कैसे बताते? इसलिए कहानी बनाई।" कहते हुए दोनों फिर बेलौस हँसने लगे।

"दादा जी के बारे में कुछ उल्टा मत बोलना।" चेतन ने गुस्साते हुए कहा।

"अबे हम दादा जी को कहाँ बोल रहे हैं? हम तो चुड़ैल को रखैल बोल रहे हैं। दादा जी तो संत आदमी थे; उनसे तो कुछ होता ही नहीं था।" सिद्धार्थ ने हँसने के कारण आँखों में आ गए पानी को साफ करते हुए कहा।

"मत मान! उड़ा ले मजाक। जिस दिन सामने आई ना, तेरी भी पौ फट जाएगी।"

चेतन ने उबाल खाते हुए कहा।

और बात खत्म करते हुए चेतन ने अभी सिद्धार्थ को दूसरी बीयर बोतल खोलने को दी ही थी कि उसे झाड़ियों के पीछे से किसी सरसराहट की आवाज सुनाई दी। वह जरा खिसककर रुद्र की ओर हो गया और बोला- "भाई मुझे लगता है झाड़ियों के पीछे कोई है।"

अभी उसने अपनी बात पूरी ही की थी कि पत्तियों की चरचराहट के साथ एक कुत्ता बाहर आ निकला और एकटक सामने खड़ी कार को ताकने लगा।

"ये कुत्ता कहाँ से आ गया!" चेतन ने डरी हुई आवाज में ही कहा।

"चिड़ियाघर से तो आया नहीं होगा। सामने रेलवे ट्रैक है। झाड़ी-झखाड़ी है। चिकेन की महक लग गई। आ गया। एक हड्डी का टुकड़ा फेंक दो, भाग जाएगा।" सिद्धार्थ ने तीसरी बोतल मुँह से लगाते हुए बेफिक्र कहा। सिद्धार्थ के ऐसा कहने पर चेतन और रुद्र दोनों ने अपने हाथ के अधखाए चिकेन के टुकड़े उसकी ओर उछाल दिए। मगर वह उन टुकड़ों से विमुख लगातार गाड़ी को निहारता रहा।

"मगर इसका ध्यान इधर है ही नहीं। ये तो गाड़ी की तरफ ही बढ़ा जा रहा है।" चेतन ने एक पत्थर उठाते हुए कहा।

"तेरे पास तो इसकी भी कोई कहानी होगी?" रुद्र ने कुत्ते की ओर से निगाह हटाते हुए कहा।

"हाँ! कुत्ते वहाँ जरूर होते हैं जहाँ चुड़ैलें, डाकिनियाँ, शाकिनियाँ, बलाएँ रहती हैं। वह उनके..." चेतन के इतना कहते ही रुद्र ने बात काट दी।

"ज्यूडिसियरी की तैयारी तुम्हारे पहले दर्जे की है राजे। मतलब भूत का सिनोनिम भी याद कर लिए हो!" रुद्र ने हँसते हुए कहा।

"अरे वो कुत्ता कहाँ गया?" चेतन ने अचानक ही गौर किया।

"चला गया अपनी मैडम के पास। तुमको कोई दिक्कत!" कहते हुए सिद्धार्थ ने कबाब उठा लिया। रुद्र भी अपनी बोतल खाली कर चुका था। चेतन पहले ही कोटा खत्म कर चुका था। अलबत्ता कबाब अब भी काफी बचे हुए थे। उसने एक कबाब उठाते हुए सिद्धार्थ से पूछा- "अबे तुम्हारी उस ट्रेन वाली नूरबाई का क्या हुआ?"

"कौन नूरबाई?" सिद्धार्थ ने आँखें तिरछी करते हुए पूछा।

"वही जो तुम्हारी सीट पर सो गई थी।"

"सो नहीं गई थी। बैठी थी। और उसका नाम मोहिनी था। वही तो नहीं समझ आ रहा यार! कौन थी! कहाँ चली गई!" सिद्धार्थ ने उदास आवाज में अपना दुखड़ा सुनाया।

"न्यू मार्केट देखा?" रुद्र ने बहुत गंभीरता से कहा।

"क्यों! वहाँ क्या है?" सिद्धार्थ ने उत्सुकता से पूछा।

"सुने हैं, वहाँ सब मिलता है। वहाँ ढूढ़ने पर बाघ का दूध भी मिल जाता है।" कहते हुए रुद्र ने चेतन के हाथ पर हाथ मारा। सिद्धार्थ ने मुँह बिचकाकर कहा- "वेरी फनी!"

"नहीं, अभी कहाँ फनी! फनी तो अभी आएगा। कहते हैं जरा और मन से खोजो तो बाप का दूध भी मिल जाता है।" कहते हुए रुद्र हँसते हुए लेट गया। उसकी हँसी सामान्य से थोड़ी तेज हो गई। और ऐसा लगा जैसे इस हँसी ने किसी की शांति में खलल डाला है। और चेतावनी आ ही गई।

'श्श्श्श!'

अचानक यह आवाज चेतन के ही कानों में गूँजी। उसे लगा जैसे कोई चुप रहने की हिदायत दे रहा हो। वह एक पल को पीला पड़ गया। मगर जब उसने अपने दोनों साथियों पर कोई प्रभाव नहीं देखा तो उसे लगा कि उसे कोई भ्रम हुआ है। फिर भी उसने दोस्तों से पूछा- "अबे, तुम लोगों ने कोई आवाज सुनी क्या?"

"कैसी आवाज?" सिद्धार्थ ने पूछा।

"ऐसे जैसे कोई होंठों पर उँगली रखकर चुप रहने को कह रहा हो!" चेतन ने इस तरह कहा कि माहौल में खौफ पसर गया। सिद्धार्थ भी एक पल को सकते में आया; मगर फिर खुद को सामान्य करते हुए बोला-

"साले, तुम लोगों की सारी बात वही भूत-पिशाच के आस-पास आकर अटक जाती है। मूड खराब कर दिए यार।" सिद्धार्थ ने सिगरेट निकालकर माचिस ढूँढ़ते हुए कहा। उसके माचिस निकालकर जलाते ही बाकी दोनों भी अपना मुँह सिगरेट जलाने की सोचकर सिद्धार्थ के पास ले गए। सिद्धार्थ ने एक-एक कर तीनों की सिगरेट जला दी। अचानक ही ऐसा आभास हुआ कि आस-पास के वातावरण में कपूर जैसी कोई सुगंध तैर गई है। सिद्धार्थ और रुद्र तो बहरहाल चुप ही रहे मगर चेतन से न रहा गया। चेतन ने फिर कहा- "अबे ऐसा लगा ना कि कोई बढ़िया-सी महक आई।"

"हाँ भोसड़ो के। खिला-पिलाकर अब रूम-फ्रेश्नर मारा जा रहा है।" सिद्धार्थ ने बात बदलते हुए कहा। लेकिन चेतन के मन में खौफ खिंच गया था।

"चलो, चला जाए यार! देर काफी हो गई। बीयर भी खत्म है अब। दो-तीन घंटे सोया भी जाए। बहुत नींद आ रही है।" चेतन ने दोनों हाथ ऊपर उठाकर अँगड़ाई तोड़ते हुए कहा।

"अबे थोड़ा रुको यार! पानी है क्या?" अचानक ही रुद्र ने उठते हुए कहा।

"क्यों! अब बियर में पानी मिला के बोतल फुल करेगा?" सिद्धार्थ ने छेड़ की।

"नहीं लाले, मेरा प्रेशर बन गया है!" रुद्र ने कहा।

"अरे यार! साला तुम लोग भी ना! जहाँ ट्रेन की पटरी देखी, वहीं प्रेशर बन जाता है?" सिद्धार्थ ने खीझते हुए कहा।

"भाई सीरियसली! हल्का होना है बस। हाथ तो धोना पड़ेगा ना। एक तो ये बियर साली...!"

"जाओ साले। उधर गाड़ी में एक्काफिना है। बाप भी नहीं सोचे होंगे कि बेटा ये रईसी करेगा। एक्काफिना से एक्का धोना करेगा।" सिद्धार्थ ने यूँ कहा कि मारे हँसी के चेतन की आखिरी बियर सरक गई।

"गोइंग टू पी साले!" कहकर रुद्र आगे की ओर बढ़ गया। मिट्टी के दो टीले उतरते ही आगे रेलवे प्लेटफॉर्म था। तीन बोतल बीयर गटक जाने के कारण रुद्र का प्रेशर कुछ ज्यादा ही था। उसने रेलवे ट्रैक पर पैर जमाए। पानी की बोतल नीचे रखी और झटके से ही पेशाब करने लगा। आराम की इस स्थिति में उसके होंठ खुद-ब-खुद गोल हुए और फिल्मी गाने की एक सीटी की धुन उसके मुँह से फूट पड़ी। अभी वह धुन पूरी कर ही पाता कि उसे भी एक धीमी 'श्श्श्श' की आवाज सुनाई पड़ी। वैसे ही जैसे कोई मुँह पर उँगली रखकर चुप रहने को कह रहा हो। ऐसे जैसे किसी की नींद में, किसी के आराम में खलल पड़ा हो। रुद्र का पेशाब एक पल को रुक गया। मगर दूसरे ही पल उसे लगा उसे बियर चढ़ गई है। उसे खुद पर कोफ्त भी हुई कि उसके दोस्त ठीक ही कहते हैं। वह बियर तक पचा नहीं पाता। यही सोचकर उसने अपने गर्दन को झटका दिया और फिर खुद को हल्का करने लगा।

अचानक ही रुद्र को आभास हुआ कि उसके दाहिने जूते पर कुछ रेंग रहा है। उसने गौर से देखा तो उसे लगा कि किसी औरत के बढ़े हुए बाल उसके जूते पर बढ़ते आ रहे हैं। उसने एक दफा फिर से चेहरे को झटका दिया। अबकी उसने और साफ देखा कि वो लंबे बाल अब बाएँ जूते पर भी रेंग रहे हैं।

रुद्र की साँस रुक जाती इससे पहले उसका पेशाब रुक गया। वह चिल्लाना चाहता था; मगर उसकी घिग्घी बँध गई। उसके मुँह से कुछ भी नहीं निकल पाया। वह पीछे मुड़ा और बिना कोई गड्ढा-पत्थर देखे दौड़ पड़ा। उसके दौड़ने से जो स्थिति बनी उससे चेतन और सिद्धार्थ भी चकित हो गए। उनके पास पहुँचते ही रुद्र हाँफते हुए ही बोला- "भाई! जल्दी निकलो यहाँ से! यहाँ कुछ सीरियस गड़बड़ है!"

"गड़बड़!" गड़बड़ का नाम सुनते ही चेतन की फूँ सरक गई; मगर सिद्धार्थ ने धैर्य रखते हुए पूछा- "कैसी गड़बड़?"

"उधर रेलवे ट्रैक पर कोई... कोई... है!" रुद्र ने हाँफते हुए ही बात पूरी की।

"क्या बकवास कर रहा है? चढ़ गई है!" सिद्धार्थ ने बात को सिरे से खारिज करते हुए कहा।

"घंटा चढ़ गई है! उतर गई है। गाड़ी स्टार्ट करो और निकलो!" रुद्र ने आगे बढ़ते हुए कहा ही था कि सिद्धार्थ ने उसका हाथ पकड़ लिया और व्यंग्य करते हुए कहा।

"शर्ट के नीचे बनियान ही पहनता है ना कि कुछ और पहनता है! साले कैंडी ऐस!" सिद्धार्थ ने अँग्रेजी फिल्मी गाली दी। उसकी गाली का रुद्र पर कोई असर नहीं पड़ा। उसने बदहवासी की उसी अवस्था में कहा-

"अभी निकलो यहाँ से! हॉस्टल पहुँच के शर्ट-पैंट सब खोल के दिखा देंगे!" रुद्र के चेहरे पर सचमुच वहशत दिख रही थी। मगर सिद्धार्थ उसे लेकर अब भी गंभीर न था। दरअसल उसका कारण भी था। सिद्धार्थ की सोच में एक चमक-सी आ गई थी। वह जिस काम के लिए आया था, उसे वह पूरा होता दिख रहा था। उसे लगा था कि वह स्टेशन से महज सौ मीटर की दूरी पर है इसलिए मोहिनी कहीं आस-पास ही है और चेतन उसे ही देखकर डर गया है। ऐसी जगहों में मोहिनी को उसके अलावा

कोई भी देखे तो डर ही सकता है। यही सोचकर उसने रुद्र को समझाते हुए कहा-

"सुन! अगर ऐसे लौट जाएँगे ना, तो जिंदगी भर तू इस बेवकूफी में जिएगा कि वहाँ कोई था और अपने बच्चों को भी यही सब बताएगा। भ्रम और अंधविश्वास इसी तरह से फैलता है। तेरा वहम दूर करना बहुत जरूरी है। तू एक मिनट दे; मैं वहीं से होकर आता हूँ। फिर तुम दोनों को भी बुलाता हूँ।" कहते हुए सिद्धार्थ बढ़ गया। उसके जाते ही खूब डरे हुए रुद्र ने चेतन से कहा-

"सुन! ये बंगाली हरक्युलिस अभी बाप-बाप करता सुनाई देगा। उसके आने से पहले ये क्रेट उठा ले और गाड़ी की चाभी है ना!"

"हाँ! हाँ! है।" चेतन ने क्रेट उठाते हुए कहा। रुद्र के डर ने चेतन को और भी डरा दिया था। कारण यह था कि सामान्य स्थिति और दुनियावी मुश्किलों से डरने वाला इंसान रुद्र था ही नहीं। यदि वह डरा हुआ था तो यह चेतन के लिए लाजिमी डरने की बात थी।

उधर सिद्धार्थ अभी पहला टीला ही पार कर पाया था कि उसे एक रूहानी सिहरन का आभास हुआ। ऐसे जैसे कोई आस-पास ही साँस ले रहा हो। साँसों की आवाज इतनी तो थी ही कि माहौल को खौफजदा कर जाए। सिद्धार्थ मगर इस कारण से सामान्य ही था कि वह साँसों कि ऐसी ही आवाज एकदफा पहले भी सुन चुका था। उसे लग रहा था कि मोहिनी फिर कहीं आस-पास है और उसे और उसके दोस्तों को परेशान कर रही है।

मगर सामने के बलुई चट्टान पर पाँव रहते ही बलुई पत्थर भरभराकर टूट गया और उसके साथ ही सिद्धार्थ का यह भ्रम भी टूट गया। बलुई चट्टान के टूटने से सिद्धार्थ असंतुलित होकर गिर पड़ा। और जब वो सँभला तो साँसों की आवाज थोड़ी और तेज हो गई थी। हाथ-पाँव झाड़ते हुए ही उसने आ रही साँसों की आवाज की ओर नजर की। और...

सामने का मंजर देखकर उसकी रूह काँप गई। वह ठिठक गया। नहीं नहीं! दरअसल उसके पाँव जम गए। वह आगे बढ़ ही नहीं पाया। क्योंकि बदन में दौड़ रहे लहू को यकलख्त जमा देने वाला नजारा सामने था। उसने देखा कि सामने पटरी पर लंबे बालों वाली एक औरतरूपी काया पटरी पर लेटी हुई है। यूँ जैसे कोई दोनों पटरियों से कट जाने को लेटा हो। काया जिसके आँखों के नीचे का काजल बहकर पसर गया है। सफेद कफनी जैसे ढीले कपड़े में लिपटी उस काया के बाल उसके पाँवो को छू रहे हैं। अचानक ही उस काया ने चेहरा उठाया और एक विस्मय भरी मुस्कान से सिद्धार्थ को देखा। काया चारों पाँवों पर सरकते हुए सिद्धार्थ की ओर बढ़ने लगी।

"भागो सालो!" भय से पीली पड़ी एक आवाज हवा में तैर गई।

अगली चीज जो चेतन और रुद्र ने देखी वह सिद्धार्थ को कार की ओर बेतहाशा दौड़ता हुए देखा। सिद्धार्थ का दौड़ना था कि वह दोनों भी कार की ओर भागे और सिद्धार्थ से पहले पहुँचे। चेतन ने कार की ड्राइविंग सीट सँभाली और रुद्र अगली सीट

पर बैठा। उसने बैठने से पहले कार का पिछला दरवाजा खोल दिया था। चेतन ने बिलकुल भी वक्त नहीं लिया और गाड़ी स्टार्ट कर धीमे ही दौड़ाना शुरू किया। सिद्धार्थ दौड़ते हुए ही कार में बैठा और दरवाजा बंद कर बोला-

"भागो बे! ये जगह सचमुच हॉन्टेड लगती है।"

"लगती है! साक्षात दर्शन कर के आ रहे हो अब भी तुम्हें शक ही है! ये जगह हॉन्टेड ही है! जल्दी निकाल बे!" रुद्र ने चेतन से कहा। चेतन ने रुद्र के कहने के पहले ही गाड़ी तेज कर दी थी। मगर अभी पक्का रास्ता आया भी नहीं था कि रुद्र ने देखा कि कार के साथ-साथ वही कुत्ता गाड़ी के पीछे-पीछे दौड़ रहा है।

"साला! ये तो वही कुत्ता है! अचानक कहाँ से आ गया!" रुद्र ने कहा और कुछ बुदबुदाना शुरू कर दिया। सिद्धार्थ ने भी उधर उलटकर देखा। कुत्ता वाकई कार के साथ-साथ ही दौड़ता आ रहा था।

"बेटा! इसके साथ भी कुछ गड़बड़ है। चेतन, स्पीड स्लो मत करना भाई! स्पीड स्लो हुई तो हम लोग आज गए।" कहकर सिद्धार्थ ने चेतन का डर और बढ़ा दिया था। हालाँकि असगर अली की गाड़ी का स्पीडोमीटर जमाने से खराब था। फिर भी चेतन पहले ही गाड़ी काफी तेज चला रहा था और अब तो पक्की सड़क पर आ जाने के चलते गाड़ी 80 के ऊपर ही थी। पक्की सड़क पर आते ही सब ने एक चैन की साँस ली। सुकून की एक बात यह भी थी कि देर तक कच्ची सड़क पर साथ दौड़ने वाला कुत्ता अब दिखाई नहीं दे रहा था। चेतन ने बहरहाल स्पीड में कोई कमी नहीं की। गाड़ी उस जगह से बीस-पच्चीस किलोमीटर आगे हाइवे पर आ गई। कुछ मिनट तक शांति रही। इस कुछ मिनट की शांति में भी रुद्र का बुदबुदाना जारी रहा जो कि अब साफ सुनाई दे रहा था-

"मात भैरवी नजर घुमाईं, कामिनी, क्षोभीणी से छुड़ाईं
वेश बंडी से छुड़ाईं, घोररूपिणी, चंडालिनी से छुड़ाईं
मारिणी, वारिणी से छुड़ाईं, ओकली बोकली से छुड़ाईं
अलाय बलाय से छुड़ाईं नटनी कुटनी से छुड़ाईं
जुंभीनी स्तंभिनी से छुड़ाईं, दुहाई दुहाई हजार दुहाई
मात भैरवी नजर घुमाईं, मात भैरवी नजर घुमाईं।"

रुद्र लगातार बुदबुदाता रहा। दो एक-बार सुनने के बाद चेतन समझ पाया कि वह कोई रक्षा मंत्र बुदबुदा रहा है। हादसा पीछे छूट चुका था। इसलिए उसने खुद और उन दोनों को भी सामान्य करने के उद्देश्य से कहा-

"साले! हमें तो कह रहे थे कि सिनोनिम याद किए हैं। तुम तो पूरा थिसारस रट के बैठे हो।" कहते ही कार में बना तनावपूर्ण माहौल थोड़ा कम हो गया मगर डर फिर भी कायम रहा। रुद्र बहरहाल थोड़े धीमे स्वर में बुदबुदाता ही रहा।

और थोड़ी देर तक मुर्दा शांति छाई रही। कोई कुछ नहीं बोला। सब गुजरे हुए हादसे को जोड़कर कुछ एक राय निकालने की कोशिश अपने मन में कर ही रहे थे कि सामने सड़क पर देखते ही सिद्धार्थ की चीख निकल गई-

"होली शिट!" सिद्धार्थ कॉप गया।

"अब क्या हुआ?" चेतन ने ही पूछा।

"वी आर डेड! वी आर फ्रीकिंग डेड!" सिद्धार्थ ने चेहरे पर वही दहशत खींचते हुए कहा।

सिद्धार्थ ने देखा कि सामने का हौलनाक मंजर कलेजा निकाल लेने वाला था। सामने लगभग सौ मीटर पर वही काया रुकने का इशारा करती हुई सड़क के ठीक बीचोबीच खड़ी थी। सिद्धार्थ के जिस्म पर मौजूद एक-एक मसाम में चिनचिनाहट-सी दौड़ गई। हाथ-पाँव तो बहरहाल सब ही के फूल गए। रुद्र का मंत्र पढ़ना तेज हो गया था। चेतन के हाथ-पाँव काम करने बंद हो गए थे। गाड़ी लगातार काया के निकट होती जा रही थी। रुद्र ने आँखें मूँद रखी थी। सिद्धार्थ ने चेतन के कान में लगभग चिल्लाते हुए कहा-

"चेतन! कुछ भी हो जाए गाड़ी धीमी नहीं करनी। गाड़ी रोकना मत!"

"क्या? गाड़ी रोकना मत! लेकिन रोकनी क्यों है?" चेतन ने गाड़ी औसत रफ्तार से ही आगे बढ़ाई। सिद्धार्थ समझ गया था कि चेतन को फिलहाल कुछ समझाना या बातों में उलझना बेकार है। उसने फौरन कहा-

"गाड़ी रोक!"

"भाई, डिसाइड कर ले करना क्या है?" चेतन ने खुंदक में कहा और गाड़ी एकदम रोक दी। सिद्धार्थ ने देखा कि काया भी गाड़ी के रुकते ही लगभग पचास मीटर की दूरी पर रुक गई है।

"पीछे आ! आई विल ड्राइव!" कहते हुए सिद्धार्थ ने पीछे की सीट पर चेतन के लिए जगह बनाई। अनमने से ही मगर चेतन कसमसाते हुए पीछे की सीट पर आ गया। सिद्धार्थ भी उसी तरह बंद कार में ही ड्राइविंग सीट पर जा पहुँचा।

सड़क के ठीक बीचोबीच रुकी कार और आगे पचास मीटर पर डोलती काया के बीच अगर कुछ था तो वो थी हौलनाक खामोशी और दहशतजदा आँखें।

अचानक इस खामोशी को तोड़ा कार के इंजन ने। सिद्धार्थ ने इग्नीशन स्टार्ट किया और एक दफा फिर काया की ओर देखा। साफ था कि सिद्धार्थ ने तय कर लिया था कि वह गाड़ी उस पर चढ़ा देगा। मगर यह साफ नहीं था कि क्या वह हटेगी! उम्मीद तो नहीं मगर इतना सब देखने, सोचने, समझने का वक्त भी नहीं था। उसी रफ्तार से काया के पास आते वक्त सिद्धार्थ ने जो अंतिम चीज देखी वो उसकी कुटिल मुस्कान थी। उसके बाद वो कुछ देख नहीं पाया। गाड़ी किसी शफ्फाफ आईने की तरह पार हो गई और उसी रफ्तार से भागती रही।

पाँच मिनट गाड़ी भगाने के बाद जब सिद्धार्थ ने पहली साँस ली तब उसने गौर किया कि तीनों में से किसी के चेहरे पर सुकून का लेशमात्र भी नहीं है। कारण यह था कि यह बात भी पक्के तौर पर नहीं कही जा सकती थी कि वह आगे कहीं नहीं मिलेगी। यह किसी बुरे सपने की तरह चल रहा था। सब चाहते थे कि अब बस यह सपना खत्म हो। किसी तरह यह रास्ता हॉस्टल तक पहुँचे। हजार लानत ऐसे नाइट

आउट पर।

सपनों के साथ अच्छी और बुरी दोनों बात यह है कि उसे खत्म हो जाना होता है। इस सपने को भी खत्म होना था। हॉस्टल आ गया था। चेतन ने सबसे पहले लगभग चलती कार से उतरकर हॉस्टल गेट की डुप्लिकेट चाभी से मेन गेट खोला। रुद्र ने चुपके से क्रेट उठाए और हॉस्टल में दाखिल हो गया। सिद्धार्थ ने धीमे से गाड़ी निश्चित जगह पर पार्क कर दी और तेजी से भागकर हॉस्टल में दाखिल हो गया। हादसाती रात खत्म हुई थी। एक बला टल गई थी।

मगर क्या सचमुच बला टल गई थी? नहीं। बला तो साथ आई थी। और अगर किसी के पास गैर-दुनियावी आँखें हों तो वह देख पाता कि वह कार के पीछे की सीट पर बैठी हुई साथ ही चली आई थी।

हॉस्टल पहुँचकर कपड़े बदलते हुए चेतन को ध्यान आया कि उसने कार के शीशे तो बंद ही नहीं किए। अचानक रुद्र को लेकर चेतन बाहर आया। और शीशे बंद करने शुरू किए। आगे के दोनों शीशे रुद्र ने बंद कर दिए। पीछे का एक शीशा चेतन ने आसानी से बंद कर दिया। मगर चौथा शीशा दोनों की कोशिश के बाद भी बंद नहीं हुआ। जन्म और मृत्यु के पार देख पाने वाले ही जान पाते कि चौथा शीशा इसलिए बंद नहीं हो रहा था क्योंकि काया ने उस पर अपने हाथ रख दिए थे। हारकर असगर अली की बपौती खटारा फिएट को गालियाँ देते हुए दोनों हॉस्टल में घुस आए।

काया, जो साथ आई थी, कार के भीतर से ही हॉस्टल को घूरती रही।

***

# वो आ गई है

असगर अली। हॉस्टल के वार्डन और आईपीसी के प्रोफेसर। मजेदार इंसान। उर्दू और क्रिकेट से इतना प्यार कि बस चलता तो आईपीसी की जगह आईपीएल पढ़ते-पढ़ाते। उर्दूदाँ होने के कारण ही हिंदी के कई शब्दों का उच्चारण ही बदल देते हैं। कविगुरु भारती विश्वविद्यालय से ही पढ़ाई की और यहीं लेक्चरार हो गए। दबी-दबी फुसफुसाहट इस बात की भी रही कि बेगम से नहीं बनती। बेगम पुराने डीन साहब की बेटी थी सो रुतबा-रुआब ही अलग था। इसीलिए असगर अली खाली वक्त में या तो लाइब्रेरी में किताबें चाटते या ओल्ड चाइना मार्केट की इंपीरियल अफीम। और उससे भी समय बच जाता तो हॉस्टल पहुँचकर बच्चों के दिमाग चाटना उनकी शौक का हिस्सा नहीं, मजबूरी थी।

इन दिनों हॉस्टल में फर्स्ट ईयर के बच्चे भी आ गए थे; सो रैगिंग को लेकर भी असगर अली की जिम्मेदारी बढ़ गई थी। वो आजकल लगभग हर शाम ही हॉस्टल के चक्कर लगा लिया करते थे। सिद्धार्थ, चेतन और रुद्र की तिकड़ी पर उन्हें विशेष शक था। इसलिए वह नये आए लड़कों से गाहे-ब-गाहे पूछते भी रहते थे। मगर जूनियर भी जानते थे कि किससे लगाव और किससे बिगाड़ रखना है। सो काम भर की रैगिंग सह लेने के बाद भी वह हॉस्टल की बात बाहर नहीं करते थे। आज भी जब सीनियर और जूनियर हॉस्टल में क्रिकेट खेल रहे थे तो असगर अली हॉस्टल आए। उनके आते ही कुछ दिखावे के पढ़ने वाले सीनियर और कुछ डरने वाले जूनियर अपने-अपने कमरे की ओर रवाना हो गए। सिद्धार्थ बहरहाल बैटिंग करता रहा और आज की रैगिंग की 'पकड़' कमल नाम के जूनियर से गेंद करवाता रहा। चेतन और रुद्र भी मैदान में ही जमे रहे। असगर अली हाथ बाँधे हुए हॉस्टल के दोनों तल्लों का एक पूरा चक्कर लगा आए। थोड़ी देर वह सिद्धार्थ को बैटिंग करते और कमल तथा चेतन को गेंद डालते देखते रहे। मगर जब उनसे रहा नहीं गया तो हाथ खोलकर मैदान में उतर आए। उन्होंने आस्तीन मोड़ी और सिद्धार्थ से बल्ला माँगा। सिद्धार्थ ने चुपचाप एक मुस्कुराहट के साथ बल्ला दे दिया। और खुद फील्डिंग करने में मुब्तिला हो गया। असगर अली ने पकिये बल्लेबाज की तरह तीन बार बल्ला जमीन पर पटका और कमल से बोले- "गेंद डालिए कमाल!"

कमल गेंद डालने से पहले ही हथियार डाल बैठा। वह दरअसल असगर अली द्वारा अपने गलत नाम पुकारे जाने से आहत था। नाम ठीक बताने के बावजूद आदत से मजबूर असगर अली उसे कमल की जगह कमाल ही पुकारते थे। इस दफा जब उन्होंने फिर कमाल पुकारा तो उसने अपनी समझ के अनुसार बड़ी अदालत में शिकायत लगाई। उसने रुआँसी आवाज में कहा-

"सर, इन्हें कहिए न कि मेरा नाम कमाल नहीं कमल है। ये तो मेरा धर्म ही बदल दे रहे हैं।"

"चुपचाप गेंद डाल। वरना ये कमरा भी बदल देगा। और वो लड़की कौन है जिसके

साथ तू कैंटीन में बैठा था?" रुद्र ने अलग ही मामला खोल दिया।

"दुखिया है बेचारी।" कमल ने तीन का जवाब तेरह दिया।

"अच्छा! तुझे कैसे पता?" रुद्र ने पूछा

"उसके साथ किसी रजनी नाम की सीनियर ने बहुत बुरी रैगिंग की है।" कमल ने जैसे ही रजनी का नाम लिया तो रुद्र की हँसी छूट गई। उसने फिर हँसी दबाते हुए पूछा- "अच्छा! जानता है रजनी कौन है?"

"होगी कोई मेरी बला से। लेकिन ऐसे कोई रैगिंग लेता है क्या?" कमल ने झटके में कहा।

"पहली लाइन तूने ठीक कही।" रुद्र ने उसके कंधे पर थपकी देते हुए कहा।

"मतलब?" कमल शायद हँसी का मर्म नहीं समझ पाया।

"मतलब ये कि वो तेरे लिए बला ही है बेटा।" रुद्र ने गेंद कमल की ओर उछाल दी।

"क्यों सर!"

"क्योंकि वो तुम्हारे चेतन सर की वही है जिसके लिए तू उस दुखिया से चोंच भिड़ा रहा है।" रुद्र ने फुसफुसाया। यह सुनते ही कमल के होश उड़ गए। वह लगभग गिड़गिड़ाते हुए ही बोला-

"ये क्या गलती हो गई सर! माफ कर दीजिए सर!" कमल अपनी गलती की माफी माँगता रहा और उधर बातों के कारण हो रही देरी से असगर अली खीझ गए-

"आप लोग क्या खुसर-फुसर कर रहे हैं? गेंद डालिए।" असगर अली के भीतर का प्रोफेसर, क्रिकेटर की शक्ल में बोला।

उनके इतना कहते ही कमल ने हड़बड़ाते हुए ही धीमे से बाएँ हाथ से गेंद फेंक दी। जिस पर पीछे हटकर असगर अली ने लॉन्ग ऑन की ओर बल्ला घुमाया और फिर खुद की ही शॉट की नकल करते हुए बोले-

"वाह! आप तो बिलकुल 'सास तेरी' की तरह बॉल डाल रहे हैं कमाल!" कमल अपने नाम का धर्म परिवर्तन तो समझ गया था मगर अब सास का आगमन नहीं समझ पाया। उसने फिर उसी तरह रूआँसे होकर गेंद मलते हुए रुद्र से ही कहा-

"सर ये तो लंबा प्रोग्राम कर रहे हैं। मेरी सास के बारे में इनको कैसे पता है जबकि मुझे अभी अपनी बीवी के बारे में भी ठीक से नहीं पता?"

"और उससे भी खतरनाक बात ये है राजे कि सास तेरी बॉलिंग भी करती है। विकेट उखाड़ देगी!" रुद्र के इतना कहते ही चेतन और रुद्र हाथ पर हाथ मारकर हँस पड़े। चेतन ने बहरहाल अपनी हँसी रोकते हुए कमल से बॉलिंग रन अप में ही कहा-

"वो सास तेरी की नहीं शास्त्री की बात कर रहा है। तू टेंशन न ले। ये तेरा धर्मपरिवर्तन कर रहा है। तू इसका लिंग परिवर्तन कर दे।"

"मतलब?" कमल समझ नहीं पाया था।

"मतलब ये मेरे मम्मी के लाडले, कि इसके मध्यांतर पर गेंद मार!" चेतन ने समझाया।

"हॉ हॉ, इसका अक्षांश और देशांतर एक कर दे!" रुद्र ने भी हॉ-में-हॉ मिलाई।

"सर! मैं कुछ समझा नहीं!" भोलेपन से कमल ने कहा।

"ये ही तेरी रैगिंग है बेटा! अगर गेंद निशाने पर लगी तो तेरी छुट्टी... वरना..." रुद्र ने लगभग धमकी के अंदाज में कहा।

"वरना!" कमल ने डरे हुए अंदाज में ही धमकी दुहराते हुए पूछा।

"वरना जो तेरी रजनी मैडम ने तेरी उस दुखिया के साथ किया था उसका आइडिया मैंने ही उन्हें दिया था।" चेतन ने कहा, जिसे सुनकर कमल का गला सूख गया। कमल ने फौरन अपनी रन-अप औकात से ज्यादा बढ़ाई और तेज दौड़कर आते हुए अपने औकात से तेज गेंद डाली।

कमल ने जो गेंद डाली वह बुरी नहीं थी। मगर असगर अली ज्यादा अच्छे खिलाड़ी थे। एक पाँव पीछे हटाकर उन्होंने जो गेंद कवर की तरफ हौंकी तो गेंद सिद्धार्थ के कान के पास से सीटी बजाती हुई निकल गई। सिद्धार्थ ने छाती पर हाथ बाँधकर गुस्से से कमल की ओर देखा जिस पर मुदित होते हुए असगर अली बोले-

"बरखुरदार! गेंद ले आएँ। मेरी कार की जानिब गई है। और अगले ओवर में आप आएँ।" असगर अली ने बल्ला हाथ में नचाते हुए चेतन से कहा। सिद्धार्थ बहरहाल घूरते हुए ही गेंद की तरफ धीमे कदमों से ही चला। गेंद झाड़ियों, घासों और गेट से होती हुई बाहर खड़ी असगर अली की कार के नीचे चली गई थी।

उधर सिद्धार्थ गेंद की तरफ लपका और इधर चेतन और रुद्र बॉलिंग क्रीज पर कमल के पास पहुँच गए। पहुँचते ही चेतन ने आस्तीन मोड़ी और कदमों से रन-अप नापता हुआ बोला-

"चलो हटो बेटा! झंडा ऊँचा कर दिए तुम हॉस्टल का। पचास साल का आदमी जो छक्का नहीं मार सकता, चौका मार दिया। कल सुपरमैन बना के जलेबी खिलाते हैं तुम्हें।"

"सॉरी सर!" कमल ने मुँह झुकाते हुए कहा।

"बॉयज हॉस्टल में सॉरी नहीं चलता। वो गर्ल्स हॉस्टल के लिए बचाकर रखो।" चेतन ने अब तक बॉलिंग रनअप से छह कदम नाप लिए थे। चेतन अभी कमल से बात कर ही रहा था कि रुद्र ने कमल को टोका-

"कितना अच्छा लग रहा है ना कि सीनियर बॉल लाने गया है और जूनियर यहाँ पाँव में मेहँदी का डिजाइन डिसाइड कर रहा है!"

"सॉरी सर!" कमल की समझ में अब बात आ गई। वह फौरन गेंद की तरफ लपका। मगर तब तक सिद्धार्थ पहुँच चुका था।

सिद्धार्थ जब कार तक पहुँचा तो उसे गेंद नहीं दिखी। हाँ! मगर उसे अजीब-सी ठंड का एहसास हुआ। ऐसा लगा जैसे नीचे से घुटने तक का हिस्सा बर्फीली हवा के प्रभाव में आ गया है। उसे लगा कि कहीं ऐसा तो नहीं कि असगर अली की कार का एसी चालू रह गया हो। यही सोचकर वह चिल्लाकर पूछने को पीछे की ओर मुड़ा। मगर फौरन उसे याद आया कि गाड़ी में एसी है ही नहीं। फिर उसने इसे अपने मन

का भ्रम मान लिया और बॉल निकालने के लिए कार के नीचे झुका।

और जो वह देख पाया उसे देखकर उसकी धड़कने रुक गईं। उसके मुँह से फिर चीख निकल गई। उसने देखा कि कार के नीचे वही काया बॉल के ठीक पास मौजूद है और एक टक उसकी ओर देख रही है।

"वॉट द फ..." कहते हुए सिद्धार्थ खौफ के मारे कार से दूर छिटक गया। काया उसे गिरा हुआ देखकर आगे बढ़ी और अभी उसके हाथ कार की छाया के बाहर आए ही थे कि किसी के पाँव वहाँ आकर जम गए। काया के हाथ फौरन कार के भीतर की ओर चले गए। पाँव कमल के थे। कमल ने सिद्धार्थ को सड़क पर धूल धूसरित देखकर पूछा- "क्या हुआ सर?"

सिद्धार्थ ने देखा कि उसके सिर पर कमल खड़ा है। कमल ने देखा कि सिद्धार्थ सड़क से हटकर लगी गाड़ी के ठीक सामने सड़क के लगभग किनारे अजीब हास्यास्पद मुद्रा में लेटा लग रहा था। ऐसे जैसे कोई मताल शराबी सड़क पर पड़ा धूल चाट रहा हो।

"वो वो! कार के नीचे!" सिद्धार्थ ने लगभग दहशत में ही बताया।

"हाँ कार के नीचे ही तो!" कहते हुए कमल झुका और हाथ में बॉल लिए आ गया। और फिर बोला- "सर ने तो कहा ही था कि कार के नीचे ही तो बॉल है। मगर आप यहाँ ऐसे क्यों लेटे हैं?"

"लेटा नहीं हूँ। वर्जिश कर रहा था। अगली ओवर करनी है मुझे। चल दिखाता हूँ, निशाना कैसे लगाते हैं।" सिद्धार्थ ने जैसे-तैसे जूनियर के सामने अपनी लाज बचाई। हालाँकि वह अब भी उस परछाईं के दहशत से नहीं निकल पाया था।

"निशाना तो चेतन सर लगाएँगे।" कहते हुए कमल ने गेंद उछालकर चेतन की ओर फेंक दी और हाथ देकर सिद्धार्थ को उठाया। सिद्धार्थ उठकर एक दफा फिर पीछे देखता हुआ कमल के साथ हॉस्टल की ओर चल दिया। अबकी दफा भी एक सर्द हवा का झोंका उसके पाँव के निचले हिस्से को सहला गया। उसने जोर-जोर से पागलों की तरह अपने पाँव को झटका। जिसे देखकर कमल डर गया। सिद्धार्थ को लगा कि वह जूनियरों के बीच हँसी का पात्र बन जाएगा और उसे थोड़े अकेलेपन की जरूरत है। सो हॉस्टल के भीतर आते ही वह कूलर का पानी चेहरे पर मारकर चबूतरे पर अकेला बैठ गया। उसे लगा कि देर रात तक जागने के कारण ही उसके साथ यह सब बुरा हो रहा है।

मगर बुरा तो असगर अली के साथ होना बदा था।

गेंद हाथ में आते ही चेतन ने उसे गीली घास पर रगड़ दिया। शाम की ओस जब गेंद के एक भाग से नहा गई तो उसने गेंद उठाई और रन-अप के लिए चला। वह इतनी देर में देख चुका था कि असगर अली एक स्टांस आगे लेकर फिर पीछे जाते हैं। इस तरह वह गेंद को खुद तक पहुँचने के लिए एक-आध सेकंड का अतिरिक्त वक्त दे देते हैं, जो उनकी मजबूती है। मगर मर्द की एक कमजोरी भी तो होती है। वही कमजोरी चेतन का निशाना था। वह जानता था कि गेंद के टप्पा खाते ही असगर

अली पीछे जाएँगे और पॉइंट की ओर खेल देंगे।

सो उसने तय किया कि गेंद टप्पा ही नहीं खाएगी। सीधे असगर अली के जाँघों के बीच धप्पा दे देगी। बाएँ हाथ से फेंकी गेंद ने अपना सफर हवा में ही तय किया। ओस के कारण हवा में ही किसी शराबी की तरह हिली और सीधे जाँघों के बीच ठीक वहीं लगी जहाँ मर्द को दर्द सबसे ज्यादा होता है। विकेटकीपर ने सुना कि 'ईईई' जैसी कोई आवाज असगर अली के दाँतों के बीच से आई। और फिर असगर अली हँसने और रोने के बीच की स्थिति में दाँत निपोरकर रह गए। वह दरअसल बैठ जाना चाहते थे। मगर पद, स्थान और उम्र इस बात की गवाही नहीं देते थे। वह खींसे निपोरकर रह गए।

चेतन चिल्लाया- "सर! अक्षांस-देशांतर ठीक हैं?"

"मतलब!" दर्दीली आवाज में असगर अली इतना ही बोल पाए।

"मतलब सॉरी सर! हाथ से छूट गया।" चेतन ने बात बदल दी।

"और इसका फूट गया!" ऊपर से समवेत स्वर में छुपकर खेल देख रहे लड़के चिल्लाए। असगर अली उसी अवस्था में बैट थमाकर बाहर निकल गए। सारे हॉस्टल में शोर मच गया। कमल बच्चों-सा खुश होता हुआ बोला-

"सर! असगर सर के बाल-बच्चे तो हैं न?"

"क्यों?" चेतन ने पूछा।

"नहीं सर! क्योंकि अब होने की उम्मीद तो नहीं रही।" कहकर वह ठहाका मारकर हँसने लगा।

"उनकी चिंता छोड़! तू अपनी जलेबी विथ सुपर मैन की तैयारी कर!" रुद्र ने भी हँसते हुए ही कहा।

"हाँ सर! आपने कहा तो था। वो क्या होता है सर?"

"वो ये होता है बेटा कि तू पहले पैंट पहनेगा। उसके ऊपर चड्डी पहनेगा। और फिर हम तुझे बाजार में जलेबी खिलाने ले जाएँगे।" रुद्र ने हँसते हुए ही बात खत्म की।

***

# डाक बंगला

हॉस्टल। घर के सुरक्षात्मक परिवेश से निकले बच्चों का पहला ठीहा होता है। वह पहला ठौर जहाँ पहली दफा जेहनी उरूज, दिमागी विकास बिना किसी बाहरी सहायता के होता है। यह बाहरी दुनिया में निकलने और बाहरी दुनिया में खुद को बनाए रखने के लिए की जाने वाली मशक्कत की आजमाइश का मुहल्ला होता है। जहाँ हर दिमाग अपने खुद के अनुभवों से सीखता है। चाहे एक-दूसरे की मदद से, चाहे एक-दूसरे की चुहल से, चाहे परस्पर प्रतिस्पर्धा से या परस्पर ईर्ष्या से।

ईर्ष्या। इस उम्र का एक मौलिक गुण। यशरंजन को सिद्धार्थ से ही नहीं, ऐसा लगता था तीनों से ही ईर्ष्या थी। यशरंजन की अपनी सोच थी, जिसमें तीनों दोस्तों की जीवनशैली फिट नहीं बैठती थी। मसलन यश को बिला नागा चार बजे भोर में पूजा करने की आदत थी और चेतन और सिद्धार्थ के सोने का वक्त ही चार बजे का था। सो एक-दो दफा चेतन ने और एक दो-दफा सिद्धार्थ ने उसे पूजा के बाद देर तक घंटी न बजाने के लिए कहा था। जिसका असर उस पर इतना ही हुआ था कि अब वह उनके दरवाजे के बाहर थोड़ी ज्यादा ही देर तक घंटी बजाया करता था। परेशानी तो होती ही थी। मगर चेतन यह कहकर सिद्धार्थ को समझा लेता था कि 'जाने दे! हमसे भी तो कुछ लोगों को परेशानी होती होगी। यही जब्त सीखने की जरूरत है। यही संयम सीखने का वक्त है।'

बहरहाल यश की समस्या बढ़ते-बढ़ते रुद्र तक भी पहुँच गई थी। हॉस्टल में जाति-भेद करने की उसकी पुरानी आदत थी और क्योंकि रुद्र और वह एक ही समुदाय से आते थे इसलिए उसने रुद्र को जातिगत आधार पर कुछ समझाया था और दोनों से दूरी बरतने की सलाह दी थी। जिसकी शिकायत रुद्र ने वार्डेन असगर अली से की थी। झगड़े की जड़ यही थी।

यशरंजन आज आठ-दस लड़कों के साथ अपने कमरे में ही था जब चेतन और रुद्र मेस जाने के लिए उसके कमरे के पास से गुजरे।

"रुद्र! जरा सुनना।" यशरंजन के कमरे से ही आवाज आई। दोनों ही ठिठक गए। एक बारगी तो मन हुआ कि मेस की ओर बढ़ चलें मगर फिर कुछ सोचकर यश के कमरे में घुस गए। आठ-दस लड़के थे। सबके चेहरे किसी विशेष विषय पर मनन करने के बाद चुप पड़े थे। रुद्र ने शायद गौर नहीं किया पर सारे ही लड़के यश के हाँके हुए स्वजातीय ही थे। बोलने का ख्वाहिशमंद हर कोई था मगर शुरुआती बोल किसी के नहीं फूट रहे थे। ऐसी स्थिति में यश ने ही मुँह खोला- "तुमने असगर अली से मेरी शिकायत की है?"

"किसने कहा?"

"खुद सर ने!"

"अब सर तो झूठ नहीं बोलेंगे।" रुद्र ने दंभ से कहा।

"क्या लिखकर दिया है तुमने?" यश ने हाथ के कड़े को घुमाते हुए कहा।

"शायरी।" रुद्र ने अड़ियल-सा जवाब दिया।
"मतलब?" यश ने पूछा।
"कुछ खौफे खुदा कीजिए इस तरह न चलिए
सौ बार तो इस चाल पे तलवार चली है।" रुद्र ने बिना रुके किसी शायर का शेर किसी शायर की तरह ही कह दिया।
"व्हाट द हेल डज इट मीन?" यश को दरअसल कुछ समझ नहीं आया।
"मतलब यह कि यही शिकायत किए हैं कि तुम्हारी चाल से मेरे सीने के टाँके टूट-टूट जाते हैं।" रुद्र ने इस तरह कहा कि चेतन सहित दो-चार और लड़कों की हँसी फूट गई।
"देखो रुद्र!" यश ने अबकी तैश में कहा।
"दिखाओ!" रुद्र ने फिर भी प्यार से कहा।
"नप जाओगे!" यश ने सीधी जुबान में टेढ़ी धमकी दी। मामला थोड़ा गंभीर हुआ। मुट्ठियाँ भींचने ही लगी थीं कि रुद्र, चेतन को अकेला छोड़ तेजी से कमरे से बाहर निकल गया। चेतन को अचानक ही खतरे का अंदेशा होने लगा। सामने ही मेस भी था। डर हुआ कि कहीं वह मेस से चाकू-छुरी लिए हुए न आ जाए। रुद्र आँधी की तरह गया और लौटती आँधी की तरह ही वापस आ गया। चेतन उसे पकड़ने को ही हुआ तो उसने चेतन को आँखों से ही दूर रहने का इशारा कर दिया। वह आगे बढ़ा। सबने देखा कि उसके दाहिने हाथ में केमलिन का पारदर्शी स्केल है। उसने उसे यश को देते हुए कहा-
"नापिए ना! प्लीज नाप दीजिए। देखिए इनकार मत कीजिएगा। आपने अभी-अभी कहा है। नप जाओगे।" उसके बात का निहितार्थ समझकर चेतन वही बिस्तरे पर लोट-पोट हो गया। दो-चार लड़के भी इसी तरह मुस्कुरा दिए।
"गेटआउट!" यश ने दरवाजा दिखाते हुए कहा।
"अरे अभी अपनी दिखाने की बात कर रहे थे। फिर मेरी नापने की। और अब दोनों में से कुछ भी नहीं कर रहे हो! ऐसा कोई करता है! बुला के कोई भगाता है भला!"
"चल साले!" कहते हुए चेतन, रुद्र को लगभग खींचता हुआ कमरे से बाहर ले आया और बाहर लाकर अपनी हँसी रोककर पूछा- "क्या प्रॉब्लेम है जेंटलमैन को?"
"अरे वही! जो देश भर को है। दिन-रात 11 ब्राह्मण, 23 भूमिहार, 14 बनिया और 13 दलित करता रहता है। कहता है मुझे उसके साथ रहना चाहिए। ये भी कहता है कि सिद्धार्थ कोई काला जादू कर दिया है हम पर। सिद्धार्थ से याद आया! वो है कहाँ आजकल?" रुद्र ने एक साथ जवाब और सवाल दोनों किया।
"पता नहीं बुजरी का। जिस दिन से टेम्पो सुंदरी को देखा है उस दिन से क्लास के बाद फैकल्टी टू फैकल्टी, ऑफिस टू ऑफिस दौड़ता रहता है। कहता है कि पता करके रहेंगे कि कौन थी।" कहते हुए दोनों मेस में खाने की टेबल पर बैठ गए।
दोनों अभी खाने पर टूटे ही थे कि सिद्धार्थ आता हुआ दिखाई दिया। उसने आते ही उलाहना दी- "साले, हमारे बगैर ही खाना शुरू कर दिए हो ना?"

"हॉ तो तुम कौन-सा भसुर लगते हो कि तुम्हारा इंतजार किया जाएगा।" रुद्र ने कहा।

"आजकल पिया जी कहाँ वक्त गुजार रहे हैं?" चेतन ने जानते हुए भी उसकी व्यस्तता की बाबत पूछा ताकि वह जान सके कि सिद्धार्थ आज क्या बहाना बताता है।

"अबे! वो एक अंकल आ गए थे आसनसोल से। उन्हें ब्लड की जरूरत थी। इसलिए उन्हीं के साथ हॉस्पिटल चले गए थे।"

"दुर्भाग्य है देश का!" रुद्र ने ग्लास में जग से पानी उड़ेला।

"क्या हुआ?" सिद्धार्थ ने पूछा।

"होगा क्या! ब्लड बाँटने वालों से तो होगा ही नहीं। दुर्भाग्य है। आईटी के लौंडे स्पर्म डोनेट कर रहे हैं और लॉ वाले ब्लड। कहाँ से होगा? शारीरिक दुर्बलता आ जाएगी।"

"अबे सच कह रहे हैं! अंकल आए थे। उन्हीं के साथ..."

"अंकल का छोड़ो, आंटी आई थीं।" चेतन ने रोटी चबाते हुए कहा।

"मम्मी?" सिद्धार्थ ने आश्चर्य से पूछा।

"हाँ!"

"फोन नहीं किया उन्होंने मुझे!" सिद्धार्थ को विश्वास नहीं हो रहा था।

"फोन घर छूट गया था। श्रीसंघ वाले काली मंदिर आई थीं। लौट गईं।"

"लेकिन आज तो बुधवार है। आज क्यों?"

"तेरी कुंडली बनवाने को दी थीं। वही लेने आई थीं। बहुत दुखी थीं। कहा कि घर जाकर कॉल करेंगी।"

"मगर दुखी क्यों थीं?" सिद्धार्थ अब परेशान होते हुए बोला।

"कह रही थीं कि कुंडली में यह बात आ रही है कि तुम पर कोई ऊपरी बाधा आएगी।" चेतन ने कहा।

"ऊपरी! इसके ऊपर तो ऊपरी-निचली-बाहरी-भितरी सब बाधा आ गई है। जो आदमी भूत-दूत के साथ नाइट आउट करता हो उस पर ऊपर वाली, पीपल वाली नहीं मिलेगी तो क्या हॉस्टल वाली मिलेगी?" रुद्र ने उठकर हाथ धोते हुए कहा।

"और तुम पर से उस टेम्पो वाली लड़की का भूत नहीं उतरा?" चेतन ने भी खाकर उठते हुए कहा।

"अरे भूत होगा तब न उतरेगा! वो तो भूतनी है, कैसे उतरेगी? तभी तो फैकल्टी टू फैकल्टी, ऑफिस टू ऑफिस जाकर टेम्पो वाली बाई का पता निकलवा रहा है। जिसका कोई पता है ही नहीं वो कहाँ से मिलेगी! मेचेदा कब्रिस्तान के बाहर उतर के लहर काट दी इसका। ये लहर जोड़ते फिर रहे हैं। ऐसे नहीं मिलेगी वो। हम पता दें उसका?" रुद्र तैश में आया।

"दो!" सिद्धार्थ ने भोलेपन से मुस्कुराते हुए कहा।

"रूपनारायण नदी के पार औघड़ों के डेरे पर ढूँढ़ लो। पिशाच वही बाँध के रखते हैं। और मोहतरमा मिल जाएँ तो बहाने से पाँव देख लेना। पक्का उल्टा मिलेगा। तब याद करना हमें।" रुद्र ने सौंफ चबाते हुए बात खत्म की।

सिद्धार्थ अभी इस बात का जवाब देता तब तक बाहर से आए मेस वाले ने चेतन से मुखातिब होकर कहा-

"भैया, थोड़ी देर रुक जाइएगा। अभी मेस मैनेजर मीटिंग बुलाए हैं यहीं।"

"क्या करेंगे रुक के? तुम घोड़े के बराबर चना खिलाओगे ही। खाना हम कमरे में मँगवाएँगे ही। कुछ एक्स्ट्रा हम लोगों को खाना नहीं है। इसलिए एक्स्ट्रा पैसा देंगे नहीं। इसके अलावा और कुछ होना नहीं है। सो हमें सब मंजूर है।" चेतन ने जवाब दिया।

"भैया रह जाइए! शायद जो होगा वो आप लोगों को मंजूर नहीं होगा।" मेसवाले ने इशारे में अपनी बात कही।

"क्यूँ ओए! क्या बात है?" सिद्धार्थ ने अबकी सीधा ही पूछा।

"कुछ नहीं भैया!" कहकर मेसवाला आगे की ओर बढ़ गया। सिद्धार्थ ने अचरज से दोनों को देखा और कहा– "तुम लोग कुछ किए हो क्या?"

"हाँ! वो घंटीपुत्र आज कह रहा था कि नप जाओगे तो उसी को स्केल देकर कहे कि नाप दो। बस इतना ही तो! लेकिन इससे मेस का क्या मतलब!"

"घंटीपुत्र कौन?" सिद्धार्थ ने पूछा।

"वही बे, यशरंजन! सुबह-सुबह घंटी न बजाए तो सूर्योदय ही न हो।" रुद्र ने कहा।

"अबे यार! वो तिरछोल लड़का है। उसको बहाना चाहिए लड़ने का। उससे मत सटा करो।"

"हम कहाँ सटे! वही चप्पल का चुइंग गम बना हुआ है। और वो लड़का है क्या?" रुद्र ने अपनी शंका रखी।

"अभी मेस मैनेजर वही है ना?" सिद्धार्थ ने पूछा।

"हाँ तभी तो उछल रहा है!" चेतन ने जवाब दिया।

अभी सिद्धार्थ खाना खत्म कर हाथ धो ही रहा था कि मेस के बाहर से ही कुछ लोगों के आने की आहट सुनाई देने लगी। यशरंजन पंद्रह-बीस और लड़कों के साथ मेस में घुस आया था।

"अच्छा हुआ तुम लोग यहीं मिल गए। हम दरअसल मेस महाराज को तुम्हारे कमरे में भेजने ही वाले थे।" यशरंजन ने कहा।

"अच्छा! मगर मेस की मीटिंग तो महीने के अंतिम दिन होती है ना?" चेतन ने पूछा।

"हाँ! ये अचानक ही बुलानी पड़ी।"

"ऐसी कौन-सी आफत आ गई!" सिद्धार्थ ने बीच में ही कहा।

"दरअसल हम सब वेज वालों ने डिसाइड किया है कि रात में पहले यानी आठ बजे वीगंस खाएँगे और फिर रात नौ बजे से नॉनवेज वाले।"

"डिसाइड किया है! आपने नॉनवेज वालों से पूछा?" चेतन ने गुस्से से बिफरते हुए कहा।

"पूछ ही तो रहे हैं!" यशरंजन ने ढीठ-सा जवाब दिया।

"आप सब पूछ नहीं रहे, बता रहे हैं। और इस हॉस्टल में हम ही तीन नॉनवेज वाले

तो नहीं हैं। बाकियों को क्यों नहीं बुलाया गया?" चेतन ने कहा।

"उन्हें बता दिया गया है। उन्हें कोई ऐतराज नहीं।" कहते हुए यशरंजन ने छाती पर हाथ बाँधा।

"हमें है।" अबकी रुद्र ने कहा- "इस तरह का भेदभाव यहाँ तो कम-से-कम नहीं चलेगा।"

"तुम रोकोगे?" कहते हुए यश, रुद्र की ओर आगे बढ़ा।

"बेटा! पीछे हट जाओ वर्ना जितना सज के आए हो न उतना बज के जाओगे।" रुद्र ने भी आगे बढ़ते हुए हूल दी। मामला दोनों ही ओर से गरम होता देख चेतन दोनों के बीच में आ गया। उधर सिद्धार्थ ने बात जारी रखी-

"देख ओय! बात पहले या बाद में खाने की तो है ही नहीं। बात डिस्पैरिटी की है। अलगाव की। हम लॉ स्टूडेंट्स हैं। हमारी तो जिम्मेदारी बनती है कि हम इन सब चीजों को सोसाइटी से दूर करें। इसलिए ये तो नहीं होने का।" सिद्धार्थ ने ठोस स्वर में कहा। अब कुछ लड़के जो नॉनवेज खाने वाले थे वो भी सिद्धार्थ, चेतन और रुद्र की ओर आ खड़े हुए थे।

"देखो ब्रो! ऐसे तो कोई डिसिजन निकलने से रहा। ऐसा करते हैं, वार्डेन सर के पास चलते हैं। वो जो डिसाइड कर दें, हमें मंजूर होगा और मुझे लगता है तुम्हें भी मंजूर होना चाहिए।" यशरंजन ने तुरुप का इक्का चल दिया। यह वह चाल थी जिसका उनके पास कोई जवाब नहीं था। कारण दो थे। पहला तो यह कि असगर अली खुद ही शाकाहारी थे और यथासंभव मांसाहार से परहेज रखने को कहते थे। और दूसरा कारण यह कि वेज खाने वाले लड़कों की संख्या ज्यादा थी। यशरंजन सब पहले ही सोचकर आया था। न करने का कोई सवाल अब बनता नहीं था।

बुझे मन से ही सही, तीनों दोस्त, बाकी साथियों के साथ हॉस्टल से ही लगे वार्डेन हाउस में पहुँचे। दरवाजा असगर अली ने ही खोला और अचानक इतने सारे लड़कों को देखकर सकपका गए। यशरंजन ने मौका देखा और आगे बढ़कर उनका पाँव छू लिया और इसके साथ ही खेल का नतीजा तय कर दिया था। यह चेक मेट था। अब बस हारने से पहले जितना वक्त लिया जा सकता था, उतना ही वक्त यहाँ बिताना था।

"क्यों भाई नौनिहालो! कोई तकलीफ?" असगर अली ने सब पर एक फौरी नजर डालते हुए पूछा।

"आपके रहते हमें क्या तकलीफ होगी सर! बस एक बात थी।" यशरंजन ने चाशनी में घुले शब्द निकाले।

"कोई मसला-असलहा तो नहीं निकल आया?" असगर अली ने बारी-बारी से तीनों पर आँखें फेरते हुए सवाल किया।

"नहीं सर! पढ़ने को ही वक्त कम पड़ जाता है तो ऐसे फिजूल काम के लिए वक्त कहाँ निकाल पाएँगे!" यशरंजन ने फिर कहा।

"बहुत अच्छे! हाँ तो बताएँ कि आप लोग यहाँ कैसे?" असगर अली ने पूछा।

परिस्थितियाँ यह तय कर चुकी थीं कि बात कोई भी रखे, बात यशरंजन की ही मानी जाएगी। इसीलिए बातों से ऊबते हुए सिद्धार्थ ने ही बीच में कहा-

"सर, लेट्स कट इट शॉर्ट! ये लोग चाहते हैं कि मेस डिवाइड हो जाए और हम ऐसा नहीं चाहते।"

"कैसी डिवाइड?" असगर अली ने त्यौरियाँ चढ़ाते हुए पूछा। असगर अली के हावभाव देखकर यशरंजन को लगा कि कहीं मामला फिसल न जाए तो उसने बीच में कूदते हुए कहा-

"डिवीजन इज अ रॉन्ग वर्ड सर। बात बस इतनी-सी है कि वेज खाने वाले हम लोग जब नॉनवेज खाते-खींचते देखते हैं तो कुछ अजीब-सा लगता है। फिर हमारा मन खाने का ही नहीं करता। इसलिए हमने एक बात रखी कि वेज वाले रात आठ बजे खा लें और फिर नॉनवेज वाले नौ बजे खा लें।"

"क्यों! नॉनवेज वालों को भूख देर से लगती है क्या?" रुद्र ने बीच में कूदते हुए कहा।

अभी असगर अली इस बात का जवाब देते, तभी यशरंजन ने अपनी मीठी बोली में और भी मिठास घोलते हुए कहा-

"सर! मिस्टर शर्मा और इनके नॉनवेज वाले दोस्त चाहें तो पहले खा लें। वैसे मैं तो कहूँगा कि हम सबको वेज खाना चाहिए। इट गिव्स सच अ सात्विक वाइब। हैं ना शर्मा जी?" यशरंजन ने रुद्र से मुखातिब होकर कहा।

असगर अली ने एक बार फिर कुछ बोलने के लिए मुँह खोला। तब तक उबलते हुए रुद्र ने बीच में फिर कहा-

"सर! इससे कहिए मुझे मेरे पहले नाम से पुकारे। मेरा नाम रुद्र शर्मा है एंड आई डोंट वांट टू इंडल्ज विथ एनी कास्ट पॉलिटिक्स ऑफ दिस हॉस्टल।"

"क्या बकवास हो रहा है यहाँ पर!" असगर अली को काफी देर बाद बोलने का मौका मिला। और जब मौका मिला तो वह कहते ही गए-

"सी बॉयज! यशरंजन इज राइट! अगर आपके नॉनवेज खाने से कुछ लोगों को ऐतराज है तो आप अलग खा लें और फिर ये तैयार तो हैं कि आप चाहें तो पहले आप खा लें। फिर क्या प्रॉबलम है?"

"सर! प्रॉबलम इज दिस वेरी डिवीजन! वी आर लॉ स्टूडेंट्स। एंड..." सिद्धार्थ ने अभी आधी ही बात की थी कि असगर अली ने टोक दिया-

"स्टूडेंट्स! एक्सक्यूज मी! आप पढ़ते कब हैं? आई एम सॉरी। आप खुद को स्टूडेंट्स कैसे कह सकते हैं! क्लास आप आते नहीं। हाजिरी के लिए पहले प्रॉक्सी और बाद में सिफारिश आपकी आदत है। आपमें से कुछ को तो मैं पहली बार देख ही रहा हूँ।" असगर अली के इतना कहते ही तीनों गुस्से से कुछ काले पड़ गए। अपमान कुछ ज्यादा ही हो चुका था। अब रुकने का कोई फायदा नहीं था।

"चल भाई! यहाँ मुँह देख के, बीड़ा और पिछवाड़ा देख के पीढ़ा दिया जाता है।" रुद्र ने फिर कोई गँवई बोली छोड़ी और तीनों असगर अली को उसका अर्थ समझता

छोड़ वहाँ से निकल गए। फैसला हो गया था। मेस बँट गई थी। सब लड़के अपने-अपने कमरे में लौट आए थे। असगर अली अपने घर में बंद हो गए थे।

इन सबके दौरान किसी ने यह नहीं देखा कि असगर अली के घर के बाहर खड़ी गाड़ी का कवर आप-ही-आप कार से सरककर नीचे गिर गया है।

***

# काला जादू

हार का वार बड़ा घातक होता है और हार की मार बड़ी दर्दीली। और यह दुहरा वार भारी पड़ा ही था। बात अब वेज-नॉनवेज की नहीं रह गई थी। बात उस बेइज्जती की हो गई थी, जो हो गई थी। देखा जाए तो यह कोई इतनी बड़ी बात नहीं थी जो दिल पर ले ली जाती। सामान्य-सी बात थी कि अगर आप न पढ़ें तो कोई भी यही कहेगा कि पढ़ने में ध्यान लगाओ। मगर सामान्य बातें, सामान्य स्थिति के लिए होती हैं।

यह स्थिति सामान्य नहीं थी। आज की शाम क्लास से आने के बाद चेतन के कमरे में कुछ उबाल था।

"भक्क! इसके पापा की! कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रहा आदमी।" रुद्र ने उबलते हुए कहा।

"अब क्या हो गया?" सिद्धार्थ ने पूछा।

"लाइब्रेरी गए थे। वहाँ वो मेचेदा कॉलोनी वाला पार्थो मिल गया।" रुद्र ने मुँह गिराए हुए कहा।

"वही न जिसकी अपनी मेड से ही सेटिंग है?" सिद्धार्थ ने अपने रुचि के अनुरूप बात की।

"तुमको साले बस सेटिंग से मतलब है। यहाँ इज्जत का बाजा बज गया है।" रुद्र का उबाल कटोरे के बाहर आने को था।

"हुआ क्या?"

"अबे लाइब्रेरी में बैठे थे। ये आकर बैठ गया और चार लड़कों को सुना के कहता है कि सुना है कि तुम लोगों ने मुर्गे की डिमांड की थी तो असगर अली ने तुम तीनों को मुर्गा बना दिया। और कह के टिटिहरी जैसे हँसने लगा।" रुद्र ने सोच-सोचकर कहा।

"फिर?"

"फिर क्या! लाइब्रेरी में कैसे मारते! बाहर ला के मारे दो लप्पड़।" रुद्र ने उसी रौ में बताया।

"ये सब यशरंजन का बोया-किया हुआ है। पहले बोया और फिर बाहर जाकर चारों ओर छींट दिया है। गर्ल्स हॉस्टल में तो खबर है कि वोटिंग हुआ था और नॉनवेज के लिए सिर्फ तीन वोट पड़ा।" अबकी चेतन ने हवन कुंड में घी डाला।

"ये क्या बात हुई! और बात गर्ल्स हॉस्टल तक कैसे गई?" सिद्धार्थ के दुख को हवा अब लगी।

"यही साला बॉयज हॉस्टल की बात लड़कियों तक पहुँचाता है। वहाँ भी कास्टिज्म कर रहा है। अपने कास्ट की लड़कियों को बरगलाते हुए कहता है कि एक साथ रूमपार्टनर रहो।" रुद्र ने कहा।

"क्या मुसीबत है यार कि जो साथ रहने की सोच रखते हैं, उन्हें अकेला छोड़ दिया जाता है और जो बाँटने की नीयत रखते हैं उनकी बात रखी जाती है।" सिद्धार्थ ने

अपनी हथेलियों के पीछे चेहरा छुपाकर दुखी होते हुए कहा।
"इसको मारेंगे साले को!" रुद्र फुफकारा।
"छोड़ ना यार!" सिद्धार्थ ने सिर हिलाते हुए कहा।
"छोड़ेंगे नहीं। छुड़वाएँगे!" रुद्र का स्वर दृढ़ था। वह कुछ सोचकर ही आया था।
"क्या?" सिद्धार्थ ने आश्चर्य से मुँह खोलकर पूछा।
"इस घंटीपुत्र का हॉस्टल। हॉस्टल छोड़कर नहीं भागा तो हम एक बाप के नहीं।" रुद्र अब बेइज्जती को व्यक्तिगत ले चुका था।
"क्या करोगे?" चेतन ने पूछा। उसे रुद्र के गंभीर होने का अंदेशा हो गया था।
"इसका पाठ निकाल देंगे!"
"कैसे!"
"ये साला बहुत अंधविश्वासी है। दिन-रात मारक-संघारक मंत्र की बात खाने की टेबल पर करता रहता है।"
"हाँ, उसका वही एक फेवरेट टॉपिक है। डायन, चुड़ैल, भूतनी में क्या अंतर होता है यह बताते हुए 20 पॉइंट का आंसर लिख सकता है।" चेतन ने रुद्र की बात की हामी भरी।
"बिलकुल सही। और यही उसकी कमजोरी भी है।" रुद्र बोला।
"तो!" सिद्धार्थ अब भी कुछ सोच पाने से महरूम था।
"तो आज मेस में खीर बनेगा।" रुद्र ने पेचीदा बात की।
"हर शनिचर बनता है और तुम मेरे हिस्से का भी खाते हो।" सिद्धार्थ ने कहा।
"हाँ, मगर आज नहीं खाएँगे। आज लाएँगे।"
"और..."
"और हम लोग चिकेन खाने बाहर जाएँगे।" रुद्र ने हथेलियाँ रगड़ते हुए कहा।
"क्या बोल रहा है भाई? कुछ समझ नहीं आ रहा।" चेतन परेशान था।
"समझने की जरूरत नहीं। बस ये जानो कि आज तंदूरी चिकेन तेरा भाई खिलाएगा।" कहते हुए रुद्र उठा और दोनों को कमरे में छोड़ बाहर निकल गया।
मगर वह बाहर निकलकर अपने कमरे में नहीं गया। उसके दिमाग में कुछ खुराफात पक रहा था। हॉस्टल से निकलकर वह सीधा श्रीसंघ काली मंदिर गया। उसने वहाँ से पूजा पर चढ़ाने वाली डलिया और उड़हुल के फूल खरीदे और फिर पैदल ही हॉस्टल की ओर लौट आया।
हॉस्टल पहुँचते-पहुँचते शाम गहरा चुकी थी। उसके दिमाग में चल रही योजना ने उसकी धड़कनें भी बढ़ा दी थी। अपने ही विचारों में खोया हुआ जब वह असगर अली की बाहर खड़ी कार के पास से गुजरा तो उसे अजीब-सी अनुभूति हुई। उसे लगा कि कोई दूसरा भी उसके पीछे खड़ा है और साँसे ले रहा है। ऐसा जैसे कोई उसे कुछ बताना या दिखाना चाह रहा हो। वह थोड़ा खौफजदा हुआ। मगर फिर उसने अपने मन को जब्त किया और आँखों को यह सोचते हुए नियंत्रित किया कि वह इधर-उधर नहीं देखते हुए बस नीचे की ओर जमीन देखेगा और आगे बढ़

जाएगा।

मगर जो लादुनियावी एहसास इस दुनिया के एहसास से ज्यादा तजुर्बेदार होती हैं, वह मन को उसी ओर मोड़ती है जिस ओर वह ले जाना चाहती है। यही कारण था कि रुद्र को नीचे देखते हुए ही कार की खुली खिड़की के पास गिरी हुई सिंदूर की एक पुड़िया दिखी।

रुद्र आगे बढ़ चुका था। मगर शायद किसी अंजान असर के कारण ही पीछे लौटा। सिंदूर की पुड़िया देखते ही उसके दिमाग में चल रही योजना ने एक खौफनाक मोड़ ले लिया। उसके चेहरे पर बरबस मुस्कान आ गई। उस योजना के तहत उसे थोड़ा झुककर वह पुड़िया उठा लेनी थी। मगर उसे झुककर सिंदूर की पुड़िया उठाने में थोड़ी शर्म आई। इसलिए उसने पहले उस पुड़िया पर अपना रुमाल गिराया और फिर रुमाल सहित वह पुड़िया उठा लिया और तेज कदमों से आगे बढ़ गया। तेज कदमों से चलता हुआ वह हॉस्टल की ओर बढ़ चला। अगर ईश्वर ने सिर के पीछे भी आँखें दी होतीं तो रुद्र देख पाता कि कार की ओट में खड़ी काया सिंदूर उठा लिए जाने से कितनी खुश है। उसके चेहरे पर एक जहरीली मगर पुरइसरार मुस्कुराहट तैर गई है। रुद्र को वह सिंदूर की पुड़िया नहीं उठानी चाहिए थी।

***

और फिर उसी दिन देर शाम जब तीनों तंदूरी चिकेन खाने बाहर ढाबे पर बैठे तो अचानक ही सिद्धार्थ ने पूछ दिया- "करना क्या चाहते हो साले?"

"प्रैन्क! फाड़ प्रैन्क!"

"कैसा प्रैन्क?" सिद्धार्थ ने ही पूछा।

"देख! ये हड्डी है!" रुद्र ने चिकेन की हड्डी दिखाते हुए कहा।

"हाँ है!" सिद्धार्थ ने हामी भरी।

"और हॉस्टल में खीर बनी है।" रुद्र ने कहा।

"हाँ बनी है।" सिद्धार्थ ने फिर हामी भरी।

"तो दोने में रहेगी खीर और ऊपर ये हड्डी। उसके ऊपर सिंदूर और उसके साथ एक उड़हुल का फूल।" कहते हुए रुद्र ने हड्डी धीमे से पॉकेट में लाए पॉलिथीन में रख ली।

"अरे मैया रे! ये तो सुन के ही हॉरीबल लग रहा है। करोगे कैसे?" सिद्धार्थ ने पूछा।

"कुछ नहीं! बस रात को उसके कमरे के बाहर रख देंगे। वो सुबह तीन बजे उठता है। दरवाजा खोलेगा तो सबसे पहले यही दिखेगा। देख के आगे से घंटी बजाना भूल जाएगा।" रुद्र ने खुश होकर चेतन के हाथ पर हाथ मारते हुए कहा।

"अबे साले मर जाएगा लौंडा!" सिद्धार्थ ने हँसते हुए कहा।

"जीवट है, मरेगा नहीं। डर ही जाए तो हमारा काम हो जाएगा।" चेतन ने चिकेन उड़ाते हुए कहा।

इन्हीं बातों-ठहाकों के बीच तीनों ने तंदूरी चिकेन खत्म की। रुद्र ने सारी हड्डियाँ पोलिथीन में रखकर बैग में डाल लीं। प्लेट साफ करने वाले लड़के ने प्लेट उठाते हुए

प्लेट में एक भी हड्डी न देखकर आश्चर्य से कहा-

"हड्डी भी खा गए आप लोग?"

"हाँ, तो साले उसका पैसा नहीं लेते हो क्या?" रुद्र ने कहा।

"धन्य राक्षस हैं आप लोग भी।" हँसते हुए लड़का प्लेट लेकर आगे बढ़ने को हुआ तो रुद्र ने हँसते हुए उसके सिर पर चपत लगा दी।

***

उसी रात, ठीक बारह बजे खौफ का सामान तैयार था। मेस से भी उसी तरह पॉलिथीन में चुराकर लाए गए खीर पर टोने के तरीके से सिंदूर की वक्र रेखा खींचकर उसे एक-दूसरे को काटती स्थिति में सजाया हुआ दोना तैयार था। रात बारह बजे से थोड़ी ही देर हुए होंगे कि दो साये हॉस्टल के गलियारे में चमके। एक साया रुद्र का था। दूसरा साया चेतन का। रुद्र हाथ में दोना लिए यशरंजन के कमरे की ओर बढ़ा और चेतन गलियारे के मुहाने पर इस प्रयोजन से खड़ा रहा कि यदि कोई कमरे से बाहर निकले तो वह रुद्र को सावधान कर दे। बहरहाल सावधान करने की जरूरत नहीं पड़ी। रुद्र, यशरंजन के कमरे के ठीक बाहर खीर का दोना रखकर ये जा-वो जा हो गया। चेतन भी बिना किसी आवाज के अपने कमरे में वापस आ गया। जहाँ सिद्धार्थ पहले ही कान में ईयर पीस लगाए बेसुध सोया पड़ा था। अब कल सुबह का इंतजार था। उनकी जानकारी में, काम हो गया था।

मगर वे नहीं जानते थे कि उनकी यह नादानी, यह प्रैन्क, कितनी भारी पड़ने वाली है। वो नहीं जानते थे कि इस क्षण का कोई उनसे भी ज्यादा बेसब्री से इंतजार कर रहा था।

जब वह दोनों लौटे थे तो गलियारे में कोई नहीं था; या शायद यह भी उनका वहम ही था। गलियारे में कोई आ चुका था। उनका मजाक उसके आने का कारण बना था। उसके आने का रास्ता उन्होंने खुद ही अंजाने में बना दिया था। वह काया जिसे आने के लिए पाँवों की जरूरत भी न थी, अब किसी के देखे-न-देखे गलियारे में लहरा रही थी। और ठीक उसी तरह लहराते हुए वह यशरंजन के दरवाजे पर कुछ क्षण रुकी और रुकी रही। घंटे बीते-दो घंटे बीते। काया यूँ ही दरवाजे के बाहर लहराती रही। वह शायद किसी इंतजार में थी। और वह जिस बात के इंतजार में थी वह उसके दरवाजे पर आते ही हुआ। एक तेज हवा का बेवक्त झोंका दरवाजे के पास से गुजरा और उसी हवा की वजह से चेतन और रुद्र द्वारा रखे गए खीर पर पड़ा सिंदूर उड़कर दरवाजे के निचले भाग से होता हुआ दरवाजे के भीतर प्रवेश कर गया। काया दरवाजे के झाझर से होकर घुसते सिंदूर के प्रवेश को निहारती रही। काया को फिर भी किसी बात का इंतजार था। सिंदूर के छींटे कमरे में समा जाने के बाद भी वह दरवाजे के बाहर ही लहराती रही। एक घंटा बीता और काया उसी तरह दरवाजे के बाहर टँगी रही। और फिर अचानक...

और फिर अचानक यशरंजन को पेशाब की हाजत लगी। वह उठा और उनींदे ही बाहर जाने के लिए दरवाजे की ओर चल दिया। दरवाजे पर पहुँचते ही उसके पैरों

का स्पर्श कमरे में घुस आए सिंदूर से हुआ। काया को इसी क्षण का इंतजार था। दरवाजा खुला और...

और अगले ही क्षण यशरंजन ने अपने जीवन का सबसे खौफनाक मंजर देखा। उसने देखा कि जमीन से भी एक फुट ऊपर उठी एक काया उसके सामने लहरा रही है।

आँखें मिलीं। और इससे पहले कि यशरंजन की आँखों में कोई भाव भी आ पाते, काया उसके गर्दन पर ठीक किसी बच्चे की तरह दोनों पाँव आगे की ओर लटकाए और उसके सिर पर अपना सिर टिकाए बैठ गई थी।

और अब यशरंजन कुछ गुनगुनाते हुए बाथरूम की ओर बढ़ा जा रहा था। काया उसके कंधे पर सवार थी और यशरंजन के चलने पर पायल की आवाज अँधेरी रात में और खौफ भर रही थी। रात का तीसरा पहर था इसलिए यशरंजन की गुनगुनाहट कोई सुन नहीं पाया। कोई सुन पाता तो जानता कि वह कोई विरह गान था। किसी दुखी की पुकार। काया गाती रही-

"कौन बिधी लिखले लिलार मोरे देवता
निस दिन ढोअब पहाड़ रे
जनमत माई तरस खाई हम पे
पथरा प फोड़तु कपार रे।"

रात भर कुत्ते बेवजह ही कूँकते-भौंकते रहे। क्या सच में बेवजह? शायद नहीं। वजह कल सुबह जाहिर हो जानी थी।

***

बेपरवाहियाँ जवानी का पहला इशारा है और बदमाशियाँ नौ-उम्री की पहली सीढ़ी। बाद के दिनों में जो सोचकर भी रूह काँप जाए वह इन दिनों की मौज होती है। और इसी मौज-मस्ती की रौ में बहकर गलती तो हो ही चुकी थी। क्योंकि अगले दिन की सुबह यशरंजन की पूजा की घंटी से नहीं हुई। अगले दिन की सुबह चेतन और सिद्धार्थ के दरवाजे के लगातार पीटे जाने से हुई। ऐसा लगता था कि दरवाजा पीटने वाला दरवाजे पर झुके हुए दरवाजा पीट रहा है। उसे भीतर घुस आने की हड़बड़ी है। उनींदे चेतन ने ही दरवाजा खोला तो रुद्र धड़धड़ाता हुआ कमरे में दाखिल हो गया। वह बिना कुछ बोले चेतन के बिस्तर पर आकर बैठ गया। वह बेतहाशा हाँफ रहा था। उसको कुछ नहीं बोलते देख सिद्धार्थ ने भी आँख खोलते हुए कहा-

"क्या हुआ बे! मुँह पर फटकार क्यों बरस रही है?" सिद्धार्थ ने उबासी लेते हुए पूछा।

"गड़बड़ हो गई, लगता है!" रुद्र ने नाखून कुतरते हुए भयातुरता से कहा।

"मतलब?" सिद्धार्थ को उबासी आई।

"यशरंजन के कमरे के बाहर भीड़ लगी है। उसका रूममेट भागकर मेरे कमरे में बैठा है।"

"क्यों?" अब चेतन ने बैठते हुए पूछा।

"क्योंकि यशरंजन अजीब बिहेव कर रहा है।"

"अजीब माने?"

"अजीब माने लड़कियों जैसा!"

"क्या?" चेतन ने चौंककर यूँ उठते हुए कहा जैसे वह बैठ ही बिजली की किसी नंगी तार पर गया था।

"गड़बड़ हो गई यार!" रुद्र ने फिर वही बात हाथ मलते हुए कही।

"अबे कुछ नहीं हुआ है। हम समझ गए। साले तुम लोग उसका प्रैन्क कर रहे थे और अब वो तुम्हारी ले रहा है।" सिद्धार्थ ने अँगड़ाई तोड़ते हुए कहा।

"मतलब?" रुद्र ने पूछा।

"मतलब ये कि उसने रात में वह खीर का दोना देखा और उसके दिमाग में यह बात आ गई कि यह किसी की कारस्तानी है और अब वह एक्टिंग कर रहा है।" सिद्धार्थ ने समझाते हुए कहा।

"भाई एक्टिंग नहीं कर रहा वो।" रुद्र ने विश्वास से कहा।

"एंड हाउ कम यू सो श्योर कि वो एक्टिंग नहीं कर रहा?" सिद्धार्थ ने हाथ नचाते हुए कहा।

"अबे, एकदम लड़कियों की तरह बिहेव कर रहा है और चल तो इस नजाकत से रहा है कि जैसे गोमती का पानी पी के जवान हुआ है।" रुद्र ने एक और नया मुहावरा जोड़ दिया।

"चल तो! चल तो! देखें जरा।" कहते हुए सिद्धार्थ एक ही छलांग में रजाई के बाहर निकल आया। तीनों कमरे से निकलकर गलियारे में आए ही थे कि यशरंजन के कमरे के सामने जमी भीड़ ने उन्हें सकते में डाल दिया। फिर भी हिम्मत कर के तीनों जैसे ही भीड़ हटाते हुए कमरे के दरवाजे पर पहुँचे, दरवाजा भीतर से बंद मिला। हालाँकि खिड़की खुली हुई थी और सारी भीड़ खिड़की पर ही जमा थी। तीनों ने भीड़ को पीछे किया और भीतर आँखें गड़ा दी। भीतर का दृश्य देखकर तीनों की साँसें उखड़ने लगीं। रुद्र गलत नहीं कह रहा था। यशरंजन बिलकुल लड़कियों की तरह पाँव पर पाँव की कैंची बनाए बैठा अपनी तर्जनी से अपने लंबे बालों को घुमा रहा था। और बार-बार अपने पैंट पर दोनों हथेलियाँ यूँ फेर रहा था जैसे कोई लड़की बैठकर अपने कपड़े को व्यवस्थित करती है। उसे मालूम था कि लोग उसे खिड़की से देख रहे हैं। और वह चेहरे से ठीक वैसे ही भाव दे रहा था जैसे भाव देह बाजार में खिड़कियों पर टँगी औरतें देती हैं।

मगर अबकी बार खिड़की की ओर देखकर उसके चेहरे की रंगत बदलने लगी। उसकी आँखें सिद्धार्थ पर जाकर ठहर गईं। उसके चेहरे की रंगत मुलायम से कठोर और फिर हिंसक होती चली गई। इससे पहले कि वह खिड़की की ओर बढ़ता, सिद्धार्थ बला की तेजी से पीछे की ओर पलटा- "वॉट द फक इज दिस!"

कहते हुए सिद्धार्थ चेहरे पर हादसाती भाव लिए हुए पीछे की ओर भागा। उसके पीछे-पीछे बाकी दोनों भी भागे और अपने कमरे में आकर ही दम लिया। सिद्धार्थ ने

फौरन दरवाजा बंद कर दिया और साँसों पर काबू करने लगा। उसका चेहरा एकदम पीला पड़ा हुआ था और दस कदम की दौड़ में ही पसीने से शराबोर था।

"क्या हुआ बे! ऐसे क्यों भागे भाई?" चेतन ने ही खामोशी तोड़ी।

"वॉट डू यू मीन ऐसे क्यों भागे? तुम्हें नहीं दिखा?" सिद्धार्थ ने अचरज से कहा।

"दिखा यार! साला एकदम लड़कियों की तरह बिहेव कर रहा है। उसके चेहरे पर आते-जाते भाव भी लड़कियों जैसे हो रहे थे।"

"अबे! मैं चेहरे की नहीं, कंधे की बात कर रहा हूँ। कंधे पर कुछ नहीं दिखा?" सिद्धार्थ ने खीझते हुए कहा।

"हाँ! हम तो वही देखे। कंधे पे एक तिल है हेलेन जैसा सेक्सी। जहाँ ब्रा का बेल्ट होता है न, ठीक वहीं।" रुद्र की अलग ही दुनिया थी।

"अरे यार! कैसे लफंगों से दोस्ती हो गई यार!" सिद्धार्थ ने सिर पीटते हुए कहा। सिद्धार्थ ने थोड़ी देर सिर पर हाथ रखा फिर खुद को संयत करते हुए रुक-रुककर कहा- "तुम लोगों को सच में उसके कंधे पर कुछ नहीं दिखा?"

"नहीं भाई! कन्या कसम! भाई हमें तो वो लड़कियों की तरह बाल घुमाते और मुस्कुराते ही दिखा।" चेतन ने कसम खाने के अंदाज से रुद्र के सिर पर हाथ रखकर कहा। रुद्र कन्या कहे जाने से नाराज था, मगर स्थिति की गंभीरता देखकर चुप ही रहा। सिद्धार्थ ने दोनों का चेहरा देखा और फिर सिर पीटकर बैठ गया।

"लेकिन कंधे पर आखिर ऐसा था क्या?" रुद्र ने अबकी पूछा।

"भाई, उसके कंधे पर वो सवार थी।" सिद्धार्थ ने परेशानी में चिल्लाते हुए कहा।

"वो कौन?"

"वही जो उस दिन नाइट आउट पर दिखी थी।"

"क्या!" कहते हुए चेतन धड़ाम से बिस्तरे पर यूँ बैठ गया जैसे उसके रीढ़ की हड्डी ही न हो।

"सीरियसली?"

"भेंचो मैं क्या यहाँ तुम्हारी भौजाई लगा हूँ जो ऐसी बात पर मजाक करूँगा! मजाक तुम लोग कर रहे हो कि तुम्हें नहीं दिखी।"

"सिद्धार्थ! आई बिलीव यू। मगर हमारा भी विश्वास कर। हमें ऐसा कुछ नहीं दिखा। ये जरूर है कि कुछ गड़बड़ है। मगर..." चेतन ने अभी आधी ही बात की थी कि सिद्धार्थ अचानक से बोल पड़ा-

"एक बात बता!" सिद्धार्थ ने कहा और दोनों सवाल के इंतजार में उसका मुँह देखने लगे। सिद्धार्थ ने शब्दों को बरतते हुए कहा-

"उस रोज जब हम वहाँ से भागे थे तो वह लगभग सड़क के बीचोबीच खड़ी थी तो तुम लोगों को भी तो दिखी थी ना?" सिद्धार्थ ने लगभग सवाल किया। और रुककर जवाब की प्रतीक्षा करने लगा। जिसका जवाब दोनों में से किसी के पास नहीं था।

"दिखी थी ना?" सिद्धार्थ ने दुबारा पूछा।

"कौन दिखी थी?" दोनों ने लगभग एक साथ सवाल किया।

"देखो, हमसे प्रैन्क-प्रैन्क खेलोगे न तो मुँह में मूत देंगे, बता रहे हैं। ये मजाक की बात नहीं है।" सिद्धार्थ ने आग बबूला होते हुए कहा और फिर दोनों की प्रतिक्रिया देखने लगा। दोनों की प्रतिक्रिया में जब कोई अंतर न दिखा तो उसने फिर आश्चर्य से पूछा-

"मतलब तुम लोगों को उस रात रोड पर कुछ नहीं दिखा था?"

"नहीं!"

"तो साले चिल्लाए क्यों थे और मंत्र क्यों पढ़ रहे थे?" सिद्धार्थ एक बार फिर आपे से बाहर हुआ।

"क्योंकि तुम चिल्लाए थे। तुम्हीं ने गाड़ी रोकने और फिर चला देने के लिए कहा था। हमें कोई नहीं दिखा था। कम-से-कम मुझे तो नहीं दिखा था। बस मुझे पाँव पर कुछ रेंगने का आभास हुआ था। उस रोज भी वो तुझे ही दिखी थी।" रुद्र ने हताश होकर बैठते हुए कहा। सिद्धार्थ भी सिर पकड़कर बैठ गया। दो मिनट तक मुर्दा खामोशी कमरे में तैरती रही। फिर सिद्धार्थ ने ही खामोशी तोड़ी-

"जब कुछ नहीं जानते हो तो क्यों ये सब करते हो? तुम समझ रहे हो उससे क्या हुआ?" सिद्धार्थ ने खीझते हुए ही कहा।

"क्या हुआ?" रुद्र ने पूछा।

"वो काया उस रोज हमारे साथ ही चली आई थी और आस-पास ही भटक रही थी। तुम्हारी उस खीर वाली बेवकूफी से उसे शरीर में प्रवेश करने का माहौल मिल गया होगा।" सिद्धार्थ ने अपना अंदेशा जताया।

"घंटा आत्मा भटक रही थी। ये सब तेरे रात-रात भर कब्रिस्तान और श्मशान घूमने के लक्षण हैं। कुछ नहीं हुआ है। खीर-पूड़ी यशरंजन के दिमाग पर चढ़ गई है। गैस हो गया है उसको। गैस निकलेगा, भूत अपने-आप निकल जाएगा। देखना, रात तक ठीक हो जाएगा।" रुद्र ने सिद्धार्थ को दिलासा देते हुए कहा। मगर वह अपने दिल के भीतर कहीं बेहतर जानता था कि वह खुद को भी बहला ही रहा है। कुछ तो खौफनाक हो ही गया था, यह वह भी समझ रहा था।

***

# खौफ की रात

रात। क्या अजाब है कि दिन-रात जैसी खगोलीय प्रक्रिया भी नेक और बद के मुताबिक बाँट दी गई। नेकी दिन के हिस्से आई और बदी रात के हिस्से। सो सारे बुरे, तामसिक और पैशाचिक काम रात ही सँभालती है। हॉस्टल की रात का यह हिस्सा दिन की कहानियाँ लेकर सो गया था। किसी का कहना था कि यशरंजन मजाक कर रहा है। कोई बात काटते हुए कहता कि उसके चेहरे पर लड़कियों के भाव तैरने लगे हैं। कुछ पारा-नॉर्मल जरूर है। कुछ का कहना था उसका सेक्सुअल ओरिएंटेशन पहले से ही लड़कियों जैसा था। कुछ ने तो यहाँ तक बता दिया था कि उसे उसी दिन शक हो गया था जिस दिन वो गोलगप्पे खा-खाकर हाथ झटक रहा था। लेकिन कुछ लोगों का कहना था कि सब बातें समझ आती हैं मगर उसकी आवाज लड़की जैसी क्यों बदली है। इसका जवाब सर्दी, खाँसी, खराश इत्यादि दिया गया और तय यह किया गया कि उसे कमरे में अकेले बंद किया जाए और उसका पार्टनर जाकर किसी और रूम में सोए। और आज के दिन इंतजार किया जाए। अगर वह नाटक कर रहा है तो एक दिन में ऊब जाएगा। अगर नहीं तो फिर आगे वार्डेन को इसकी खबर की जाएगी।

मगर वार्डन को खबर करने से पहले इस रात को गुजरना था। दिनभर यशरंजन चुपचाप अपने बालों से अठखेलियाँ करता कमरे में ही पड़ा रहा। कोई हलचल नहीं हुई।

मगर फिर अचानक आधी रात को लड़कों ने हॉस्टल के गलियारे में पायल की आवाज सुनी। पायल की आवाज बॉयज हॉस्टल में यूँ ही कौतूहल का विषय थी। अचानक ही लगा कि वह साया जिसके चलने पर पायल की आवाज आ रही है अब गाने लगी है। एक मर्द और औरत की मिश्रित आवाज। ऐसी आवाज जो निकलते वक्त तो औरत की सी लगती है मगर होंठों से बाहर आते हुए मर्द की आवाज के साथ मिलकर घरघराहट पैदा करती है। गीत समझ सकने वाले समझ पा रहे थे कि गीत की भाषा पूरबी की है। कोई बहुत टूटा-सा गीत। कोई बहुत बीमार-सा गीत, कोई बहुत उदास-सी पंक्तियाँ। यशरंजन पर जिस भी आसेब का साया था वह गुनगुना रही थी -

“कौन बिधी लिखले लिलार मोरे देवता
निसदिन ढोअब पहाड़ रे
जनमत माई तरस खाई हम पे
पथरा प फोड़तु कपार रे।”

यदि विधाता ने मेरे भाग्य में पहाड़ ढोना ही लिखा था तो ऐ मेरी माँ! जन्म देते ही तुमने मेरा माथा पत्थर पर मारकर फोड़ क्यों नहीं दिया। पूरबी समझने वाले काफी लोग हॉस्टल में थे। मगर यह समझने वाला कोई नहीं था कि यह परकाया यशरंजन का शरीर लिए कहाँ चली जा रही है।

"सिद्धार्थ! बाहर कोई चल रहा है बे?" चेतन ने पायल की आवाज पर कान देते हुए कहा जो अब उनके कमरे की तरफ बढ़ती चली आ रही थी।

"चल रहा है नहीं, चल रही है और कुछ गुनगुना भी रही है।" सिद्धार्थ ने कान लगाकर कहा।

"भाई हम ही लोगों को तो नहीं खोज रही!" चेतन ने डरते हुए ही कहा।

"चुप कर। अगर ऐसा है भी तो उसे मालूम न चले कि हम लोगों का कमरा कौन-सा है।" सिद्धार्थ ने एक बेतुकी-सी बात की और खुद ही अपनी बात पर शर्मिंदा हुआ। भला अशरीरियों से क्या ही छुपा होगा! दोनों अभी चुप मारकर बैठे ही थे कि अचानक आवाज आनी बंद हो गई। चेतन और सिद्धार्थ को शक हुआ। चेतन तो बिस्तर पर ही था। मगर सिद्धार्थ दरवाजे के पास कान लगाए था। अचानक आवाज बंद हो जाने से सिद्धार्थ ने कान हटाकर दरवाजे के छिद्र से आँख लगाकर बाहर देखने की कोशिश की। दरवाजे के पल्लो के बीच बने पेंसिल की नोक बराबर झरोखे से बाहर देखने के लिए आँख लगाया ही था कि उसके शरीर का लहू जम गया। उसने ठीक उसी समय उधर से भी यशरंजन को उसी जगह आँख लगाकर रहस्यमयी ढंग से हाथ पीछे किए झूमते और मुस्कुराते हुए देख लिया। वह भी भीतर ही झाँक रहा था। दोनों आँखें टकराईं। सिद्धार्थ को जैसे बिजली छू गई।

"मम्मी! मम्मी!" चिल्लाते हुए सिद्धार्थ एक ही छलांग में बिस्तर पर पहुँच गया। यशरंजन ने उसी तरह पथरीली आँखें और रहस्यमयी हँसी के साथ दरवाजे के पल्ले से अपना चेहरा हटा लिया और फिर वही गीत गुनगुनाते हुए लड़कियों की-सी चाल में आगे बढ़ गया।

कॉरीडोर में शांति तो नहीं थी, क्योंकि यशरंजन की भूतही मगर धीमी आवाज सारे कमरे में दुबके लड़कों को बचपन में बताए मंत्र याद दिला रही थी। मगर हाँ, कॉरीडोर में अकेलापन भी नहीं था। यशरंजन के अकेलेपन का साथी कुछ सोचकर अपने कमरे से चुपचाप निकल आया था। यशरंजन के अकेलेपन का साथी– रवि। जिसे लड़कियों के हर रूप से नफरत थी। उसे लड़कियाँ एक ही तरह की लगती थी- भोगने योग्य और यह कशिश इतनी ज्यादा थी कि वह लड़की और लड़की जैसी में भी फर्क नहीं कर पाता था। रवि जिसने सुबह भी यशरंजन को देखा नहीं था, बस सुना था और आज जब आवाज उसके कमरे से होकर गुजरी तो उसे लगा कि वह आवाज उसे बुला रही है। वह कमरे से दबे पाँव निकल आया।

वह कमरे से निकल तो आया था मगर तब तक यशरंजन छत की जानिब मुड़ चुका था। उसने यशरंजन के छत की ओर जाने की आवाज सुनी और उधर ही मुड़ गया।

आवाज के पीछे होता हुआ जब वह छत की ओर पहले जीने पर चढ़ा तो यशरंजन दूसरे जीने पर चढ़ चुका था। पाँव घिसटने की आवाज के अलावा कोई आवाज अब आस-पास नहीं थी। रवि को लगा कि दूसरे जीने पर वह यशरंजन को पकड़ लेगा। वह तेजी से दूसरे जीने तक आया।

मगर अजीब बात!

इतने धीमे पॉव घिसटकर चलने के बावजूद भी दूसरे जीने पर कोई नहीं था। हॉ, छत के लोहे का दरवाजा जरूर खुला हुआ था। यह भी अजीब ही बात थी। क्योंकि लोहे के जंग लगे साँकल खुलने से लोहे की चिचियाती आवाज पूरे हॉस्टल तक जानी चाहिए थी। दरवाजा दो पल्लों में बे-आवाज खुला था। रवि आगे बढ़ता, मगर उससे पहले उसे सीढ़ियों पर मुड़ा-तुड़ा एक कागज मिला। रवि को वो कागज नहीं उठानी थी। मगर अय्याशी के अंधे इंसान की अक्ल पर पर्दा सबसे पहले गिरता है। उसने वह कागज इस सोच के साथ उठा ली कि लड़की का स्वांग रचते यशरंजन ने कुछ इशारा छोड़ा होगा। और क्या पता वह कुछ रोज पहले जो 'रोल प्ले' की बात कर रहा था, आज वही दिन हो। यही सोचकर उसने कागज उठा ली। पुर्जे में इशारा ही था। मगर बहुत खौफनाक!

'भाग जो!'

यही दो शब्द लिखे हुए थे। जो उस माहौल को सर्द कर देने के लिए काफी थे। मगर रवि इस सोच से गाफिल हो गया था। उसे अब इस बात का पुख्ता एहसास हो गया कि आज का दिन 'रोल प्ले' का ही है। वह दबे पाँव छत पर चढ़ गया। उसे लगा कि यह एक बुलावा है, एक इशारा कि अब जो भी होगा छत पर ही होगा।

और जो भी हुआ छत पर ही हुआ। मगर जो हुआ उसे देखकर रवि की हलक सूख गई। उसने देखा कि यशरंजन छत के मुहाने की रेलिंग पर चल रहा है। लगभग दो ईंटों की चौड़ाई की बनी छत की बाउंड्री के मुहाने पर। और...

और उसके कंधे पर कोई औरत सवार है। यशरंजन के चलने पर जो हरकत हो रही है, उससे कंधे पर सवार उस औरत के पाँव हिल जा रहे हैं। और पायल की आवाज उसी के पाँव से आ रही है। रवि मारे दहशत के पसीने से तर-ब-तर हो गया। और उसी सूरत-ए-हाल में वह मुँह दबाकर भाग भी आता। मगर तभी छत पर दूसरी तरफ से आती एक बिल्ली गुर्राई और खेल बिगड़ गया। यशरंजन के कंधे पर सवार औरत पीछे मुड़ी और क्रोध से उबलती आँखों से रवि को देखते हुए उसमें समा गई। उधर रेलिंग के मुहाने पर खड़ा यशरंजन कटे हुए पेड़ की तरह छत से नीचे गिर गया।

रात के उस पहर में जबकि गेट पर बैठे चौकीदार की भी झपकी लग जाती है, यह घटना हुई। 'थड' की एक जोर की आवाज जमीन पर हुई। चौकीदार ने अपनी दस साल की नौकरी में ऐसी आवाज पहले नहीं सुनी थी। हनुमान चालीसा पढ़ते हुए जब वह बाहर निकला तो यशरंजन को जमीन पर पड़ा देखा। उसे पहली बार ही एहसास हुआ कि घिग्घी नाम की चीज गर्दन के आस-पास होती है और वो बँध गई है। वह फौरन वार्डन के कमरे की ओर दौड़ा। जब तक वार्डन आते और उसे लेकर अस्पताल जाते, हॉस्टल में अच्छा-खासा हड़बोंग मच चुका था। मगर इस हड़बोंग से पहले यह बात देखने वाला कोई नहीं था कि रवि छत पर से उठकर अब लड़कियों की सी नजाकत से चलता हुआ, बालों में तर्जनी फिराता हुआ, धीमे-धीमे पूरबी गाता हुआ अपने कमरे में चुपके से दाखिल हो गया है। उसके कमरे में जाने तक वही

विरह गीत हॉस्टल के कॉरीडोर में उसी पायल की आवाज के साथ गूँजता रहा। हॉस्टल के पेड़ पर बसेरा लिए पक्षी भी उसी वीरान ढलती रात में जाने क्या देखकर पेड़ छोड़कर उड़ गए। गीत बहरहाल गूँजता रहा-

‘कौन बिधी लिखले लिलार मोरे देवता
निसदिन ढोअब पहाड़ रे
जनमत माई तरस खाई हम पे
पथरा प फोड़तु कपार रे।’

***

# मैं वही हूँ

विद्यार्थी जीवन में हुई इस तरह की किसी भी दुर्घटना का नारियल अवसाद के नाम पर फोड़ा जाता है। सो हॉस्टल, फैकल्टी और विश्वविद्यालय ने मामला फौरन संज्ञान में लेते हुए यशरंजन को अवसादग्रस्त बताते हुए अस्पताल में भर्ती करा दिया। कविगुरु विश्वविद्यालय का अपना ही चिकित्सा विभाग भी था जहाँ चिकित्सा की पढ़ाई होती थी। सो अंदर की खबर अंदर ही रही। अच्छी बात यह हुई थी कि यशरंजन जमीन पर गिरने से पहले जामुन के पेड़ पर गिरा था और उसकी डालियों को टकराते-तोड़ते ही जमीन तक आया था, सो उसके चोट तो काफी थी, मगर वह जीवित था। उसके माता-पिता को खबर कर दी गई थी। वह क्योंकि दूर बंगलोर में रहते थे इसलिए उनके पहुँचने में वक्त था। अस्पताल में यशरंजन की तीमारदारी के लिए वोलंटियर्स असगर अली ने ही नियुक्त किए। रात की पाली में कोई अस्पताल में रुकने को तैयार नहीं था। इसलिए यह जिम्मा सिद्धार्थ और चेतन को यह कहकर दे दिया गया कि वो तो यूँ भी रात-बेरात चाय पीने बाहर जाते ही हैं, इसलिए रात दस से सुबह छह की पाली में अस्पताल में वो ही रुक जाएँ। सिद्धार्थ और चेतन ने यह सोचकर भी हामी भर दी कि अस्पताल में हाजिरी देकर बाहर निकल जाएँगे और फिर अगले दिन की छुट्टी भी मिल जाएगी। जब वह रात दस बजे अस्पताल पहुँचे तो असगर अली यशरंजन को देखकर लौट रहे थे।

"क्या हुआ था सर?" सिद्धार्थ ने ही बातें शुरू की।

"अरे कुछ नहीं, अफसुर्दगी की हालत में शायद ऐसा किया है।" असगर अली ने अपनी रौ में कहा और दोनों का मूर्ति-सा चेहरा देखकर फिर बोले-

"ओह सॉरी! डिप्रेशन में ऐसा अटेम्प्ट किया है। आप लोगों की उम्र में ऐसा होता है।" कहते हुए असगर अली ने चेतन के कंधे पर हाथ रखा।

"कोई मेजर इंजरी तो नहीं है सर?" सिद्धार्थ ने ही फिर पूछा।

"अरे नहीं! बस बाएँ हाथ का कंधा डिसलोकेट हुआ है। उसे नट-बोल्ट लगाकर कस देंगे, फर्स्ट क्लास हो जाएगा। और एक कल्केनियम बोन फ्रैक्चर है। वहाँ स्क्रू लगा देंगे। पंद्रह दिन में दौड़ने लगेगा।" असगर अली ने घड़ी देखते हुए कहा और फिर कहना जारी रखा-

"चलिए, अब मैं चलता हूँ। आप लोग यहीं रहिएगा। शायद रात में कुछ जरूरत हो।"

"श्योर सर! सर वो हमारी कल की अटेंडेंस!" सिद्धार्थ ने काम की बात रखी।

"वो मैं देख लूँगा।" कहते हुए असगर अली ने घड़ी देखी और आगे की ओर बढ़ गए। उनके जाते ही काफी देर से दम साधे हुए चेतन ने फूटते हुए कहा-

"अबे प्रोफेसर है कि जोकर है!"

"अब क्या कर दिया?" सिद्धार्थ ने पूछा।

"सुने नहीं। क्या डिस्क्रिप्शन दिया है। ऐसा लग रहा है कि यशरंजन का इलाज

नहीं, सर्विलेंसिंग हो रही है। यहाँ नट लगा देंगे फिट हो जाएगा। वहाँ का भल्टू कस देंगे, दौड़ने लगेगा।" चेतन ने कोफ्त से कहा।

"हँसाओ मत साले! यह अस्पताल है। वैसे भी मुझे दूसरी ही चिंता लगी है।" सिद्धार्थ ने हँसी रोकते हुए कहा।

"कैसी चिंता?" चेतन ने यशरंजन के कमरे के बाहर लगी बेंच पर बैठते हुए कहा।

"यार वो यशरंजन छत पर करने क्या गया था?" सिद्धार्थ ने पूछा।

"बंजी जंपिंग! तुमको कोई दिक्कत!" चेतन ने खीझ में आँखें बंद किए हुए ही कहा।

"नहीं यार! मैंने देखा था, उसके कंधे पर कोई औरत सवार थी..."

"औरत उसके कंधे पर नहीं तुम्हारे दिमाग में सवार है।" चेतन ने अबकी कुढ़ी हुई आवाज में कहा।

"मतलब?"

"मतलब ये कि हॉरर पॉर्न का नया जॉनर तलाश किए हो। उसी का नतीजा है सब।"

"तुम्हें कैसे पता?" सिद्धार्थ ने झेंपते हुए कहा।

"बेटे, इनकॉग्नीटो मोड भ्रम है। सत्य से परे। इंटरनेट की दुनिया में सारे पापों का हिसाब यहीं होना है।" चेतन ने मुस्कुराते हुए कहा।

"चल मान लिया, लेकिन फिर वो यशरंजन लड़कियों जैसे बिहेव क्यों कर रहा था?" सिद्धार्थ की सुई वहीं अटकी हुई थी।

"सॉरी टू बी हार्श अपॉन हिम, बट वो लड़की जैसा बिहेव नहीं कर रहा था, वो लड़की ही था। वो अपनी सेक्सुआलिटी को लेकर सशंकित था और ये बात उसके पार्टनर रवि से पूछ लेना। यशरंजन गलत बॉडी में था। माँ-बाप के डर से जितने दिन लड़के की तरह रह सका रहा और जब नहीं रहा गया तो भूगोल बदल लिया।"

"और वो..." सिद्धार्थ ने अभी अगला सवाल दागा ही था कि चेतन ने टोक दिया।

"और ये ... कि मुझे आ रही है नींद। तो अभी सवाल बंद कर। दो बजे उठेंगे, चाय पीने चलेंगे तब पूछ लियो।" कहते हुए चेतन ने बेंच पर अधलेटे हुए ही चेहरा दूसरी ओर फेर लिया। सिद्धार्थ के पास अब करने को कुछ नहीं था सो उसने भी आँखें बंद कर लीं।

आलसियों की नींद थकान और मकान का इंतजार नहीं करती। वह कहीं भी आ सकती है। थोड़ी ही देर में दोनों उसी बेंच पर एक-दूसरे को खर्राटों में टक्कर देने लगे। बीमार की तीमारदारी करने आए दोनों शायद सुबह तक यूँ ही सोए रहते अगर अस्पताल में 12 बजे का घंटा न बजा होता। घंटे की कर्कश आवाज ने सिद्धार्थ की नींद तोड़ दी। नींद में खलल चेतन के भी पड़ी। मगर वह कुनमुना कर रह गया और आँखें बंद किए ही पड़ा रहा। सिद्धार्थ की नींद तकरीबन टूट चुकी थी। उसने हाथों की उँगलियाँ फँसाकर अँगड़ाई तोड़ी और फिर जम्हाई के साथ चेतन से पूछा- "बेटे, सिगरेट है?"

"पापा, ये हॉस्पिटल है।" चेतन ने बंद ऑखों से ही जवाब दिया।

"हाँ, तो हम कौन-सा पेशेंट के मुँह पर धुआँ छोड़ने जा रहे हैं! देख लेंगे कोई कोना..." सिद्धार्थ अभी बात कह ही रहा था कि चेतन ने अपने शर्ट के पॉकेट से सिगरेट और माचिस निकालकर सिद्धार्थ के हाथ में यूँ रख दी जैसे अब कोई सवाल न करो। सिद्धार्थ ने भी उसकी हथेली से सिगरेट और माचिस लेकर अपनी हथेली में छुपाए और गलियारे में आगे बढ़ गया। उसे बहुत आगे नहीं जाना पड़ा। गलियारा खत्म होते ही उसे एक ऐसी मुफीद जगह मिल गई जहाँ से वह किसी के आने की आहट पाकर सिगरेट फेंक सकता था और उसे कोई देख नहीं सकता था। पूरी तरह इत्मीनान करने के बाद सिद्धार्थ ने तीली रौशन की और सिगरेट का मुहाना उसके आगे कर दिया। मरते हुए इंसान को जिस तरह ऑक्सीजन की जरूरत होती है ठीक उसी तलब से उसने पहले दो कश खींचे और धुआँ हवा में उछाल दिया। नाइट आउट, काया, कार के नीचे उसका दिखना, यशरंजन के कंधे पर उसका दुबारा दिखना और अब यशरंजन द्वारा आत्महत्या का प्रयास। सब कुछ उसे ठीक नहीं लग रहा था। कुछ था जो उसे उलझा रहा था। कुछ था जो उसे मायावी-सा प्रतीत हो रहा था। इन्हीं सोचों में गुम उसने सिगरेट का अगला धुआँ बाहर किया ही था कि धुएँ के बीच से ही उसने सामने के गलियारे से किसी को गुजरते देखा। एक औरत-जात काया। वह ठिठक गया। यह तो! यह तो!

उसने देखा। यह तो मोहिनी थी!

मोहिनी जो उस रोज के बाद उसे नहीं दिखी। उसने उसे ढूँढ़ने की भी कितनी कोशिश की मगर वह नहीं दिखी। आज इस वक्त अस्पताल में क्या कर रही है? क्या वह उसका पीछा कर रही है? सोचते हुए ही उसके रोंगटे खड़े हो गए।

मोहिनी अस्पताल में क्या कर रही है यह प्रश्न जरूरी था; मगर उससे भी ज्यादा यह जानना जरूरी था कि क्या यह लड़की मोहिनी ही है। सिद्धार्थ को एकबारगी खयाल आया कि मोहिनी को जोर से पुकारे। मगर दूसरे ही पल उसे ध्यान हो आया कि यह कोई पार्क नहीं, अस्पताल है। यहाँ ऊँची आवाज अच्छी बात नहीं।

अँग्रेजी के एल आकार के बने उस गलियारे के एक ओर से मोहिनी अस्पताल से बाहर जा रही थी और दूसरी ओर सिद्धार्थ खड़ा था। अचानक ही उसकी तंद्रा टूटी। उसने सोचा कि उसे चेतन को यह बात बतानी चाहिए। वह मोहिनी को उसका वहम समझता है। आज उन्हें दिखाना ही चाहिए। यही सोचते हुए वह तेजी से चेतन की ओर लपका; मगर बीच रास्ते में ही उसने अपना इरादा बदल लिया। चेतन को उठाने और साथ लेने में इतनी देरी तो हो ही जाएगी कि मोहिनी एक दफा फिर उसकी पहुँच से बाहर हो जाए। इसलिए उसने चेतन को सोता ही रहने दिया और अस्पताल के बाहर की ओर दौड़ा। उसके बाहर पहुँचते-पहुँचते भी देर हो चुकी थी। अस्पताल के बाहर खड़ी एक मात्र ऑटो अब रफ्तार पकड़ चुकी थी।

मगर ऑटो की स्पीड इतनी भी नहीं हो सकती थी कि सिद्धार्थ उसे मोटरसाइकिल से न पकड़ सके। यही सोचकर उसने पार्किंग में लगी अपनी मोटरसाइकिल फौरन

निकाली और उसी रास्ते पर दौड़ा दी।

एकबारगी सिद्धार्थ के दिमाग में यह बात आई कि वह मोटरसाइकिल की रफ्तार बढ़ाकर मोहिनी के ऑटो को पकड़ ले; मगर फिर साथ-ही-साथ उसकी बेहतर समझ ने उसे इस बात के लिए राजी कर लिया कि यह जानना ज्यादा जरूरी है कि मोहिनी कौन है। कहाँ से आती है और करती क्या है। और यह सब बात वह उससे अभी मिलकर नहीं कर सकता। उसने देखा है कि वह व्यक्तिगत बातें टाल जाती है। इसलिए जरूरी है कि वह उसके पीछे ही रहे और आज उसका घर, उसकी रिहाइश देख आए।

यही सब सोचते हुए उसने एक निश्चित दूरी बनाकर ऑटो का पीछा करना जारी रखा।

मगर यह क्या!

ऑटो आखिरी रिहाइशी इलाका भी पार कर वीराने की ओर बढ़ गई। आगे दूर तक कोई रिहाइशी इलाका नहीं था। यह रास्ता अब सीधा रूपनारायण नदी के घाट की ओर जा रहा था। रात के इस पहर में मोहिनी, नदी के उस घाट की ओर क्यों जा रही थी, जिधर आम इंसान दिन के उजाले में भी जाने से कतराता है। वह अपने दोस्तों की बातों पर कतई भरोसा नहीं कर पाता जब वह यह कहते हैं कि वह काया और मोहिनी दोनों ही उसके मन का वहम हैं। दरअसल, दोनों का ही कोई अस्तित्व नहीं है और अगर है भी तो दोनों एक-दूसरे से अलग कतई नहीं हैं। यह सिद्धार्थ ही था जो यह मानने को तैयार नहीं था। मगर आज की आँखों देखी स्थिति उसे भी दोस्तों की बातों पर भरोसा करने को मजबूर कर रही थी। वह सोचता रहा, सोचता ही रहा।

और अचानक ही उसकी तंद्रा फिर टूटी। उसे लगा जैसे किसी ने जोर से झकझोर दिया हो। उसने देखा कि मोहिनी की ऑटो घाट से सौ मीटर दूर रुक गई। सिद्धार्थ ने फौरन अपनी मोटरसाइकिल रोक दी और अँधियारे के ओट में ही मोटरसाइकिल छुपाने के लिए कोई सुरक्षित जगह देखने लगा। जब तक वह अपनी मोटरसाइकिल किसी ओट में लगा पाता; उसने खाली ऑटो को लौटते हुए देखा। उसकी आश्चर्य मिश्रित परेशानी थोड़ी और खिंच गई। इसका सीधा-सा अर्थ यह भी था कि मोहिनी को यहाँ से लौटना नहीं है। तो जाना कहाँ था? यह और बड़ा प्रश्न था।

वह तेज कदमों से ही बढ़ता हुआ घाट तक पहुँचा। निविड़ शांति लिए हुए फैला सुदूर घाट। किनारे पर बँधे नाव से टकराती नदी की धार भी अबूझ और डरावनी आवाज पैदा कर रही थी। सिद्धार्थ ने पक्के घाट पर अपनी नजर दौड़ाई। उसे मोहिनी नहीं दिखी। मगर उसके सफेद पैरहन के कारण मोहिनी को इस कौड़ियाली रात में भी ढूँढ़ पाना कोई दुरूह कार्य नहीं था। अचानक ही सिद्धार्थ ने देखा कि मोहिनी एक पतले मुँह वाली नाव पर चुपचाप बैठी थी और उसका मल्लाह बिना कुछ बोले नाव का लंगर यूँ खोल रहा है जैसे उसकी मोहिनी से बरसों की पहचान हो। सिद्धार्थ को बहरहाल चिंता इस बात कि ज्यादा हुई कि अब वह जा कहाँ रही

थी? उस पार?

मगर उस पार तो औघड़ों, साधकों और नागाओं का बसेरा कहा जाता है। वह उधर क्या करने जा रही होगी? यही सोचते हुए कच्ची और फिसलन भरी घाट से होकर सिद्धार्थ जब तक नदी के मुहाने तक पहुँचता तब तक मोहिनी की नाव आधा सफर तय कर चुकी थी। हालाँकि वह अब भी नजरों से ओझल नहीं हुई थी।

सिद्धार्थ ने आस-पास देखा तो अब मौजूद एकमात्र मल्लाह को अपनी नाव में सोया हुआ पाया। कुनमुनाकर उठते हुए ही मल्लाह ने जब किसी दूसरे नाव का पीछा करने की बात सुनी तो किराया दोगुना कर दिया। सिद्धार्थ को पैसे की परवाह फिलहाल तो नहीं ही थी। कुछ ही मिनटों में नाव सिद्धार्थ को लेकर मोहिनी की नाव के पीछे हो गई।

रूपनारायण नदी का विस्तार इतना ज्यादा नहीं कि एक किनारे से दूसरे किनारे जाने में दस मिनट से ज्यादा का वक्त लगे। पाँच मिनट पहले ही जाया हो चुके थे। सो जब दस मिनट बाद सिद्धार्थ दूसरे किनारे लगा तो मोहिनी का कोई पता नहीं था। उसकी नाव भी किस घाट लगी थी, सिद्धार्थ देख नहीं पाया। वह उतरकर अपने मल्लाह को रुकने का कहकर आगे बढ़ गया।

आगे रेत के मैदान में रात के अँधेरे में कुछ भी थाह पाना मुमकिन नहीं था। मगर सिद्धार्थ फिर भी आँखों के फैलाव तक मोहिनी को ढूँढ़ता रहा। दूर तक रेत, रेत के टीलों और कटीली झाड़ियों के झुरमुठों के अलावा इस अंधी रात में उसे कुछ नजर नहीं आया। उसका दिल बैठने लगा और खीझ उठने लगी। खुद पर! रोक ही लेता। ऑटो में ही पकड़ लेता! क्या जरूरत थी पीछा करने की! जबकि वो जानता है कि मोहिनी को ये पसंद नहीं है। ना ही वो इस पर खुलकर बात करती है।

इन्हीं सोचों में गुम वह उदास-सा रेत के एक टीले पर बैठ गया और मुट्ठियों में रेत भरकर अपने आगे ही फेंकने लगा। उसने मल्लाह को एक घंटे का किराया दिया है, इसलिए वह थोड़ी देर और रुकेगा और फिर चल देगा। इन्हीं विचारों में खोए हुए अचानक उसके रीढ़ की हड्डी में सिहरन-सी हुई। उसे यूँ लगा जैसे किसी ने सर्द सुईयाँ उसके जिस्म में पैवस्त कर दी हो।

उसने महसूस किया कि उसकी पीठ पर किसी का वजन है। उसने महसूस किया कि उसकी पीछे की धीरे-धीरे रेत सरक रही है। और फिर... उसने महसूस किया कि उसके गर्दन पर किसी के बाल लहराए हैं। वह पीछे मुड़ के देख ही पाता इससे पहले दो हाथों ने उसे पीछे से कस लिया।

“तुमने मुझे ढूँढ़ लिया।” पीछे से आवाज आई। सिद्धार्थ चिहुँककर मुड़ गया। यह मोहिनी थी। उसी रहस्यमयी मुस्कान और कंधे पर उड़ते खुले बाल के साथ सिद्धार्थ के ठीक सामने खड़ी मोहिनी।

“होली शिट! यू आर फ्रीकिंग! तुमने तो मुझे डरा ही दिया।”

“डरना अच्छी बात है। इंसान महफूज रहता है।” मोहिनी ने पथरीली आँखों को शोखी से मीचते हुए कहा।

"कहाँ थी तुम? तुम्हें इतना ढूँढ़ा।"
"मैं तो यहीं थी! तुमने शिद्दत से नहीं ढूँढ़ा होगा।"
"अच्छा! कितनी बार तो सेमेट्री गया। वहाँ जहाँ मिले थे। तुम्हारा कोई पता नहीं।"
"हो सकता है जिस रोज तुम गए हो, मैं कहीं और हूँ।"
"जैसे आज यहाँ!"
"हाँ!" मोहिनी ने पुर-इसरार तरीके से जवाब दिया।
"अच्छा! तुम्हें कैसे पता कि मैं यहाँ हूँ?"
"जानती हूँ।" मुस्कुराई मोहिनी।
"कैसे जानती हो?"
"क्योंकि इतनी खाली और खामोश रात में मोटरसाइकिल की आवाज दूर तक सुनाई देती है।" मोहिनी ने सिद्धार्थ की आँखों में आँखें डालकर कहा। जिससे सिद्धार्थ को एक झेंप-सी हुई। मगर फिर उसने फौरन ही बात बदलते हुए कहा- "और तुम यहाँ क्यों हो?"
"यह तो तुम्हें जानना चाहिए। जैसे मैं जानती हूँ कि तुम यहाँ क्यों हो।" मोहिनी ने फिर कुटिल-सा जवाब दिया। सिद्धार्थ लाजवाब हो गया। उसके चेहरे पर एक मानीखेज मुस्कुराहट तैर गई। कुछ पलों की खामोशी बाहम रही। वक्त रात की तरह बीतता रहा। सिद्धार्थ अचानक ही कुछ सोचकर आप-ही-आप हँस पड़ा।
"क्या हुआ?" मोहिनी ने उसे हँसते देखकर पूछा।
"पता है, दोस्त क्या कहते हैं मुझे!" सिद्धार्थ ने हँसी के बीच ही कहा।
"क्या?" मोहिनी ने उत्सुकता से पूछा
"ग्रेवडिगर! कहते हैं कि मैं कब्र का बिज्जू हो गया हूँ। रात भर कब्रिस्तानों के चक्कर लगाता हूँ और दिन भर सोता हूँ।" कहते हुए सिद्धार्थ हँसा। मोहिनी भी हँसी।
"और पता है दोस्त क्या कहते हैं तुम्हें!" सिद्धार्थ ने एक उत्सुक भाव से मोहिनी को देखा।
"क्या?" मोहिनी ने भी उसी उत्सुकता से पूछा।
"कहते हैं कि तुम भूत हो।" सिद्धार्थ ने हिचकिचाते हुए कहा।
"और तुम्हें क्या लगता है?" मोहिनी को सिद्धार्थ के जवाब से कोई असुविधा नहीं हुई। उसने बस सिद्धार्थ के चेहरे का भाव पढ़ते हुए पूछा।
"दोस्तों की बात पर भरोसा करने का जी तो नहीं चाहता, मगर..." कहते-कहते सिद्धार्थ थोड़ा रुका।
"मगर?" मोहिनी के चेहरे पर प्रश्न उभरे।
"कहते हैं कि जब मिलना तो उसके पाँव देख लेना।" कहते हुए सिद्धार्थ ने एक बनावटी मुस्कान ओढ़ी।
"और तुम देखना चाहते हो?" मोहिनी का लहजा सवालिया था।
"नहीं! हाँ! नहीं-नहीं! मेरा मतलब है कि ये सब फिजूल की बातें हैं। मैं जानता हूँ..." सिद्धार्थ ने वही कहा जो उसे कहना था। वह वो नहीं कह पाया जो वह कहना चाहता

था। वह कहना चाहता था कि हाँ! मुझे तसल्ली कर लेनी है। यह कहकर भी वह गुनहगार-सा खड़ा रहा। कुछ क्षणों की खामोशी फिर रही और अबकी खामोशी मोहिनी ने ही तोड़ी।

"चलो, पानी में पाँव भिगोते हैं।" कहते हुए मोहिनी ने सिद्धार्थ का हाथ पकड़ लिया। उस पकड़ में अजीब ठंडक थी, जिसे वह महसूस कर पा रहा था। उसके होंठों की काँपती हुई लहर ने सिद्धार्थ को कुछ भी सोच पाने से महरूम कर दिया। जेहन-ओ-दिल को बाँध लेने वाली एक खुशबू मोहिनी की जुल्फों से या फिर उसके पैरहन या कि उसके बदन से आई, सिद्धार्थ यह नहीं समझ पाया। वह बस अबस-सा उसके खींचे खिंचता चला गया। मोहिनी उसे हाथ से पकड़े हुए नदी के किनारे तक गई और फिर धीमे से हाथ छोड़ दिया। हाथ छोड़कर मोहिनी ने बड़े करीने से अपनी लंबी जमीन चूमती चुनट वाला गरारा पाँव के तलवों तक उठा दिया। सिद्धार्थ ने फौरन उसके पाँव देखे और देखते ही उसकी धड़कन ठहर-सी गई। उसने देखा कि उसके पाँव घंटों खौलाए दूध की रंगत के थे जो पानी के आइने में इंतिहाई खूबसूरत लग रहे थे और जिसे बेइंतिहा बनाने का काम पाँवों में पड़ी पायल ने किया था। सिद्धार्थ आगे क्या बढ़ता, वह उसी जगह ठिठक-सा गया। और तब तक पाँव की पानियों में हरकत देखता रहा जब तक मोहिनी ने उसे अपने हाथ के इशारे से आगे नहीं बुलाया। आवाज देने से उसकी तंद्रा टूटी और वह बगटूट भागकर आगे आया। दोनों ने एक साथ एक-सी खामोशी से इस पार घाट की खामोशी को पढ़ा। दोनों के हाथ देर तक एक-दूसरे में गूँथे एक-दूसरे की हाथ की नरमाहट साझा करते रहे। सिद्धार्थ इससे पहले कई लड़कियों का साथी रहा था, मगर यह कुछ खास था, कुछ अलग जो उसे बाँधे जा रहा था, किसी टोने की तरह। किसी इंद्रजाल की तरह। किसी ऊपरी हवा की तरह। देर तक रूपनारायण नदी की तवील गहराई अपनी आँखों में उतारते हुए अचानक सिद्धार्थ को खयाल आया कि मल्लाह का वक्त पूरा होने को है। और वह जल्दबाजी में इतने पैसे भी लेकर नहीं आया कि थोड़ा और वक्त खरीद ले। सो उसने मोहिनी से कहा-

"रात काफी हो गई है। तुम्हें कहीं छोड़ दूँ?"

"हाँ! पता ही नहीं चला। तुम्हें भी तो जाना होगा।" मोहिनी के होंठों के कोने काँप गए।

"हाँ, मेरी नाव तो वहीं आगे बँधी है। मल्लाह इंतजार भी कर रहा है। चलो तुम भी तो घर जाओगी?" सिद्धार्थ की आवाज में उत्सुकता थी।

"नहीं तुम जाओ! मुझे अभी थोड़ा काम है। जिस काम से आई थी वह तो बाकी ही रहा।" मोहिनी ने ठंडा-सा जवाब दिया।

"यहाँ! अभी! काम है तुम्हें!" सिद्धार्थ चौंका।

"हाँ! मेरा काम तो अब ही शुरू होगा।" मोहिनी ने मुस्कुराते हुए कहा।

"तो मैं भी रुक जाता हूँ। मैं भी तो देखूँ तुम कौन-सा काम करती हो।"

"तुम्हारे रहते मेरे काम में रुकावट आएगी। तुम चाहते हो मेरे काम में रुकावट

आए?" मोहिनी ने कहा और एक दफा फिर सिद्धार्थ को लाजवाब कर दिया।

"अब कहाँ मिलोगी?" सिद्धार्थ ने जिद ज्यादा नहीं खींची।

"भटकती रहती हूँ। वीरान स्टेशनों पर, सुनसान घाटों पर, या फिर किसी कब्रिस्तान के आस-पास। ढूँढ़ लेना। और जो तुम न ढूँढ़ पाओ तो अबकी मैं ढूँढ़ लूँगी।" दोनों चलते हुए सिद्धार्थ के नाव के पास तक आ पहुँचे।

"क्या लड़की हो यार तुम!" सिद्धार्थ ने मुस्कुराते हुए ही कहा।

"चलो तुमने ये तो माना कि मैं लड़की हूँ।" मोहिनी हँस दी। दूर तक खिलखिलाहट बिखर गई। उसकी हँसी ने सिद्धार्थ पर चाहे जो असर किया हो, उसकी हँसी ने मल्लाह को डरा-सा दिया। वह फौरन बोला-

"भैया जल्दी कीजिए। रात में गंगा जी अलगे उफान मारती हैं। रूपनारायण बाबा की डूबनी, पिशाचिनी सब नाव पलट देती हैं।" वह एकटक मोहिनी को देखे जा रहा था। मोहिनी ने भी उसे देखते हुए कहा-

"तुम्हें उसके लिए चले जाना चाहिए। आखिर उसकी तो कोई गलती नहीं है।" सिद्धार्थ अबस हो गया। उसे न चाहते हुए भी लौटना था। वह लौट पड़ा।

"और सुनो!" सिद्धार्थ के ठीक नाव पर बैठने से पहले मोहिनी ने टोका- "अपने दोस्तों से कहना कि उल्टे पाँव पिशाचिनों के होते हैं। चुड़ैलों, डायनों और जिन्नजादियों के नहीं। चुड़ैलें पेड़ पर रहती हैं। डायन घर में और जिन्नजादियाँ वीरान रास्तों पर। डायन के शरीर होते हैं। चुड़ैल जानलेवा हद तक खौफनाक दिखती है। जिगरखोरियों के लंबे दाँत होते हैं। और हर जिन्नजादी बुरी नहीं होती। अगली दफा मिलना और कुछ बताऊँगी।" कहते हुए मोहिनी ने पीछे चलते हुए, वीरानों की तीरगी की ओर जाते हुए हाथ हिलाकर विदाई दी। सिद्धार्थ हतप्रभ-सा नाव पर खड़ा मल्लाह के हर पतवार की चाल से दूर होता चला गया। मोहिनी भी रेतों पर से गुजरती दूर औघड़ों और साधकों के कुनबे की ओर दिखती हुई ओझल हो गई। सिद्धार्थ नाव में ही लेट गया। उसके दिलो-दिमाग पर मोहिनी की मुस्कुराहट छाई रही। रहस्यमयी मुस्कुराहट। साथ-ही-साथ उसके दिमाग में मोहिनी की बात घूमती रही।

'यही तो काम दिया है तुम्हें। ढूँढ़ो, मैं कौन हूँ।'

***

प्रेम असंभव में भी संभावना तलाश लेने का योग है। अंधविश्वास मूर्खता है और प्रेम सबसे प्रगाढ़ अंधविश्वास। तर्कों पर नासमझी की जीत ही अंधविश्वास है और यही प्रेम का सूत्र भी है। तर्क लाख सीधी राह दिखाए, प्रेम नासमझी की ओर ही झुकता है और राह की परवाह ही नहीं करता। अरस्तू ने यूँ ही तो नहीं कहा होगा कि मुहब्बत एक शदीद दिमागी बीमारी है। सिद्धार्थ अब सोच समझ पाने के दायरे से आगे निकल चुका था। वह प्रेम में था और रातें जाग रहा था।

देर रात मोहिनी से मिलकर लौटने के बाद वह आज दिन चढ़े तक सोया हुआ था, जब रुद्र सिद्धार्थ और चेतन के कमरे में आया। उसने सिद्धार्थ को बेसुध सोते और

चेतन को कान में ईयर फोन लगाए गाना सुनते हुए देखा-

"क्या सुन रहे हो बे?" रुद्र ने आते ही चेतन से सवाल किया।

"ठुमरी।"

"हाँ वो तो समझते ही हैं। तुम तो पैदा ही हाथ में गजरा बाँध के हुए थे। ये बताओ कौन-सी?"

"तुम रहने दो। ऊपर की चीज है।" चेतन ने मुँह बिचकाते हुए उसे टालने की कोशिश की।

"ये ऊपर-नीचे की चीज जैसी अश्लील बातें मत करो। सीधे बताओ क्या सुन रहे हो?"

"रंग महल के सौ दरवाजे,
जाने कौन-सी खिड़की खुली थी
सैयाँ निकस गए, मैं ना लड़ी थी।" चेतन ने गाकर सुनाया।

"अवैध संबंध है।" रुद्र ने छूटते ही कहा।

"क्या बकवास है!" चेतन ने कान से ईयर फोन निकालकर खीझते हुए कहा।

"अबे जब सौ दरवाजे हैं तो सैयाँ खिड़की से क्यों निकल रहे हैं? पक्का अवैध संबंध का केस है।" रुद्र ने जिस गंभीरता से यह हल्की बात रखी कि चेतन को हँसी आ गई। रुद्र ने दूसरे बिस्तर पर देखा। सिद्धार्थ जो रात को मोहिनी के साथ था अब सुबह आकर नींद पूरी कर रहा था।

"इसे क्या क्लास नहीं करनी?" रुद्र ने सिद्धार्थ की बाबत पूछा।

"भाई, मुझे इसकी फिक्र हो रही है। और सीरियसली फिक्र हो रही है।"

"वो भूत वाले चक्कर में!" रुद्र ने पूछा।

"हाँ भाई, इसकी तबीयत बिगड़ रही है और ये मान भी नहीं रहा।"

"मतलब!"

"कल मेरे साथ इसकी हॉस्पिटल में ड्यूटी लगी थी। रात में मेरी आँख लग गई और ये गायब!"

"गायब मतलब! कहाँ गायब?" रुद्र ने आश्चर्य से पूछा।

"जाने कहाँ रहा रात भर! फोन भी स्विच ऑफ। सुबह आकर कहता है मोहिनी के साथ था।" चेतन ने एक साँस खींची और फिर रुद्र के एकदम सामने जाकर फुसफुसाते हुए बोला-

"कोई लड़की नहीं है भाई। मैं बता रहा हूँ। ये सचमुच किसी ऊपरी हवा का चक्कर है। इस पर किसी ने कुछ कर-करा दिया है।"

"क्या बकवास कर रहा है!" रुद्र ने झिड़कते हुए कहा।

"बकवास नहीं भाई। तू सोचकर देख! बाहर एक लड़की इसे दिखती है जो हमें नहीं दिखती। और हॉस्टल में भी एक लड़की इसे दिखती है जो हमें नहीं दिखती। इसका क्या मतलब!" चेतन ने इस तरह समझाया कि रुद्र थोड़ी देर को सोच में पड़ गया और जब बोला तो उसकी आवाज में भी डर झलक गया-

"सच कह रहा है भाई तू! इसीलिए ये हमें श्मशान और बियाबान में लेकर जाता था।" रुद्र ने अभी अपना डर जाहिर किया ही था कि सिद्धार्थ कुनमुनाया। उसे नींद से उठता देख रुद्र चुप हो गया। सिद्धार्थ ने चादर मुँह पर से उतार फेंकी। उसने रुद्र को बैठा देखा तो अँगड़ाई लेकर उठ बैठा। रुद्र ने उसे देखा और उसे देखते हुए ही कहने लगा-

"यस्या अत्युत कटौ पादौ विश्चित्रन मुख भवेत
उल्लोश्च्छ लोमानि-सा शीघ्र भक्षयेत पतिम।"

"ये क्या था?" चेतन ने अचानक हुए इस श्लोक से भौचक होकर सवालिया लहजे में ही पूछा।

"श्लोक था।" रुद्र ने सूखा-सा जवाब दिया।

"वो तो पता है। लेकिन इसका क्या मतलब है?"

"इसका अर्थ है कि जिस कन्या के दोनों तलवे पृथ्वी को स्पर्श नहीं करते, वह शीघ्र ही अपने पति को खा जाएगी।" रुद्र ने सिद्धार्थ की ओर इशारे से देखते हुए जब यह बात कही तो चेतन को बात समझ में आई। बात सिद्धार्थ की समझ में भी आ गई। वह हँसते-हँसते उठा और रुद्र से पूछ बैठा-

"ये कौन-से शास्त्र में लिखा है?"

"कोक शास्त्र।" रुद्र ने बेलिहाजी से कहा।

"साले तुम कोक शास्त्र भी पढ़के बैठे हो?" चेतन ने फिक-फिककर हँसते हुए कहा।

"हल्के में लेते हो तुम्हीं लोग। हमारे तो पेशाब से चिराग जलते हैं।" रुद्र ने कॉलर खड़ी करते हुए कहा।

"हम समझ रहे हैं कि तुम्हारा निशाना कहाँ है! लड़की ही है वो साले। कोई भूत-पिशाच नहीं है। पाँव नहीं मक्खन है। कल ही मिलकर आ रहे हैं। सरापा लड़की है।" सिद्धार्थ ने जम्हाई लेते हुए कहा। उसकी नींद पूरी तरह टूटी नहीं थी।

"भाई ऐसी कौन-सी लड़की है जो कब्रिस्तान में डेट करती है!" चेतन ने बीच में कूदते हुए कहा।

"अबकी दफा कब्रिस्तान में नहीं मिली।" सिद्धार्थ ने जम्हाई लेते हुए बताया।

"फिर?"

"रूपनारायण नदी के उस पार।"

"रूपनारायण नदी के उस पार तो औघड़ों का डेरा है।" चेतन ने अचरज से कहा।

"हाँ, वहीं।" सिद्धार्थ ने मुँह बिचकाते हुए कहा।

"ले! एक नागिन और पंख लगाई। पहले श्मशान-कब्रिस्तान क्या कम था जो अब बियाबान में भी मिलने लगी।" सिद्धार्थ ने इसका कोई जवाब नहीं दिया। दरअसल उसके पास इस सवाल का कोई जवाब था भी नहीं। यह सवाल तो उसके मन में भी हमेशा से रहे थे, मगर मोहिनी इतनी रहस्यमयी थी कि वह उसकी इस बात का जवाब ही नहीं देती थी। कुछ पल तक एक खामोशी तारी रही फिर रुद्र ने ही कहा-

"लाले! हॉस्टल में ही क्या कम भूत हैं जो तू बाहर से भी पिशाच सुंदरी बुला रहा है? तूने रवि का हाल देखा है ना!" रुद्र ने समझाते हुए कहा।

"नहीं, क्या हुआ उसे?" सिद्धार्थ ने आश्चर्य से पूछा।

"जाकर देखकर आ! तुझे ही तो दिखती भी है। हमें तो केवल अजीब-अजीब हरकतें करते दिख रहा है।" चेतन ने कहा।

"मतलब?" सिद्धार्थ ने फिर अचरज से पूछा।

"हॉस्टल में रहा कर भाई। कुछ खबर रहेगी। दिन-रात साये के पीछे कब तक भागेगा!" रुद्र ने कहा।

"भाषण मत दो! रात में ही बस बाहर रहते हैं।" सिद्धार्थ ने खीझते हुए कहा।

"हाँ और दिन में सोता है। खैर! जो हाल यशरंजन का था, वही इसका भी है। बल्कि उससे ज्यादा खराब। कमरे के बाहर लेडीज अंडरगारमेंट्स के डब्बे मिले हैं। दो दिन से खुद को बंद कर रखा है। किसी ने झाँककर देखा तो पाया कि वही अंडरगारमेंट्स पहने खुद से ही बातें कर रहा है। पूरे चेहरे पर लिपस्टिक से आड़ी-तिरछी लकीरें खींच रखी हैं।" चेतन ने रुक-रुककर बताया।

"और किसी ने मिलने की कोशिश नहीं की?" सिद्धार्थ ने पूछा।

"वह पहले भी किससे मिलता था? अकेले-थकेले पड़े रहने की उसकी पुरानी आदत है।" रुद्र ने कहा।

"ये क्या बात हुई? हो सकता है डिप्रेशन में हो। मिलना चाहिए यार।" सिद्धार्थ ने कहा।

"जा तू ही मिल आ। वैसे भी हो सकता है तेरे ही इंतजार में बैठा हो।" चेतन ने कहा। जिसका सिद्धार्थ ने कोई जवाब नहीं दिया बस कपड़े पहनकर बाहर निकलने लगा। जब रुद्र ने उसे अकेला बाहर जाता देखा तो वह भी उसके साथ हो लिया।

"मैं साथ जाता हूँ यार। पता नहीं क्या जरूरत पड़ जाए।" कहते हुए रुद्र सिद्धार्थ के साथ बाहर निकल गया।

"मत जा मैं फिर कह रहा हूँ। ये साला फँसाएगा।" चेतन की आवाज पीछा करती रही और दोनों रवि के कमरे की ओर बढ़ते रहे। रवि के कमरे के सामने पहुँचकर सिद्धार्थ ने दरवाजा खटखटाया।

दरवाज खुल गया। मगर आश्चर्य।

रवि सामने अपनी लकड़ी की कुर्सी पर बैठा हिल रहा था। सिद्धार्थ के ध्यान में यह बात नहीं आई कि जब रवि सामने कुर्सी पर बैठा है तो दरवाजा किसने खोला। वह बहरहाल कमरे के भीतर प्रवेश कर गया। रुद्र यहाँ तक तो साथ आया था मगर भीतर जाने की उसकी हिम्मत नहीं हुई। वह बाहर ही खड़ा रहा। सिद्धार्थ उसके पास जाकर बैठ गया। और उसके बोलने का इंतजार करने लगा।

मगर रवि की चुप्पी लगी रही। उसने कमरे के चारों ओर देखा। ऐसे जैसे उसकी आँखें किसी को ढूँढ़ रही हों। ऐसे जैसे किसी के हुक्म का इंतजार कर रही हों। उसकी आँखें कोने से कोने तक, खिड़की, दरवाजे, अलमारी कुर्सी से होती हुई फिर

सिद्धार्थ के चेहरे पर लौट आईं।

"कुछ बोल तो सही! हम शायद कुछ मदद कर पाएँ।" सिद्धार्थ उसके पाँव के पास जमीन पर बैठते हुए बोला।

"मेरी मदद कोई नहीं कर सकता।" पसीने से पतली-पतली उसकी भौंह चमक उठी। उसने सामने दीवार देखते हुए सादा जवाब दिया।

"क्यों नहीं कर सकता?" सिद्धार्थ ने अचरज से पूछा।

"क्योंकि वो नहीं चाहती।" रवि ने फिर सफेद पड़ चुके चेहरे और ठहरी हुई आँखों से कहा। वह लगातार आगे की ओर हिले जा रहा था।

"कौन नहीं चाहती? क्या बकवास कर रहा है!"

"वही, जो मुझे नहीं छोड़ती। वही जो..." कहते-कहते रवि रुक गया और फिर पानी की बोतल मुँह से लगाता हुआ सिद्धार्थ के चेहरे के पास आकर धीमे से बोला-

"मेरे पास ज्यादा समय नहीं है। वो सब सुन रही है।"

"भाई! कल वाली बात के लिए हमें माफ कर दे।" सिद्धार्थ ने रवि का हाथ अपने हाथ में लिया। उसे रवि का हाथ बर्फ जैसा ठंडा महसूस हुआ। उसे महसूस हुआ कि ऐसी ही कुछ हरारत उसे मोहिनी का हाथ पकड़ते हुए भी महसूस हुई थी।

"वह माफ नहीं कर रही।" कहते हुए रवि फिर बच्चों की तरह रोने लगा।

"कौन माफ नहीं कर रही? साफ-साफ कुछ तो बता।"

"वही जो मुस्कुरा रही है।" रवि धीमे-धीमे दाँत पीसते हुए यूँ बोला जैसे किसी से अपनी बात दबाना चाह रहा हो।

"दोस्त! मैं वार्डन से बात करता हूँ! हम डॉक्टर के पास..."

"अपना ये दो रुपये का इंवेस्टिगेशन बंद करो! यह डॉक्टर के बस की बात नहीं है।" रवि चीखता हुआ-सा बोला। सिद्धार्थ पीछे की ओर हट गया। उसी चीखती आवाज के साथ रवि फिर बोला-

"देखो! मुझे पता है, तुम्हें मैं पागल लग रहा हूँ। मुझे खुद भी यह समझ पाने में वक्त लगा। मगर यह डॉक्टर के बस की बात नहीं है। डॉक्टर उसे देख भी नहीं सकता।"

सिद्धार्थ अब असहज-सा हुआ। एक असहज चुप्पी भी छाई रही। फिर थोड़ा ठहरकर बोला- "अच्छा ठीक है, तुम्हारी बात ही मानते हैं। यह बताओ क्या चाहती है वह?"

"मारना चाहती है!" रवि ने कहा।

"किसे?"

"नहीं बताती!"

"तुम्हें?"

"नहीं!"

"फिर तुम्हें क्यों परेशान कर रही है?"

"कहती है कि मैं सीढ़ी हूँ। उसे कहीं और जाना है। न मारती है; न छोड़ती है।"

"कहाँ देखा था उसे?" सिद्धार्थ ने बात बदली।

"पहली बार?"

"हाँ!"

"यहीं हॉस्टल की सीढ़ियों पर बैठी थी।" रवि ने फुसफुसाते हुए कहा।

"अब भी दिखती है?"

"हाँ!"

"कहाँ?"

"हॉस्टल में, मेस में, क्लास में, लाइब्रेरी में, कमरे में, बाथरूम में।" कहते-कहते एक दफा फिर फूट पड़ा रवि।

सिद्धार्थ ने फिर उसका हाथ अपने हाथ में लिया और सवाल किया- "क्या अब भी देख रहे हो उसे?"

रवि ने कहा कुछ नहीं, बस हाँ में चेहरा हिला दिया। ऐसे जैसे उसके कहने पर पाबंदी हो!

"कहाँ?" सिद्धार्थ ने उत्सुकता से पूछा।

लड़के ने फिर कुछ नहीं कहा। बस उसी तरह सिर झुकाकर रोते हुए अपनी तर्जनी से अपनी गर्दन की ओर इशारा कर दिया।

"होली शिट!" सिद्धार्थ ने उसकी गर्दन पर एक काया बैठी हुई देखी जिसने अपना सिर रवि के सिर के ऊपर यूँ टिकाया हुआ था कि उसके बाल रवि के कंधों पर लहरा रहे थे। और जो, जो अब पुर-इसरार मुस्कुराहट के साथ उसे घूरे जा रही थी। सिद्धार्थ गिरता-पड़ता कमरे से बाहर भाग निकला।

***

# सामरी

भय की जमीन बहुत ऊर्वर होती है। उसे संयोग का खाद-पानी मिल जाए तो अंधविश्वास फौरन ही उग आते हैं। तर्क और विज्ञान संयोगों को सिद्ध करने में अपना समय लेते हैं और जब तक यह सिद्ध होते हैं तब तक अंधविश्वास अपनी जड़ें जमा चुका होता है। सिद्धार्थ के साथ हो रही घटनाएँ संयोग थीं, नजर फरेबी थी या फिर सच, यह तो वक्त के गर्त में था। मगर तब तक एक अंजान-सा डर सिद्धार्थ के मन में घर कर गया था। ऐसा नहीं था कि उसने बिस्तर पकड़ लिया था, मगर उस दोपहर की घटना ने उस पर असर तो किया ही था। और ऐसे ही डर जन्म देते हैं उन बाहरी शक्तियों को जो अंधविश्वास पर या यूँ कहें कि लोक विश्वास पर ही चलती हैं। हुआ यूँ कि सिद्धार्थ जब दो दिन अपने कमरे से बाहर नहीं निकला तो तीसरी सुबह रुद्र का मन मना करने के बावजूद नहीं माना। वह सिद्धार्थ और चेतन के कमरे में चला ही आया।

"लाले, तू पढ़ रहा है?" रुद्र ने कमरे में घुसते ही चेतन को पढ़ते देख आश्चर्य से पूछा।

"हाँ भाई! लाइब्रेरी से किताब निकलवाए हैं।" चेतन ने किताब बंद कर रुद्र की ओर देखते हुए कहा।

"वाह! इसके जज्बात को सलाम! लाइब्रेरियन भी अब चैन से मर सकेगा। तुम्हें लाइब्रेरी में देख लिया, उसके इस जिंदगी का उद्देश्य पूरा हुआ। कौन-सी किताब निकलवाए वैसे?" रुद्र ने सिद्धार्थ के बगल में बैठते हुए और उसके माथे का बुखार देखते हुए पूछा।

"द घोस्ट वर्ल्ड।" चेतन ने बताया।

"टी.एफ.टी. डायर वाली घोस्ट वर्ल्ड?" रुद्र ने चौंकते हुए पूछा।

"हाँ!" चेतन ने मुख्तसर-सा जवाब दिया।

"जियो खिलाड़ी! अब रूम पार्टनर का इलाज भी करोगे, लगता है।"

"नहीं बे! मगर समझें तो कि इसको हुआ क्या है? रात में उठ के कहाँ चल देता है। ऐसा क्या देख लेता है की गाज फेंक देता है। वैसे इस किताब को पढ़ने से बहुत सारे राज खुल रहे हैं।" चेतन ने दोबारा किताब खोलते हुए कहा।

"जैसे?" अबकि सिद्धार्थ ने थकी-थकी आवाज में ही पूछा।

"जैसे कि भूत कुछ और नहीं होते। हम और तुम ही भूत हैं। हम सभी भूत हैं और जब हम सोते हैं तो हमारी आत्मा निकलकर भटका करती है और दूसरों को सताती है।" चेतन ने किताब पर कलम की नोक चलाते हुए बताया।

"ठीक से पढ़ो। 'सताती है नहीं, सटाती है लिखा होगा।' हॉरर फिल्म में तो यही दिखाता है।" रुद्र ने हल्की बात इस गंभीरता से कही कि सिद्धार्थ दिल खोलकर हँस पड़ा। उसका हँसना उसके तबीयत में सुधार होने की निशानी थी। चेतन को उसकी हँसी अच्छी लगी। सो इसी हँसी को और बढ़ाने के लिए उसने रुद्र को फिर छेड़ा-

“और पढ़ें कि हो गया तुम्हारा इतने में ही?”

“नहीं-नहीं पढ़ो। अच्छा लग रहा है, सुरूर चढ़ रहा है। और क्या लिखा है?” रुद्र ने दोनों हाथों को मलते हुए कहा।

“और लिखा है जब हम छींकते हैं तो हमारी आत्मा बाहर निकलकर पिछले जन्म के पिता का हालचाल लेने जाती है। और फिर धड़कन सामान्य होने पर लौट आती है।”

“ओह हो! फिर तो राजीव की पिछले जन्म की माँ तो बड़ी परेशानी में रहती होंगी!” रुद्र ने हॉस्टल के एक-दूसरे साथी के बारे में कहा।

“क्यों?” चेतन ने फिर वही छोटा-सा सवाल किया।

“क्योंकि राजीव भाई एक साथ दस-बारह छींक मारता है।” रुद्र ने फिर उसी गंभीरता से कहा। मगर उसके पीछे के व्यंग्य को समझकर सिद्धार्थ और चेतन हँसे बिना नहीं रह सके। रुद्र ने जब देखा कि सिद्धार्थ की स्थिति सामान्य हो रही है और अब उससे बात की जा सकती है, तो उसने पूछा-

“राजे, एक बात पूछें?”

“पूछ!” सिद्धार्थ ने धीमे से कहा।

“तुझे वो फिर दिखी थी?” रुद्र ने उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए पूछा। जिसके जवाब में सिद्धार्थ ने बस सिर हिलाकर हामी भरी।

उसके हामी भरते ही रुद्र ने फिर उसी शांति से कहा- “और इसके बाद भी तू श्मशान और कब्रिस्तान में भटकता फिरेगा?” रुद्र की इस बात का सिद्धार्थ ने कोई जवाब नहीं दिया। बस सिर नीचे कर हाथों की उँगलियाँ चटखाने लगा। रुद्र ने ही बहरहाल वह मुर्दई खामोशी तोड़ते हुए कहा-

“तू समझ क्यों नहीं रहा। यह ठीक नहीं है।” रुद्र की बात सुनकर सिद्धार्थ झल्ला गया और उसी झल्लाहट में बोला-

“तुम लोग क्यों नहीं समझ रहे? मोहिनी का इससे...” सिद्धार्थ ने भी अभी आधी ही बात की थी कि रुद्र ने बीच में टोका-

“यार हम तुमसे आल्हा गाने को कह रहे हैं तुम परमाल गाने लग रहे हो। अब वो लड़की बीच में कहाँ से आई?” अपनी हथेली पर अपना दूसरा हाथ मारते हुए कहा।

“लड़की!” खीझते हुए चेतन ने कहा- “हम तो कब से कह रहे हैं। लड़की तो है नहीं कोई सीन में। वही भूतनी है और वही लड़की है। लेकिन मेरी सुनता कौन है!” चेतन ने जब खीझकर कहा तो सिद्धार्थ और रुद्र दोनों एक पल को शांत हो गए।

“कुछ तो करना होगा न भाई! ऐसे तो नहीं चलेगा।” रुद्र ने ही बहरहाल कहा।

“अब जो भी करना है बाबाजी ही कर पाएँगे।” चेतन ने ठहर-ठहरकर गंभीर भाव से कहा।

“कौन बाबाजी?” रुद्र आश्चर्यचकित था। सिद्धार्थ भी उसका चेहरा देखने लगा।

“बहुत पहुँचे हुए सिद्ध हैं।” चेतन ने अब पालथी मारकर बैठते हुए ऐसे बताया जैसे वह कोई किस्सा सुनाने जा रहा हो।

"तुम मिले हो उससे?" रुद्र ने लहजा सवालिया किया।
"हाँ एक बार।" चेतन न जाने क्यों हिचकिचाया।
"कब?" रुद्र जानने को बेसब्र था।
"एक बार ऐसे ही, बस मिले हैं। लेकिन इतना जानते हैं कि सिद्ध हैं।" चेतन ने बात घुमानी चाही।
"बेटा, ऐसे ही तो तुम किसी को गाली भी न दो। बिना काम तुम बाबा के चक्कर में पड़े थे! चुपचाप बताओगे कि..." रुद्र ने जैसे ही लहजा कड़ा किया, चेतन तोता बन गया-
"वो... जब... रजनी... रजनी से बात करनी थी ना और जब उसने पहली दफा डाँट दिया था, तो उसी के बाद..." चेतन ने झेंपते हुए बताया।
"तो तुम उसके चक्कर में बाबा और साधु के चक्कर में पड़ गए थे!" सिद्धार्थ ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा।
"चक्कर में नहीं पड़े थे। बाबा सिद्ध हैं और वैसे भी परीक्षा लिए थे बाबा।" चेतन ने लाज बचाते हुए कहा।
"कैसे कैसे! क्या परीक्षा लिए थे?" सिद्धार्थ ने ही पूछा।
"मेरा नाम, उम्र, पता पूछे। फिर रजनी का नाम उम्र, पता पूछे और फिर बोले कि सब ठीक कर दूँगा। बस लड़की के दाहिने पाँव की मिट्टी लेकर आना।" चेतन अब रौ में आ चुका था।
"जा स्साला। ये तो पहले चुम्मे में ही गाल काट लिया! पहला ही काम इतना मुश्किल!" रुद्र ने अपने ही लहजे में बात रखी। उसकी बात पर हँसते हुए सिद्धार्थ ने पूछा-
"फिर कैसे हुआ इंतजाम?"
"मत पूछो।" चेतन ने सिर पर हाथ रखते हुए कहा- "बीस दिन सुबह-शाम एक किए रहे कि कहीं से मिट्टी मिल जाए। उसके हॉस्टल की मौसी को भी पैसा खिलाए कि मिट्टी ला दो। लेकिन उसको लगा कि हम सफाई विभाग से हैं। भगा दी। कहती हैं कि हमारे यहाँ इतनी सफाई है कि लड़कियाँ फर्श देखकर लिपस्टिक लगाती हैं। हम मन मसोस के रह गए। मगर फिर इक्कीसवें दिन चमत्कार हुआ।"
"कैसा चमत्कार?"
"रजनी, श्रीसंघ वाले काली मंदिर में दर्शन करने आई।" चेतन ने रुकते-रुकते बात पूरी की।
"फिर?"
"फिर क्या! हम सैंडल चुरा के भाग गए!" चेतन ने हँसते हुए तेजी से बात खत्म कर दी।
"भाग साले! हँसाओ मत, कुछ खाए भी नहीं हैं, मर जाएँगे!" सिद्धार्थ ने बिस्तर पर गिर-गिरकर हँसते हुए कहा।
"और वो हॉस्टल कैसे गई होगी?" रुद्र को अलग ही समस्या थी।

"उससे इसको क्या मतलब? इसका तो काम हो गया।" सिद्धार्थ ने हॉफ-हॉफकर हँसते हुए कहा-

"घंटा हो गया। मिट्टी देख के बाबा जी ऐसी बात बोले कि हम उसी दिन मान लिए कि वो सिद्ध हैं।"

"क्या बोले?" रुद्र का वही छोटा-सा सवाल आया।

"हम पुड़िया में भर के मिट्टी बाबा के आगे कर दिए। बाबा पुड़िया खोले। मिट्टी हाथ में लिए और पूछे- कि ये उसके पैर की मिट्टी है? हमने कही- हाँ बाबा जी। तो बाबा जी तिलमिला गए। और चिल्ला के बोले- झूठ बोलता है तू नादान लड़के! ये उसके पाँव की मिट्टी नहीं उसकी जूतियों की मिट्टी है। हमारा तो काटो तो खून नहीं। हम बस पाँव पकड़कर बोले कि माफ कर दीजिए बाबाजी और उसी दिन से मान गए कि बाबा पहुँचे हुए तांत्रिक हैं।"

"मेरा घंटा है! हम पकड़ लिए। ठग है साला।" रुद्र ने गंभीर भाव से कहा।

"बाबा के बारे में कुछ मत बोलना। सिद्ध हैं तभी तो पता किए कि हम उनसे झूठ बोले हैं और वो उसके पाँव की मिट्टी नहीं है। वरना उन्हें कैसे पता चला?"

"उन्हें ऐसे पता चला मेरे मिट्टी के माधो कि वो जानते हैं कि जिस लड़की के तुम पास नहीं जा सकते, जिससे बोलने में तुम्हारी दरक जाती है, तुम उसके इतने पास कैसे जा सकते हो कि उसके पाँव की मिट्टी ला सको। अगर तुम उसके इतने पास ही जा सकते तो बाबा और सोखा की क्या जरूरत थी?" रुद्र ने एक साँस में बात खत्म की।

"जो भी हो! रजनी तो मेरी हुई ना। जो उन्होंने उस मिट्टी में फूँक मारकर लौंग नहीं दी होती तो रजनी आज भी..." चेतन कहते-कहते रुक गया।

"एक मिनट-एक मिनट! वो लौंग इसी बाबा ने दिया था?" रुद्र ने अचानक से कुछ याद करते हुए कहा।

"हाँ!" चेतन ने जरा-सा झेंपते हुए कहा। सिद्धार्थ इस पूरी कहानी से नावाकिफ था। उसने आश्चर्य से कहा- "अब ये लौंग की क्या कहानी है?"

"हम बताते हैं। हम समझ गए हैं इसका फ्यूचर टेंस। आगे की कहानी हम बताते हैं।" रुद्र ने कहा और गला साफकर आगे की कहनी बताने लगा-

"तांत्रिक इससे पैसा झींटा और फिर उसी मिट्टी में पता नहीं क्या-क्या फूँक के एक लौंग दिया और बोला कि लड़की पर चलाकर मार दो। बस लड़की कच्चे धागे में बँधी चली आएगी।"

"ये मारा क्या?" सिद्धार्थ ने पूछा।

"घंटा मारा! इसके जज्बात में इतना सलाम ही नहीं है कि मार सके। लौंग से हमले के लिए कैंटीन का जगह मुकर्रर किया और हाथ में लौंग लेकर बॉलिंग प्रैक्टिस करने लगा। जैसे ही रजनी दिखाई दी तो इसके पैर में लकवा मार गया। कहता है कि हमसे नहीं मारा जाएगा।" रुद्र ने पाँव काँपने की नकल करते हुए कहा।

"फिर?"

"फिर क्या, हमसे बोला कि मन में भाभी रूप धारकर मेरे नाम से मार दे।"

"पूरी यूनिवर्सिटी प्रॉक्सी पर ही तो चल रही है। खैर आगे बता।" सिद्धार्थ ने उत्सुकता जाहिर की।

"होना क्या था। हमें घंटे का डर! लौंग चला के मार दिए।" रुद्र ने एक साँस में कहा।

"उसको लगा?" सिद्धार्थ ने आँखें बड़ी की।

"घंटा लगा। लौंग अपना लॉन्ग डिस्टेंस कवर कर ही रहा था कि बाथरूम से निकलकर मीठा यशरंजन बीच में आ गया। उसी को लग गया।" रुद्र ने सिर पर हाथ रहते हुए कहा।

"भाग साले! तभी वो तुम्हारे लिए चींटा बना रहता था।" सिद्धार्थ ने पेट दबाकर हँसते हुए कहा। रुद्र तो कहते-कहते पहले ही हँस रहा था। चेतन को दोनों की हँसी नागवार गुजरी। उसने खुन्नस भरे लहजे से ही कहा-

"भाई, हम तो मानते हैं कि बाबा चमत्कारी हैं। जो भी कहो, उसी के बाद से रजनी हमें देखकर मुस्कुराने लगी। बात करने लगी! और फिर फर्स्ट ईयर भी बाबा के प्रताप से ही निकला। तुम्हारे चक्कर में रहते तो मेरे भी चार सब्जेक्ट में बैक आते। हम तो कहते हैं एक बार चल के दिखा ही लो। क्या जाता है। मेरे विश्वास पर ही विश्वास कर लो।" चेतन ने सिद्धार्थ का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा।

"कहाँ रहते हैं बाबा तुम्हारे?" सिद्धार्थ ने लंबी साँस खींचते हुए कहा। चेतन को सिद्धार्थ के इस सवाल से लगा कि सिद्धार्थ उसकी बात से सहमति रखता है। उसने व्यग्रता से कहा-

"अबे हावड़ा में ही! तुम्हारे घर से तो नजदीक ही है। हरि दत्त लेन में।" चेतन का इतना पता ही बताना था कि सिद्धार्थ ऐसे चिहुँक गया जैसे उसे किसी ने चिकोटी काट दी हो।

"लाल कुएँ वाली गली में तो नहीं?" सिद्धार्थ ने अचरज से उठकर बैठते हुए पूछा।

"हाँ। बिलकुल वहीं!" मैंने कहा।

"नाम मूसा बंगाली तो नहीं?" सिद्धार्थ ने फिर पूछा।

"देखो बाबा का प्रताप! तुम भी जानते हो। पूरा देश जानता है उनको।"

"और कोई आदमी नहीं मिला था इस भरे पूरे देश में?" सिद्धार्थ ने हथेली हिलाते हुए कहा।

"क्यों क्या खराबी है मेरे बाबा में?" चेतन को बात फिर बुरी लगी।

"खराबी! बाबा तुम्हारे बिना गुटका लिए एक शब्द बोल नहीं पाते हैं। पिटते-पिटते बचे थे माँझे वाली गली में।"

"क्यों? क्या हुआ था भाई?" अबकी रुद्र ने पूछा।

"सुनी-सुनाई बात है। माँझे वाली गली में किसी फातमा बीबी के ऊपर कोई हवा थी। वही झाड़ने तुम्हारे बाबा गए थे। ये भूत झाड़ने वाले भूत-भूतनियों को खूब गाली वाली देते हैं। तो बाबा भी उसकी खूब ऐसी-तैसी किए। मगर भूत नहीं निकला। अब

बाबा को गुस्सा आ गया। उन्होंने गुटका फाड़ा, मुँह में घुलाया और तैयार हो गए।"

"फिर?"

"फिर क्या, बोलना था आत्मा की शुद्धि तो गुटखे की लटपटाहट में बोल गए फातमा की फु...! अब छोड़ो! क्या जबान खराब करवाओगे हमारी।" सिद्धार्थ कहते-कहते रुक गया। रुद्र आधी बात में पूरी बात समझकर हँसी से लोट गया। चेतन खिसियाता हुआ बोला-

"जो भी हो, बाबा ही इस समस्या से मुक्ति दिला सकते हैं मेरा विश्वास है। एक बार दिखा लेने में क्या हर्ज है!"

"देख भाई। तू जानता है कि एक तो मेरा वैसे ही विश्वास नहीं और अब इसके बारे में जानने के बाद मुझसे जिंदा मक्खी नहीं निगली जाएगी।"

"तो ठीक है। तू मत जा। तुझे जाने को नहीं कहता। मगर हमें तो करने दे। हो सकता है कुछ हो ही जाए।" चेतन ने सिद्धार्थ से गुजारिश की।

"हमें!" रुद्र को इस 'हमें' से ही आपत्ति थी। उसने एक साँस में कहा- "अपनी बात करो लाले। हम कहीं नहीं जा रहे। आप डूबे बाभना ले डूबे जजमान!"

रुद्र ने कह तो दिया मगर वह जानता था कि वह यह बात कहने के लिए ही कह रहा है। सिद्धार्थ की जितनी चिंता चेतन को थी उतनी ही रुद्र को भी।

***

और फिर उसी रात गोपालनगर के श्मशान की ओर अपनी स्कूटी लिए हुए चेतन, मूसा बंगाली के ठिकाने की ओर बढ़ने लगा। बाबा ने आजकल यहीं ठिकाना लगाया था। स्कूटी में पीछे रुद्र दोनों हाथों में दो जिंदा मुर्गों को टाँगों से पकड़े बैठा था, जो रह-रहकर फड़फड़ा उठते थे जिससे कि यह भयावह रात और भयभीत कर जाती थी। रुद्र ने स्कूटी में पीछे बैठे-बैठे ही स्कूटी के आगे वाली खाली जगह में रखे कनस्तर की बाबत पूछा- "राजे, आगे डिब्बे में क्या रखे हो?"

"दारू!"

"मतलब शराब?"

"यार! ज्यूडिशियरी की परीक्षा में इतना पर्यायवाची शब्द नहीं पूछेगा जितना तुम रट रहे हो। हाँ शराब ही है।" चेतन को स्कूटी चलाते वक्त बात करने से कुढ़न हो रही थी।

"इतना?"

"हाँ!" चेतन ने गाड़ी चलाते हुए ही छोटा-सा जवाब दिया।

"दारू-मुर्गा का पार्टी फिर से!" रुद्र ने कहा।

"नहीं! बाबा का चढ़ावा है।"

"तेरा बाबा इतना चढ़ा लेता है?"

"हाँ!"

"एक कनस्तर?"

"यार एक ही बात कितनी दफा पूछेगा?"

"नहीं मतलब जानना चाह रहे थे कि बाबा की टंकी कितने लीटर की है?" रुद्र ने फिर चेतन को खींचते हुए कहा।

"चुप करो, बाबा जी का आश्रम आ गया।" चेतन ने स्कूटी एक जगह रोकते हुए कहा।

"हमें चुप करा रहे हो, इन मुर्गों को चुप करा के दिखाओ!" रुद्र ने दोनों हाथों में लिए मुर्गों को आगे करते हुए कहा। चेतन ने किसी तरह स्कूटी के आगे भाग में फँसे कनस्तर को हिला-हिलाकर बाहर निकाला और दोनों हाथों में कनस्तर लिए बाबा के आश्रम में रुद्र समेत घुस गया। भीतर का माहौल रुद्र के लिए नया था। जाने का रास्ता बिलकुल किसी गुफा के शक्ल में बना हुआ था। रास्ता अब तक सीधा था और जहाँ मोड़ थे, वहाँ लाल रंग के जीरो वाट वाले छोटे बल्ब लगे हुए थे। रुद्र ने बल्ब देखते हुए धीमे से ही कहा-

"अबे! ये तमराज किल्विश के ठिकाने पर लेकर क्यों आया? हमें भूतनी ढूँढ़नी है। अँधेरा फिर कभी कायम कर लेंगे भाई!"

"श्शश्श!" आगे-आगे चल रहे बाबा के चेले ने मुँह पर हाथ रख चुप रहने को कहा। दोनों बहरहाल चुप हो गए। चारों ओर फैले धुएँ भरे कमरे में कुछ भी साफ दिखना संभव नहीं था, सिवाय एक पर्दे के जो चेतन और रुद्र के ठीक आगे था। लोबान के साथ संभवतः कोई रसायन भी धुएँ में था जो ध्यान केंद्रित नहीं करने दे रहा था। धीमे-धीमे ही धुआँ छटा और सामने पदमासन में बैठे बाबा प्रकट हुए। बाबा काले रंग की कफनी पहने बैठे थे। गले में लाल रंग की दुशाला, आँखें इस तरह बंद जैसे आँखों के कोटरों में कुछ भी न हो। हाँ, मगर उनकी दाढ़ी इस कदर बनी हुई थी जैसे समाधि से नहीं, सैलून से आ रहे हों। चेतन को बहरहाल इन सब बातों से कोई सरोकार नहीं था। उसने बाबा को देखते ही शराब का कनस्तर उनके सामने रख दिया और दोनों हाथ जोड़ लिए। रुद्र ने भी चेतन को देखकर हाथ जोड़ने की कोशिश की तो, हाथ में पकड़े हुए दोनों मुर्गे आपस में लड़-भिड़ गए। मुर्गे कुकड़-कू चिल्ला उठे। बाबा के ध्यान में विघ्न पड़ा। उन्होंने आँखें खोली और हिकारत के भाव से अपने चेले को देखा। चेला उस देखे का अर्थ समझ गया। चेले ने आगे बढ़कर रुद्र के हाथ से मुर्गा ले लिया और दारू की कनस्तर भी घुमाते-घुमाते बाहर की ओर ले गया और जब लौटा तो उसके दोनों हाथों में भरी बोतल थी। उसने बोतल ठीक बाबा के सामने रख दी और बाहर निकल गया। उसके निकलने के बाद चेतन को इस बात का एहसास हुआ कि उसे बात शुरू कर देनी चाहिए।

"बाबाजी के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम!" चेतन ने आगे लोटते हुए कहा। रुद्र को उसके लोटने पर नहीं; उसके बोलने पर सवाल हुआ। उसने फौरन ही सरगोशी से पूछा-

"अबे ये क्या चटनी वाले बाबा हैं?"

"कौन चटनी वाले?" चेतन ने भी धीमे से दाँतों के बीच से ही आवाज दबाते हुए कहा।

"वही जो समोसा के साथ लाल–हरी चटनी बताते हैं।" रुद्र ने अपना सवाल रख दिया।

"क्या बकवास है ये!" चेतन ने हाथ जोड़े हुए ही खीझ में फुसफुसाते हुए कहा।

"नहीं, तुम उनका वाला डायलॉग बोले न... कोटि-कोटि प्रणाम, तो हमें लगा..." रुद्र ने भी फुसफुसाते हुए आधी ही बात कही थी कि बाबा ने आँखें खोल दी।

"नीली छतरी वाला बड़ा कारसाज है।" बाबा बड़बड़ाए।

"बेशक-बेशक!" चेतन ने सँभलते हुए कहा।

"और कैसे आया! तेरी दिलजाना कैसी है?" बाबा ने चेतन से पूछा।

"जी कृपा है बाबा आपकी। बिलकुल बँधी रहती है आपकी इलायची से।" चेतन ने शिष्यवत ही जवाब दिया।

इलायची की बात सुनकर बाबा की एक त्योरी ऊपर की ओर चढ़ गई। चेतन समझ गया कि उससे कोई गलती हो गई है। उसने तुरंत बात सँभालते हुए कहा-

"मतलब, आपके सिद्ध की हुई इलायची के प्रभाव से बिलकुल वश में है।" चेतन के इतना कहने के बाद ही बाबा की तनी हुई त्यौरी सामान्य अवस्था में आ गई। बाबा फिर से समाधि की स्थिति में चले गए। मगर अब त्योरी चढ़ाने की बारी रुद्र की थी-

"ये किसकी बात कर रहा है?" रुद्र ने फुसफुसाते हुए कहा।

"रजनी की।" चेतन ने हाथ जोड़कर बाबा की ओर देखते हुए धीमे से ही जवाब दिया।

"तुम रजनी को दिलजाना बुलाते हो? साले और कोई नाम नहीं मिला? लग रहा है प्रदीप कुमार, मधुबाला को पुकार रहा है।" रुद्र ने फुसफुसाते हुए कहा।

"मैं नहीं, बाबा बुलाते हैं।" चेतन ने बिलकुल ही खीझ में फुसफुसाते हुए कहा।

"ये बुलाता है? ये रजनी को दिलजाना क्यों बुलाता है?" रुद्र की समस्या अब और गंभीर हो गई थी।

"प्रेमिका को उर्दू में दिलजाना कहते हैं।" चेतन ने बताया।

"हाँ! वो ठीक है लेकिन ये क्यों बुलाएगा?"

"मेरा मुँह में ले लो, लेकिन चुप रहो।" चेतन ने गुस्से की इंतिहा में कहा।

"ऊपरवाला कारसाज है!" बाबा ने फिर आँखें खोली।

"बेशक बेशक!" चेतन ने वही रटा-रटाया जवाब दिया।

"बता! क्या अजाब है तेरे आगे?" बाबा ने सामने पड़ी दो बोतलों पर दोनों आँखें गड़ाते हुए कहा।

"बाबाजी एक लड़की है..." चेतन ने बिना कॉमा, फुल स्टॉप लगाए एक सीध में कहा। बाबा को बात नागवार गुजरी। उन्होंने फौरन टोका-

"क्या बकता है? बाबा कोई लड़की है!"

चेतन को फौरन अपनी गलती का एहसास हुआ, उसने बात सँभालते हुए कहा-

"आप नहीं बाबा जी। मेरे कहने का अर्थ है कि बाबा जी, एक लड़की की प्रॉब्लेम है जो..."

"फिर लड़की?" बाबा ने फिर त्यौरियाँ चढ़ाईं।

"क्यों नहीं हो सकती?" अबकी रुद्र बीच में टपका।

"ये नादान कौन है?" बाबा ने रुद्र को देखते हुए चेतन से पूछा। रुद्र ने बहरहाल उसकी बात पर ध्यान न देते हुए अपनी बात रखी।

"बाबा जी, हैविंग टू गर्लफ्रेंड इज नॉट अ प्रॉब्लेम। हैविंग नो गर्लफ्रेंड इज डेफिनेटली अ प्रॉब्लेम। मुझसे पूछिए। मुझसे ज्यादा इस बात को कौन जानता है। इसका भी घर आपने सेट करा दिया है और अब तो सिद्धार्थ को भी वो भूतनी मिल गई है।" रुद्र ने अंतिम लाइन बहुत मन मसोसकर कहा; मगर बाबा ने अपने काम की बात सुन ली।

"भूतनी!" बाबा चिहुँके।

"जी बाबा जी!" उसी लिए तो अपने पास आए हैं।

"ठीक है। समझ रहा हूँ। फिर भी सब कुछ खोलकर बताओ।" बाबा ने कहा। बाबा की बात से चेतन का दिमाग उड़ गया। उसने रुद्र की ओर देखा। उसके भी चेहरे का एरोड्रम खाली था। हवाइयाँ उड़ चुकी थीं। उसने चेतन को देखा। चेतन ने भी उसे देखते हुए धीमे से ही सही मगर खतरनाक सवाल किया-

"अंडरपैंट पहने हो?"

"पता नहीं यार!" रुद्र ने डेढ़ खतरनाक जवाब दिया। सामान्य वक्त में ऐसे जवाब पर कोई भी हँसते-हँसते दोहरा हो जाता। मगर इस वक्त चेतन की हँसती हुई नहीं बल्कि फँसती हुई आवाज निकल रही थी। उसने गुस्से में दाँत पीसते हुए ही कहा- "पता नहीं का क्या मतलब!"

"मतलब याद ही नहीं आ रहा राजे! सुबह इतनी तेजी में निकला..." रुद्र की फुसफुसाहट अब बाबा तक भी पहुँची। उसने तत्काल आँख खोलकर पूछा-

"कोई परेशानी?"

"जी बाबा!"

"कुछ मत छिपा! सब कुछ खोल के बता!" बाबा ने फिर कहा और दुबारा चेतन का असमंजस बढ़ा दिया। मगर वह बाबा की बातों की अवमानना भी नहीं कर सकता था। सो उसने बेल्ट निकालनी शुरू की; मगर साथ ही फिर भी हिम्मत कर के कहा-

"बाबा जी! खोल के बताने में तो शर्म आएगी; ऐसे ही बता देते हैं। बिना खोले।"

बाबा ने जब तक उसका आशय समझा तब तक चेतन बेल्ट उतार चुका था और अब उसके हाथ पैंट की हुक पर अटके थे। बाबा को बात अब समझ आई। उन्होंने फौरन आवाज तेज करते हुए कहा-

"अरे नादान! बंद कर!" बाबा जी ने बेल्ट की ओर देखते हुए कहा और फिर एक क्षण को माथा पीटते हुए सँभल-सँभलकर बोले, "बातें खोलकर बताओ, पैंट खोलकर नहीं।"

"ओह-ओह! क्षमा कीजिएगा बाबा! आपके चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम!" कहते हुए चेतन ने अपनी गलती पर पर्दा डाला।

"अब बता?"
"बाबा, मेरा एक दोस्त है।"
"ये?" बाबा ने रुद्र की ओर देखते हुए कहा।
"नहीं बाबा! एक तीसरा दोस्त है।"
"वो क्यों नहीं आया?" बाबा ने पूछा।
"अब कैसे कहूँ!" चेतन ने सकुचाते हुए कहा।
"मुँह से!" बाबा ने कहा।
"बाबा, दरअसल उसे इन सब बातों में विश्वास नहीं है।"
"नामाकूल है वो!" बाबा ने जोर से चिल्लाते हुए कहा और आँखें फिर बंद कर ली।
"जी बाबा जी!" चेतन ने हाथ जोड़े हुए थरथराते हुए कहा।
"ये क्या बोला बे?" रुद्र ने अचरज से पूछा। उर्दू के शब्द आते ही उसके कान खड़े हो जाते थे।
"पता नहीं।" चेतन ने उसी अवस्था में बैठे हुए कहा।
"जब पता नहीं तो 'जी बाबा जी' क्यों बोला?" रुद्र खीझ गया।
बाबा ने बहरहाल एक बार फिर आँखें खोली और बोले- "क्या परेशानी है उसे?"
"बाबा उसे एक लड़की दिखती है। जो हमें नहीं दिखती। पहले तो सब हँसी-मजाक तक था। लेकिन अब उसे एक साया भी दिखता है। जो हमें नहीं दिखता। अब वो साया हमारे हॉस्टल में लड़कों को तंग कर रहा है। हमें लगता है कि वो लड़की ही ये साया है। आप कृपा करके हमें और मेरे दोस्त को इस संकट से बचा लीजिए।"
"हम्म!" बाबा ने कहा और सामने रखे दोनों बोतल पर फिर एकदफा नजर गड़ाते हुए पूछा- "कुछ कहती भी है वो, जब किसी को तंग करती है तब?"
"हाँ बाबा जी! कुछ भुनभुनाती है। क्या बोलती है बे?" मैंने रुद्र की ओर देखते हुए पूछा।
"भुनभुनाती नहीं है, गुनगुनाती है। घरघराती है। ऐसा लगता है टेप रिकॉर्डर में कैसेट उल्टा चल रहा है।" रुद्र मुद्दे से भटका।
"कहती क्या है, वो बता!" बाबा ने पास रखी दोनों बोतल हाथ में उठाते हुए पूछा।
"कहती है-
कौन बिधी लिखले लिलार मोरे देवता
निसदिन ढोअब पहाड़ रे
जनमत माई तरस खाई हम पे
पथरा प फोड़तु कपार रे।"
पूरी बात सुनाने के बाद रुद्र ने देखा कि बाबा ने बोतल की तली तक की शराब पीने के लिए बोतल को पूरा उलट लिया है। शराब की आखिरी बूँद भी अब उसके मुँह में समा जाने वाली है।
"लगता है टंकी फुल कर के बताएगा।" रुद्र ने फुसफुसाते हुए कहा ही था कि बाबा ने हाथों से बोतल छोड़ दी। बोतल गिरकर चकनाचूर हुई। लाल-लाल आग्नेय आँखों

को चेतन के चेहरे पर ठहराते हुए बाबा चिल्लाए-

"पिच्छल पैरी है वो!" यही चार शब्द कहकर उसने फिर अपनी नशे में डोलती आँखें बंद कर ली। चेतन और रुद्र की समझ में कुछ भी नहीं आया। सवालिया शिकन चेहरा लिए रुद्र ने चेतन से कहा-

"क्या है! क्या बोला ये? राजे ओए! जरा गूगल कर तो!" रुद्र ने कहना खत्म किया उसके पहले ही चेतन गूगल कर चुका था।

"पिच्छल पैरी.... पिच्छल पैरी... हाँ मिल गया..." चेतन फुसफुसाया- "पिच्छल पैरी एक तरह की ऊपरी बला है जो पाकिस्तान के पहाड़ी भागों और पंजाब प्रांत में देखी जाती है। इसके पाँव पीछे की तरफ मुड़े होते हैं..." चेतन अभी आगे पढ़ ही रहा था कि रुद्र ने टोका-

"साले को आइटम भी पाकिस्तान की मिली है!" उसने सिद्धार्थ की बाबत कहा।

चेतन ने उसकी बात पर ध्यान न देकर आगे पढ़ना जारी रखा- "इसके पैर पीछे की ओर मुड़े होते हैं और किसी को दिखाई न दे, इसलिए लंबे घाघरे पहनती है। और..."

"और क्या?" रुद्र ने पूछा।

"और यह अपने शिकार को घाघरे में घुसाकर मार देती है।" यह कहते-कहते उस अजाब की स्थिति में भी चेतन की हँसी छूट गई थी। रुद्र तो तांत्रिक के सामने बैठा-बैठा ही पीछे की ओर उलट गया था। उसके उलटने से जो आवाज हुई उससे तांत्रिक ने आँखें खोल दी। उसके आँखें खोलते ही चेतन ने रुद्र को कोहनी से टहोका दिया। वह बहरहाल उठकर बैठ गया।

"नहीं बाबा जी। उसके पाँव पीछे की ओर नहीं हैं।" चेतन ने बाबा को आँखें खोलते देखकर फौरन ही कहा- "पक्का?" तांत्रिक ने अपने दाहिनी तरफ रखी खप्पर में फिर शराब उड़ेलते हुए पूछा।

"जी बाबा जी! जिस दोस्त ने लाइव टेलीकास्ट देखा है... मेरा मतलब है, जिस दोस्त को वो दिखती है उसका कहना है कि लड़की के पाँव ठीक हैं।"

"मतलब अग्गल पैरी है वो!" रुद्र हँसी का कोई मौका छोड़ना नहीं चाहता था। चेतन को उसके नामकरण से हँसी तो आ ही गई मगर उसने खुद की हँसी को जब्त करते हुए कहा-

"वह कपड़े भी सब तरह के पहनती है। सलवार कमीज, स्कर्ट्स और तो और जींस भी पहनती है। ऐसा... दोस्त... ने... बताया।" आखिरी लाइन कहने से पहले तांत्रिक की आँखें फिर चढ़ने लगीं। इसलिए आखिर का वाक्य चेतन ने रुक-रुककर ही कहा। तांत्रिक ने खप्पर रखा। और फिर एक छोटे मांस के टुकड़े को आग के हवाले करता हुआ एक पिच ऊँची आवाज में चिल्लाया-

"आसेबजादी है वो!"

इतना कहकर तांत्रिक की आँखें फिर बंद हो गई। रुद्र ने चेतन की ओर देखा, और चेतन ने रुद्र की ओर। दोनों को बात का कोई सिरा नहीं मिला।

"ये क्या बोला अभी?" रुद्र ने फिर भी पूछा।

"पता नहीं यार!" चेतन ने असमर्थता जाहिर की। रुद्र के लिए भी अब संयम की अति हो गई थी। उसने कुनमुनाते हुए कहा-

"ये साला सिद्ध नहीं गिद्ध है। हम बता रहे हैं इसके पास कोई इंडियन केस है ही नहीं। इसकी डिक्शनरी ही अलग है।"

उसके इस कटाक्ष पर चेतन को इस भयावह माहौल में भी हँसी आ ही गई। तांत्रिक बहरहाल कुछ नहीं बोला। थोड़ी देर के बाद उसने आँखें खोलीं और कहा-

"हम आएँगे। हम इस अजाब से तुम सबको आजाद कराएँगे। यह सवाब का काम होगा।" तांत्रिक के ऐसा कहने से वाजिबी तौर पर चेतन और रुद्र को राहत मिलनी चाहिए थी। मगर उनके पसीने छूट गए। कारण साफ था और कारण चेतन ने साफ कर भी दिया-

"बाबा जी! आप यहीं से कुछ उपाय कर दें।"

"क्या उपाय कर दें नादान! यह लौंग, इलायची, गूलर के फूल से मरने वाली काया नहीं है। हम समझ गए हैं। यह कुछ चाहती है। कुछ बताना चाहती है। हम उसे बाँधकर ले आएँगे।" बाबा आँखें फाड़कर बोले।

"मगर बाबा जी! बात को समझिए। हम लोग हॉस्टल में रहते हैं। हॉस्टल में किसी को जाने की इजाजत नहीं होती।" चेतन ने जल्दबाजी में कहा।

"हम तुम्हें 'किसी' नजर आते हैं नादान लौंडे! जा भाग जा, वरना मसानी भूत तेरे ऊपर ही डाल दूँगा।" तांत्रिक ने क्रोध से हिलते हुए आँखें लाल करते हुए कहा। चेतन की हालत खराब होने को हुई ही थी कि रुद्र ने बात सँभाल ली-

"चचा! इसके कहने का मतलब है कि आप इस भेस में चलेंगे तो भूत बाद में भागेगा, लड़के पहले भाग जाएँगे।"

"कहना क्या चाहता है तू?" तांत्रिक ने आँखें लाल किए हुए ही कहा।

"बस ये कि जब वो हरामजादी... फरेबजादी... क्या नाम है उसका!" रुद्र लटपटाया।

"आसेबजादी!" तांत्रिक ने दुहराया।

"हाँ! हाँ वही! जब वो कपड़े बदल सकती है तो आप क्यों नहीं? आप तो माशाल्लाह उसके मालिक ही ठहरे... चुनौटी में बंद कर लेंगे उसे।" रुद्र ने तांत्रिक के अहं पर मक्खन पोत दिया। तांत्रिक खुश हुआ। यह उसके चेहरे से जाहिर हुआ।

"कब हरनी है प्रेत बाधा?" बाबा ने अब काम की बात की।

"शनिवार को बाबा जी।" चेतन ने कुछ सोचते हुए दिन बताया।

"जा भाग जा! शनिचर को आकर ले चलना।" कहते हुए तांत्रिक ने फिर खप्पर में आधी बोतल शराब उड़ेल ली।

बाबा जी के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम कहते हुए चेतन इस तरह कोर्निश करते हुए बाहर निकला जैसे वह तांत्रिक के नहीं मुगलिया दरबार से बाहर आ रहा हो।

***

शनिवार की दोपहर का यह वक्त जान-बूझकर चुना गया था। कारण यह था कि

अव्वल तो आस-पास रहने वाले सारे लड़के शुक्रवार की रात को ही घर के लिए निकल जाते थे और दोयम यह कि आज कॉलेज में इंटर कॉलेजिएट कल्चरल प्रोग्राम था, जिस कारण हॉस्टल के बचे हुए लड़के प्रोग्राम में गए हुए थे। इसलिए हॉस्टल बिलकुल वीरान पड़ा था। सिद्धार्थ किसी और वीराने में भटकने को सुबह ही निकल गया था और रवि ने पिछले दो-तीन दिनों से अपने-आपको कमरे में बंद किया हुआ था। अलावा इसके उस दोपहर हॉस्टल पूरी तरह साँय-साँय कर रहा था।

इस दुपहरी में एक कार हॉस्टल के बाहर आकर रुकी। कार से बाबा मूसा बाहर निकला। उसे पहनने के लिए हॉस्टल के सबसे मोटे लड़के का वह पैंट और शर्ट दिया गया था जो कल रात ही लड़के के कमरे से चुराया गया था। शर्ट इस कदर चुस्त और पेट पर अटकी हुई थी मानो थोड़ी और छोटी होती तो ब्लाउज से मिलान हो जाता। और पैंट इस दर्जा तंग जैसे टाँगों के साथ ही आई हो। चेतन गेट पर ही उसके इंतजार में खड़ा था और रुद्र कॉरीडोर में, ताकि यदि कोई बाहर की ओर आता दिखे तो उसे किसी तरह बातों में लगा लिया जाए। मगर कोई बाधा नहीं आई। चेतन और मूसा बाबा रुद्र तक पहुँच गए। अपना झोला लिए मूसा पीछे-पीछे चला। उसके आगे-आगे रुद्र और चेतन। अभी वह लोग कमरे के बाहर पहुँचे भी नहीं थे कि बाबा रुक गए।

ऐसा लगा जैसे उन्हें कुछ अजीब-सा महसूस हुआ है। उनके चेहरे से ऐसे भाव आ रहे थे जैसे उन्हें हॉस्टल में घुसते ही काया की मौजूदगी का भान हुआ है। कोई आहट, कोई गंध, कोई खटका। उनके चेहरे पर परेशानी के भाव साफ थे।

मगर वह परेशानी किसी पिशाच की नहीं बल्कि पेशाब की थी। उन्हें भूत का नहीं, मूत का अंदेशा हुआ था। वह परेशानी जो काफी देर तक पेशाब रोकने पर होती है। बाबा की पैंट ने उनके पेट का हिस्सा काफी कस दिया था इसीलिए संभवतः बाबा परेशान थे। रुद्र चूँकि आगे था इसलिए उन्होंने उससे ही कहा-

"बच्चा, ये बैतुलखला किधर है?"

"आँय!" रुद्र उनकी बात नहीं समझ पाया। वह दरअसल खीझ गया। इसी खीझ में वह चेतन से मुखातिब होकर बोला-

"लाले! ये उर्दू डिक्शनरी को बोल ना कि हिंदी में भी कुछ बोले। देश तो कब का आजाद हो गया।"

चेतन को उसकी बात समझकर हँसी तो आ गई, मगर बाबा की स्थिति देखकर चेतन ने बाबा से सप्रेम कहा- "बाबा जी बात समझ नहीं आई। एक बार हिंदी में बताएँ।"

चेतन की यह बात सुनकर बाबा जो पहले परेशानी में थे, अब गुस्से में आ गए। त्योरियाँ चढ़ाते हुए उन्होंने जहर बुझा जवाब दिया- "अँग्रेजी में बताऊँ?"

"हाँ! उसमें भी हाथ ठीक-ठाक है। कहिए।" चेतन की जगह रुद्र ने ही कहा।

रुद्र की बात खत्म होते ही बाबा ने चेतन की ओर देखते हुए अपने बाएँ हाथ की छोटी उँगली खड़ी कर दी। चेतन उनका इशारा समझ गया।

"ओह! टॉयलेट जाना है?" चेतन ने उनकी बात समझते हुए कहा। बाबा ने कोई जवाब नहीं दिया जिसका अर्थ था कि चेतन उनकी बात सही ही समझा है। चेतन अभी आगे बढ़कर उनको टॉयलेट की ओर ले जाता कि रुद्र फुसफुसाया-

"लाले, इस 'जज्बात के सलाम' को तो भूत देखे बिना ही पेशाब लग गया। भूत देख के ये कहीं गाय-गोबर न कर दे।" रुद्र ने अपनी शंका जाहिर की। जिससे चेतन को बेलौस हँसी आ गई; पर उसने होंठों को भीतर दबाकर हँसी रोकी।

वह बाबा को लेकर बाथरूम ले जाने को बढ़ ही रहा था कि रुद्र ने एक बार फिर उसे कलाई से पकड़कर रोकते हुए फुसफुहाहट भरी आवाज में पूछा- "तू भीतर कहाँ जा रहा है?"

"अबे उसको समझाना होगा। पहली बार पैंट पहना है। कहीं कुछ फँस-फँसा लिया तो हल्ला करके अल्ला बुला लेगा।" कहते हुए चेतन खुद ही हँस पड़ा और रुद्र को हँसता छोड़ बाबा की ओर बढ़ गया।

बाबा को बाथरूम की ओर ले जाकर अभी चेतन पैंट के बटन से लेकर, जिप तथा यूरिनल का उपयोग समझाने ही वाला था कि बाबा खूँटा तुड़ाए बैल की तरह उत्तेजित हो गए- "भीतर कहाँ चला आ रहा है बेगैरत!"

"वो बाबा जी, पैंट में चेन होता है, इसमें पाजामें की तरह नाड़ा नहीं..." चेतन ने अभी आधा ही था कि बाबा फिर चिल्लाए- "हमें समझाएगा नादान! जा भाग जा यहाँ से!"

चेतन मामले की नजाकत को समझता हुआ बाहर निकल आया। बाहर रुद्र उसका इंतजार ही कर रहा था। और अब दोनों मिलकर बाबा का इंतजार करने लगे।

भीतर बाबा ने जैसे-तैसे काफी मशक्कत के बाद पैंट की जिप खोल ली। मगर अब सामने एक सीध में लगे चार स्टैंडिंग यूरिनल को देखकर उनका सिर चकरा गया। उनकी बूढ़ी बुद्धि में यह बात समा नहीं पा रही थी कि इसका प्रयोग कैसे किया जाता होगा।

मगर जैसा कि कहते हैं कि उम्र तो बस एक संख्या है, संख्या के अलावा कुछ नहीं। बाबा को फौरन ही एक युक्ति सूझ गई। उन्होंने पहले यूरिनल के आकार को देखा फिर अपने तशरीफ का ध्यान किया और अपनी समझदारी की बलाएँ ली। बकौल उनकी समझ के, यूरिनल का आकार इस तरह का बना है कि उस पर बैठकर ही विसर्जन किया जाता होगा। सो बाबा गर्वोक्त भाव से उछलकर यूरिनल पर चढ़े और एक चीख के साथ यूरिनल समेत नीचे आ गए। यूरिनल बाबा की तशरीफ समेत जमीन पर ही नहीं आया था बल्कि अपना कुछ हिस्सा लिए बाबा की तशरीफ में समा भी गया।

चीख बाहर तक गई थी। चेतन दौड़ता हुआ भीतर आया और जो देख पाया उसका लब्बो-लुबाब यह था कि बाबा और यूरिनल का सेरामिक दोनों छितराए हुए थे। सेरामिक को बटोरने का कोई फायदा नहीं था इसलिए बाबा को ही बटोरा गया। हँसी और दर्द के बीच की स्थिति में लाज पचाते हुए बाबा उठे और नये जमाने को

कोसते हुए बाहर की ओर निकल आए। चोट हालाँकि कोई जोरदार नहीं थी; मगर वह सकते में जरूर आ गए थे। इतना कि वह यह भी भूल गए थे कि वह बाथरूम किसलिए आए थे।

बाहर निकलकर बाबा ठीक-ठाक स्थिति में थे और वह फौरन ही अपने झोले में कुछ टटोलने लगे। मगर चेतन ने आज की उनकी स्थिति देखते हुए कहा- "बाबाजी कोई दिक्कत हो तो आज रहने दें, किसी और दिन..."

"श्श्श्श!" चेतन की बातों को अनसुना करते हुए बाबा ने अचानक ही अपने होंठों पर तर्जनी रखकर उसे चुप रहने का इशारा किया और कुछ सुनने के लिए कान खड़े कर लिए।

कोई आवाज तो जरूर थी। ऐसा लगता था जैसे कोई कीड़ा भुनभुना रहा हो। यह भी था कि वह आवाज दूर जाती जा रही थी। बाबा ने अचानक ही लंबी मगर बिना आवाज की साँस भीतर खींची। महसूस हुआ कि वातावरण में कपूर की महक फैल रही थी।

बाबा उस महक की ओर इस तरह बढ़ने लगे जैसे वह उस महक को देखकर उसका पीछा कर रहे हों। जिस ओर वह जा रहे थे उधर हॉस्टल का स्टोर रूम था। हॉस्टल के सारे कबाड़ जैसे टूटी कुर्सियाँ, मेज, पंखे, कूलर इत्यादि उसी में रखे जाते थे। जब वह उधर बढ़े तो चेतन ने उन्हें टोकना चाहा। कारण यह था कि यहाँ से रवि का कमरा दूर था। लगभग दो सौ मीटर। इसलिए स्टोर रूम की ओर जाकर समय बर्बाद करने का कोई फायदा नहीं था। मगर कुछ तो जरूर था जो बाबा को नजर आ रहा था; इसीलिए बाबा ने एक दफा फिर होंठों पर तर्जनी रखकर चुप रहने का इशारा किया और धीमे से स्टोर रूम का दरवाजा भीतर की ओर खोल दिया। एक चरमराती आवाज के साथ दरवाजा खुल गया। भीतर घुसते ही चेतन और रुद्र के होश फाख्ता हो गए।

उन्होंने देखा कि रवि अपने निर्वस्त्र शरीर पर लड़कियों के अंत:वस्त्र पहनने की कोशिश कर रहा है और मेज के ऊपर टूटी कुर्सी पर खड़ा उस भेस में ही वह टूटी कुर्सी लगाकर पंखे में रस्सी जैसा कुछ बाँध रहा है।

बाबा को सारी बातें समझ में आ गई थीं। वह अपने झोले में से सामान निकालकर तैयारी करने से पहले धीमे से बोले- "इसे दो मिनट बातों में उलझाकर रखो।"

बाबा के इतना कहते ही पहली कोशिश चेतन ने ही की। उसने रवि को देखते हुए कहा- "रवि! क्या कर रहा है? उतर नीचे।"

चेतन के इतना कहते ही रवि की वशीभूत आँखें उसके चेहरे पर रुक गई। वह मुस्कुराया। खौफनाक मुस्कुराया और फिर ठहरी हुई आवाज में महज दो शब्द कहे- "भाग जो!"

मर्द-औरत के मिश्रित इस स्वर में जो बात कही गई उसका अर्थ था 'चले जाओ।' आवाज इतनी सर्द थी जैसे किसी को गर्दन तक बर्फीले पानी में खड़ा कर बोलने को कहा गया हो।

"हम्म!" बाबा कुछ सोचते हुए हुनहुनाए।

"क्या हुआ बाबा?" चेतन ने व्यग्रता से पूछा।

"कोई औरतजात ही है।" कहते हुए बाबा के चेहरे पर ऐसे भाव थे जैसे उन्होंने हड़प्पा की लिपि पढ़ ली हो। यह तो पहले से ही ज्ञात था। मगर इससे पहले कि चेतन या रुद्र, बाबा के इस अहमकाना नतीजे पर कोई प्रतिक्रिया देते, बाबा ने स्वयं ही मुश्किल आसान कर दी-

"सुनो! तुम दोनों बाहर जाओ, और बाहर से दरवाजा लगा दो। मैं इसको वश में कर के ही बाहर निकलूँगा। मैंने जान लिया है कि यह सारी कलाओं में निपुण है और आवाज बदल भी सकती है। इसलिए हो सकता है कि जब मैं इस पर मारक मंत्र फेकूँ तो यह मेरी ही आवाज बदलकर दरवाजा खुलवाने की कोशिश करे। तुम्हें ठगने की कोशिश करे। इसलिए यह चाहे कितना भी गिड़गिड़ाए; दरवाजा मत खोलना।"

"मगर बाबा!" चेतन ने कुछ पूछना चाहा।

"मगर, बट, परंतु, लेकिन जैसे मनहूस लफ्ज बीच में मत लाओ। जैसा कहता हूँ, वैसा करो।" बाबा ने एक साँस में गुस्से से कहा।

कहकर बाबा रवि की ओर मुड़ गए। चेतन और रुद्र बाहर आ गए। बाहर आते ही चेतन ने बाहर से कुंडी लगा दी और वहीं खड़े हो गए। आखिर वहाँ रहना भी कौन चाहता था। रवि की हरकतें और उसके चेहरे पर नाचता स्त्रैण भाव दोनों को और भी भयभीत ही कर रहा था। सो दोनों चुपके से बाहर निकल आए और सामने के गलियारे में ही खड़े हो गए।

स्टोर के दरवाजे से सटकर खड़ा नहीं रहा जा सकता था। फिर भी मन भीतर कमरे में हो रही क्रियाओं पर ही लगा था। क्योंकि रवि आत्महत्या जैसा भी कुछ सोच रहा था इसलिए बाबा ही अब एकमात्र सहारा थे। दोनों अभी असमंजस की स्थिति में गलियारे में टहल ही रहे थे कि अचानक दरवाजे पर जोर की आवाज हुई। ऐसा लगा कि लकड़ी के उस हरे दरवाजे से किसी का शरीर टकराया। चेतन को लगा कि बाबा जी ने भूत को पटक दिया है और मारकर भूत के भूस भर रहे हैं। अभी दोनों इस सोच पर खुश हो ही रहे थे कि भीतर से आवाज आई-

"बेटा! दरवाजा खोल!"

आवाज बाबा की थी और बहुत मार्मिक थी। मगर बहुत संभव था कि यह बाबा के बोल न हों, क्योंकि बाबा ने ही चेताया था कि यह काया आवाज बदल लेती है। सो यह खुशी की ही बात थी कि बाबा ने उसकी सारी हेकड़ी निकालकर गिड़गिड़ाने पर मजबूर कर दिया था।

गिड़गिड़ाहट अबकी बार मार्मिक से कारुणिक हो गई- "बेटा! मैं ही हूँ। दरवाजा पेश्तर खोल।"

धड़ाम की एक और आवाज ऐसी आई जैसे लगा कि पीठ पर कुर्सियाँ बजी हों।

दोनों को उस काया की गिड़गिड़ाहट अच्छी लग रही थी। वह अभी मारे खुशी के

ताली ही पीट देते कि आवाज अब रुआँसी हो गई- "अरे नाशुक्रो! लाश ही निकालोगे क्या! जल्दी खोलो वरना ये मुझे..."

और तब दोनों को पहली बार ये लगा कि कहीं सच में दाँव उल्टा न पड़ गया हो और भीतर बाबा की ही सेकाई न चल रही हो। दोनों अभी सोच की उस अवस्था में किंकर्तव्यविमूढ़ से खड़े ही थे कि आवाज बंद हो गई। आवाज की जगह चीख ने ले ली और...

वह दरवाजा जो हमेशा भीतर की तरफ खुलता था, आज पहली दफा अपने दोनों पल्ले और बाबा समेत बाहर की तरफ खुला। बाबा हवा में कलाबाजियाँ खाते हुए ठीक किसी दुर्घटनाग्रस्त हुए हवाई जहाज की तरह गलियारे में आ गिरे। रुद्र और चेतन अभी कुछ समझ पाते, इससे पहले बाबा उठे और तीर की तेजी से भागते हुए चिल्लाए-

"नाशुक्रो! यह पहले बताना था कि इसे कहाँ से लाए हो। यह नैना जोगिन है। मेरे बाप के भी वश में नहीं आने की।"

"नैना जोगिन!" रुद्र और चेतन स्तब्ध थे और समझने की कोशिश कर ही रहे थे कि तभी वही भूतही गुनगुनाहट सुनाई दी-

"कौन बिधी लिखले लिलार मोरे देवता
निसदिन ढोअब पहाड़ रे
माई हो, जनमते तरस खाई हम पे
पथरा प फोड़तु कपार रे।"

यही खून सर्द कर देने वाली गीत गाते और हाथ से स्वेटर बुनने का स्वांग करते हुए रवि लड़कियों की-सी चाल चलता अपने कमरे की ओर बढ़ चला। उसके कमरे का दरवाजा फिर बंद हो गया।

अच्छी बात बस यह रही कि हॉस्टल की शांति और कल्चरल फेस्ट के कारण बाबा का अध्याय दब गया।

***

दिल साहूकार है जिसके हाथों मजबूर होकर आदमी हर वाजिब, गैर-वाजिब काम करता है। सिद्धार्थ भी वही कर रहा था। तमाम खौफनाक हादसों और हॉस्टल में घट रही वारदात के बीच भी सिद्धार्थ मोहिनी को भुला नहीं पाया था और वह सारी हरकतें कर रहा था जिसे हकीमी की किताब में दीवानापन कहा गया है। जितना यकीन उसे इस बात का था कि मोहिनी है, उतना ही भरोसा उसके दोस्तों को इस बात का था कि मोहिनी और कोई नहीं बल्कि वही काया ही है जो सिर्फ सिद्धार्थ को दिखाई देती है। सिद्धार्थ के पास उनकी बातों को काटने का कोई कारण नहीं था। यही कारण था कि वह इस बात पर उनसे बहस नहीं करता था। और आज के दिन भी जब उसके दोस्त हॉस्टल में बाबा को बुलाकर हॉस्टल हिला चुके थे, सिद्धार्थ इन सब मसलों से दूर आज फिर उसी कब्रिस्तान में मोहिनी की तलाश में पहुँच गया था।

श्मशान। ऐसी जगह जहाँ झूमती हुई पेड़ों की डालियाँ लहरा-लहराकर चुड़ैल के

बालों का अंदेशा देती थीं। और किसी भी दिलेर को डरा देने की हद तक खौफनाक थीं। सिद्धार्थ डरपोक तो कतई नहीं था, इसीलिए शायद वह इस जगह पर खड़ा था। मगर उसके साथ हो रही घटनाओं ने उसे सोचने पर मजबूर कर ही दिया था। और फिर कुदरती तौर पर भी श्मशान का माहौल ऐसा होता है कि अच्छा-भला आदमी भी भयभीत हो जाए। कबर बिज्जुओं की डरावनी आवाज की किवदंतियाँ किसी भी तरह की आहट को आत्मा के रोने की आवाज से जोड़ देती हैं। एकटक देखती उल्लुओं की आँखें और श्मशान का अबूझ सन्नाटा माहौल को और भी भयावह बना देता है। सिद्धार्थ इन सब बातों को अपनी सोच से दरकिनार करते हुए चला जा ही रहा था कि उसे थोड़ी ही दूर पर एक साया दिखा। सिद्धार्थ ने आँखों के ऊपर हाथों का फन बनाकर देखने की कोशिश की। उसे चैन की साँस आई। वह मोहिनी ही थी। सिद्धार्थ ने देखा कि मोहिनी ने हाथ में एक कंकाल के हाथ की हड्डी उठा रखी थी और उसे अजीबो-गरीब तरीके से घूरे जा रही थी।

सिद्धार्थ ने उससे थोड़ी दूर रुककर मोबाइल निकाली और चेतन को फोन लगाया। नेटवर्क समस्या के कारण फोन नहीं लगा। उसने अबकी रुद्र को फोन लगाया। रुद्र के फोन उठाते ही सिद्धार्थ ने फुसफुसाते हुए कहा-

"राजे, फेसबुक वाले शायर को फोन दे जल्दी।"

"क्या हुआ?" रुद्र ने पूछा।

"अबे वो दिखी है!"

"वो कौन?"

"तुम ज्ञान गंगा न बहाओ। शायर को फोन दो।" सिद्धार्थ ने कहा ही था कि रुद्र ने फोन चेतन के हवाले कर दिया। चेतन ने फोन हाथ में लेते ही पूछा-

"कहाँ है भाई तू! सवेरे से हलचल मची हुई है। तू गायब है। ठीक तो है ना?"

"देख! चिट्ठी बाँचने का समय नहीं है। बस एक शेर बता दे जल्दी।" सिद्धार्थ ने हड़बड़ी से ही कहा।

"सिचुएशन बोल।" चेतन समझ गया कि वह किसी लड़की के साथ है। सिद्धार्थ जब भी किसी लड़की के साथ होता वह उन्हें प्रभावित करने के लिए शायरी चेतन से ही पूछता।

"सिचुएशन ये है कि लड़का बारह बजे रात को अकेला घूम रहा है और उसे लड़की दिख जाती है। उसके लड़की को यह नहीं जताना है कि वह यहाँ उसके लिए आया है। बल्कि ये जताना है कि वो यहाँ अक्सर आता है। अब इस पर कोई दिल में छेद कर देने वाली लाइन बता राजे!" सिद्धार्थ ने व्यग्रता से कहा।

"जगह कौन सी?" चेतन ने पूछा।

"जगह का क्या पट्टा लिखवाएगा?" सिद्धार्थ ने जगह की बात टालनी चाही

"मैं रखूँ फोन?" चेतन ने गुस्से में कहा।

"नहीं नहीं सुन मेरे भाई। श्मशान, श्मशान में हूँ।" सिद्धार्थ ने झेंपते हुए कहा।

"श्मशान! साले फिर श्मशान में डेटिंग हो रही है तेरी?"

"इसीलिए नहीं बता रहा था। अब मेरी किस्मत में कंपनी गार्डेन लिखा ही नहीं तो मैं क्या करूँ!" सिद्धार्थ ने मन मसोसकर कहा।

"अच्छा सुन! वो तो भूतनी है वैसे ही सब जानती होगी पर फिर भी भूतनी पूछे कि यहाँ क्या कर रहे हो तो बोल दियो कि-

'इसलिए भी रात को घर से निकल आता हूँ मैं
सर्दियों के चाँद को एहसास-ए-तन्हाई न हो।'

"एहसास-ए-व्हॉटेवर का मतलब...?" सिद्धार्थ ने अर्थ जानना चाहा।

"तू उसकी चिंता मत कर। बाबा ने बताया है कि वो पाकिस्तान से इम्पोर्टेड है। वह समझ जाएगी।" चेतन ने कहा।

"थैंक यू मेरी जान।" सिद्धार्थ को अब फोन रखने की हड़बड़ी थी।

"और सुन!"

"बोल!"

"जिंदा आ जइयो भाई!" कहते हुए चेतन अभी सिद्धार्थ की ओर से कुछ सुनने का इंतजार कर ही रहा था कि सिद्धार्थ ने फोन काट दिया। फोन काटते ही सिद्धार्थ ने देखा कि मोहिनी उसी हड्डी को लिए आगे बढ़ गई है। सिद्धार्थ उसके पीछे-पीछे ही चलता रहा कि अचानक मोहिनी पेड़ों के एक झुरमुट की ओट में ओझल हो गई। सिद्धार्थ के लिए अब कोई भी सुरक्षित दूरी रखना संभव न था। वह उसे ढूँढ़ने के लिए आगे की ओर बढ़ आया। झुरमुटों के आगे उसे मोहिनी नजर आई। वह अभी कुछ सोच ही पाता तब तक मोहिनी की आवाज सन्नाटा तोड़ गई। उसने बिना पीछे मुड़े ही कहा–

"जहाँ खड़े हो वहाँ से आगे हो जाओ। वहाँ साँपों की बाँबी है।"

मोहिनी की आवाज में वो कशिश थी कि एक सिहरन-सी सिद्धार्थ के जिस्म में दौड़ गई। ऐसा लगा जैसे इस आवाज ने एक ठंडी सुई उसकी नसों में उतार दी हो। दिमाग में दर्जनों सवाल तैरने लगे। क्या यह सच में...! नहीं-नहीं। मगर फिर इसे मेरे आने का पता कैसे चल जाता है? सवाल कई थे मगर यह सवाल पूछे नहीं जा सकते थे। इसलिए सिद्धार्थ ने माकूल सवाल ही किया- "क्या कर रही हो?"

"कुछ ढूँढ़ रही हूँ।" मोहिनी ने फिर बर्फ-सा सर्द जवाब दिया।

"ऐसा क्या है जो ऐसी जगह पर मिलता है?" सिद्धार्थ इस अचंभे की स्थिति में शेर कहना-सुनाना भूल गया था।

"ऐसा ही कुछ है जो ऐसी ही जगहों पर मिलता है।" मोहिनी ने फिर रहस्यमयी बात की।

"मुझे बताओ।" सिद्धार्थ ने आगे बढ़ते हुए पूछा।

"डर जाओगे।" मोहिनी मुस्कुराई।

"डर तो वैसे भी रहा हूँ।" सिद्धार्थ ने भी सहज हँसी के साथ कहा।

"किससे?" मोहिनी ने यूँ भाव बनाए जैसे सिद्धार्थ ने कोई अचंभे की बात कह दी हो।

"तुमसे।" सिद्धार्थ ने बेलाग-ओ-लपेट जवाब दिया।
"मुझसे क्यों?" मोहिनी ने पढ़ने वाली नजर उसके चेहरे पर जमाते हुए पूछा।
"तुम इतनी मिस्टीरियस जो हो। कभी-कभी लगता है कि हो भी या नहीं।"
"मिस्टीरियस हूँ!" कहते हुए उसकी उसकी आँखें फिर किसी सवालिया उत्साह से चमक उठीं। हरे रंग के वलय से घिरी नीली सपनीली आँखें। सिद्धार्थ ने उसके सवाल का कोई जवाब नहीं दिया। उसकी आँखों में देखने के बाद सिद्धार्थ क्या ही जवाब दे पाता!

सिद्धार्थ उसे बुत बना ताकता ही रहा। जब तक मोहिनी ही आगे नहीं आ गई। मोहिनी आगे आई और उसने उसके हाथ पकड़ लिए। उसे अपनी ओर खींचा। और उसके बाद सिद्धार्थ बस मोहिनी की शोख आँखें, मतलबी मुस्कुराहट और लरजा होंठ ही देख पाया। उसने महसूस किया कि मोहिनी के होंठ और चिरागों की लौ में कोई अंतर नहीं था। दोनों में एक जैसी ही कँपकँपाहट थी। सिद्धार्थ अब भी आशनाइयों के इस साजिश से महरूम था जो मोहिनी के गालों से लगी झूल रही थी। उसके बालों की एक खुली लट। वह लट जो जानबूझकर खुली छोड़ दी जाती है; जो गालों से खेलने का दिखावा भर करती है। दरअसल वह खेलती तो इश्क के दिल से है।

साँसों की गर्मी सिद्धार्थ अभी महसूस कर ही पाता कि उससे पहले उसने होंठों की नरमी महसूस की। एक शोख मुस्कुराहट के साथ मोहिनी ने अपने लरजा होंठों से सिद्धार्थ के होंठों पर दबिश दे दी। सिद्धार्थ को पल भर में यह एहसास भी हुआ कि उसके पीठ पर मोहिनी के दोनों हाथ गड़ गए हैं और उसके नाखून उसकी पीठ में धँसे जा रहे हैं।

खुमारी का आलम था। उसके होंठों पर किसी का हक काबिज हो गया था। शुरुआती पलों की झिझक अब गायब थी और साझे की इस खुशी में दोनों यह बताने पर आमादा थे कि कौन ज्यादा बेचैन है! कौन ज्यादा बेसब्र!

बदहवासी के इस आलम में दोनों यह भी भूल रहे थे कि वह किसी की ठंडी राख पर ही न बैठे हों।

बदहवासी के बाद होश का आना ठीक वैसे ही तय होता है जैसे रात के बाद दिन का आना। बदहवासी का आलम जब बीत चुका तो खुद को सिद्धार्थ से अलग करते हुए मोहिनी ने शोखी से ही पूछा-
"तो! अब भी मिस्टीरियस हूँ?"
"पहले से ज्यादा।" सिद्धार्थ ने मुस्कुराते हुए खरा-सा जवाब दिया।
"अब भी लगता है कि मैं हूँ भी या नहीं?" मोहिनी ने फिर सवाल किया।
"नहीं। तुम हो तो सही। मगर तुम ऐसी जगह पर क्यों मिलती हो?"
"तुम भी तो ऐसी जगह पर ही मिलते हो? क्यों मिलते हो? इट्स ए डेडली प्लेस!" मोहिनी ने हँसते हुए सिद्धार्थ को उसी की बात में उलझाया। सिद्धार्थ अब मुद्दे की बात भूलकर मोहिनी की बातों में आ गया था।

"बिकॉज यू आर वर्थ डाइंग।" सिद्धार्थ ने मोहिनी के बालों की लट को उसके कान के पीछे कर दिया। और फिर तभी कहीं बारह की गजर की आवाज आई। मोहिनी उठ खड़ी हुई। उसने उठते हुए ही फिर उसी रहस्यमयी भाव से कहा-

"यू आर टू यंग टू डाइ।" और फिर वही रूह को बेध देने वाली पुर-इसरार मुस्कुराहट। सिद्धार्थ उसके उठने से समझ गया था कि उसके जाने का वक्त हो गया है। उसने गौर किया था कि इस घड़ी के साथ ही मोहिनी के जाने की बेचैनी शुरू हो जाती है। वह जानता था कि जाना भी जरूरी है; फिर भी उसने पूछा- "जा रही हो?"

"हाँ!" मोहिनी ने जल्दबाजी में कहा।

"फिर कब मिलेंगे?"

"अब तो जल्द ही मिलना होगा। अब वक्त ही कहाँ बचा है!" मुस्कुराते हुए मोहिनी ने कहा।

"आई एम मिसिंग यू लाइक हेल!" सिद्धार्थ ने कहा। जवाब में मोहिनी मुस्कुरा दी और कुछ कहा। उसकी रूहानी आवाज सिद्धार्थ के कानों में गूँजती रही-

"मिस मी। अनटिल आई कम टू यू।" मोहिनी चली गई। उसकी बातें सिद्धार्थ के दिमाग में देर तक घूमती रही। मोटरसाइकिल स्टार्ट करने तक भी सिद्धार्थ पर खुमारी तारी थी। वह हँसता, खिलखिलाता, खुद से ही बतियाता, खुद में ही शरमाता हॉस्टल की ओर रवाना हो गया।

***

सिद्धार्थ जब हॉस्टल पहुँचा तो रात के डेढ़ बज चुके थे। हॉस्टल में भयावह सन्नाटा काबिज था। मगर वह जानता था कि उसका कमरा रौशन ही होगा, क्योंकि उसने चेतन और रुद्र दोनों से बात की ही थी और उसे उम्मीद थी कि उसके आने तक दोनों इंतजार ही करेंगे। उसका अंदाजा सही था। जब वह कमरे में पहुँचा तो रुद्र भी उसके कमरे में मौजूद था। उसने दरवाजा खोला और किसी शराबी की तरह लड़खड़ाते हुए कमरे में दाखिल हो गया। उसे देखते ही चेतन ने राहत की साँस लेते हुए कहा-

"थैंक गॉड! भाई आज फिर वन पीस में लौट आया है।"

"मगर ये गिरते-मरते क्यों आ रहा है?" रुद्र ने उसकी चाल देखकर कहा। सिद्धार्थ ने उसकी बात की अनदेखी करते हुए चेतन से ही सवाल कर दिया-

"राजे, वो कौन-सी शराब है जो जन्नत में मिलती है?"

"क्या हुआ?" चेतन ने सवाल के बदले सवाल किया।

"बता ना? वो कौन-सी शराब है जो जन्नत में मिलती है?" सिद्धार्थ ने फिर पूछा।

"मशूरब-उल-जंजीबील!" चेतन ने सिद्धार्थ को आश्चर्य से देखते हुए कहा।

"हाँ! वही! जिन्जर वाली। वही पी के आ रहा हूँ। आह क्या खुमार है। मीठा-मीठा प्यारा-प्यारा।" कहते हुए सिद्धार्थ बिस्तर पर पीठ के बल लुढ़क गया।

"अकेले पी लिए ना साले! दोस्तों का खयाल तक नहीं आया। दोस्त तो मिल-बाँट के पीते हैं।" रुद्र ने उलाहना दी।

"चुप कर माध... धुरी। उससे मिलने के बाद तो अब इस जुबान से गाली भी नहीं निकलेगी। इसलिए गाली सुनने वाला काम मत करो। बस ये समझ लो कि हर चीज नहीं बाँटी जा सकती।" सिद्धार्थ ने कहा और फिर कहता ही गया-

"आज ना... आई किस्ड हर। ओ माई माई... साला लग रहा है कि हवा में हूँ यार। शी आल्सो इज सो डैम गुड..."

"तूने भूतनी को किस किया?" हैरतजदा चेहरा लिए रुद्र फिर बीच में कूदा।

"अबे हरामी साले... लड़की है वो। आज प्रूव हो गया। इट वाज अमेजिंग।"

"कितनी देर?" यह चेतन के काम का विषय था।

"कह नहीं सकता भाई। दो मिनट, तीन मिनट, पाँच मिनट... ओह भाई! टाइम कौन साला गिन रहा था।" सिद्धार्थ ने अँगड़ाई तोड़ते हुए कहा।

"इम्पॉसिबल! इंसान तीस सेकंड से ज्यादा किस कर ही नहीं सकता। चोक कर जाएगा।" रुद्र ने बिना प्रैक्टिकल वाली थ्योरी बताई।

"और ये दिव्य ज्ञान तुझे कहाँ से मिला? तेरे तो सपने में भी लड़की नहीं आती!" चेतन ने छेड़ते हुए कहा।

"जनरल नॉलेज है भाई। पढ़ता-लिखता हूँ।" रुद्र ने कहा।

"तुझे कितनी बार कहा है कि ट्रेन-बस में मूँगफली खा लिया कर; मगर दस की तीन वाली जनरल नॉलेज किताबें मत पढ़ा कर।" चेतन ने जबड़े भींचते हुए कहा।

"मत मानो! लेकिन देखना अभी साबित कर दूँगा कि ये ईस्ट बंगाल झूठ बोल रहा है।" रुद्र ने हाथ-पर-हाथ मारते हुए कहा।

"कैसे?" चेतन ने बात बढ़ाई।

"इससे पूछ कि इसने लड़की को किस किया या लड़की ने इसे किस किया?" रुद्र ने बुलंद आवाज में कहा।

"इससे क्या फर्क पड़ता है?" चेतन ने अचरज से रुद्र को देखा।

"पड़ता है! पहले पूछ इससे।" रुद्र ने वही बात दुहराई।

"लड़की ने किया। और अब हम सोने जा रहे हैं। बहुत हैंग ओवर है। इसलिए चुपचाप निकल जाओ। कोई और बकवास की तो सिगार पिला देंगे।" कहकर सिद्धार्थ चेहरे पर चादर तानकर सो गया।

"बस! यही मैं बताना चाह रहा था। अपने तक रखियो। वो ना... इसका खून पीने आई थी। इस धी के बेटे को लग रहा है कि चूम के गई है। और ये खुमार-वुमार कुछ नहीं है। कमजोरी है। आधा लीटर तो खून पी गई है कोक समझ के बहन तुम्हारी।" रुद्र ने चेतन को सुनाते हुए सिद्धार्थ से ही कहा। सिद्धार्थ ने ऊबकर मुँह दूसरी ओर घुमा लिया। चेतन ने ही बहरहाल कहा-

"बस कर यार! जाने दे।"

"हम बस कर देते हैं और जाने भी देते हैं, लेकिन वो तो रेल करेगी और जाने भी नहीं देगी; देखना।" रुद्र ने तर्जनी दिखाते हुए कहा।

"बार-बार उसका चेहरा सामने आ जा रहा है। नींद भी नहीं आ रही यार!" सिद्धार्थ

ने खुद में ही हँसते हुए और करवट बदलकर छत देखते हुए कहा।

"देखा! एक बार काटी है और असर शुरू हो गया है। कह रहा है नींद नहीं आ रही। अब इसको बेड पर नींद नहीं आएगी। अब ये ड्राक्युला जैसे ट्रंक के भीतर सोएगा।" रुद्र ने फुसफुसाकर ही कहा था; मगर सिद्धार्थ ने अबकी उसकी बात सुन ली थी और उठकर बैठते हुए कहा-

"तू भागेगा कि उठा के बाहर फेंक दूँ?"

"उठाना और बाहर फेंकना दो अलग-अलग काम है राजे। तुमसे एक नहीं होगा। आधा लीटर कोकाकोला तो तुम्हारा पी गई है प्रेत सुंदरी!" रुद्र ने फिर उस 'किस' की बात की जिसके बारे में सिद्धार्थ बात नहीं करना चाह रहा था।

"तू मानेगा नहीं..." कहकर सिद्धार्थ उठने ही वाला था कि चेतन ने उसे कंधे से पकड़कर बैठाते हुए कहा-

"वो कहीं नहीं जाएगा सिद्धार्थ! वो आज यहीं सोएगा।"

"क्यों?" सिद्धार्थ ने तैश में पूछा।

"आज के दिन तू हॉस्टल में रहता तो ये सवाल नहीं करता।" चेतन ने कहा।

"क्या हुआ? अरे! मैं सच में भूल गया था। वो फातमा की शुद्धि वाला बाबा आया था?" सिद्धार्थ ने उठकर बैठते हुए पूछा।

"आया ही नहीं था, बवाल काटकर गया है। भूतनी को गुलाम बनाने आया था और वो बाबा का हेलिकॉप्टर बना दी। वो कोई छोटी-मोती आत्मा नहीं है। नैना जोगिन है।" रुद्र ने बताया।

"नैना जोगिन! अब ये क्या बला है?" सिद्धार्थ ने नाम दुहराते हुए पूछा।

"जो भी है, बहुत बड़ी मुसीबत है। रुद्र का कमरा रवि के बगल में है। इसलिए आज यहीं सोएगा।" चेतन ने कहा।

"तो सुलाओ इसी को। हम चले जाते हैं इसके रूम में।" कहकर सिद्धार्थ अपने बिस्तर से उठने लगा।

"कोई कहीं नहीं जाएगा!" चेतन ने लगभग आदेश देते हुए कहा।

"जाने दे उसको। वैसे भी उसी को तो दिखती है। फुल बेड चाहिए। लेके सो जाएगा; नैना जोगिन को।" रुद्र ने फिर चुहल की।

"साले..." कहते हुए सिद्धार्थ अपने बेड से कूदकर सीधे रुद्र के बेड पर पहुँच गया। उसे बिस्तर पर पटककर उसका हाथ पीछे की ओर मोड़ दिया। रुद्र दर्द से कराह उठा।

"अब बोल, फिर से बोल?" सिद्धार्थ ने रुद्र के चेहरे पर झुककर गुस्से में हँसी मिलाते हुए पूछा।

"मेरे और करीब आओ। तुम्हारे होंठों की कलम को मेरे होंठों की दवात चाहिए। मुझमें समा जाओ।" कहते हुए रुद्र ने दर्द की अतिरेकता में भी ठिठोली की।

"मराओ साले।" हारकर सिद्धार्थ ने हँसते हुए उसकी बाँह छोड़ दी और फिर उठकर अपने बिस्तर पर चला आया।

"यार मुझे स्नोरिंग की प्रॉब्लेम है। मैं अकेला ही सोना चाहता हूँ।" कहते हुए रुद्र ने चादर ओढ़ी और अपने पास की लगी बत्ती बुझा दी। दो मिनट बाद ही उसके खर्राटों ने यह बता दिया कि यह रात रतजगे में ही गुजरेगी।

यह रात, जो आधी बीत चुकी थी और आधी बाकी थी। यह रात जिसमें हॉस्टल के पीछे के खाली मैदानों के झींगुर झाँय-झाँय के शोर से आसमान सिर पर उठा देते थे, आज की रात आश्चर्यजनक रूप से शांत थे। ऐसे जैसे उन्होंने कोई अनहोनी देख ली हो। रुद्र के खर्राटों को छोड़ दें तो एक डरा देने वाली स्तब्धता छाई हुई थी। सिद्धार्थ और चेतन दोनों की आँखों में नींद नहीं थी। चेतन की नींद खर्राटों की वजह से और सिद्धार्थ की नींद खुमार के कारण गायब थी। चेतन ने फिर भी सोने की कोशिश की और वह सो भी जाता कि अचानक सिद्धार्थ ने उसे झकझोरते हुए एक अजीब बात कही-

"अबे! इतनी रात में कुत्ता कहाँ भौंकने लगा यार?"

"कुत्ता नहीं है। रुद्र बीच-बीच में कुत्ते की तरह खर्राटे ले रहा है।" चेतन ने उनींदे ही कहा।

"नहीं भाई! कुत्ता ही है।" कहकर सिद्धार्थ ने उठकर खिड़की की छेद से देखा तो उसके सिहरन दौड़ गई। उसने देखा कि वही कुत्ता नीचे खड़ा एक टक खिड़की को देखकर भौंके जा रहा है। सिद्धार्थ की जबान तालु से चिपक गई। उसे पहली बार एहसास हुआ कि जरूर कुछ बड़ी गड़बड़ है जिसे वह नजरंदाज किए जा रहा है। उसका शरीर बर्फ की तरह ठंडा होने लगा। उसने फौरन बिस्तर पर लेटकर अपनी आँखें बंद कर ली और अपना ध्यान दूसरी ओर लगाने लगा। उसे पहले कभी इतना डर नहीं लगा था। उसने पहले कभी ऐसी बातों का विश्वास भी नहीं किया था। उसने निश्चय किया कि वह आँख नहीं खोलेगा। और यूँ ही सवेरा कर देगा।

मगर मनुष्य का निश्चय कठपुतलियों के गिरह की तरह होता है, जिसे लगता तो है कि वह उसके नियंत्रण में है मगर उस गिरह से लगे धागे किसी और के हाथ में होते हैं। मनुष्य कठपुतली ही तो है।

सिद्धार्थ ने निश्चय किया था कि वह आँखें नहीं खोलेगा और वह आँखें नहीं ही खोलता, अगर कमरे में रहस्यमयी ढंग से कपूर की खुशबू न फैल गई होती। उस खुशबू ने सिद्धार्थ को आँख खोलने पर मजबूर किया और जैसे ही उसने आँखें खोली, उसकी चीख गले में घुटी रह गई। उसने ठीक सामने के दरवाजे पर नैना जोगिन को खड़े हुए देखा। वही पुर-इसरार मुस्कुराहट। वही बिखरा फैला काजल और वही बरहमी लंबे हिलते बाल। सिद्धार्थ का शरीर बर्फ हो गया। उसने देखा कि मुस्कुराते हुए वह काया रुद्र की ओर बढ़ रही है।

और जैसे ही वह मुस्कुराई; सिद्धार्थ ने देखा कि उसके मुस्कराने से आस-पास कपूर की महक फैल गई। अजीब बात!

अचानक सिद्धार्थ ने यह भी महसूस किया कि कुत्ते का भौंकना भी बंद हो गया है। सिद्धार्थ ने हिम्मत की और फुसफुसाते हुए चेतन से कहा-

"चेतन! जोर से बोलना नहीं। बस दीवार की ओर देख!"

"वहीं तो देख रहा हूँ, एकटक, बिना पलक हिलाए!" चेतन ने भी दबी आवाज में ही जवाब दिया।

"दिख रही है ना?" सिद्धार्थ ने दबी आवाज में ही पूछा।

"हाँ!"

"मेरी कसम!" सिद्धार्थ की डरी हुई आवाज आई।

"तेरी कसम!" चेतन ने भी फुसफुसाहट में ही जवाब दिया।

"कल तो नहीं दिख रही थी तुझे! आँखें देख तो कैसी हैं!" सिद्धार्थ ने सहमते हुए कहा।

"कैसी क्या है, अमृता सिंह पर गई है। सैफ पर जाती तो..." चेतन ने दायीं तरफ की दीवार पर लगी सारा अली खान की पोस्टर देखते हुए कहा। अब सिद्धार्थ को एहसास हुआ कि चेतन उधर नहीं देख रहा जिधर वो देख रहा है। उसने दाँत पीसते हुए ही मगर धीमे से कहा-

"भोसड़ी के, पोस्टर देख रहा है! दायीं ओर दीवार पर देख!"

"घंटा! कुछ भी नहीं है।" चेतन ने दायीं ओर की दीवार देखते हुए कहा।

"अबे वो आ गई है! कमरे के भीतर।" सिद्धार्थ की सहमी हुई आवाज आई।

"कौन?"

"वही। नैना जोगिन! कमरे में टहल रही है।" सिद्धार्थ बुदबुदाया।

"मत डराओ। हम उसके डर से पेशाब रोक के सोए हैं। हो जाएगा भाई।" चेतन ने रुआसी आवाज में कहा।

"भाई वो रुद्र की ओर बढ़ रही है।" सिद्धार्थ फिर फुसफुसाया।

"उसको कुछ नहीं होगा, उसको डाकिनी-शाकिनी का थिसारस याद है, तुम चालीसा रटो।" चेतन ने कहा।

"अबे वो रुद्र के छाती पर बैठ गई है।" सिद्धार्थ ने कनखियों से देखते हुए कहा।

"जय हनुमान ज्ञान गुण सागर जय कपीश तिहूँ..." चेतन से जितना हो सकता था वह कोशिश कर रहा था। मगर सिद्धार्थ का ध्यान किसी चालीसा पर नहीं था। उसने देखा कि वह काया रुद्र पर झुके जा रही है। सिद्धार्थ को लगा कि अब वह चिल्ला देगा। उसे अपनी आवाज बाहर निकालने के लिए कलेजे का जोर लगाना पड़ रहा था। और अब सिद्धार्थ चिल्ला ही देता कि तभी रुद्र ने अपने हाथ के पास पड़ी बत्ती जला दी। और सिद्धार्थ की ओर मुड़कर कहा-

"अबे सिद्धार्थ! एक बात पूछना रह गया था यार! नींद उसी वजह से खुल गई। ये होंठों का स्वाद कैसे होता है बे! कॉफी जैसा कि टॉफी जैसा।"

आश्चर्य!

अब वहाँ न कोई काया थी और ना ही कोई खुशबू। दोनों एक साथ गायब हुए थे। सिद्धार्थ ने उठकर रुद्र को जोर से भींच लिया और फूटकर रो दिया। चेतन भी उठ बैठा था, उसे कमोबेश एहसास था। रुद्र पसोपेश में था। उसने सिद्धार्थ को सँभालते

हुए कहा-

"इतना अच्छा लगा कि रो दिए! नहीं बताना है तो मत बताओ। हमको भी लड़की मिलेगी। हम भी रोएँगे टेस्ट लेकर।" कहते हुए रुद्र हँसते हुए चेतन की ओर देखने लगा। चेतन ने सिद्धार्थ की ओर देखा। उसका चेहरा पीला होने लगा था। उसने आँखें बंद की और बिस्तर पर गिर गया। आँख खोलने की उसकी हिम्मत तक जवाब दे गई थी। सिद्धार्थ ने सोते हुए ही चेतन की कलाई इतनी जोर से दबा रखी थी कि सुबह-सुबह कलाई में खून जमने का दाग दिख जाना ही था। मगर चेतन ने उसे टोका नहीं। वो जानता था कि जिस स्थिति से वह गुजर रहा है उसका पासंग भर भी कोई और नहीं झेल पाता। उसके सोचते-सोचते ही सिद्धार्थ के हाथ की पकड़ उसकी कलाई पर ढीली पड़ने लगी। सिद्धार्थ जो सोने की कोशिश कर रहा था अचानक ही उठ बैठा और बेचैन लहजे में बोल उठा-

"भाई! रवि! रवि कहाँ है। ये तो उस पर सवार थी ना! अगर ये यूँ अकेले घूम रही है तो रवि? रवि कहाँ है?"

सवाल तीनों के जेहन में आया। जवाब किसी के पास नहीं।

जवाब अगली सुबह ने दिया। अगली सुबह जब तड़के राजीव नहाने गया तो उसने सुना कि बाथरूम नंबर एक से खुले नल से पानी गिरने की आवाज आ रही है। उसने भीतर नहा रहे लड़के को नल बंद करने की आवाज दी। नल फिर भी बंद नहीं हुआ। बाथरूम का दरवाजा खटखटाने पर भी कोई आवाज नहीं आई। राजीव को शक हुआ। उसने दो एक और लड़कों को बुलाया। और फिर दूसरे बाथरूम के ऊपरी खुले भाग से झाँककर देखा। देखते ही उसकी आँखें फटी की फटी रह गई। पूरे बाथरूम की दीवारों को रवि ने 'सॉरी' लिखकर भर दिया था और अब भी लगातार ही पागलों की तरह बचे हुए खाली जगहों पर सॉरी लिखे जा रहा था। वह इस तरह भयभीत था कि जैसे उसे किसी ने यह काम दे रखा है और पूरा न होने पर कड़ी सजा है।

राजीव धीमे से उसके बाथरूम में कूदा और दरवाजा खोल दिया। लड़कों को देखकर रवि दहाड़े मारकर रोया और फिर एक झटके से बेहोश हो गया। राजीव उसे अकेले ही उठाकर उसके कमरे तक ले आया और उसे उसके बिस्तर पर लिटा दिया। वह अब भी बेहोश था। मगर एक बात तय थी कि रवि का खौफनाक अध्याय बंद हो चुका था।

क्योंकि एक और अध्याय शुरू होने को था।

# सन्नाटा

राजीव, गोरी रंगत का कसरती लड़का था। कद उसका छह फीट के आस-पास को छूता था। पढ़ने में भी अच्छा लड़का था और फर्स्ट ईयर में रुद्र के बाद पूरे कॉलेज में दूसरे स्थान पर था। यही कारण था कि उसे इस साल रुद्र के साथ ही कमरा मिला था। रुद्र अक्सर चेतन और सिद्धार्थ के साथ ही रहता था इस कारण भी उसे अपने कमरे में अकेले रहने और पढ़ने का वक्त मिल जाता था। मगर इन गुणों के ही साथ उसमें एक अवगुण भी था। वह नाड़े का ढीला और वादे का कमजोर था। लड़कियों को बरगलाकर, फुसलाकर झूठे वादे कर वह बिस्तर तक ले आता था। लेकिन उसकी ये कारगुजारियाँ या तो बाहर किसी दोस्त के अकेले कमरे पर होती थी या फिर किसी होटल के कमरे में। वह किसी रोज हॉस्टल के कमरे में भी ऐसी हिमाकत करेगा ऐसी उम्मीद किसी को नहीं थी। यह बात भी तब जाहिर हुई जब रुद्र उस दोपहर चेतन और सिद्धार्थ के कमरे में आया-

"सिद्धार्थ उधर खिसको ना भाई।" रुद्र ने सिद्धार्थ के बिस्तर पर पसरते हुए कहा।

"साले हम सुबह से उठे हुए हैं। हमको डिस्टर्ब मत करो।" सिद्धार्थ ने कहा।

"सुबह से उठे हो कि रात भर सोए ही नहीं हो।" रुद्र ने तंज किया।

"एक ही बात है!" सिद्धार्थ ने कुनमुनाते हुए कहा।

"और रात भर कौन-सा बीन बजाए हो, हम जानते नहीं हैं क्या?" रुद्र ने कहा।

"सोने दो यार!" सिद्धार्थ ने खीझते हुए कहा।

"तुम बताओ बे इसके वजीर! कहाँ गया था राजा तुम्हारा?" रुद्र ने चेतन की ओर देखकर कहा।

"जानते तो हो! फिर क्या पूछना है।" चेतन ने टालने के लहजे में कहा।

"मतलब वही! बिना शक्ल की लड़की के पीछे?"

"हाँ!" चेतन ने मुख्तसर जवाब दिया।

"तो तुम भी तो रात को इसके साथ थे, तुम भी तो देखे होगे!"

"कहाँ साले! रात वाली चाय पीने गए थे। अचानक तीन का घंटा बजा। और ये साला पता नहीं क्या देख लिया! बस हमको छोड़ के गाड़ी उठा के भाग गया।"

"क्या देख लिया माने! वही थी। मोहिनी।" सिद्धार्थ ने चादर में से मुँह निकालते हुए कहा।

"और तुम?" रुद्र ने चेतन से पूछा।

"हमारा क्या! जीवे मेरा भाई, गली-गली भौजाई। भाई खुश है और बाबा से भी कुछ नहीं उखड़ा तो अब हम भी मान लिए कि होगी कोई मोहिनी।" चेतन ने कहा।

"ओ! मतलब कि जैसे जगदीश पांडे वैसे रसूल्ला। न इनके छान छप्पर न उनके चूल्हा!" रुद्र ने एक ही बात से दोनों को बाँध दिया।

"ऐ! जाओ न, अपना काम करो। आराम करने दो हम लोगों को।" सिद्धार्थ की खिझी हुई आवाज आई।

"काम तो राजीव भाई कर रहा है। आराम करने तो हम आए हैं यहाँ।" रुद्र ने दुखी होकर कहा।

"मतलब?" सिद्धार्थ ने चिहुँकते हुए पूछा।

"राजीव की गर्लफ्रेंड आई है।" रुद्र ने उदास लफ्जों में कहा।

"क्या!" चेतन और सिद्धार्थ दोनों एक साथ उछल पड़े।

"हाँ भाई! सब के पास वाद्ययंत्र है। किसी के पास भूत है तो किसी के पास... छोड़ो जाने दो।" रुद्र ने फिर उदासी ओढ़ते हुए अपनी बात पूरी की। बहरहाल उसकी उदासी से किसी को कोई सरोकार नहीं था। मुद्दे की बात यह थी कि कोई लड़की हॉस्टल में थी।

"लड़की यहाँ हॉस्टल में?" चेतन ने मुँह खोलकर आश्चर्य से पूछा।

"हाँ! भाई!"

"और तुम वहाँ सेफ पैसेज देकर यहाँ दिमाग चाट रहे हो?" सिद्धार्थ ने फौरन बिस्तर छोड़ते हुए कहा।

"हाँ! तो क्या करें, अब हमारे सामने ठीक लगेगा क्या?" रुद्र ने अपनी परेशानी बताई।

"हाँ! साले तुम तो भसुर ठहरे।" कहते हुए सिद्धार्थ ने टी शर्ट डाली।

"कहाँ जा रहे हो?" रुद्र ने डरते हुए पूछा।

"खेल भाँड़ने। ऐसा थोड़ी होता है यार? वो क्या कहते हो तुम कि पड़ोसी के घर बरसे और मेरा आँगन तरसे।" सिद्धार्थ ने कहा।

"भाई मत करो ऐसा, हम उसको प्रॉमिस किए हैं।" रुद्र ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

"कोई बात नहीं मेरे दशरथ के हसरत। ये कलियुग है। यहाँ प्रॉमिसेज आर मींट टू बी ब्रोकेन। वो भी तो प्रॉमिस तोड़ती है। बीस दिन श्मशान के चक्कर मारता हूँ तो एक दिन दिखती है। और फिर चेतन से पूछ, जब आया था तो एक ही गाना रटता था। कौन-सा गाना था बे?" सिद्धार्थ ने टी शर्ट पहनते हुए ही कहा।

"वादा कर के सजन नहीं आया... मिलन वाली रात आ गई।" चेतन ने उदास होकर भी रेडियो की तरह गीत दुहरा दी।

"चल चल! सजन, रात, बरसात सब दिखाते हैं तुझे आज!" सिद्धार्थ ने चेतन को उठाते हुए कहा।

"जाने दे यार। किसी का प्राइवेट मोमेंट है। क्या पता कल हो न हो।" चेतन ने सिद्धार्थ को खींचकर बैठाते हुए कहा।

"उस साले का क्या प्राइवेट मोमेंट! हर सातवें दिन लड़की बदलता है। यहाँ हम हर सातवें दिन गंजी नहीं बदल पाते।" रुद्र ने दुखी होते हुए कहा।

अचानक सिद्धार्थ को कुछ याद आया। उसने फौरन ही रुद्र से कहा- "बेटा, तेरे दरवाजे में होल है ना छोटा-सा?"

"हाँ पापा। वही तो एक होल है किस्मत में मेरे..." रुद्र ने फिर उदास होकर अभी आधी ही बात की थी कि सिद्धार्थ पाँव में स्लीपर डालते हुए बोला-

"फिर ठीक है। चल बस झाँककर आते हैं। झाँकने पर तो कैकयी को दिया वचन नहीं टूटेगा तुम्हारा।" उसके ऐसा कहते सुनकर रुद्र को भी हँसी आ गई। सिद्धार्थ मन से और चेतन और रुद्र बेमन से बाहर निकले। दो-चार कमरे के बाद स्थित रुद्र के कमरे के दरवाजे पर पहुँचकर दरवाजे के छेद में आँखें गड़ा दी। सबसे पहले भीतर रुद्र ने ही झाँका।

"इस्स साला!" भीतर का दृश्य देखते ही रुद्र की सिसकारी निकल गई।

"क्या हुआ बेटा?" सिद्धार्थ ने सिसकारी सुनकर पूछा।

"ये तो कपड़ा उतार दिया पापा!" रुद्र ने भीतर आँख गड़ाए हुए ही कहा।

"किसका? लड़की का?" सिद्धार्थ ने आतुरता से पूछा।

"नहीं भाई अपना!" रुद्र ने भीतर नजर गड़ाए हुए ही कहा।

"तो साले, तुम लड़का का बॉडी देख के इतने एक्साइटेड हो गए? इस्स इस्स करने लगे? भाग यहाँ से!" कहते हुए सिद्धार्थ ने रुद्र को दरवाजे के पास से हटाया और खुद अपनी आँखें भिड़ा दी। अबकी कमेंटरी की बारी सिद्धार्थ की थी-

"अरे बेटा! लड़की कितना छोटा स्कर्ट पहनी है बे!" सिद्धार्थ ने फटी-फटी आँखों से देखते हुए कहा।

"हाँ पापा! इतनी छोटी कि बाहर हवा चल जाए तो स्कर्ट की छतरी बन जाए।" रुद्र ने विशेषज्ञ वाली टिप्पणी की।

"तुम इमैजिन बहुत बढ़िया करते हो राजे! जाओ उधर जा के इमैजिन करो। वैसे भी तुम भसुर हो। तुम्हारे पाप लगेगा। हमें देख लेने दो।" सिद्धार्थ ने बाथरूम की ओर इशारा करते हुए रुद्र से फुसफुसाते हुए कहा। इसी हाथापायी में रुद्र का हाथ दरवाजे पर लग गया। खट की एक छोटी-सी आवाज हुई और भीतर बंद दोनों शरीर सजग हो गए। लड़की ने खुद को खुद में ही समेटा और बिस्तर के एक ओर हो गई। राजीव हालाँकि हॉस्टल के माहौल से परिचित था। वह दरवाजे के पास आया और उसी छेद से बाहर की ओर देखा। सिद्धार्थ और रुद्र दोनों हटकर ओट ले चुके थे; इसलिए उसे कुछ नहीं दिखा। मगर वह हॉस्टल की शैतानियाँ बखूबी जानता था, इसलिए उसने हैंगर में लगी एक शर्ट दरवाजे में बनी उस छेद के आगे लटका दिया। बाहर से भीतर अब कुछ भी देख पाना संभव नहीं था। दो जवान लोग अब थोड़े डर से ही सही, मगर एक हो सकते थे। रुद्र ने ही थोड़ी देर बाद जब आँख लगाई तो उसे आँख के आगे सब काला–काला दिखाई दिया।

"अबे ये तो तंबू तान दिया बे! कुछ दिख ही नहीं रहा साला।" रुद्र ने खीझकर कहा।

"हट तो! देखें जरा।" कहकर सिद्धार्थ ने भी आँखें गड़ाईं, मगर न सिद्धार्थ को कुछ दिखना था, न ही उसे कुछ दिखा। राजीव की इस शातिराना चाल से सिद्धार्थ की खुंदक बढ़ गई। उसे लगा कि उसे दिमाग से हरा दिया गया है, और क्योंकि बल से हारना दिमाग स्वीकार कर लेता है मगर छल से हारना सालता जाता है। इसी खुंदक में उसने अपनी मोबाइल निकाली। चेतन ने पूछा भी कि वह क्या करना चाहता है,

मगर चेतन को परे कर उसने राजीव को फोन कर ही दिया।

"हैलो!" उधर से राजीव की धीमी-सी आवाज आई।

"बेटा, ये जो पंडाल लगा दिए हो न, दरवाजे पर... इसे हटा दो। वरना बवाल हो जाएगा।" सिद्धार्थ ने उबाल खाते हुए कहा।

"मतलब?" राजीव अचकचा गया।

"मतलब, गैंग-बैंग चाहते हो?"

"शेम ऑन यू यार! किसी भी लड़की के बारे में ऐसा सोचते हैं!" राजीव ने बात समझते हुए हिकारत से कहा।

"बेटा, हम तुम्हारी बात कर रहे हैं। गैंग-बैंग तुम्हारा होगा। लड़की को तो आदर सहित रिक्शे पर बैठाकर आएँगे। अपनी बचाओ।" सिद्धार्थ ने रुद्र के हाथ पर हाथ मारते हुए कहा।

"तुम लोग तो दोस्त हो यार।" राजीव ने इमोशनल अत्याचार किया।

"इसीलिए तो कह रहे हैं कि तुम भी थोड़ी-सी दोस्ती निभाओ और चिलमन से पर्दा सरकाओ। यार दीदार के भूखे हैं।" सिद्धार्थ ने कहा।

सिद्धार्थ के इतना कहते ही फोन दूसरी ओर से कट गया। राजीव को उस लड़की से कोई खास लगाव-जुड़ाव तो था नहीं, यूँ राजीव को किसी लड़की से कोई खास लगाव नहीं था। वह उसके लिए शरीर भर हुआ करती थी, जिससे गुजरने के बाद वह आगे बढ़ जाया करता था। सो इस दफा भी उसे कोई दिक्कत नहीं होनी थी। फोन कटे बमुश्किल आधा मिनट ही बीता होगा कि दरवाजे के भीतर खूँटी पर टँगी शर्ट हट गई। सिद्धार्थ ने फिर आँखें गड़ाई ही थी कि चेतन का मन इन सब चीजों से फट गया। उसने सिद्धार्थ को खींचते हुए कहा-

"क्या कर रहा है बे! अच्छा लग रहा है ये सब! वो तो गलत है ही, हम लोग क्या कर रहे हैं? तब तक भी चलो ठीक था जब तक दोनों को पता नहीं था। अब लड़की को भी पता है। क्या वो नुमाइश की चीज है? चल यहाँ से।" कहते हुए चेतन ने सिद्धार्थ को खींचा।

सिद्धार्थ को उसकी बात अच्छी लगी या बुरी लगी यह तो वो ही जानता था; मगर वो उसके साथ हो लिया। आगे बढ़ते हुए चेतन ने देखा कि रुद्र साथ नहीं है। उसने देखा तो वह अब भी आँख लगाए कुछ देखने की कोशिश कर रहा है।

"तेरे लिए अलग से टेंडर निकालना होगा?" चेतन ने आवाज लगाई।

"आ गया यार! एक आखिरी बार!" कहते हुए उसने आखिरी कोशिश की।

"आजा आजा! तेरे लिए भी भगवान ने कुछ इंतजाम किया होगा।"

"क्या फायदा इंतजाम बुढ़ापे में फरमा के। यौवन गए तिरिया मिली, जाड़ा गए रजाई। भूख गए रोटी मिली किसी काम ना आई।" बुदबुदाते हुए वह भी संग हो लिया।

***

राजीव को रात में बाथरूम जाने की बीमारी थी। उसे रात को पढ़ना होता था और

पढ़ने के लिए जागना होता था। उसके रात भर जागने की बीमारी के कारण रुद्र चेतन और सिद्धार्थ के कमरे में सो जाता था। जागने के लिए राजीव पोर्न देखता था। जिसके लिए बाथरूम सबसे मुफीद जगह थी। रात के ठीक बारह बजे उसका अलार्म बजता और वह नियम से उठकर सवा बारह बजे हाथ में फोन और दिमाग में पोर्न लिए बाथरूम की ओर चल देता था। लौटकर आने पर वह तरोताजा होता और फिर लगातार की पढ़ाई में तीन-चार घंटे निकाल देता। इस तरह वह अपना करियर बना रहा था और कोई अलहदा काम नहीं कर रहा था। हॉस्टल जीवन की यह सामान्यतर घटना थी।

मगर वह जिस तरह के वीडियो देखता था, वह सामान्य नहीं थे। वह क्रूर, हिंसक, गोर और बलत्कृत वीडियो होते थे। जो सामान्य इंसान के लिए नहीं बल्कि पाशविक या विकृत मानसिकता को पोषित करने वाले होते थे। उसे ऐसी ही चीजें पसंद थीं। मगर वह नहीं जानता था कि किसी को ऐसी ही चीजें पसंद नहीं हैं।

ठीक सवा बारह बजे जब राजीव अपने कमरे से निकला तो उसने पूरे गलियारे में एक अजीब-सा सन्नाटा देखा। उसे पहले यशरंजन और अब रवि के कारण काबिज हॉस्टल में व्याप्त डर पर हँसी आई और उसने महसूस किया कि यदि यह डर कायम रहे तो शांति बनी रहेगी और उसकी पढ़ाई ठीक-ठीक होगी। यही सोचकर खुद में ही मुस्कुराते और मोबाइल में कोई पोर्न साइट ढूँढ़ते हुए वह बाथरूम की ओर बढ़ने लगा।

कॉरीडोर में चलते वक्त ही उसने एक बात और भी महसूस की। वह यह कि वह जब-जब चल रहा है तो उसके पाँवों से पायल जैसी कुछ आवाज आ रही है। वह नहीं समझ पाया। वह नहीं समझ पाया कि वह काया अपने दोनों हाथ पीछे किए ठीक उसके पीछे और उससे निश्चित दूरी बनाते हुए उसके कदम-से-कदम मिलाकर चल रही थी।

उसने दो-एक दफा रुककर भी देखा। उसके रुकते ही पायल की आवाज भी रुक जाती।

राजीव को दो दिनों से जुखाम था और इसी कारण वह कुछ ज्यादा ही कफ सिरप पी गया था। उसे एक बारगी यह लगा कि हॉस्टल में चल रही बकवास और कफ सिरप की खुमारी उसके सिर पर हावी हो रही है। इसलिए उसने बाथरूम जाने से पहले चेहरे पर पानी छिड़कना वाजिब समझा। उसने अपनी मोबाइल वाश बेसिन पर ही रखा और नल खोलकर चेहरे पर पानी के छींटे मारे। उसे थोड़ी ताजगी महसूस हुई। और डर भी जरा कम हुआ। उसने आगे-पीछे घूमकर बड़ी दिलेरी से देखा और फिर राहत महसूस की। मगर जैसे ही उसने वाश बेशिन पर रखे अपने मोबाइल पर नजर डाली, उसके काले बंद स्क्रीन पर ही एक चेहरा उभर आया। नसों में झुरझुरी पैदा कर देने वाली रहस्यमय मुस्कुराहट और वातावरण में एक अनायास खिलखिलाहट। राजीव ने फिर सिर को झटका दिया और अचानक ही छत की ओर देखा जहाँ से साये का आभास था।

मगर सब गायब। न कोई चेहरा, न कोई हॅसी। अजीब बात। राजीव चिल्लाया- "कौन है?"

कोई आवाज नहीं। डरावनी चुप्पी। राजीव की बहादुरी अब जवाब दे गई। वह दहशतजदा हुआ और बाथरूम की ओर जाने का विचार त्याग दिया। उसे लगा कि आज उसे मोबाइल पर अपने काम की चीज देखने का काम कमरे में ही निपटा लेना चाहिए। सो यही सोचकर वह तेज-तेज कदमों से चलते हुए अपने कमरे की ओर लौट आया। दरवाजा खोलते ही उसे ठीक सामने फर्श पर पड़ी एक बिछिया दिखी। उसे आश्चर्य हुआ कि अभी बाथरूम की ओर जाते वक्त तो यह बिछिया नहीं दिखी थी। फिर उसे लगा कि शायद सुबह उसकी जो दोस्त कमरे पर आई थी; उसकी बिछिया ही खुल गई हो। कफ सिरप के खुमार में भी उसे इस बात का ध्यान तो था कि बिछिया अक्सर शादीशुदा औरतें पहनती हैं, मगर उसे लगा कि संभवतः अब फैशन में यह चलन हो। यही सोचकर उसने वह बिछिया उठा ली। और अपनी मेज की दराज में रख ली। राजीव को वह बिछिया नहीं उठानी चाहिए थी।

थोड़ी देर खड़े होकर अँगड़ाई तोड़ने के बाद वह अपनी कुर्सी पर बैठ गया और मोबाइल में अपने काम की साइट्स ढूँढ़ने लगा। और इस दौरान उसे एहसास भी न हुआ कि उसके पीठ के पीछे दरवाजा खुल रहा है। दरवाजे की धीमी ही मगर देर तक धकेलने की आवाज हुई जो ईयर फोन लगा लेने के कारण राजीव सुन भी नहीं पाया। काया बहुत चुपके से कमरे में घुस आई थी। उसके कमरे में आते ही वातावरण एकदम से ठंडा हो गया; मगर राजीव का ध्यान इस ओर इसलिए भी नहीं गया क्योंकि वह मोबाइल पर कुछ विशेष ढूँढ़ने में मुब्तिला था। काया उसके ठीक पीछे रखे बेड पर सवार हुई और हाथ और घुटनों के सहारे साल भर के बच्चे की तरह चार पैरों पर चलकर उसके पीछे आई और चुपचाप उसके सिर के ठीक पीछे खड़ी हो गई।

काया ने झाँककर देखा कि राजीव क्या देख रहा है। राजीव नहीं देख पाया कि उसके ठीक पीछे कोई आ बैठा है। मगर तभी अचानक राजीव को खुले दरवाजे से ठंडी हवा के आने का अंदेशा हुआ। उसे अपनी गर्दन पर भी किसी की साँसों का अंदेशा हुआ। उसे लगा कि वह कमरे में अकेला नहीं है। उसे ठीक-ठीक याद था कि उसने दरवाजा बंद किया था। वह पीछे मुड़कर देख पाता इससे पहले उसने देखा कि चल रहे उसके रेडियो में घरघराहट आने लगी है। एफ एम कोई अज्ञात घरघराहट बजाने लगा। उससे तंग होकर राजीव अभी रेडियो बंद करने जा ही रहा था कि रेडियो शांत पड़ गया। और उसके गर्दन पर किसी के साँसों की आवाज तेज हुई

अबकी दफा राजीव समझ पाया कि उसके ठीक पीछे कोई हल्के-हल्के हँसते हुए साँस ले रहा है। वह यही जाँचने के लिए पीछे मुड़ा...

और जैसे ही वह पीछे मुड़ा, उसके ठीक सामने काया का चेहरा था। मुस्कुराता, डराता और फिर गुस्से से अंगार होता काया का चेहरा। देर हो चुकी थी।

काया अब उसके सामने नहीं उसके ऊपर थी। हॉस्टल के गलियारे में अबकी फिर थोड़ी-बदली आवाज में वही भूतिया गीत गूँजने लगे थे।

'कौन बिधी लिखले लिलार मोरे देवता
निसदिन ढोअब पहाड़ रे
माई हो, जनमते तरस खाई हम पे
पथरा प फोड़तु कपार रे।'

काया ने एक दफा फिर शरीर बदलकर राजीव को चुना था।

***

# दहशत

हर साल का वही बवाल। हर सेमेस्टर की वही दुविधा। पचहत्तर प्रतिशत हाजिरी अगर नहीं हुई तो परीक्षा में बैठने की अनुमति वीसी साहब नहीं देंगे। यह बुजुर्गवार क्यों नहीं समझ पाते कि जिस उम्र के बड़े हिस्से को क्लास रूम की कैद के हिस्से कर दिया जाता है, दरअसल तमाम उम्र को याद किए जाने वाले किस्से बनाने का भी वही वक्त होता है। कवि ने यही देख-समझकर तो कहा होगा कि वो जवानी जवानी नहीं जिसकी कोई कहानी न हो।

बहरहाल जिस देश में कविता की रवानी की कोई इज्जत न हो उस देश में क्लासरूम में जाया होती जवानी की कौन ही इज्जत करेगा! सो रुद्र और चेतन आज क्लास में पीछे से एक बेंच छोड़कर बैठे हुए अपनी जवानी गारत कर रहे थे। पिछला बेंच खाली छोड़ देने का अघोषित नियम युनिवर्सिटी भर में होता है। ताकि सिद्धार्थ और सिद्धार्थ जैसे भूले-भटके लोग देर-सवेर क्लास में पिछले दरवाजे से घुसें तो चुपचाप बैठ जाएँ। उन्हें बेंच ढूँढ़ने की दिक्कत न हो। सिद्धार्थ, मोहिनी का पता निकालने में इस कदर डूबा हुआ था कि उसे क्लास की कोई खास चिंता नहीं थी। यूँ भी उसके अटेंडेंस के लिए चेतन क्लास कर ही रहा था।

एक बजे दोपहर की आज की तीसरी क्लास असगर अली की ही थी। उन्होंने आते ही अपने चमड़े के थैले में से किताबें निकालीं और अपने टेबल पर रखकर एक खुशनुमा मुस्कुराहट के साथ बोले-

"नौनिहालो! कैसी तबीयत?"

"बढ़िया सर!" एक साथ समवेत स्वर गूँजा।

"हाजिरी ले ली जाए?" असगर अली ने उसी मुस्कुराहट के साथ कहा।

"यस सर!" एक साथ फिर समवेत स्वर गूँजा। सुनने के साथ ही असगर अली ने अटेंडेंस रजिस्टर खोला और अटेंडेंस लेनी शुरू कर दी। अटेंडेंस खत्म करते ही वह उठे और हाथ में लंबी चॉक तोड़कर छोटी करते हुए बोले-

"आज की क्लास में हम आईपीसी का सेक्शन 79 डिस्कस करेंगे। और उसमें भी खास तौर पर बेनीफिट्स ऑफ जेनरल डिफेंस। मेरा खयाल है कि ये पॉइंट हम केस लॉ से समझे तो बेहतर रहेगा। तो इसके लिए लैंडमार्क केसेस में से एक है- राम बहादुर थापा वर्सस स्टेट ऑफ ओड़ीसा, जिसे हम घोस्ट केस भी कहते हैं।" असगर अली ने एक साँस में कहा।

"इसके जज्बात को सलाम। साला यहाँ भी घोस्ट!" रुद्र फुसफुसाया। असगर अली ने बहरहाल पढ़ाना जारी रखा।

"हाँ! तो केस का मुद्दा कुछ ऐसा था कि मिस्टर चैटर्जी, अपने नेपाली नौकर राम बहादुर थापा के साथ उड़ीसा के गाँव रसगोविंदपुर स्क्रैप खरीदने के लिए आए थे और कृष्ण चंद्र पात्रो के घर में रुके थे, जो रसगोविंदपुर में एक चाय की दुकान चलाता था।

रसगोविंदपुर के लोग बहुत भोले और अनपढ़ थे। उन्हें भरोसा था कि रात में उनके गाँव में भूत नाचते हैं। इसलिए कोई भी रात में घर से नहीं निकलता था।" असगर अली ने इतना ही कहा था कि रुद्र फिर फुसफुसाया-

"अभी देखना, इस बंगाली को भी भूत देखने की चुल्ल उठेगी।" रुद्र की इस फुसफुसाहट पर चेतन मुँह दाबकर मुस्कुराकर रह गया। असगर अली ने पढ़ना जारी रखा-

"लेकिन मिस्टर चटर्जी इन सब बातों को नहीं मानते थे; इसलिए उन्होंने एक रात अपने नेपाली नौकर राम बहादुर थापा और चाय दुकान के मालिक पात्रो के साथ भूतों को देखने जाने का निर्णय लिया।"

"देखा! हम कहे थे ना! अभी नपेगा चटर्जी! छाती में बाल नहीं भालू से लड़ाई!" रुद्र ने ऐसा मुहावरा दिया कि चेतन की फिक-फिककर हँसी निकल गई।

एकाग्रचित होकर पढ़ाई करते पूरे क्लास में चेतन कि दबी-दबी हँसी भी गूँज गई। असगर अली का ध्यान इस हँसी से बँट गया। उन्होंने पढ़ना रोककर सीधा चेतन से सवाल किया-

"कोई दिक्कत है?"

"जी सर!" हँसते हुए पकड़े जाने पर चेतन ने ढीठाई से बात बदलने के लिहाज से कहा।

"कहिए।" असगर अली ने कहा।

"सर! ये केस स्किप कर दीजिए।" चेतन ने सीधा ही कहा।

"क्यों? क्यों भाई? डर लगता है?" असगर अली ने मखौल उड़ाने की तर्ज पर कहा। जिस पर सारा क्लास चाभी वाले खिलौने की तरह हँस दिया। हालाँकि डरा हुआ तो पूरा हॉस्टल ही था और हॉस्टल के लड़के भी। मगर दूसरों पर हँसने का मौका कौन समझदार छोड़ता है!

"जी सर! डर लगता है! यशरंजन और रवि की सिचुएशन देखने के बाद अब डर लगता है।" चेतन ने क्लास भर की हँसी से चिढ़ते हुए थोड़ी तेज आवाज में ही कहा।

"अरे बरखुरदार! जोशांदा पीजिए बिला नागा! डर भागेगा। यह भूत-प्रेत कुछ नहीं होते। होते तो क्या दिखते नहीं?" असगर अली ने विजयी मुस्कान चेहरे पर लाते हुए कहा।

"नहीं दिखते तब तो ये हाल है सर! किसी दिन दिख गए तो जोशांदा रास्ता ढूँढ़ के निकल जाएगा।" रुद्र ने इस भाव से कहा कि क्लास ठहाकों से गूँज उठा। खीझे हुए असगर अली ने टोक दिया-

"अच्छा-अच्छा! बातों में वक्त जाया न करें। सिलेबस खत्म भी करना है।" कहते हुए असगर अली ने उसी केस को आगे पढ़ाना जारी रखा-

"बहरहाल, जब वो भूत देखने निकले तो कैंप नंबर चार से गुजरते समय उन्होंने रास्ते से लगभग 400 हाथ की दूरी पर टिमटिमाती रौशनी देखी। एक तेज हवा चल रही थी और उस हवा में प्रकाश की गति ने उन्हें ऐसा आभास दिलाया कि यह

साधारण प्रकाश नहीं था, बल्कि ऐसा लगता था कि उन टिमटिमाती हुई रौशनी के इर्द-गिर्द भूत-पिशाच नाच रहे हैं। यह देखते ही वह तीनों उस स्थान की ओर बढ़े।" असगर अली ने कहा और फिर कहना जारी रखा-

"तो अब मैं जेनरल डिफेंस के डिफिनिशन को तोड़ता हूँ। आपको तब चीजें ज्यादा क्लियर होंगी।" कहते हुए असगर अली ने चॉक उठाई और ब्लैक बोर्ड की ओर मुड़ गए।

ऐन उनके मुड़ते ही पिछले दरवाजे में एक धीमी-सी चरचराहट हुई और एक सर्द हवा का झोंका भीतर प्रवेश कर गया। अगर असगर अली पीछे की ओर न मुड़े होते तो देख पाते कि उनकी क्लास में शरीर वाले ही नहीं बल्कि कोई अशरीरी भी सरसराती हुई, तेज हवा की मानिंद ठीक रुद्र के पीछे आ बैठी है। यूँ जैसे वह छुपना भी चाहती है और बैठना भी। चेतन और रुद्र सहित लड़कों ने पीछे मुड़कर नहीं देखा क्योंकि क्लास के अघोषित नियमों में से एक यह भी था कि चलती क्लास में पिछले दरवाजे से प्रवेश करने वालों को कोई पीछे मुड़कर नहीं देखेगा। इससे प्रोफेसर चौकन्ने हो जाते हैं।

बहरहाल काया के आने से वही सर्द हवा का झोंका पिछली सीट पर बैठे रुद्र और चेतन को सिहरा गया। रुद्र को लगा कि दरवाजा खुलने और किसी क्लासमेट के आने से ही हवा भीतर आई होगी। मगर चेतन को एक और बात अजीब लगी। उसने फुसफुसाते हुए ही कहा-

"भाई हमको ऐसा क्यों लगा कि घुँघरू की आवाज आई!"

"होता है ऐसा! अभी तुमको क्लास में मुजरा भी दिखाई देगा।" रुद्र ने बे लाग-ओ-लपेट कहा।

"क्या बकवास है?" चेतन खीझते हुए धीमे से ही बोला।

"रात भर यूट्यूब पर मैडम तलाश जान का मुजरा देखोगे तो दिन में घुँघरू ही सुनाई देगा राजे।" रुद्र ने हालाँकि फुसफुसाहट भरी आवाज में ही कहा था मगर अचानक ही असगर अली के चुप हो जाने पर पूरी क्लास में उसकी आवाज गूँज गई। वह इससे पहले समझ पाता कि क्या हुआ, असगर अली ने टोक ही दिया-

"आप लोग क्या बात कर रहे हैं? माजरा क्या है?"

"माजरा नहीं सर, मुजरा! सर ये 'तलाश जान' के बारे में पूछ रहा है।" रुद्र ने खड़े होकर सपाट भाव से कह दिया। चेतन के तोते उड़ गए थे।

"मतलब?" असगर अली ने त्योरियाँ चढ़ाते हुए ही पूछा।

"मतलब सर! केस लॉ पूछ रहा था। तलाश जान वर्सेस स्टेट ऑफ..." इसके आगे का झूठ चेतन नहीं बना पाया।

"तलाश जान वर्सेस स्टेट ऑफ बलोचिस्तान!" पूरी बात असगर अली ने ही पूरी की।

"यस सर, यस सर!" चेतन ने अब ढिठाई से कहा।

"इंडियन केसेज़ पढ़ने में आप लोगों को डर लग रहा है और नजर पाकिस्तान पर

है?" असगर अली ने कमर पर हाथ टिकाते हुए कहा।

"सर वहाँ डर नहीं दिल लगता है।" चेतन ने अबकी बेबाकी से कहा।

"आपको नहीं लगता कि आप क्लास में अन्पार्लियामेंटरी बात कर रहे हैं?" असगर अली की आवाज थोड़ी तल्ख हुई।

"हाँ सर! क्योंकि पार्लियामेंट में जिस तरह की बातें होने लगी हैं वो यहाँ नहीं कर सकता।" चेतन ने फिर ढिठाई से ही कहा।

"यहाँ से बाहर निकलते ही थोड़ी कोशिश पर ही पोलिटिकल साइंस फैकल्टी है, वहाँ जाकर क्लास कर लें, यहाँ क्यों वक्त बर्बाद कर रहे हैं। चलिए बाहर जाइए!" असगर अली ने दोनों को क्लास से बाहर निकल जाने की हिदायत दी।

"सर फीस हमने भी दी है, पढ़ लेने दीजिए।" चेतन ने फिर जुबानदराजी की।

"हम वीसी साहब से अपील करेंगे कि आपकी फीस लौटा दी जाए। अब प्लीज दूसरे बच्चों को पढ़ लेने दें।" असगर अली ने लगभग आदेश देने के अंदाज में ही कहा।

"ठीक है सर! आपके जजबात को सलाम!" कहते हुए रुद्र उठकर जैसे ही अपनी सीट से निकला, असगर अली की साँस एकबारगी को रुक गई। क्योंकि रुद्र के हिलने भर से ही पीछे बैठी वह काया नुमाया हो गई थी, जो एकटक असगर अली को घूरे जा रही थी। असगर अली लड़खड़ाकर गिर ही गए होते अगर उन्होंने अपनी कुर्सी न थाम ली होती।

यह स्थिति क्षणिक ही रही क्योंकि तभी चेतन भी अपनी सीट से उठकर निकला। निकलने के क्रम में ही वह पल भर को काया और असगर अली के बीच में आ गया और जब वह हटा तो काया वहाँ नहीं थी। असगर अली पीले पड़ गए थे। उन्होंने फौरन विद्यार्थियों से क्षमा माँगकर पानी का ग्लास उठाया और बाहर जाकर आँखों पर पानी के छीटे मारे। रुमाल से चेहरा पोंछा और फिर क्लास में लौट आए। उन्होंने एक बार फिर आँखों से उसी सीट का जायजा लिया। मगर अब वहाँ कोई नहीं था। न किसी के होने का नामो-ओ-निशान ही था। उन्होंने इसे अपने भ्रम की स्थिति समझी और फिर पढ़ाना चालू किया। दुबारा पढ़ाने का वक्त पाँच मिनट भी न गुजरा होगा कि क्लास खत्म होने की घंटी ने उन्हें रोक दिया। एक मुस्कान के साथ उन्होंने विद्यार्थियों को शुक्रिया कहा और वापस मुड़कर ब्लैकबोर्ड पर लिखा मिटाने लगे।

जब तक प्रोफेसर असगर अली ब्लैक बोर्ड को मिटाते और अपनी किताबें अपने झोले में भरकर फारिग होते, सारे बच्चे क्लास रूम से जा चुके थे। उन्हें बच्चों की जल्दबाजी पर हँसी भी आई और अपनी व्यस्तता पर दुख भी हुआ।

हँसी इस बात पर कि वक्त कितनी जल्दी पंख लगाकर उड़ जाता है। अभी कल ही की तो बात लगती है कि वह भी इन्हीं बच्चों की तरह इसी क्लास में ऐसी ही बदमाशियाँ करते हुए पढ़ते थे और क्लास खत्म होने पर टीचर के जाने से पहले खुद ही भाग जाते थे।

और दुख इस बात पर कि जीवन पढ़ने, पढ़ाने और सेमीनारों में इतना व्यस्त हो

गया है कि अब उनकी थकी आँखें भी उनसे फरेब करने लगी हैं। आज जो एहसासात उन्हें हुए हैं, वह दस्तक है कि उन्हें अब इस सप्ताहांत में आराम की जरूरत है।

इन्हीं विचारों में खोए हुए प्रोफेसर असगर अली कंधे पर अपने चमड़े का बैग लटकाए क्लास रूम से बाहर निकलने को ही हुए ही थे कि एक 'थड़' की आवाज ने उनके कदम रोक दिए। आवाज ऐसी थी जैसे बेंच पर चॉक डस्टर ठोकी गई हो। बेंच पर चॉक डस्टर ही ठोकी गई थी। लेकिन असगर अली के टेबल पर नहीं बल्कि अंतिम बेंच पर। अंतिम बेंच पर डस्टर के ठोके जाने से चॉक की गर्द अब भी उड़ ही रही थी। अजब से हैरानकुन हुए असगर अली ने देखा कि एक चॉक-डस्टर ठीक पिछली बेंच पर रखी हुई है। उन्हें हैरानी हुई और इस बात की ज्यादा हुई कि उनका चॉक-डस्टर तो उनके हाथ में है। तो क्या उन्हें फिर नजर फरेबी हो रही है? तो क्या वह कुछ हल्यूसिनेट कर रहे हैं? पता लगाना जरूरी था। चॉक की गर्द छट चुकी थी और अब वह डस्टर और भी साफ नजर आ रहा था। असगर अली जानना चाहते थे कि ऐसी बदमाशी कौन कर रहा है। इस कारण से वह क्लास के गलियारे की सीढ़ियाँ धीमे-धीमे चढ़ते हुए आखिरी बेंच तक पहुँचे। सीढ़ी-दर-सीढ़ी उनका यह एहसास पुख्ता होता गया कि यह कोई नजर फरेबी नहीं है बल्कि वहाँ एक डस्टर सच में मौजूद है।

अंतिम बेंच तक पहुँचते ही वह यह मान बैठे कि यह किसी दूसरे प्रोफेसर का पुराना पड़ा डस्टर है। वह उसे उठाने को हुए; पर उस पर जमी धूल से गाफिल हुए और इरादा बदल लिया।

अपनी खामखयाली पर मुस्कुराते हुए वह अभी मुड़े ही थे कि उनके कान में किरचियों-सी आवाज गूँजी। यूँ कि जैसे कोई अपने नाखून से सीमेंट की पक्की जमीन खुरच रहा हो। वह पहली दफा भयभीत हुए। और इसी अवस्था में खुद को बाहर निकल जाने को तैयार किया ही था कि एक लरजा आवाज ने उनके कदम बर्फ कर दिए। मर्दाना और जनाना आवाज के बीच की कोई खराश आई। किसी ने पुकारा-

"बाबू!"

असगर अली ने आवाज की दिशा में देखा और दहशत से उनकी आँखों में खून उतर आया। उन्होंने देखा कि वह काया गलियारे के आखिर में दोनों घुटनों को पेट से लगाए दीवार से सटी बैठी थी और लगातार एक रहस्यमयी मुस्कान के साथ अपने पाँवों के नाखून से फर्श कुरेदती जाती थी।

भय से पीले पड़े असगर अली ने भागने की चेष्टा की मगर बढ़ आए वजन के कारण लड़खड़ाए और दो बेंचों के बीच फँस गए। उनकी साँसें धौंकनी से भी तेज भागने लगीं। वह काया चारों पाँवों से चलती हुई आगे बढ़ने लगी। काया के असगर अली तक पहुँचने से पहले ही असगर अली की साँसें उनका साथ देना ही छोड़ देतीं अगर पिछला दरवाजा एक धड़ाक की आवाज के साथ न खुल गया होता।

पिछला दरवाजा रुद्र ने खोला था और अगले ही क्षण रुद्र क्लास के भीतर था।

अजीब बात!

काया गायब हो चुकी थी। अब वहाँ कुछ भी नहीं था। असगर अली को समझने में कुछ पल का समय लगा; मगर अपनी ओर रुद्र को सवालिया नजर से देखने के कारण उन्हें अपना मखौल बनने का डर भी हुआ। वह बेंच पर ही खुद को संयत करके बैठ गए थे।

"कॉपी छूट गई थी सर! वही लेने आए थे। बहुत चोर हैं क्लास भर में। धाप कर देगा एक मिनट में।" कहते हुए रुद्र ने अपने डेस्क के नीचे रखी कॉपी निकाल ली। एक बीमार-सी मुस्कुराहट देते हुए असगर अली उठे और तेजी से क्लास से बाहर निकल गए।

उन्हें दरअसल एक अच्छा मौका मिला इसलिए वह रुद्र के रहते, रुद्र से पहले ही क्लास छोड़कर निकल गए। वह इस तेजी से निकले जैसे वह कोई चोरी कर रहे हों और रुद्र ने वह चोरी पकड़ ली हो। हैरान-परेशान-सा रुद्र क्लास के बाहर आया जहाँ चेतन उसका इंतजार कर रहा था।

"बम्मड़ आदमी है बे।" बाहर निकलते ही रुद्र ने असगर अली की बाबत कहा।

"क्या हुआ?" चेतन ने पूछा।

"क्लास में घुसे तो देखे कि हम लोगों की सीट पर बैठा है और..."

"और क्या?"

"और सीट पर डस्टर से चॉक झाड़ रहा है।" रुद्र ने कहा।

"क्यों?" चेतन ने आश्चर्य से पूछा।

"ताकि हम लोगों का पैंट खराब हो जाए। बताओ तो! ऐसे कोई बदला लेता है। अरे नहीं पढ़ाना है तो मत पढ़ाओ! क्लास से निकाल दो! नाम काट दो! ऐसा क्या कि पैंट खराब कर दोगे।" रुद्र ने जिस लहजे में कहा उससे चेतन हँसे बिना नहीं रह सका। इसी बात पर और गहन चर्चा करते हुए दोनों हॉस्टल की ओर टहल लिए।

***

# जब अँधेरा होता है

अँधेरे का वह पहर जो न ठीक से दिन होता है और न ठीक से रात, आत्माओं के टहलने का माकूल वक्त होता है। चलती हुई हवाओं से झूमते यूकिलिप्टस की पत्तियों का शोर हो या हवाओं के अभाव में मुर्दा पोशीदा औरतों की तरह अचल दिखती झाड़ियाँ। सब की सब ही रात की इस बेला में डर में इजाफा ही करती हैं। डर, इंसान की सबसे गहरी और सबसे आदिम भावना है और सारे डरों में भी अज्ञात का डर सबसे डरावना।

असगर अली भी को भी आज सेमिनार से लौटते देरी हो गई थी। कार को यूनिवर्सिटी कैंपस के अंदर लेते ही उनकी थकी आँखों ने झपकी ले ली थी। उन्हें लगा कि वह गाड़ी कहीं लड़ा बैठेंगे। इसलिए उन्होंने कार रोक दी। रात के लगभग तीन बजे गर्ल्स हॉस्टल के ठीक बाहर कार लगाकर असगर अली अभी अपने चेहरे पर पानी के छीटे मार ही रहे थे कि उन्हें गर्ल्स हॉस्टल के बाहर महज अंत:वस्त्रों में टहलती कोई काया नजर आई। उन्होंने फौरन अपनी नजर हटा ली। और फिर गाड़ी में जा बैठे। मगर चश्मा लगाने पर वह काया उन्हें थोड़ी और साफ हुई। वह समझ पाए कि गर्ल्स हॉस्टल के ठीक बाहर टहलती वह काया किसी औरत की नहीं बल्कि किसी मर्द की है। मर्द का शरीर! रात के इस पहर में गर्ल्स हॉस्टल के सामने, वह भी लकड़ियों के अंतःवस्त्र में। अजीब तो था ही, मगर पिछले पच्चीस सालों से वह इतने बच्चों को देख चुके थे और ऐसे कितने अजाबों से गुजर चुके थे कि उन्हें यह बात टाल देने लायक ही लगी। इसलिए उन्हें उस ओर से अपना ध्यान हटाना ही वाजिब लगा। काया अब भी उनसे काफी दूर ही टहल रही थी। उन्होंने बहरहाल अपनी गाड़ी घर की ओर मोड़ी और आगे बढ़ गए।

असगर अली आगे देखने के हामी थे। अगर वह रियर मिरर में देखते तो देख पाते कि उनके आगे निकलते ही राजीव का वह मर्दाना शरीर कटे हुए पेड़ की तरह लहराकर जमीन पर यूँ गिर पड़ा है जैसे उसके शरीर से जान निकाल ली गई हो। वह रियर मिरर देखते तो पाते कि उनकी गाड़ी कोई उनसे भी अधिक पहचानता है।

असगर अली आए। उन्होंने ठीक पेड़ के नीचे अपनी कार लगाई। बाहर निकले और कार के दरवाजे जाँच लिए। वह आगे बढ़ने को ही थे कि उन्हें लगा कि किसी ने बहुत ही सरगोशी से उनका नाम पुकारा है। वह नाम जो उन्होंने पिछले तीस सालों से नहीं सुना। वह नाम जो वह अपने साये से भी छुपाते आए हैं। उन्हें लगा कि यह उन पर तारी थकान का असर है। वह आगे बढ़ने ही वाले थे कि फिर पुकार हुई- "बाबू!"

यह नाम! असगर अली काँप कर रह गए। वह इस नाम से खूब परिचित थे। मगर उन्हें लगा कि रात में देर तक गाड़ी चलाने के कारण उन पर नींद का असर हो रहा है। सो वह इसे मतिभ्रम समझकर टाल गए और आगे बढ़े ही थे कि पुकार एक दफा फिर से आई- "ओ बाबू!"

असगर अली का जिस्म सर्द हो गया। वह आगे बढ़ते तब तक उन्हें अपने कंधे पर पानी जैसा कुछ गिरने का आभास हुआ। उन्होंने पहले अपने कंधे पर गिरा हुआ पानी देखा। उन्होंने उसे छूकर देखा। वह पानी जैसा ही कुछ था। और अगले ही पल उनकी आँखें पानी से हटकर पानी के स्रोत से बँध गईं। पानी ऊपर से टपका था। बरगद के पेड़ से। एकदम डरते-डरते असगर अली ने निगाहें उठाईं तो बरगद की एक तनी हुई डाल पर किसी को पाँव लटकाकर बैठे हुए देखा। एक जोड़ी पाँव जो डालियों से लटक रहे थे वह उनके सिर के ठीक ऊपर थे। काजल पुती काया की आँखों में जाने तो कैसे भाव थे। असगर अली ने ऊपर देखा और जब आँखें नीचे की तो पाया कि काया उनके गर्दन पर सवार है। असगर अली को वह पानी जैसी बूँद नहीं छूनी चाहिए थी।

असगर अली किसी भारी सामान उठाए मजदूर की तरह कदमों को खींचते अपने कमरे के दरवाजे पर पहुँचे और डोर बेल दबा दिया। कमरा खोलने आई उनकी पत्नी को न तो कुछ अजीब दिखना था और न ही दिखा। वह नहीं देख पाईं कि कमरे में प्रवेश करने वाले लोग एक नहीं बल्कि दो हैं। दरवाजा खोलकर असगर अली को सामने देख वह मुड़कर वापस सोने चली गई थीं। दरवाजा खुद असगर अली ने बंद कर दिया।

अलस्सुबह जब प्रॉक्टर के लोग गर्ल्स हॉस्टल के सामने लड़कियों के अंत:वस्त्र में बेहोश पड़े राजीव को लेकर हॉस्टल पहुँचे तो राजीव की हालत देखकर हॉस्टल के सारे लड़के सदमे की स्थिति में थे। मगर असली सदमा तो अब प्रॉक्टर वालों को लगना था।

राजीव की बेहोशी और उसकी स्थिति की सूचना देने के लिए उन्होंने वार्डन असगर अली का दरवाजा खटखटाया। पहले तो यूँ लगा जैसे कोई दरवाजे के पीछे होकर भी दरवाजा नहीं खोल रहा। मगर सख्ती से दरवाजा पीटने पर दरवाजा खुल गया। और दरवाजा जब खुला तो सुबह चाय पीने और दौड़ लगाने जाते लड़कों ने एक अजीब ही चीज देखी। उन्होंने देखा कि पत्नी की मैक्सी पहने असगर अली अपने हाथों में नेल पॉलिश लगाते हुए प्रॉक्टर के सिपाहियों को अजीब लोलुप निगाहों से देखते हुए बातें कर रहे हैं।

***

असगर अली कोई स्टूडेंट नहीं थे, जिनकी बात विश्वविद्यालय द्वारा छुपा ली जाती। असगर अली देश भर के माने हुए प्रोफेसरों में से एक थे। सो उनकी बीमारी की खबर छुप नहीं सकती थी। वैसे भी जब वह लॉ के अपने क्लास में लड़कियों से नेल पॉलिश के शेड्स पूछने लगे और उन्हें चाल सुधारने के लिए खुद चलकर बताने लगे तो लड़कियाँ डर गईं। शिकायत डीन से और फिर वाइस चांसलर से हुई। असगर अली को विश्वविद्यालय के ही मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया। मगर अखबारों में जब यह बात उछलने लगी तो विश्वविद्यालय की साख बचाने के लिए असगर अली को उनके घर पर ही इलाज की व्यवस्था के साथ रखा गया। दिन बीतते रहे। असगर

अली का स्वास्थ्य खराब होता रहा। असगर अली पर वह बदरूह जितने वक्त से थी उतना वक्त उसने किसी और शरीर पर नहीं दिया था और यही चिंता का भी कारण था।

***

# रात के अँधेरे में

सिद्धार्थ को मोहिनी की आस लगी थी जो पिछले पंद्रह-बीस दिनों से उसे नहीं दिखी थी। कितनी ही शामों से वह अपने दोस्तों के साथ नहीं था। मगर आज हारकर वह मोहिनी की खोज में नहीं निकला था और चेतन और रुद्र के ही साथ यूनिवर्सिटी के बाहर बाजार में चाय पी रहा था और उदास भी था। उसकी इसी उदासी को छेड़ते हुए रुद्र ने चेतन से कहा-

"लाले! एक बात बता, हवाई जहाज में जो मुस्कुराते हुए काट लेती हैं उनको क्या कहते हैं?" रुद्र ने पूछा।

"एयर होस्टेस!" चेतन ने बेमन से जवाब दिया।

"और इसकी हवाई जहाज जो कि अगर हवाई जहाज में काम करेगी तो उसको क्या कहेंगे?" रुद्र ने गंभीर भाव से ही मजाकिया बात की।

"तुम ही बताओ!" चेतन ने कुढ़ते हुए कहा।

"एयर घोस्टेस! सिंपल।" रुद्र ने खुद के ही बदमजा चुटकुले पर खुद ही ताली बजाकर हँसते हुए कहा।

"करोगे कबाहट? एक तो वैसे ही दिमाग काम नहीं कर रहा।" सिद्धार्थ ने आँखें टेढ़ी की।

"हम कर रहे हैं कबाहट! तुम प्रेतात्मा को डेट कर रहे हो! साले हॉस्टल में लड़के विकेट की तरह टपक रहे हैं। बबवा पता नहीं क्या देख लिया कि बिल्ली की तरह दबे पाँव आया और पिछवाड़े पेट्रोल डले कुत्ते की तरह भाग गया। हॉस्टल में निओन लाइट में नाइट क्रिकेट होता था, रोज तीन बॉल फटता था। अब कुछ और ही फट रहा है।" रुद्र झुँझलाते हुए बोला।

"नाइट क्रिकेट में कितना मजा आता था न बे!" चेतन ने कुछ याद करते हुए कहा।

"भूल जाओ-भूल जाओ, नाइट क्रिकेट न सही, नाइटी क्रिकेट हो तो रहा है। रोज छन-छन पायल बजती है ना। उसी में मजा लो। अब तो असगर अली भी मैक्सी पहन के सेक्सी बात कर रहे हैं। एक दिन आ के कहने लगे, सब लोग कित-कित खेलेंगे। इससे हमारी कमर छरहरी रहेगी। बताओ तो!" रुद्र ने शीशे वाली चाय की गिलास रखते हुए कहा। उसने चेतन और रुद्र को चुप ही देखा तो फिर बोलने लगा-

"क्या हो रहा है यहाँ भाई? बनाने वाले ने इतनी बड़ी यूनिवर्सिटी बनाई कि नर-नारी रहेंगे, पठन-पाठन करेंगे। प्रेम-प्रलाप भी कर लेंगे। सब नॉर्मल-नॉर्मल रहेगा। लेकिन लोगों को नॉर्मल रहना ही नहीं है।" उसने सिद्धार्थ को देखते हुए कहा। सिद्धार्थ ने उसे एकटक आँखें दिखाकर धमकाया मगर वह चुप नहीं हुआ। और बोलता गया-

"अरे नहीं जमती लड़की तो कोई बात नहीं। होता है ऐसा भी। मम्मी-पापा माफ कर देंगे। हॉस्टल में ही तीन चार हैं चाशनी वाले। तुम कहो तो हम अगुवाई कर दें। जमता है तो लड़के से कर लो।" रुद्र ने फिर एक साँस में कहा। सिद्धार्थ ने उसे अपने होंठों पर तर्जनी रखते हुए कहा-

"बहुत हुआ। अब चुप हो जाओ।" रुद्र पर न असर होना था और न ही हुआ। उसने फिर कहा- "आँखें दिखा रहे हो चुप हो जाते हैं। लेकिन राजे, मेरी बात पर कान देना। देखो, लड़की नहीं पसंद कोई बात नहीं, लड़का नहीं पसंद कोई बात नहीं। लेकिन प्रेतात्मा! मेरे भाई! नॉर्मल नहीं जमे, तो एबनॉर्मल चला लो। लेकिन एबनॉर्मल भी न जमे तो पारानॉर्मल कर लोगे! जाने दो यार! इतनी भी क्या बेकरारी कि प्रेतात्मा के मुँह में मुँह भिड़ा दो।"

"चेतन, चुप करा दे इसे! नहीं तो..."

"लो, हम चुप हुए जाते हैं! बस ये समझ लो कि सेमेस्टर के डेट आ गए हैं। और कुछ नहीं तो अपनी हवाई जहाज से क्वेस्चन पेपर ही माँग लो।"

"लिसेन! गो फक योरसेल्फ!" कहकर झुँझलाता हुआ सिद्धार्थ दोनों को चाय की दुकान पर ही छोड़कर आगे बढ़ गया। चेतन उसकी स्टैंड लगी मोटरसाइकिल पर और रुद्र नीचे चाय की दुकान पर लगे बेंच पर बैठे रह गए। रुद्र ने बहरहाल जाते हुए भी सिद्धार्थ की मौज ली-

"ये जो गंदा वाला काम बोल के गए हो तो वो योरसेल्फ-योरसेल्फ कैसे होगा? हम कोई प्रेतात्मा थोड़े न हैं।" कहकर हँसते हुए रुद्र ने चेतन के हाथ पर हाथ मारा। चेतन ने भी हँसते हुए कहा-

"अबे क्या जरूरत इतना खींचने की? चला गया न गुस्सा के!"

"गुस्सा के नहीं गया है। महीन गुंडा है। हम एक महीने से गौर कर रहे हैं। चाय का पैसा देने के टाइम भाग जाता है। अभी देखना पाँच मिनट में ही धुआँ उड़ाते आ जाएगा।" रुद्र ने हँसते हुए कहा।

रुद्र का इतना ही कहना था कि सिद्धार्थ बदहवास दौड़कर आता हुआ दिखाई दिया- "आएगा नहीं, आ गया।" चेतन के इतना कहते-कहते सिद्धार्थ पहुँच गया था।

"चेतन! चेतन!" सिद्धार्थ ने हाँफते हुए कहा।

"हाँ बोल! क्या हुआ?"

"वो दिखी! वो दिखी भाई!"

"कौन मोहिनी?" चेतन ने आश्चर्य से पूछा।

"हाँ! यहीं बाजार में!"

"ये अब दिन में भी दिखने लगी! माया कलेंडर वाले ठीक कहते हैं! अंत अब निश्चित है।" रुद्र खुद में ही बुदबुदाया। सिद्धार्थ ने अबकी अनदेखी करते हुए कहा-

"चल! आज क्लियर हो ही जाए। आज तुम्हें भी दिखेगी।" कहते हुए सिद्धार्थ मोटरसाइकिल में चाभी लगाकर बैठ गया। और दोनों के बैठने का इंतजार करने लगा। जब दोनों में से कोई नहीं बैठा तो उसने रुद्र को देखते हुए कहा-

"बीबीसी लंदन, बैठो पीछे। तुम्हें सबसे ज्यादा चुल है ना।"

"चलो राजे, तुम भी क्या याद रखोगे। कहीं नाखून भी गोश्त से जुदा होता है। चलो देख ही लेते हैं नैना जोगिन को।" कहते हुए रुद्र मोटरसाइकिल पर बीच में बैठ गया और चेतन सबसे पीछे। मगर सिद्धार्थ ने जब मोटरसाइकिल स्टार्ट की तो वह स्टार्ट

ही नहीं हुई। सिद्धार्थ ने जब हिलाकर, डुलाकर, सुलाकर, चोक खींचकर, धक्का दिलवाकर सारी कोशिशें कर लीं और गाड़ी स्टार्ट नहीं हुई तब रुद्र ने फिर व्यंग्य बाण छोड़ा-

"पुराने जमाने में घोड़े को भूत-पिशाच का आभास हो जाता था। इसलिए वह आगे नहीं बढ़ता था और वहीं खड़े होकर हिनहिनाने लगता था। अब घोड़े-हाथी तो खैर रहे नहीं... यह मोटरसाइकिल ही है। इसलिए ये भी चिचिया रहा है।"

सिद्धार्थ के लिए यह व्यंग्य असह्य था। सिद्धार्थ गाड़ी पर से उतरा और हाथ बाँधकर खड़ा हो गया। उसने रुद्र को देखा और गुस्से से कहा- "उतर साले!"

"बट व्हॉई जीजाजी! मैंने तो सच कहा है।" रुद्र ने भोलेपन से कहा।

"मैं कहता हूँ उतर!"

रुद्र ने सिद्धार्थ का गुस्सा देखा और चुपचाप उतर गया। उसके उतर जाने पर सिद्धार्थ ने कहा-

"हम पैदल चलेंगे। और आज तुझे दिखा के रहूँगा।" कहते हुए सिद्धार्थ बाजार की ओर आगे बढ़ गया। उसके पीछे-पीछे ही चेतन और रुद्र भी चल दिए। थोड़ी देर पैदल चलने के बाद ही सिद्धार्थ ने आगे इशारा करते हुए दोनों को दिखाया-

"वो देखो।" सिद्धार्थ ने आगे इशारा करते हुए कहा। दरअसल सिद्धार्थ ने जिस ओर इशारा किया था वह लड़कियों का झुंड था। लगभग पचास-साठ की संख्या में लड़कियाँ छोटे-छोटे समूहों में जमा थीं और शाम की वॉक कर रहीं थीं और इस झुंड में किसी एक लड़की को पहचान पाना मुश्किल था।

इसी कारण दोनों ने जब सिद्धार्थ की तरफ गुस्से से देखा तो बात उसकी समझ में आई। उसने फौरन अगला क्लू देते हुए कहा– "वो व्हाइट सूट और ब्लैक दुपट्टे वाली, वो देखो।"

इस क्लू से भी कोई खास अंतर नहीं पड़ना था। सिद्धार्थ की उँगली की दिशा में दसियों लड़कियों ने व्हाइट सूट और ब्लैक दुपट्टा पहन रखा था। संभवतः वह किसी कॉलेज फंक्शन से आ रही थीं। रुद्र ने अबकी आपा खो दिया-

"राजे, जेब्रा नहीं ढूँढ़ना है। लड़की ढूँढ़नी है।" रुद्र के ऐसा कहते ही चेतन को हँसी आ गई। मगर चेतन ने उसे मुस्कुराहट तक सीमित करते हुए कहा-

"सिद्धार्थ ऐसा कर! तू जाकर उससे बात कर। तू बात करेगा तो हम समझ जाएँगे कि मोहिनी कौन है। फिर हम भी आते हैं।"

"हाँ! आके मिल लेंगे तेरी हवाई जहाज से!" बात रुद्र ने खत्म की।

उसकी बात अनसुनी कर सिद्धार्थ लड़की की ओर बढ़ गया। दोनों उसे जाते हुए देख ही रहे थे कि एक बार फिर सिद्धार्थ पीछे मुड़कर लौट आया और झुँझलाता हुआ बोला- "अबे यार!"

"अब क्या हुआ?" चेतन ने पूछा।

"दर्जी के दुकान में घुस गई यार।" सिद्धार्थ ने खीझ में हाथ पटकते हुए कहा।

"तो क्या हुआ!"

"अबे लेडीज टेलर के दुकान में कैसे मिलें उससे?"

"हाँ, ये तो मुश्किल है।" चेतन ने कहा और अभी कुछ आगे भी कह पाता कि उससे पहले रुद्र ने उँगली की- "हमें अभी भी नहीं दिखी हवाई जहाज!"

"अबे उधर देख! वही जो मंजूर मियाँ की दुकान में घुस गई है!" सिद्धार्थ ने दाँत पीसते हुए कहा।

"वही है?" रुद्र ने आँखों के ऊपर हथेली की छाँह करते हुए पूछा।

"हाँ! वही है।" सिद्धार्थ ने राहत के साँस छोड़ते हुए कहा। आखिरकार उसने रुद्र को मोहिनी दिखा दी थी।

"नाम तो बढ़िया है।" रुद्र ने फिर कहा।

"कितनी बार बताएँ! हाँ! बढ़िया नाम है; मोहिनी।" सिद्धार्थ ने कुछ चहक के साथ कहा।

"उसका नहीं। दुकान का। मंजूर मियाँ लेडीज फिलर। किस्मत वाला आदमी है।" रुद्र ने फिर गोली छोड़ दी।

"फिलर नहीं, हरामजादे! फिटर, लेडीज फिटर!" सिद्धार्थ ने जबड़े भींचते हुए कहा।

"एक ही बात है। फिलर हो या फिटर हो, एक ही बात है। किस्मत वाला आदमी है चाचा हमारा।" रुद्र ने दर्जी की बाबत कहा जो मोहिनी की नाप ले रहा था।

"इसमें किस्मत की क्या बात?" चेतन ने बीच में पड़ते हुए कहा।

"देख नहीं रहा! तीन बार नाप चुका है।" रुद्र ने दर्जी की ओर इशारा करते हुए कहा।

"तीन बार क्यों नापा बे?" सिद्धार्थ का ध्यान अबकी बार इस बात पर गया। वह गुस्से से आग-आग हो गया।

"थोड़ा ऊँच-नीच हो गया होगा। कबूतर फड़क भी तो जाता है।" रुद्र की बात रुद्र ही जानता था। तीनों अभी दर्जी की दुकान की ओर देख ही रहे थे कि दुकान में एक और लड़की आ गई। सिद्धार्थ खीझकर बोला-

"अबे ये कौन आ गया!" सिद्धार्थ के साथ-साथ बाकी दोनों ने भी देखा कि मोहिनी उस सफेद पोशीदा लड़की से बात करने लगी। और फिर दुकान से निकलकर उसके साथ ही आगे बढ़ गई। सिद्धार्थ ने फौरन कुछ सोचते हुए रुद्र से कहा- "सुन भाई!"

"बोल राजे!"

"तू इस दर्जी के बच्चे से लड़की के बारे में मालूमात कर। मैं और चेतन आगे देखते हैं। आज पता कर ही लेते हैं कि ये रहती कहाँ है।"

"राजे, ये करमचंदई हमसे नहीं होगा। सिर सलामत रहेगा तो हजार पगड़ियाँ मिलेंगी।" रुद्र ने मुहावरे में ही काम से इनकार किया।

"कर दे भाई! दोस्त का घर बसेगा।" अबकी बार सिद्धार्थ ने कहा और रुद्र के सामने हाथ जोड़ दिया।

"गधे की दोस्ती, लात की सनसनाहट।" मन मसोसकर रुद्र ने कहा और फिर दर्जी की दुकान की ओर बढ़ गया।

"रात में मिलते हैं।" कहकर सिद्धार्थ और चेतन लड़की के पीछे हो गए।

इधर रुद्र ने साहस बटोरा। उसने दुकान में घुसने से पहले जितनी उर्दू याद थी सब दुहरा ली और मंजूर मियाँ के सामने पहुँचा।

"चाचा वालेकुम सलाम!" रुद्र ने पहला विस्फोट किया।

चाचा ने पान मुँह में लिए हुए हिकारत से देखा। रुद्र को एहसास हो गया कि उसने गलती कर दी है। अब उसने सँभलकर कहना शुरू किया -

"मेरा मतलब है शब्बा खैर... नहीं नहीं अलहिलाल... नहीं नहीं... खुशामदीद बिरादर..." रुद्र को जितनी उर्दू आती थी, उसने निकाल दी।

"फरमाइए!" चचा ने एक शब्द में पूर्ण विराम लगा दिया।

"चाचा मरहूम की खिदमत में सवाल अर्ज है कि यह पोशीदा बदन जो अभी आई थीं..."

रुद्र ने दो चरणों में विस्फोट किया। पहले तो चाचा को जीते जी मार दिया। इस विस्फोट को चाचा किसी तरह झेल गए। मगर दूसरे विस्फोट से चाचा सीधे-सीधे तिलमिला गए। फिर भी उन्हें अपनी उर्दू अदब और अपनी उम्र दोनों का ही खयाल रखना था। उन्होंने गुस्सा घोटते हुए कहा–

"आपसे मतलब! आपको क्या दरकार है?"

"दरकार है सरकार! दरकार यह है कि उन से हमारी बात चलाई जा रही है। सो जरा मालूमात कर लेते तो ठीक रहता था। आप समझ रहे हैं न?"

"देखिए बरखुरदार, यहाँ खवातीन* आती-जाती रहती हैं।" मंजूर मियाँ ने औरतों के बारे में कहा जिसका सिरा रुद्र ने गलत पकड़ लिया।

"सवा तीन नहीं, हमें बस एक के बारे में जानना था जिनके कबूतर आपने तीन बार नापे थे। बस उनके बारे में।"

"समझ गए बेटा।" कहते हुए मंजूर मियाँ ने तर्जनी से पसीना जमीन पर टपका दिया।

"क्या समझे?"

"यही कि बेटा आप गलत जगह आ गए हैं। यहाँ माँ-बहनों की खुफियागिरी नहीं होती। इसलिए चलते नजर आइए।" मंजूर मियाँ ने आँख तरेरते हुए कहा।

"अरे चाचा! आप तो बुरा मान गए।" रुद्र ने खींसे निपोरते हुए कहा।

"नहीं बेटा! एकदम बुरा नहीं माने। जानते हैं कि आपकी उम्र का ही दोष है और आपकी तरह के दो-चार हर साल भटककर इधर आ ही जाते हैं। इसलिए बुरा बिलकुल नहीं माने। अगर बुरा मान गए होते तो बताते कि ये हाथ जो आपको ब्लाउज की बाँह काटती दिख रही है, एक ही झटके से खड़ी खस्सी काट देती है।" कहते हुए मंजूर मियाँ ने फिर ध्यान अपनी नीले चॉक और कैंची पर लगा दिया। रुद्र भीगे हुए बछड़े की तरह दुकान से बाहर निकल आया।

***

उधर सिद्धार्थ जब चेतन के साथ चला तो उसने देखा कि मोहिनी उस पोशीदा लड़की के साथ बाजार में कुछ सौदा खरीदती रही। और इसी सौदा खरीदने में खासा वक्त भी बीत गया। चेतन को अब कोई रुचि रह नहीं गई थी। वैसे भी उसे मोहिनी के बारे में जानने में दिलचस्पी से ज्यादा इस बात का डर था कि अगर किसी लड़की ने उसे ऐसी हरकत करते देखा तो खबर उसकी दोस्त रजनी तक न पहुँच जाए। सो वह सिद्धार्थ को कारण बताकर हॉस्टल लौट आया। सिद्धार्थ ने उसे जब छोड़ा तो रात के नौ बज चुके थे। मोहिनी अब भी किसी दुकान से कुछ खरीद ही रही थी। सिद्धार्थ अब चाहता तो उसके पास जाकर उससे बात कर सकता था। मगर आज वह यह जान ही लेना चाहता था कि मोहिनी कौन है और कहाँ रहती है।

अंतिम खरीदारी कर मोहिनी जब बाजार से चली तो साढ़े नौ का वक्त हो चुका था। थोड़ी दूर पैदल चलकर वह ऑटो स्टैंड पर पहुँची और वहाँ से ऑटो ले लिया। सिद्धार्थ के लिए सवारी वाली ऑटो लेना संभव नहीं था क्योंकि उसे मोहिनी की ऑटो का पीछा करना था। वह आज इस बात से भी संतुष्ट था कि आज वह मोटरसाइकिल से नहीं है इसलिए मोहिनी को उसके पीछे होने का शक भी नहीं होगा। यही सोचकर उसने भाड़े की टैक्सी पकड़ ली और उसे हिदायत के साथ मोहिनी की ऑटो के पीछे चलते रहने को कहा। लगभग पंद्रह मिनट चलने के बाद मोहिनी काकडीही के एक कस्बाई इलाके के ऑटो स्टैंड पर उतर गई। सिद्धार्थ ने फौरन ही टैक्सी छोड़ दी और राहत की साँस ली। मगर थोड़ी ही देर में उसे अपनी जल्दबाजी पर खीझ हुई। मोहिनी ने सामने के जनरल स्टोर से पानी की एक बोतल खरीदी और वापस ऑटो स्टैंड से साझे की दूसरी ऑटो लेकर आगे बढ़ गई। सिद्धार्थ अभी बेबस-सा खड़ा ही था कि उसे इस कस्बाई इलाके में भी एक टैक्सी दिख गई। उसे लगा कि आज उसकी किस्मत ठीक है। टैक्सी में बैठते ही उसने ऑटो के पीछे लगने को कहा। गाड़ी का पीछा सुनते ही टैक्सी वाले ने भाड़ा आसमान तक पहुँचा दिया। सिद्धार्थ को फिलहाल उसके भाड़े की चिंता नहीं थी। सिद्धार्थ की चिंता दूसरी थी।

और सिद्धार्थ की चिंता वाजिब और खौफनाक थी। क्योंकि मोहिनी की ऑटो अब तमलुक स्टेशन की ओर जा रही थी। वह स्टेशन जहाँ उसने उस बदरूह को पहली दफा देखा था। गाड़ी अब उन्हीं सड़कों पर दौड़ रही थी, जिन सड़कों पर उस रोज नैना जोगिन राह रोके खड़ी थी। वह मनहूस दिन जिसके बाद से सिद्धार्थ और हॉस्टल ने कभी चैन की नींद नहीं ली। वह राह जिसकी ओर सिद्धार्थ पाँव करके सोता भी नहीं, आज उसी राह से दोबारा गुजर रहा है। तमाम राह उसके जेहन में यही सवाल घुमड़ता रहा कि मोहिनी यहाँ क्यों जा रही है। क्या उसके दोस्त सच कहते हैं! क्या मोहिनी का उस जगह से, उस काया से कोई रिश्ता है। क्या मोहिनी ही वह काया है। वह जितनी बार इस खयाल को झिड़कता उतनी ही तेजी से वो खयाल उसके जेहन में समाते जाते। और फिर...

और फिर रास्ता तमाम हुआ। मोहिनी ने ऑटो ठीक वहीं छोड़ दी जहाँ से कच्चा

रास्ता आरंभ हो जाता है। सिद्धार्थ को इस राह में उसके पीछे आने की जरूरत नहीं थी। वह इस राह को जानता था और अब जब उसे विश्वास हो चला कि मोहिनी उसी जगह पर जा रही है तो उसका दिल बैठ गया। बहरहाल अब कोई चारा नहीं था। उसने फिर थोड़ी दूर पर ही टैक्सी रोक दी। पैसे दिए और उन्हीं कच्चे रास्तों पर उतर आया। सूखे पत्तों पर भी बिना कोई आहट छोड़े वह ठीक उसी जगह की ओर बढ़ता रहा जहाँ वह तीनों उस रोज आए थे। उसने महसूस किया कि उसके पाँव पहली दफा काँप रहे हैं। पिछली दफा वह दोस्तों के साथ था और उसे मालूम नहीं था कि यह जगह अभिशप्त है। अबकी दफा उसके दोस्त उसके साथ नहीं थे और उसे मालूम था कि यह जो बरगद के पत्ते किसी चुड़ैल के खुले बालों की तरह हिल रहे हैं यह अकारण नहीं है। यह जो झींगुरों की आवाज आ रही है यह किसी के आदेश पर बंद भी हो जानी है। बहरहाल उसने अपने मन को कड़ा किया और मोहिनी को ढूँढ़ने लगा। और उसे मोहिनी को ढूँढ़ने में परेशानी भी नहीं हुई। उसने देखा...

उसने देखा कि मोहिनी की पीठ ही उसकी तरफ है और वह ठीक पटरियों के सामने उसी स्थान पर खड़ी एक-टक पटरियों को देखे जा रही है जिस जगह उस रोज सिद्धार्थ को वह काया दिखी थी।

माहौल के भय और पिछले अनुभवों के हदस से सिद्धार्थ को ऐसा महसूस हुआ कि उसे उल्टी हो जाएगी। उसने फिर भी किसी तरह खुद पर जब्त रखा। मगर तभी एक अजीब बात हुई। माहौल फिर से अंजाने ठंड के एहसास से भर गया। ऐसा लगा जैसे बर्फीली हवा आस-पास के माहौल को सर्द कर गई है। वह रुके, लौटे, या बात करे। उसका जेहन अभी इन्हीं उधेड़बुन में खोया हुआ था कि एक आवाज ने उसके शरीर में झुरझुरी पैदा कर दी।

"यही जगह है न?" आवाज मोहिनी की थी। सिद्धार्थ गुमान की हद तक चौंक गया। उसे इस बात का पक्का यकीन हो गया कि मोहिनी कोई राज है। मगर क्या राज है, यही तो पता करने वो यहाँ आया है। उसने खुद को संयत करते हुए ही कहा- "तुम्हें कैसे पता कि मैं यहाँ आया हूँ!"

मोहिनी मुड़ी और मुस्कुराई- "तुम आए नहीं, बुलाए गए हो।" मोहिनी की आँखें चमकीं।

"मतलब?"

"मतलब ये कि मैं चाहती थी कि तुम यहाँ आओ।"

"तुम हो कौन?" सिद्धार्थ ने हारते हुए पूछा।

"ठंड अचानक से बढ़ गई ना!" मोहिनी ने फिर बेमानी बात की।

"देखो तुम पहेलियों में बात करना..."

"श्श्श्श!" मोहिनी ने अपने होंठों पर तर्जनी रखते हुए इशारा किया। और फिर बोली- "एकदम दबी आवाज में बोलो। कोई परेशान हो जाएगा और फिर सारी बात बेमानी हो जाएगी।"

"देखो! मैं इस जगह पहले भी आ चुका हूँ। और जो अगर तुम आज इधर नहीं आती तो मैं सपने में भी इधर नहीं आता। आज तुम्हें इस तरफ आते देखा तो डर लगा। लगा कि दोस्त सही कहते हैं। जो मैंने यहाँ देखा है, उससे तुम्हारा कोई वास्ता जरूर है। इसलिए एक बारगी सोचा कि लौट जाऊँ। मगर फिर यह लगा कि अगर तुम्हारा कोई वास्ता नहीं हुआ तो..."

"तो...? " मोहिनी ने मुस्कुराते हुए सवाल किया।

"तो कोई नाहक मुसीबत में आ जाएगा।" सिद्धार्थ ने कहा।

"कोई मुसीबत में नहीं आएगा। और वैसे भी मैं तुम्हें बचाने ही तो आई हूँ।" मोहिनी की आश्वस्ति से कही गई बात सिद्धार्थ के समझ से परे थी।

"मतलब?"

"मुझ पर भरोसा है?" मोहिनी ने मानीखेज मुस्कुराहट के बीच पूछा।

"मेरे पास और कोई चारा है क्या!" सिद्धार्थ ने बेचारगी से कहा। जिसके जवाब में मोहिनी हँस दी।

"फिर ठीक है। जैसा कहती हूँ बस वैसा करना। डरना नहीं! ठीक?"

"ठीक! और कुछ?" सिद्धार्थ ने बेमन से और खीझ में ही कहा। उसे इन सब बातों से अब कोफ्त होने लगी थी।

"हाँ! बहुत कुछ! तुम्हें डराने की बहुत कोशिशें की जाएँगी। सबसे ज्यादा तो शायद मैं ही करूँ। मगर शांत खड़े रहना। तुम जो कुछ भी देखोगे। सब तुम्हें दहशतजदा करेंगे। तुम्हारे मन में जितने भी सवाल हैं, सबके जवाब आज मिलेंगे। तुम्हारे जवाब के साथ ही मेरे जवाब भी जुड़े हुए है। यह किताब अपने हाथ में रखो और इसे छोड़ना नहीं। ज्यादा ही डर लगे तो तीसरा पन्ना खोलकर अपनी आँखों के सामने कर लेना।" कहते हुए मोहिनी ने एक पुरानी-सी किताब सिद्धार्थ के हाथ में थमा दी। वह एक दरम्यानी वजन की किताब थी। सिद्धार्थ ने उसका नाम देखा और काँप गया- प्रेत मंजरी! वह कुछ कहने ही वाला था कि मोहिनी ने उसके हाथों में अपनी उँगलियाँ फँसाकर किताब उसकी मुट्ठी में दबाते हुए कहा- "डरो नहीं। मैं डर रही हूँ क्या?"

"तुम तो डरा रही हो।" सिद्धार्थ ने सचमुच आवाज में भय लाते हुए कहा।

"भरोसा रखो। इट्स योअर एम्यूलेट। डिफेंस अगेन्स्ट एविल। आज तुमसे ज्यादा मुझे तुम्हारी जरूरत है।" कहते हुए मोहिनी पटरियों की तरफ बढ़ चली।

"उधर मत जाओ!" सिद्धार्थ ने वहीं खड़े-खड़े कहा। उसकी आवाज फिर जरा-सी तेज हो गई थी।

अबकी दफा मोहिनी ने गर्दन पीछे कर मुस्कुराते हुए सिद्धार्थ को भी अपनी ओर आने का इशारा किया।

मौत की शायद यही तारीख तय हो, यही सोचकर सिद्धार्थ उसके पीछे-पीछे हो लिया। मोहिनी ने सिद्धार्थ से सरगोशी में ही पूछा- "वह कहाँ दिखी थी?"

"यहीं, ठीक यहीं।" सिद्धार्थ ने पटरी पर एक जगह निशानदेही करते हुए कहा।

"यकीन से कैसे कह रहे हो?"

"क्योंकि उस रोज पटरियों पर आते वक्त मैं एक पत्थर पर फिसला था और वो पत्थर यह रहा।"

"ठीक है अब उसी पत्थर पर बैठ जाओ। किताब मत छोड़ना।" कहते हुए मोहिनी ने अपने बैग में से बेकिंग पावडर का डिब्बा निकाला और ठीक पटरियों के पास पहुँचकर लोहे की दोनों पटरियों पर मल दिया। उसने बैग से ही एक छोटा स्पीकरनुमा यंत्र निकाला और पटरी से थोड़ा हटकर रख दिया। सिद्धार्थ ने उस यंत्र को देखा। वह इसे पहले कहीं देख चुका था। उसे याद आया कि यह आईटीसी है। इन्स्ट्रूमेंटल ट्रांस कम्यूनिकेशन डिवाइस, जो इलेक्ट्रॉनिक वॉइस फेनोमेनन की सहायता से परात्माओं से संपर्क करने के काम आता है। वह अभी कुछ सोच पाता तब तक मोहिनी की एक दृढ़ आवाज उसके कानों को सहमा गई।

"नैना!" मोहिनी ने किसी का आह्वान किया।

"नैना, आप यहाँ हैं!" दुबारा आह्वान।

कोई आवाज नहीं। पत्ते भी सहमकर जड़ हो गए।

"नैना, आप जानती हैं मैं आपको तलाश रही हूँ।"

निविड़ शांति। कोई सरसराहट भी नहीं।

"नैना! आप कुछ बताना चाहती हैं?"

तवील खामोशी!

"नैना, क्या हम आपको परेशान कर रहे हैं? अगर हाँ तो एक दफा इशारा दें। अगर ना तो दो बार।"

आश्चर्यजनक मगर डरावनी बात- रेल की पटरियों पर दो बार किसी की उँगलियों की थाप पड़ी। सिद्धार्थ सिहर गया। मोहिनी और दृढ़ हो गई।

सिद्धार्थ ने महसूस किया कि वातावरण का पारा गिर गया है। उसे आश्चर्यजनक रूप से ठंड लगने लगी है। मोहिनी ने महसूस किया कि आईटीसी यंत्र में कुछ खरखराहट हुई है। उसके चेहरे पर एक आशा जागी।

"नैना, क्या आप आस-पास हैं?"

कोई आवाज नहीं।

"नैना, मैं महसूस कर सकती हूँ कि आप आस-पास हैं। मुझे भरोसा दें कि आप आस-पास हैं।"

कोई आवाज नहीं।

"नैना, मेरे लिए ये जानना जरूरी है कि ये आप ही हैं। इसलिए मुझे विश्वास दिलाएँ कि ये आप ही हैं। कोई दूसरी काया नहीं।" कहते हुए मोहिनी ने कहा- "एक!"

कहने के साथ ही उसने सिद्धार्थ को दो उँगलियों का इशारा करते हुए कहने को कहा। सिद्धार्थ ने उसके हाथों का इशारा समझते हुए कहा– "दो।"

"अचानक ही यंत्र में घरघराहट हुई और एक अस्पष्ट-सी आवाज आई- "तीन!"

सिद्धार्थ का खून सर्द हो गया। उसके हाथ किताब पर जम गए। मोहिनी के चेहरे

पर मुस्कान तिर गई।

"मेरे पास आइए।" मोहिनी ने कहा और उसके कहते ही सिद्धार्थ ने देखा कि पटरियों पर लगे बेकिंग पावडर पर अस्पष्ट से पाँवों के निशान बनने लगे हैं।

"बैठिए!"

फिर घरघराहट। ऐसा लगा जैसे कोई गुस्से से गुर्रा रहा हो।

सिद्धार्थ ने अबकी स्पष्ट देखा। नैना जोगिन आ चुकी थी। मोहिनी के ठीक पीछे बैठी नैना जोगिन अपनी आगकश आँखों से उसे ही घूर रही थी।

"वह मेरे साथ आया है। आप मुझसे बात करें।" मोहिनी ने सिद्धार्थ की परेशानी समझते हुए कहा।

यंत्र में फिर खरखराहट!

"आप कुछ बताना चाहती हैं?" मोहिनी ने दुहराया।

"भाग जो!" यंत्र से ही अस्पष्ट-सी आवाज आई। इसी बीच सिद्धार्थ ने देखा कि वह काया बदस्तूर घूरते हुए उसी से मुखातिब है और भाग जाने की बात उसी से कह रही है। सिद्धार्थ ने नजरें उसके चेहरे से हटा ली। और किताब पर अपनी पकड़ कस दी। मोहिनी ने बहरहाल फिर कहा-

"मैं आपका माध्यम हूँ। मुझे इशारा भेजें कि आप कैसे बात करना चाहती हैं। जागे में एक दफे, सोए में दो दफे या फिर नीमहोशी में तीन दफे।" कहकर मोहिनी शांत हो गई। वह इशारे का इंतजार करने लगी। इशारा आया। पलछिन की शांति के बाद इशारा आया। दो दफे फिर से थपकी आवाज आई। इशारा साफ था। नैना सोए में आना चाहती थी। यह तीनों ही माध्यमों में सबसे खतरनाक माध्यम था। क्योंकि हवास खो देने के बाद कुछ भी नियंत्रण मोहिनी के हाथ में नहीं रहता। एक बार को मोहिनी के चेहरे पर परेशानी के भाव झलके। उसने सिद्धार्थ की ओर देखा जो कि इस दुनिया से परे खौफजदा बैठा था। मोहिनी ने खुद के भाव सँभाले और फिर कहा-

"आप सोए में आना चाहती हैं? दुरुस्त है। आइए।" कहते हुए मोहिनी ने अपने पाँव की सैंडल खोली और उसे उलटकर यूँ रखा जिससे कि सैंडल की सफेद सोल आसमान की ओर हो गई। उसने आश्चर्यजनक तरीके से उस स्याह रात में लिपस्टिक लगाई और लिपस्टिक से ही अपने पाँव के नाखूनों को रंगने लगी। सिद्धार्थ को यह थोड़ा अजीब तो लगा। मगर उसे आज शाम से सब कुछ अजीब ही तो लग रहा था। सो वह हाथ-पाँव बँधे अपराधी की तरह बस देखता रहा। अपना काम पूरा कर मोहिनी ने दोनों हाथों से लोहे की पटरी को जकड़ लिया और बोली- "हाजिर हूँ।"

मोहिनी का कहना ही था कि अचानक सिद्धार्थ ने देखा कि माहौल में सरगरमियाँ बढ़ गईं। पेड़ के जो पत्ते अब तक बेजान खड़े थे, अब किसी बला की तरह झूमने लगे। हवा का शोर ना जाने अचानक ही किधर से उठ खड़ा हुआ।

और इन सबके बीच सिद्धार्थ ने देखा कि मोहिनी के बदन को एक हल्का-सा झटका लगा। इतना ही हल्का जिसे उसका कंधा आगे की ओर हिल गया। और

उसके साथ ही उसके घुटने थोड़े से फैल गए। दक्खिन की ओर से चलती हवा ने उसके बाल बिखेरकर चेहरे पर ला दिए। सिद्धार्थ की पकड़ किताब पर और तेज हो गई। क्षण भर के इस झंझावात के बाद एक मुर्दा खामोशी छा गई। मोहिनी के हाथ बहरहाल पटरियों से नहीं छूटे। अगले ही पल मोहिनी ने चेहरा उठाया। सिद्धार्थ देखकर डर से पीला पड़ गया कि वह मोहिनी नहीं थी। वह नैना थी जो अब मोहिनी के पीछे नहीं बल्कि मोहिनी के भीतर थी। उसके चेहरे पर एक भयावह मुस्कान थी और वह अब सिद्धार्थ की ओर देखते हुए गुनगुना रही थी-

'कौन बिधी लिखले लिलार मोरे देवता
निस दिन ढोअब पहाड़ रे
माई हो, जनमते तरस खाई हम पे
पथरा प फोड़तु कपार रे।'

सिद्धार्थ के चेहरे पर उस ठंड में भी पसीना चुहचुहा गया। अगर मोहिनी की बात न होती तो सिद्धार्थ अब तक भाग गया होता। मगर अब भागना कोई रास्ता नहीं था। उसे वहीं रहना था और गलत या सही जो भी था, बाँटना था। नैना कौन है? मोहिनी कौन है? क्या नैना ही मोहिनी है। या दोनों अलग-अलग हैं, यह बात अब भी उसे साफ नहीं थी। इसलिए उसे रुकना ही था। चीजों के साफ होने तक। उसने किताब को अब एक हाथ से दोनों हाथों में लेकर सीने से दबा लिया था। तभी अचानक और भयावह बात हुई।

मोहिनी का हाथ पटरी पर से किसी यंत्र की तरह छूट गया और छूटते ही वह पटरी पर आगे-पीछे झटके खाने लगी। यह इतनी जल्दी और इतनी तेजी से हो रहा था कि जाहिर था कि यह इस दुनिया का वाकया नहीं हो सकता था।

उसी तरह खौफनाक तरीके से हँसते और झटके खाते हुए मोहिनी जब रुकी तो उसने बड़े ही दहशतजदा अंदाज से अपनी तर्जनी से सिद्धार्थ की तरफ यूँ इशारा किया जैसे अब उसी की बारी आएगी। और यह अंदेशा देकर उसका शरीर फिर पटरी पर लेट गया। बिलकुल इस अंदाज से जिस तरह कोई शख्स खुदकुशी करने को पटरियों के बीच लेटा हो।

देर तक सिद्धार्थ उसके शरीर को देखता रहा। कोई हरकत नहीं हुई, बेहिस, बेजान। उसे लगा कि वह सचमुच किसी अजाब में ही फँस गया है। उसके पास मोहिनी की दी हुई किताब थी और बकौल मोहिनी जब तक वह किताब उसके पास है वह सुरक्षित है। उसके दिमाग में एक दफा आया कि वह भाग जाए। फिर दो बातों ने उसे यह करने से रोक दिया। पहला यह कि अगर मोहिनी ही प्रेत हुई तो किताब भी उसी की दी हुई है। और दूसरे कि यदि मोहिनी ऐसी नहीं हुई तो वह खुद को माफ नहीं कर पाएगा। यही सोचकर वह रुका रहा। एक दफा उसे दोस्तों को फोन करने का भी खयाल आया। उसने फोन निकाला तो उसमें नेटवर्क ही नहीं था। उसे कोई हैरानगी नहीं हुई। वैसे ही आज वह इतनी हैरानकुन बातें देख चुका था कि अब ये छोटी बातें उसे क्या ही हैरान करतीं।

सिद्धार्थ ने अपने मोबाइल की घड़ी देखी तो पाया कि रात के पौने तीन हो रहे हैं। इसके मानी यह हुए कि मोहिनी लगातार तीन घंटे से यूँ ही पड़ी हुई है। पहले घंटे में तो उसने झटके खाए, झूमी, अकड़ी, इशारों से सिद्धार्थ को डराया भी। मगर बाद के दो घंटे से वह यूँ पड़ी है जैसे कोई लाश हो।

लाश?

यह बात जेहन में आते ही सिद्धार्थ और डर गया। उसने मोहिनी के हाथ-पाँव देखने की कोशिश की। हाथ तो पटरियों के बीच होने की वजह से नहीं दिखे; मगर उसके पाँव किसी कम जाविए पर अकड़े लग रहे थे। सिद्धार्थ की नसों में डर पारे की तरह दौड़ गया।

पिछले दो घंटे से बदन में कोई कंपन नहीं। जीवन का कोई आसार नहीं। कोई हरकत नहीं। उसकी मायूसी अब उसके डर पर हावी हो ही रही थी कि अचानक उसने कुछ देखा।

उसे लगा कि मोहिनी के दाहिने पाँव में कोई हरकत हुई है। उसे लगा कि उसका दाहिना पाँव धीमे से हिलकर फिर सर्द हो गया है। मगर इस दफा उसे कुछ उम्मीद जागी और उसने अपना ध्यान मोहिनी के दाहिने पाँव पर ही जमा दिया। कुछ ही क्षण बीते होंगे कि उसने मोहिनी के दाहिने पाँव में फिर से हरकत दिखी। अबकी दफा लंबी हरकत। ऐसी हरकत जैसे उसका पाँव किसी से डरकर धीमे-धीमे हरकत कर रहा है। बाकी पूरा शरीर पहले की तरह ही बेहिस। सर्द। मृतप्राय।

मगर दाहिने पाँव की खामोश हरकत से साफ था कि मोहिनी में जीवन के निशान हैं। सिद्धार्थ खुश हुआ और अगले ही पल हैरान भी। जब उसने देखा कि मोहिनी के अँगूठे और बीच की उँगली के बीच लिपस्टिक फँसी हुई है।

उसने देखा कि मोहिनी का हरकत करता पाँव अपने सैंडल के सोल पर आकर ठहर गया है। दोनों ही सोल पर कुछ ऐसी हरकत हुई जैसे कुछ लिखा जा रहा हो। चोरी से हो रही इस हरकत के समझते-समझते पाँव फिर सर्द हो गए।

सिद्धार्थ अपने साथ हो रही गैर-दुनियावी एहसासों से पागल-सा हो रहा था। बहरहाल उसे लगा कि इस दफा उसे उठकर देखना चाहिए कि जो हरकत अभी हुई है उसके मायने क्या हैं। वह उठा और डरते-डरते ही सैंडल के पास पहुँचा। उसने सैंडल पर कुछ उकेरा हुआ देखा तो सिहरन के मारे उसके टाँग बेजान हो गए।

दोनों सैंडलो को मिलाकर जो पैगाम बन रहा था। वह वाकई डरा देने वाला था। लिखा था- '3:15 एएम... ट्रेन।'

सिद्धार्थ के होश हिरण हो गए। यह मैसेज किसके लिए है? जाहिर है कि उसके लिए। यह मैसेज किसने दिया है? मोहिनी ने या नैना ने? जाहिर है मोहिनी ने। नैना उसे भला मैसेज क्यों देगी? इस मैसेज के मानी क्या हैं? क्या नैना, मोहिनी से कुछ लिखवा रही है? क्या मोहिनी खुद कुछ नोट कर रही है?

इतने सारे सवालों से घिरे हुए सिद्धार्थ को कुछ समझ नहीं आया। मोहिनी उसी तरह पड़ी रही।

सिद्धार्थ अभी कुछ और सोच पाता, तब तक सोच पाने के सारे रास्ते बंद हो गए। आँखों के फलक तक में एक पीली रौशनी इंजन की तेज सीटी के साथ आते हुए सुनाई और दिखाई दोनों दी।

तो क्या मोहिनी इसी बात का पैगाम दे रही थी कि 3:15 पर कोई ट्रेन आने वाली है? आगे सोचने का समय नहीं था। सिद्धार्थ ने देखा कि मोहिनी उसी तरह मृतप्राय पड़ी हुई है उसका हाथ पटरी के ठीक बीचो-बीच पड़ा हुआ है। उसके इतना देखते-न-देखते एक्सप्रेस ट्रेन उसके सिर पर आ पहुँची। सिद्धार्थ के दिमाग से ज्यादा उसके दिल ने उसका साथ दिया और उसने मोहिनी का हाथ पकड़कर उसे अपनी ओर खींच लिया।

एक घुटी हुई साँस छूटी और उसी आवाज के साथ मोहिनी सिद्धार्थ के कंधे पर गिर गई। सिद्धार्थ ने उसे दोनों हाथों से सँभाल लिया। ट्रेन के गुजरते ही एक हौलनाक चीख सिद्धार्थ के कानों में पैवस्त हो गई। वही लंबी शदीद चीख। उसने बहरहाल मोहिनी को अपनी किताब समेत दोनों हाथों से पुरजोर बाँध लिया। ट्रेन गुजर गई।

शायद मौत भी। और इस रात का खौफ भी।

***

# राज

भयावह रात में इतने खौफनाक मंजर देखने के बाद भी सिद्धार्थ उसी जगह रुकने को बेबस था। कारण यह था कि मोहिनी अब भी बेहोश ही पड़ी हुई थी। सिद्धार्थ उसे बाँहों में लिए उसी बरगद के पेड़ के नीचे आ बैठा। बरगद का पेड़ अब भी सायों-झपेटों का आशियाना ही मालूम होता था। पत्ते ऐसे हिलते थे मानो दो रूहें सरगोशियाँ कर रही हों। झींगुर भी जो अब तक आसमान सिर पर उठाए थे, ट्रेन की आवाज के साथ चुप हो गए थे। सिद्धार्थ देर तक मोहिनी के चेहरे को देखता रहा। मोहिनी का निष्कपट चेहरा इस बात की गवाही ही नहीं दे रहा था जिस बात की ताकीद सिद्धार्थ का जेहन कर रहा था। उसने अभी जो देखा था उसके बाद उसके सवालों का हिसाब और भी बढ़ गया था। मोहिनी बहरहाल यूँ ही पड़ी रही। मगर बेजान नहीं। सिद्धार्थ ने महसूस किया कि उसके हाथों पर मोहिनी का कसाव इतना है कि वह अपनी कलाई नहीं छुड़ा पा रहा। इसी बात ने उसे और भी डरा दिया। उसने सुन रखा था कि मुर्दे की जकड़ अटूट हो जाती है। भयभीत-सा ही वह मोहिनी पर झुका और उसके सीने की धड़कने सुनने लगा। धड़कने धीमी थीं मगर थीं। सिद्धार्थ को राहत हुई। मोहिनी को अब बेहोशी से जगाने के लिए उसे पानी की जरूरत थी, मगर इस बियाबाँ में पानी मिलना असंभव ही था। परेशानी के इस आलम में वह भूल गया था कि मोहिनी के बैग में पानी की बोतल हो सकती है। अचानक ही सिद्धार्थ का ध्यान घास पर जमी ओस पर गया। उसने मोहिनी के सिरहाने अपने बैग को लगाकर उसे बरगद के नीचे लिटा दिया और दोनों हाथों को ओस से भिगोने लगा। जब उसे यकीन हो गया कि उसके हाथ काफी ओस लग चुकी है तो वह तेजी से मोहिनी के चेहरे पर आया और अपने दोनों हाथ मोहिनी के चेहरे पर छिड़क दिए। उसने देखा कि ऐसा करने से मोहिनी के चेहरे की नसों में हरकत हुई। वह थोड़ी कुनमुनाई। बेहोशी फिर भी नहीं टूटी। सिद्धार्थ को हौसला मिला और उसने एक दफा फिर यही अमल दोहराया। मोहिनी ने आँखें खोल दी।

आँखें थकी हुई थीं। इतनी बोझिल जैसे किसी दवा के असर से झुकी जाती हों। आँखें जो बीमार-सी हों। उन्हीं अधखुली आँखों से उसने सिद्धार्थ की ओर देखा और मुस्कुरा दी। कायदन और किसी स्थिति में सिद्धार्थ को इस मुस्कुराहट पर कुर्बान जाना था। मगर इस वक्त वह गुस्से से काँप गया। वह खड़े होकर आवाज तेज करते हुए ही लगभग चीखा- "हू द हेल आर यू एंड व्हॉट्स द क्रैप इज आल दीज?"

"हार गए?" मोहिनी ने उसी मोहिनी की तरह मगर थकी हुई मुस्कान के साथ कहा। और झुकती-बंद होती सवालिया आँखों से सिद्धार्थ की ओर देखने लगी।

"हाँ! हार गया! आई एम एक्सेप्टिंग माइ डीफीट। बट फॉर वंस एंड ऑल प्लीज... प्लीज टेल मी हू यू आर? एंड..."

"नाराज मत हो! अभी! कम-से-कम अभी तुम्हारी नाराजगी नहीं सह सकती।" मोहिनी ने इस लहजे से कहा कि सिद्धार्थ का गुस्सा काफूर हो गया। वह चुपके से

उसके पास ही उसी पीपल के पेड़ के नीचे बैठ गया। मोहिनी ने सिद्धार्थ का हाथ अपने हाथ में लिया। और उसे अपनी हथेली से रगड़ती रही। फिर उसके कंधे पर अपना सिर रख के बोली-

"जानती हूँ तुम्हारे पास सवालों की पूरी फेहरिस्त होगी। और परेशान नहीं करूँगी। तुम पूछो। मैं बताती हूँ।"

सिद्धार्थ तो दरअसल इसी बात के इंतजार में था उसने मोहिनी के छूटते ही कहा –

"तुम कौन हो?"

"मोहिनी! जानते तो हो!" मोहिनी ने सिद्धार्थ की हथेली चूमते हुए कहा।

"इंसान ही हो ना?"

"तुमने मेरे पाँव देखकर तस्दीक तो की है।" मोहिनी ने सिद्धार्थ को फिर गुस्सा दिलाया।

"और करती क्या हो?"

"पढ़ती हूँ। ये भी बताया था।" मोहिनी ने दुहराया।

"गलत! मैंने पूरा कैंपस, पूरे क्लासेस ढूँढ़ लिए हैं। एक भी फैकल्टी ऐसी नहीं रही जहाँ नहीं ढूँढ़ा हो। एक भी हॉस्टल ऐसा नहीं रहा जहाँ के रजिस्टर नहीं चेक किए हों। मगर तुम कहीं नहीं मिली। टोटल 5 मोहिनी हैं। और उनमें तुम नहीं हो।" सिद्धार्थ ने एक साँस में कहा।

"गलत! तुमने कैंपस के अंदर के क्लासेस और कोर्सेज ढूँढ़ी। गलत जगह ढूँढ़ोगे तो कैसे मिलूँगी? योर्स ट्रूली इज द स्टूडेंट ऑफ पारासाइकोलॉजी और पारासाइकोलॉजी डिपार्टमेंट कैंपस के बाहर है। यूनिवर्सिटी के जो कोर्सेज बाहर होते हैं, उनकी क्लासेज भी बाहर चलती हैं और उनकी हॉस्टल भी बाहर ही हैं।" मोहिनी ने लगातार बनी निश्चल मुस्कुराहट के साथ कहा।

"कौन-सा कोर्स बताया तुमने?" सिद्धार्थ ने अचरज से पूछा।

"पारासाइकोलॉजी। लास्ट ईयर है मेरा। इस कोर्स का कैंपस भीतर नहीं बना। वरना तुम्हें भूत नहीं लगती मैं।"

"फिर तुम मुझे कैंपस में कैसे दिखी थी?"

"और तुम रहती कहाँ हो?"

"कोकिला हॉस्टल, मेचेदा। पारासाइकोलॉजी के हॉस्टल और प्रोफेसर्स दोनों वहीं रहते हैं।"

"ये कहाँ है?"

"वहीं जहाँ तुमने मुझे ऑटो से ड्रॉप किया था।"

"कब्रिस्तान में?" सिद्धार्थ ने मखौल वाले अंदाज में पूछा।

"कब्रिस्तान में नहीं इडियट! कब्रिस्तान के दायें एक गली जाती है। कोकिला हॉस्टल होते हुए निकलती है। कभी उधर भी टहल लिया होता। क्लास के बाद दिन-रात बालकनी पर ही लटकी होती थी कि तुम गुजरोगे। मगर तुम्हें तो मैं भूत लगती थी। इंसानों की बस्ती में ढूँढ़ने का खयाल ही नहीं आया होगा न!"

सिद्धार्थ इस तंज पर झेंप-सा गया। और अपनी बात मजबूत करने की गरज से कहा- "मिलोगी तुम कब्रिस्तान में तो मुझे क्या सपने में आएगा कि दायें से जाना है? वैसे तुम करती क्या थी वहाँ?"

"पढ़ती थी।"

उसके इतना कहते ही सिद्धार्थ हँस-सा दिया। फिर खुद को संयत करते हुए बोला- "कब्रिस्तान में कौन-सी पढ़ाई होती है? पारासाइकोलॉजी में क्या भूत-पिशाच ही पढ़ाते हैं?"

"भूत-पिशाच भी पढ़ाते हैं। जैसे तुम्हारे सिलेबस होते हैं न लॉ के, ठीक वैसे ही, बहुत बड़ा सिलेबस है। जिसमें एक सब्जेक्ट ये भी है। और यही मेरी स्पेशलाइजेशन का सब्जेक्ट है। Undead कहते हैं जिन्हें। जो जिंदा नहीं हैं लेकिन मरे भी नहीं। उन्हीं पर मेरी थीसिस है। ऐसी जगहों पर ही मेरे काम की चीज मिलती थी।"

सिद्धार्थ को अब मोहिनी की बातों पर विश्वास आ रहा था। जिस कारण उसका लहजा अब तल्ख नहीं था। फिर भी उसके पास सवाल बाकी थे। वह अभी अगला सवाल करता तभी उसका फोन घनघना उठा। जाहिर था कि कनेक्टिविटी आ गई थी। उसने देखा कि फोन चेतन का था। प्यार के इस पुरसुकून माहौल में पहले तो उसने सोचा कि फोन काट दे, लेकिन फिर खयाल आया कि उसके फोन की कनेक्टिविटी थी और वह लापता था। इस कारण दोस्त परेशान हो रहे होंगे। यही सोचकर उसने फोन उठा लिया।

"कहाँ है भाई? ठीक तो है ना? तेरा फोन नहीं लग रहा था।" चेतन की परेशानी भरी आवाज आई।

"ठीक हूँ।" सिद्धार्थ ने मोहिनी की ओर देखते हुए कहा।

"सच बोल रहा है? रुद्र को पुलिस स्टेशन भेजा था मैंने।"

"बुला ले साले! जिंदा हूँ मैं।" सिद्धार्थ ने हँसते हुए कहा।

"जल्दी आ भाई!"

"आता हूँ।" सिद्धार्थ ने फोन रख दिया और फिर मोहिनी के बालों में उँगलियाँ फिराता हुआ बोला- "और वो उस रोज रूपनारायण नदी के पार!"

"एक औघड़ से मिलना था। प्रोजेक्ट के मुताबिक ही। वो अनजाने लोगों से नहीं मिलते। दो लोग साथ जाएँ तो उन्हें लगता है कि मीडिया वाले आए हैं। हिडेन कैमरा का डर उन्हें भी हो गया है। इसीलिए उस रोज तुम्हें साथ चलने से रोका।"

"और तुम्हें ऐसी जगहों पर मेरे आने का अंदेशा कैसे हो जाता था?" सिद्धार्थ ने सवाल किया।

"ये है न!" मोहिनी आईटीसी मशीन की तरफ इशारा करते मुस्कुराई और फिर बोली- "ये किसी भी तरह के फ्रिक्वेन्सी इंटर्वेंशन कैच कर लेती है।" सिद्धार्थ ने उसकी बातें सुन सिर पर हाथ रख लिया। दो मिनट तक यूँ ही रहने के बाद बोला-

"ऐसा लग रहा है जैसे कोई मर्डर प्लॉट हो जहाँ हर चीज सही जगह पर रखी जा रही है। तुम्हारे पास सभी बातों का जवाब है।"

"क्योंकि यही सच है। और सच उलझाऊ हो तो बस एक सिरा पकड़ना होता है और सारी डोर सुलझ जाती है।" मोहिनी ने मुस्कुराते हुए कहा।

"मैं ही क्यों?" सिद्धार्थ ने पूछा।

"बिकॉज आई लव यू। इट वाज लव एट फर्स्ट साइट।" मोहिनी ने सिद्धार्थ का नाक हिलाते हुए कहा।

"अच्छा ये बताओ..."

"अब बस! मुझे लगता है कि मुझे इंसान साबित करने के लिए इतना काफी है। तुम्हारे बहुत से सवाल अभी बाकी हैं। मगर इसका जवाब तुम्हें अकेले नहीं तुम्हारे दोस्तों को भी दूँगी।" मोहिनी ने कहा।

"उन्हें क्यों?"

"क्योंकि अब आगे हमें उनकी भी जरूरत पड़ेगी।"

"अब आगे क्या?" सिद्धार्थ ने उत्सुकता से पूछा।

"आज जो हुआ! वो नहीं पूछोगे? हॉस्टल में जो हो रहा है वो नहीं जानोगे?" मोहिनी हँसी।

"हाँ! वही तो पूछना था! ये बताओ..." सिद्धार्थ ने आधा ही कहा कि मोहिनी ने उसके होंठों पर अपने हाथ रख दिए और लरजती आवाज में कहा-

"किस मी! आई एम एक्जौस्टेड!" कहते हुए मोहिनी ने अपनी आँखें बंद कर ली।

सिद्धार्थ ने उसके होंठों के ऊपर जमी ओस की बूँदें देखी और ओस से अपनी प्यास बुझा ली। होंठों की कशमकश जब खत्म हुई तो सिद्धार्थ ने मोहिनी की आँखों में एक और प्यास देखी। तवील प्यास। वह अभी उसे शब्द दे ही पाता कि मोहिनी ने ही कह दिया- "अपने दोस्त को कह दो रूम खाली कर दे।"

मोहिनी के ऐसा कहते ही सिद्धार्थ की आँखें किसी शरारत से चमक उठी। उसने उम्मीद भरी नजरों से मोहिनी की तरफ देखा तो मोहिनी ने भी मुसुकरते हुए कहा- "मेरे हॉस्टल में इतनी रात जाने की परमिशन नहीं मिलेगी। इसीलिए बारह बजे ही लौट जाती थी। होटल ठीक नहीं रहेगा। इतनी रात गए कहाँ जाऊँ!" सिद्धार्थ ने उसकी बातों की शरारत पढ़ी और फौरन चेतन को फोन घूमा दिया-

"बेटे! कमरा खाली कर दे। और आज की रात रुद्र के रूम में शिफ्ट हो जा।"

"ओके पापा! मम्मी भी आ रही है क्या?" चेतन ने बच्चों-सी उत्सुकता से कहा जिस पर मोहिनी हँस दी। आवाज चेतन तक भी गई।

"बेटे! बाप से सवाल नहीं करते।" सिद्धार्थ ने कहा।

"वह दोस्त ही क्या जो दोस्त से सवाल करे।" चेतन ने बिना कुछ पूछे हाँ में जवाब दिया और सिद्धार्थ ने फोन रख दिया।

एक घंटे बाद और एक सौ रुपये हॉस्टल के दरबान को पकड़ाने के बाद दोनों सिद्धार्थ के कमरे में बेसुध सोए हुए थे।

***

# तीस साल बाद

कविगुरु भारती पुराना विश्वविद्यालय था और उतने ही पुराने थे उसके हॉस्टल। इसलिए हॉस्टल के दरवाजे भी पुराने बंगाली काश्तकारी का नमूना ही थे। दरवाजे दो पल्लों में खुलते थे और उनके बीच लगा तीन कड़ियों वाला लोहे का साँकल ही एकमात्र अवरोध था जिसके जरिये दरवाजा बंद किया जा सकता था। मगर वह साँकल भी नौसिखियों के लिए अवरोध था। रुद्र जैसे खलीफाओं के लिए तो वह एक मजाक ही था।

सिद्धार्थ और मोहिनी जब हॉस्टल के अपने कमरे में बेसुध सो रहे थे तो दरवाजे के पल्लों के बीच से एक टूथब्रश धीमे से घुसा। उसी टूथब्रश ने बिना कोई आवाज किए साँकल को उसके कब्जे पर से हटा दिया और फिर बहुत ही सावधानी से ब्रश के सहारे ही साँकल को यूँ नीचे कर दिया जैसे डंडे से सँभालकर साँप को दूर किया जाता है। दरवाजा खुल चुका था। किसी भी तरह की दरवाजे की चरमराहट को रोकते हुए रुद्र चुपचाप सिद्धार्थ के कमरे में घुस आया था।

उसे दरअसल सुबह-सुबह सिगरेट की तलब लगी थी और वह जानता था कि उठ जाने पर सिद्धार्थ जान दे देगा मगर सिगरेट नहीं देगा। यही सोचते हुए वह कमरे के भीतर दबे पाँव दाखिल हुआ।

मगर वह कमरे में घुसकर अभी सिगरेट तक नजर पहुँचा पाता कि उसकी नजर चेतन के बिस्तर पर पड़ी। उसने देखा कि एक संगमरमरी रंग का खूबसूरत जिस्म चादर में बेसुध लिपटा पड़ा है। उसके स्याह बालों की लंबी लटें नीचे जमीन की ओर बिखरकर लहरा रही हैं। और उसका आधा चेहरा बालों से ढँका था। सफेद कपड़ों में लिपटा इतना शफ्फाफ कि यदि वह जिस्म सोए होने की जगह खड़ा होता तो यूँ लगता जैसे कोई मूर्ति अनावरण के लिए रखी हो।

बहरहाल इस वक्त रुद्र को खूबसूरती से कोई मतलब नहीं था। पूरा हॉस्टल भूतिया खौफ के बीच रह रहा था और यहाँ रुद्र ने साक्षात भूत देख लिया था। वह उल्टे पाँव भागा तो यह भी नहीं देख पाया कि दूसरे बिस्तर पर उसका दोस्त सिद्धार्थ भी बेखौफ सोया है।

भागते-भागते वह अपने कमरे में पहुँचा और अपने बिस्तर पर पहुँचकर साँसों पर अख्तियार करने लगा। जब तक उसकी साँस स्थिर हुई तब तक चेतन भी ब्रश कर के कमरे में आ गया। रुद्र ने चेतन को देखते ही कहा-

"लाले! जरा देख तो मेरी नाक दिख रही है क्या?"

"क्या बकवास है?" चेतन ने बुरा-सा मुँह बनाते हुए कहा।

"देख तो सही! सिद्धार्थ तो गया शायद हम बच जाएँ!"

"मतलब?"

"मैंने सुना है कि मौत से तीन दिन पहले आदमी को अपनी नाक दिखनी बंद हो जाती है।"

"बकवास मत कर! और सिद्धार्थ के बारे में क्या कह रहा था?"

"था! सिद्धार्थ तो 'था' ही हो गया भाई! उसके जज्बात का सलाम हो गया!" रुद्र ने रुकते-रुकते पूरी बात की।

"मतलब?"

"मतलब ये साले कि भाई अपना फ्रैंकेस्टाइन हो गया है।"

"क्या बकवास कर रहा है सुबह-सुबह?"

"बकवास नहीं विश्वास कर! मैंने अपनी आँखों से देखा। उसके बगल में वैम्पेरिलिया सोई थी। साक्षात चुड़ैल भाई! ये लंबे बाल। आदमी उसके दो बार काटने पर फ्रैंकेस्टाइन हो जाता है। एक बार तो पहले बैठ के कटवा के आया था। अबकी दफा तो सो के कटवाया है।" रुद्र ने फुसफुसाते हुए यूँ कहा जैसे कोई राज की बात बता रहा हो।

"तू कमरे में घुस गया था?" चेतन ने भौचक होकर पूछा।

"हाँ तो और क्या। सिगरेट लाने गया था, प्रेशर के लिए!"

"क्या देखा?" चेतन ने मजा लेने वाले अंदाज में पूछा।

"क्या देखा माने! साक्षात चुड़ैल देखी है भाई। आधे बाल नीचे आधे बाल चेहरे पर।" रुद्र ने थूक निगलते हुए कहा।

"और, और क्या देखा?" चेतन के मतलब की बात अभी नहीं हुई थी।

"और देखना क्या था। जान लेके भागे।"

"अबे बोका सियार साले! पूछ रहे हैं कि दोनों एक ही बेड पर थे या अलग-अलग?"

"नहीं! हमें लग रहा है कि सिद्धार्थ का 'बोलो राम' रात में ही कर दी है। और अब दिन हो गया है तो आराम कर रही है। वैम्पेरीलिया दिन में शिकार नहीं करती।"

"भक साले!" चेतन मनमर्जी की न सुन पाने के कारण अनमना-सा हो गया और फिर उसी अनमने ढंग से बोला-

"कोई भूतनी, वैम्पायरनी नहीं है। उसकी गर्लफ्रेंड है। कल देर तक नाइट आउट किए हैं दोनों। लड़की के हॉस्टल में रात में एंट्री की परमिशन नहीं है। इसलिए यहाँ आ गई।"

"ये लड़की है!" रुद्र भौंचक-सा खड़ा रहा।

"हाँ!" चेतन ने बालों में कंघी फिराते हुए कहा।

"ये वही है जिसके पीछे कब्रिस्तान-श्मशान का कुत्ता बना था भाई हमारा।" रुद्र को चेतन के जवाब से अब भी भरोसा नहीं हुआ था।

"हाँ भाई!" चेतन ने कंघी फेंककर बिस्किट का डिब्बा ढूँढ़ना शुरू किया।

"वही लड़की जिसके पीछे कल हम लेडीज दर्जी के हाथों इज्जत खुलवाए!"

"हाँ बे! वही! कल ही बात पक्की हुई है ऐसा लगता है।" बिस्किट का डिब्बा खोलते हुए कहा।

"कल ही बात पक्की हुई और आज कमरे में आ गई!" रुद्र को अलग ही समस्या थी।

"ये तुम्हारी समस्या है!" चेतन ने हॅसते हुए कहा।
"नहीं मेरी समस्या तो अलग है भाई!"
"वो भी बक दो!"
"बहुत सुंदर है लाले!" रुद्र ने दोनों हथेलियों को रगड़ते हुए कहा।
"कितनी?" चेतन ने फिर छेड़ते हुए पूछा।
"इतनी सुंदर लड़की से शादी हो जाए तो आदमी आठ दिन बिस्तर से न उतरे और दस दिन तो दरवाजा न खोले!" रुद्र ने आँखों से ही ख्वाब देखते हुए कहा। उसे सपनों में जाता देख चेतन को हँसी-सी आ गई। रुद्र अभी और कसीदे पढ़ने ही वाला था कि चेतन का फोन घनघना उठा। फोन सिद्धार्थ का ही था। चेतन ने रुद्र को सिद्धार्थ का नाम दिखाते हुए फोन उठा लिया।
"कहाँ हो?" सिद्धार्थ ने सीधा ही पूछा।
"स्टोर रूम में पापा! बेड रूम से तो आपने भगा दिया।" चेतन ने सिद्धार्थ को छेड़ते हुए कहा।
"दोनों आ जाओ! जल्दी!"
"मम्मी तैयार हो गईं क्या पापा?" चेतन ने सिद्धार्थ की खिंचाई की।
"आ जाओ, आ जाओ... शी इज वेटिंग।" सिद्धार्थ ने अपनी गालियों पर काबू रखकर कहा। फोन रखते ही दोनों सिद्धार्थ के कमरे की ओर चल दिए।
सिद्धार्थ के कमरे का माहौल दस मिनट में ही पूरी तरह बदला हुआ था। ऐसा लगता था कि यह उनके हॉस्टल का कमरा नहीं बल्कि घर का कमरा हो। चादर की सिलवटें नदारद थीं। कंबल तह कर रखे जा चुके थे, तकिया भी करीने से अपनी जगह पकड़ चुका था। किस्सा-कोताह यह था कि साबित था कि कमरे में कोई लड़की ही है।
कमरे में घुसते ही चेतन ने देखा कि जो भी रुद्र ने कहा था वो छटाँक भर भी गलत नहीं था। सिद्धार्थ के श्मशान के चक्कर लगाने रात-रात भर गायब रहने में अब उसे कोई कमी, कोई दोष नहीं दिखा। मोहिनी ने दोनों को ही एक खामोश मुस्कान दी और उठकर खड़ी हो गई।
सिद्धार्थ औपचारिक परिचय दे ही रहा था कि मोहिनी मुस्कुराती हुई बीच में ही बोल पड़ी- "तो तुम में से किसे मैं भूत लगती हूँ?"
"इसे!" सिद्धार्थ और चेतन दोनों ने रुद्र की ओर उँगली दिखाई। मोहिनी हँसी और फिर कहा- "आओ। छू के देख लो।" रुद्र झेंप गया मगर बोलने से बाज नहीं आया। उसने फौरन सिद्धार्थ की ओर देखते हुए मोहिनी से कहा-
"नहीं-नहीं। छूना-छुआना आप इससे ही करें। ये ज्यादा अच्छा छूता है। वैसे भी ऊँट का मुँह ऊँट ही चूमता है।" रुद्र ने कहा। रुद्र के इस बेतुके मुहावरे पर मोहिनी फिर हँस दी और फिर थोड़ी देर में संजीदा होते हुए बोली-
"दरअसल तुम लोगों की गलती नहीं है। हमारी पढ़ाई, लिखाई, किताबें, तजुर्बे, हाव-भाव ऐसे हो ही जाते हैं है कि हम अजीब से लगें।" मोहिनी ने कहा और देखा

कि तीनों को शायद कुछ समझ नहीं आया। उसने बात समझते हुए कहा-

"ओके! टू कट इट शॉर्ट। मैं पारासाइकोलॉजी की स्टूडेंट हूँ। पारा नॉर्मल इन्वेस्टिगेशन मेरा मेजर सब्जेक्ट है..."

"मतलब वो घोस्ट बस्टर टाइप?" रुद्र ने आँखें फाड़कर देखते हुए कहा।

"हाँ। कुछ-कुछ वैसा ही। फाइनल ईयर है। इसके साथ पी.आई.ए.* की इंटर्नशिप कर रही हूँ। बाद में या तो उन्हें ही जॉइन करूँ या इंडिपेंडेंट कुछ करूँ, अभी सोचा नहीं।" मोहिनी ने कहा और तीनों की ओर देखा। तीनों स्तब्ध होकर उसे सुने जा रहे थे। उसने फिर बोलना जारी रखा-

"वो लोग जो मरकर भी यहीं हैं। आस-पास हैं, मैं उनसे बातें कर सकती हूँ। हाँ, उन्हें हमारी भाषा में अनडेड कहते हैं और मैं उनसे बातें कर सकती हूँ। जो दिखना चाहें उन्हें देख सकती हूँ। जो नहीं दिखना चाहें उनसे इल्तिजा करती हूँ कि दिख जाएँ। और यकीन करो वो हमसे ज्यादा प्यारे हैं। जिद नहीं करते।"

"तुम कोई और काम क्यों नहीं कर लेती? इतनी खूबसूरत लड़की भूत-पिशाच की बातें करे, अच्छा नहीं लगता।" रुद्र की इस मासूम-सी बात पर मोहिनी मुस्कुरा भर दी।

"सारी बातें समझ आईं। मगर तुम यहाँ कैसे? मतलब सिद्धार्थ के साथ या फिर उसके आस-पास!" चेतन ने पूछा।

"ट्रेन में इत्तेफाक से हम मिले थे। एकाध और इत्तेफाक हुए। बाद में मालूम चला कि नैना जोगिन तुम्हारे हॉस्टल में हो सकती है। तो मैं इत्तिफाक बनाती गई।"

"तुम भी नैना जोगिन के बारे में जानती हो?" रुद्र ने कहा।

"हाँ! वो मेरी सब्जेक्ट है। उसी की तलाश में स्टेशनों, वीरानों में खाक छानती थी।" मोहिनी ने मुख्तसर-सा जवाब दिया।

"मतलब कोई चुड़ैल सच में है?" चेतन ने पूछा।

"चुड़ैल नहीं, बंशी!" मोहिनी ने फिर कोई फलसफाना बात की।

"बंशी मतलब?" चेतन चौंका।

"अबे बंशी नहीं जानता! जिसको मुँह में लेते हैं, आवाज निकालती है।" रुद्र ने झोंक में कहा। जिस पर बाकी दोनों दोस्त झेंप गए। साथ में लड़की का अंदाजा होने पर रुद्र भी झेंप गया। मगर मोहिनी बेअसर रही और उसी मुस्कान के साथ बोली-

"बंशी इज अ टाइप ऑफ अनडेड। भटकती रूह! जैसे तुम्हारे पढ़ने के अलग सब्जेक्ट होते हैं ना, ठीक वैसे ही। इसे ऐसे समझो। जैसे इधर की दुनिया में अलग-अलग जातियाँ हैं उसी तरह भटकती रूहों में भी उम्र, लक्षण, मृत्यु का कारण और सबसे महत्त्वपूर्ण अपूर्ण इच्छाओं के आधार पर अलग-अलग दर्जे होते हैं। घोस्ट, घौल, गोलेम, जॉम्बीज, वैम्पायर्स, पोल्टुगाइस्ट, जिन्न, चुड़ैल, जिस तरह से हैं उसी तरह बंशी है। उसे कोई नहीं देख सकता। बंशी जिसे चाहती है, उसे ही दिखती है। बंशियाँ बाजदफा धोखा खाई रूहें होती हैं। जिन रूहों में बदला लेने की उत्कंठा सबसे ज्यादा होती है वह बंशी होती हैं। नैना जोगिन बंशी है।"

"और नैना जोगिन को किससे बदला लेना है?" सिद्धार्थ ने पूछा।

"असगर अली से।" मोहिनी ने आँखें सिद्धार्थ पर टिकाते हुए बताया।

"ले! अब उस अल्लाह के बंदे ने क्या कर दिया है?" रुद्र ने कहा।

"अब नहीं। तीस साल पहले..." कहते हुए मोहिनी थोड़ी रुकी। उसके गले में नमी आई और उसे वापस गले में खींचते हुए ही उसने कहा- "बात थोड़ी लंबी है। मुख्तसर ही बताऊँगी। और इसलिए बताऊँगी कि इसके बाद मुझे तुम लोगों की जरूरत पड़ेगी। सुनो-

ठीक तीस बरस पहले असगर अली इसी यूनिवर्सिटी में लॉ के ही स्टूडेंट थे। उनके अब्बा इसी यूनिवर्सिटी में वाइस चांसलर के क्लर्क थे। मगर चाहते थे कि बेटा प्रोफेसर बने। असगर अली पढ़ने में अच्छे थे। मगर उनसे भी अच्छी थी नैना। नैना जिसे उसकी माँ ने अपने पति के विरुद्ध जाकर पढ़ने भेजा था। पढ़ाई में अच्छा कर रही थी तो पिता भी खुश थे।

और फिर अनहोनी हुई। लाइब्रेरी में तब किताबें कम हुआ करती थीं। एक ही किताब से नोट्स तैयार करते-करते असगर अली और नैना एक-दूसरे के करीब आते चले गए। इतने करीब कि मजहब आड़े आने लगा। तब जमाना यूँ था कि लड़कियाँ कितनी भी मेधावी हों, स्थायित्व घर बसाने में ही ढूँढ़ती-समझती थी। और प्रेम हो तो फिर दूसरा कुछ सूझता ही नहीं। उम्र भी शादी की हो ही चली थी। सो नैना के घर में उसकी शादी की बात चलने लगी।

असगर अली प्रेम में थे मगर दब्बू भी थे। घर पर पिता ने जो कह दिया, मान गए, क्लास या लाइब्रेरी में नैना ने जो कह दिया, सुन लिया। अपने अब्बा से यह बात कहने की हिम्मत असगर अली कभी नहीं बटोर पाए।

और फिर एक दिन तय यह हुआ कि नैना और असगर अली भागकर बर्धवान कोर्ट में किसी सीनियर वकील दोस्त की मदद से विवाह कर लेंगे। नादान लड़कियाँ अपने हिस्से के गहने पर अपना अधिकार समझती हैं, सो बुरे दिनों का सोचकर नैना घर से गहने उठाकर निकल आई, उस प्रेम की खातिर जो घर से निकलने में ही तीन दफा सोच चुका था। अंततः असगर अली के पिता ने बताया कि लॉ फैकल्टी के डीन ने कहा है कि अगर उनकी बेटी से असगर का निकाह हो जाए तो वह वाइस चांसलर साहब से कहकर असगर की नौकरी इसी यूनिवर्सिटी में पक्की करा देंगे। बस निकाह की हामी अभी देनी होगी और वह हामी असगर अली के पिताजी दे चुके हैं।

असगर अली ने नौकरी और प्रेम को दिमाग के तराजू पर तौला और ब्रीफकेस से कपड़े निकाल दिए। गुसल ली और सो गए।

स्टेशन पर असगर अली का इंतजार करती नैना कहीं की नहीं रही। दस बजे की ट्रेन थी। मगर उसने तीन बजे तक इंतजार किया। जब इंतजार असहनीय हो गया तो गहने पहने, माँग भरी, दुल्हन बनी और ट्रेन की पटरियों पर लेट गई। ठीक सवा तीन बजे कोई ट्रेन आई और नैना के जिस्म का वजूद खत्म कर चली गई।"

"किसी ने ढूँढ़ने की कोशिश भी नहीं की उसे?" स्तब्ध माहौल में सिद्धार्थ की ही

आवाज गूँजी।

"यही तो दुख है उसका। जिस्म का कुछ बचा होता तो लोग कोशिश भी करते। यूँ भी सुबह लोगों को उसके गहनों में ज्यादा दिलचस्पी होगी। वक्त भी ऐसा था और माँ-बाप भी ऐसे रहे होंगे कि घर से भागी बेटी को वैसे ही मरा हुआ मानकर श्राद्ध कर दिया होगा।"

"मगर वो और लड़कों को क्यों परेशान कर रही है?" रुद्र ने पूछा।

"बताया ना कि वो बंशी है। बंशियों की अपनी सीमाएँ होती हैं, और अपने तरीके। बंशी को अपने सब्जेक्ट तक पहुँचने से पहले कम-से-कम चार शरीर बदलने होते हैं। वह बाकियों को जान से नहीं मारती। बस अगला शरीर बदलने तक जितनी क्षति कर सकती है, करती है। और एक बात, बंशी खुद-ब-खुद किसी के शरीर पर नहीं आ सकती।"

"फिर?"

"वह आने से पहले अपनी छुई हुई कोई वस्तु आस-पास रखती है। विषय ने उसे छू लिया बस अगले ही पल वह उसके शरीर पर आ जाती है। जितने भी शरीर उसने बदले हैं उन सभी ने कुछ-न-कुछ ऐसा छुआ होगा जो नैना ने रखे होंगे। या नैना ने रखवाए होंगे। असगर अली ने भी कुछ ऐसा ही किया होगा।"

"अब?" सबने एक साथ पूछा।

"अब नैना की मुक्ति!" मोहिनी ने बिना रुके कहा।

"और उसके लिए क्या करना होगा?" सिद्धार्थ ने पूछा।

"असगर अली को बचाना होगा।" मोहिनी ने फिर बिना रुके ही कहा।

"मरने दो साले को! ऐसे बदकार आदमी को मर ही जाना चाहिए।" रुद्र ने गुस्से से कहा।

"ऐसा नहीं कहते! इंसान अपनी मजबूरियों का गुलाम होता है। और वैसे भी अब उनकी जिंदगी उनके बीवी-बच्चों से भी जुड़ी है। हमें उनकी मदद करनी ही चाहिए।" सिद्धार्थ ने कहा।

"और वैसे भी मुझे उसकी जिंदगी से ज्यादा मतलब नैना की मुक्ति में है। और वो तब तक नहीं होगी जब तक तुम लोग मेरा साथ नहीं दो।" मोहिनी ने साँस छोड़ते हुए कहा।

"तुम बताओ तो!" सिद्धार्थ ने मोहिनी को संबल देते हुए कहा।

"दरअसल बंशियों की मुक्ति का एक ही उपाय होता है। उस वक्त को रीक्रिएट करना और उस घटना को बदल देना।"

"यार हम कोई भगवान थोड़े न हैं कि घटना को बदल देंगे।" सिद्धार्थ ने कमर पर हाथ रखते हुए कहा।

"समझती हूँ कि हम भगवान नहीं हैं। इसीलिए उस सीन को रीक्रिएट करने की बात कर रही हूँ।"

"मगर ये होगा कैसे?"

"देखो! जिस जगह पर नैना ने खुदकुशी की थी, वह रेलवे ट्रैक बहुत बिजी रेलवे ट्रैक है। इसलिए रात भर गाड़ियाँ चलती रहती हैं। तीन से चार के उस एक वक्त में भी जिस वक्त नैना कटी होगी, ट्रेनें रोज ही चलती हैं, बिला नागा। चाहे एक्स्प्रेस ट्रेन हो या पैसेंजर या फिर कार्गो ट्रेन। ठीक!" मोहिनी ने समझाते हुए सवाल किया।

"बिलकुल ठीक।" सिद्धार्थ ने कहा।

"इसका मतलब ये हुआ कि नैना वहाँ अब भी रोज कटती है। इसीलिए किसी-किसी को रात के उस वक्त में कभी-कभी नैना की चीख सुनाई देती है।"

"हाँ हाँ!" सिद्धार्थ ने उत्साह में कहा। उसे याद आ गया कि उसने भी ट्रेन में चीखते हुए एक साया ठीक उसी वक्त के आस-पास देखा था। मगर वह कुछ सोचकर चुप रह गया। नैना ने बहरहाल कहना जारी रखा-

"इसलिए अगर किसी तरह एक रात उस समय ट्रेन का गुजरना रात के उस पहर के लिए रुक जाए तो नैना नहीं कटेगी। और यही वह वक्त होगा जब उसकी मुक्ति के लिए उपाय किए जा सकते हैं।"

"मगर वह मुक्त तो तब होगी जब वह असगर अली का जिस्म छोड़ेगी! और वह असगर अली का जिस्म छोड़ेगी क्यों?" सिद्धार्थ ने सवाल किया जिसकी हामी में चेतन ने कहा-

"हाँ इतनी मुश्किल से तो असगर अली का जिस्म मिला है।" रुद्र ने जिस अंदाज में यह बात कही उससे मोहिनी भी मुस्कुराकर रह गई। थोड़े वक्त बाद उसने अपनी मुस्कुराहट पर काबू कर लिया तो आगे कहा-

"बंशियाँ सन्नाटे में शोर करती हैं। मगर शोर के रेजोनेंस से ही डरती हैं।"

"इतना कुछ जानती हो, तुम भी अपने सब्जेक्ट की टॉपर रही हो क्या?" रुद्र ने बेबात की बात की। जिससे मोहिनी की बातों का तारतम्य टूटा। मगर उसने हँसते हुए हामी भरी। रुद्र को इसी की दरकार थी। उसने बात बढ़ाते हुए कहा- "फिर कहाँ इसके रेड लाइट के चक्कर में पड़ गई। हमसे मिलती हम भी टॉपर हैं।"

"काश कि तुम ही उस रोज कब्रिस्तान में आ गए होते। मगर तुम तो..." मोहिनी ने भी मुस्कुराते हुए ठिठोली की और फिर कहना जारी रखा-

"बंशी एक साथ आ रही रेजोनेंस से डरती है। इसलिए तुम लोगों को हॉस्टल के सभी दोस्तों को राजी करना होगा।"

"किस बात के लिए?"

"इस बात के लिए कि हॉस्टल में मौजूद सारे लड़के रात के ठीक तीन बजे एक साथ स्वर में चिल्लाएँगे। कुछ भी। मगर ऐसा कि रेजोनेंस एक ही निकले।"

"हॉस्टल के सारे लड़कों को राजी करना मुश्किल होगा।" चेतन ने कहा।

"हो जाएँगे!" सिद्धार्थ ने कहा- "वैसे भी इस चक्कर में सभी डरे हुए हैं। इसलिए करेंगे। न हुआ तो असगर अली के नाम पर करा लेंगे।"

"और उससे भी न हुआ तो क्रेश्चन पेपर के नाम पर जूनियर्स से तो करा ही लेंगे। टॉपर हैं भाई।" रुद्र ने वही राग अलापा।

“लेकिन सबसे मुश्किल काम अब भी बाकी है।” मोहिनी ने कहा।
“वो क्या?”
“ट्रेन कैसे रुकेगी?”
“वो मैं कर लूँगा!” सिद्धार्थ ने आश्वस्ति से कहा।
“यू श्योर?” मोहिनी आश्वस्त नहीं थी।
“हाँ कर लूँगा!”
“क्योंकि जब मैं बैठूँ तो मेरे मन में ये शंका नहीं होनी चाहिए कि ट्रेन आ सकती है। मुझे सारा ध्यान उसकी मुक्ति पर लगाना होगा।”
“डोंट वरी। करना कब है?” सिद्धार्थ ने पूछा।
“कल की रात! मुझे कुछ तैयारियाँ आज करनी होंगी और उससे ज्यादा देर नहीं कर सकते। क्योंकि नैना शायद असगर अली को भी समय न दे।”
“एक बात कहूँ!” अबकी फिर रुद्र ने बीच में टोका।
“हाँ कहो!” मोहिनी ने कहा।
“अपने पाँव दिखा ही दो। तसल्ली कर लूँ कि तुम इंसान ही हो।”
“तुम बहुत क्यूट हो, बातें भी प्यारी करते हो। कल तुम मेरे साथ रहोगे। मुझे जरूरत पड़ेगी।” कहते हुए मोहिनी मुस्कुरा उठी।
“देख ले सिद्धार्थ! लड़की अपनी ओर से कह रही है। रात में साथ रहने के लिए। कुछ ऊँच-नीच हो जाए तो फिर दोस्ती को इल्जाम मत देना।” रुद्र ने आदत के अनुसार मजाक किया जिस पर तीनों ही हँस पड़े।
“मुझे हॉस्टल छोड़ दो। कुछ जरूरी काम करने हैं।” मोहिनी ने कहा और उस रात की तैयारी के लिए बाहर निकली जो फैसले की रात होनी थी।

***

# फिर वही रात

अक्सर जो बातें दिन में नहीं कही जा सकतीं वो बातें रात का इंतजार करती हैं। अक्सर चेतन जिन पुरकशिश कामों पर रौशनी नहीं डालता वह रात के अँधेरे में पूरी होती हैं। आज ऐसी ही रात थी। कहते हैं कि जब भगवान को कुछ कहना होता है तो बिजलियाँ चमकती हैं और जब शैतान को कुछ बताना होता है तो तेज-तेज हवाएँ चलती हैं। आज लगता था दोनों ही जोर आजमाइश पर थे इसिलिए रात के दूसरे और तीसरे पहर के बीच का वह वक्त जिसे प्रेत बेला कहते हैं, में जोर की हवाओं के साथ-साथ बिजलियाँ भी कड़क जाती थीं। प्रेत बेला में जहाँ तर्कों का शासन नहीं चलता, ठीक उसी वक्त दो साये पटरी के आस-पास नजर आए थे।

उसमें से एक साया मोहिनी का था और दूसरा साया रुद्र का। सारे जरूरी सामान से भरा बैग मोहिनी के पास था। मोहिनी ने एक समतल जगह देखकर एयर बैग उतार दिया। रुद्र को यहाँ लाने से पहले ही वह उसके काम की जानकारी दे चुकी थी। एयर बैग में से सबसे पहले उसने ईएमएफ मीटर निकाला और उसे पटरियों से थोड़ी दूर पर रख दिया। मीटर ने अभी कोई कंपन नहीं दिखाया। इसका सीधा अर्थ था कि आस-पास किसी भी तरह की इलेक्ट्रो-मैग्नेटिक फील्ड नहीं बन रही थी। उसने एक कंपास रुद्र के हाथ में देकर उसे उसी पेड़ के नीचे बैठा दिया जहाँ उस रोज सिद्धार्थ बैठा था।

तत्पश्चात मोहिनी ने अपने बैग से एक पारदर्शी पोलिथीन में भरा सफेद उड़द का घोल निकाला और उससे एक बड़ा-सा चक्र रच दिया। उस चक्र में ही उसने दो छोटे-छोटे चौमुखी दीपक रख दिए। रुद्र यह सब देखकर हतप्रभ था और भयभीत भी। मगर उसके करने को कुछ था भी नहीं, सिवाय देखने के। जो कुछ करना था मोहिनी कर रही थी और बड़े करीने से कर रही थी। दीपक रखकर वह आस-पास कुछ ढूँढ़ने लगी। अचानक ही रुद्र ने देखा कि वह जिधर बढ़ी जा रही थी उधर ही झाड़ियों में से दो जोड़ी आँखें चमक रही हैं। रुद्र ने उस ओर देखा तो वह आँखें आगे बढ़ आईं। यह वही कुत्ता था जो उस रोज भी तीनों को दिखा था।

मोहिनी उस ओर बढ़ी और उसके माथे को सहलाते हुए कहा- "जा, आज तेरी भी मुक्ति!"

कैसा आश्चर्य!

कुत्ता जैसे इंसानी भाषा समझ गया और पीछे घूम झाड़ियों में ही गायब हो गया।

मोहिनी ने उसी झाड़ियों में से एक लंबा-सा डंडा तोड़ा और वापस गोले में लौट आई। उसने फिर डंडे के सिरे पर एक लाल कपड़ा बाँधकर उसे गोले के बीचों-बीच गाड़ दिया। और उसी घेरे में बैठ गई। उसने अपने दोनों पाँव आगे किए। दोनों पाँवों के अँगूठों को कच्चे लाल धागे से बाँधकर जोड़ दिया और फिर पाँव पीछे कर वज्रासन की स्थिति में बैठ गई। उसका काम अब शुरू होने को था।

मगर उसके काम से पहले दो और काम पूरे हो जाने थे। पहले काम के लिए

सिद्धार्थ और चेतन तीन घंटे पहले ही आ चुके थे।

सिद्धार्थ पटरियों पर सीधा चला जा रहा था। सिद्धार्थ के हाव-भाव देखकर चेतन यह तो समझ गया था कि कुछ अलग करने वाला है। लेकिन क्या! यह तो बस सिद्धार्थ जानता था या फिर वक्त। इसलिए आँखों से कुछ भाँपता हुआ वो भी पटरियों पर दबे पाँव आगे बढ़ता रहा था। अचानक कुछ दूर चलने के बाद सिद्धार्थ रुक गया। उसने नीचे झुककर कुछ देखा और अब आराम से बैठकर प्लायर्स से कुछ खोलने लगा।

"भाई तू क्या कर रहा है?" चेतन ने पूछा। हालाँकि सिद्धार्थ जो कर रहा था वह उसकी समझ में नहीं आ रहा था मगर यह जरूर दिख रहा था कि कुछ खतरनाक है। सिद्धार्थ ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया और अपने काम में लगा रहा।

"भाई तू कर क्या रहा है?" चेतन ने फिर पूछा।

"श्श्श्श! धीरे बोल! फिश प्लेट खोल रहा हूँ!" सिद्धार्थ ने फुसफुसाते हुए कहा।

"मतलब! तू पटरी उखाड़ रहा है?" चेतन ने देखते-जानते हुए भी पूछा।

"नहीं। बाल उखाड़ रहा हूँ! और ये भी साला नहीं उखड़ रहा। जा, जल्दी से बैग से बड़ा वाला रेंच लेके आ!" सिद्धार्थ ने प्लायर्स से जोर लगाते हुए भी धीमे से कहा।

"ये सब क्या है?" चेतन ने भी गुस्से से चिल्लाते हुए पूछा।

"जल्दी से निकालो रेंच। और चिल्लाओ नहीं।" सिद्धार्थ ने दाँत पीसते हुए कहा।

"साले पूरा प्लान कर के आए थे और बताए भी नहीं।" गुस्से की उस अवस्था में चेतन लगभग फुफकार रहा था।

"जैसे बताने पर तुम क्या कर लेते! चल अब जल्दी कर और रेंच लेकर आ।" कहते हुए सिद्धार्थ ने प्लायर्स से ही जोर लगाया तो पहला फिश प्लेट खुल गया। सिद्धार्थ ने फिर दूसरी तरफ की भी फिश प्लेट थोड़ी मशक्कत के बाद खोल दी।

"भाई, तू समझ भी रहा है कि क्या कर रहा है! गाड़ी पलट सकती है यार!" बिजलियों की चमक में ही सिद्धार्थ ने देखा कि यह कहते हुए चेतन के माथे पर पसीना उभर आया है। सिद्धार्थ ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा-

"सब्र कर। इतना बेगैरत नहीं हूँ कि भूत को बचाने के लिए इंसानों की बलि चढ़ा दूँ। देख आया हूँ! इस ट्रैक पर माल गाड़ी खड़ी है। उसके जाने के बाद ही कोई पैसेंजर या दूसरी गाड़ी आएगी।"

"तो! मालगाड़ी क्या भूत चलाते हैं? वह भी इंसान ही चलाते हैं मेरे भाई।" चेतन ने चिढ़ते हुए ही पूछा।

"बात समझ! उधर देख, वो बत्ती दिख रही है!" सिद्धार्थ ने सिग्नल की ओर इशारा करते हुए कहा।

"हाँ! लाल हुई पड़ी है।" चेतन ने इशारे की जानिब देखते हुए कहा।

"रेलवे का ट्रैक एंड सिग्नलिंग इतना इफेक्टिव है कि ऐसी किसी भी गड़बड़ी का पता फौरन लग जाता है।"

"मतलब कोई ट्रेन इस पर नहीं आएगी।"

"नहीं जब तक कि यह फिश प्लेट फिर से लगाकर ट्रैक चेक नहीं कर लिया जाता कोई गाड़ी नहीं गुजरेगी।"

"थैंक गॉड!" चेतन ने लंबी साँस खींचते हुए कहा और फिर अचानक ही बोल पड़ा-

"तो फिर फायदा क्या हुआ भाई! मोहिनी तो वहाँ हमारे भरोसे..."

"फायदा हुआ... फायदा हुआ कि अब ट्रेन गुजरने में देर होगी और हमें देरी से ही काम है। यह जगह नजदीकी स्टेशन से आधे घंटे की दूरी पर है। ट्रैक ठीक होते-होते भी डेढ़-दो घंटे लगेंगे। तब तक भोर हो जाएगी। मोहिनी का काम हो जाएगा।"

"फिर भी भाई! ये गलत काम है। इसको ऐसे छोड़कर तो नहीं जा सकते!"

"हम जा कहाँ रहे हैं!" सिद्धार्थ ने निश्चिंतता से कहा।

"मतलब?"

"मतलब ये कि स्टेशन मास्टर को खबर कर देंगे कि पटरी टूटी हुई है। और यहीं रहकर देखेंगे।" सिद्धार्थ ने फिर निश्चिंतता से कहा और चेतन की ओर देखा। चेतन के चेहरे पर अब भी परेशानी के भाव थे। सिद्धार्थ ने उसे भाँपते हुए जब स्टेशन मास्टर को फोन लगाकर सारी बात बता दी तब चेतन को थोड़ी राहत मिली। फोन रखने के बाद दोनों पटरी से हटकर साथ लगे झाड़ियों में सिगरेट जलाकर घड़ी बीतने का इंतजार करने लगे।

और ठीक इसी घड़ी। जब घड़ी ने रात के तीन बजाए। हॉस्टल के लड़के उस काली रात की बूँदा-बाँदी के बीच हॉस्टल के छत पर इस तरह जमा हो गए जैसे कोई प्रार्थना सभा हो। ऐसे खामोश जैसे लाशें कतार बाँधें खड़ी हों। और फिर सारी लाशें बोल पड़ीं। एक समवेत स्वर में सारे लड़के इस तरह चिल्लाए कि एक ही गूँज उत्पन्न हो। और इस शोर की गूँज से ऐसी आवाज निकली कि एकबारगी हॉस्टल की नींव तक हिल गई।

असगर अली का वार्डेन हाउस, हॉस्टल के साथ ही लगा हुआ था। असगर अली पर काबिज नैना ने जब यह गूँज सुनी तो उसकी बेचैनी बढ़ गई। वह कंधे पर असंतुलित हुई। असगर अली भी शोर से बेचैन हो उठे। बौखलाहट में उनके चेहरे पर विचित्र भंगिमाएँ बनीं। कंधे पर पड़ी नैना कसमसाई; मगर शोर की आवृत्ति इतनी गुंजायमान थी कि अब उसके लिए असहनीय हो गई। थोड़ी ही देर में असगर अली झटका खाते हुए जमीन पर गिर पड़े। और जब उन्हें हवास आया तो वह समझ भी नहीं पाए कि वह जमीन पर लेटे धूल क्यों चाट रहे थे। उनके सिर में यह भयंकर पीड़ा कैसी है। उन्हें लगा कि संभवतः यह पीड़ा लड़कों के शोर के कारण हो। उन्हें यह भी खयाल आया कि उनके रहते लड़के शोर मचा कैसे सकते हैं।

वह कमरे से बाहर निकले और छत की जानिब देखा। लड़के एक स्वर में अब भी चिल्ला ही रहे थे। मगर नीचे से आती असगर अली की टॉर्च की रौशनी को देखकर चुप हो गए। अगली कड़क आवाज असगर अली की ही आई-

"क्या हुआ? आप लोग यह हमजादों* की तरह क्यों चिल्ला रहे हैं? यह मादर-ए-इल्म** है, इसका भी खयाल नहीं आप लोगों को?"

अब तक जनाना हरकतें करते असगर अली को अचानक मर्दाना होते देख लड़के सहम गए। उन्होंने सोचा कि मारे गुस्से के असगर अली भी हॉस्टलर हो गए हैं और गालियाँ दे रहे हैं। बहरहाल उन्हें इस बात का सुकून था कि असगर अली ठीक हो गए हैं। उनका काम पूरा हो गया था। लड़के अपने-अपने कमरों में आकर सो गए।

लेकिन असली काम अब ही शुरू होने को था।

***

सबसे बुरा डर होता है उस अदेखे का डर जो दिखता तो नहीं पर महसूस होता हो। माहौल जिसके होने का एहसास कराता है। ऐसा कुछ गैरमामूली एहसास जो रीढ़ की हड्डियों तक में झुरझुरी पैदा कर दे। सबसे बुरा डर होता है उस अदेखे का डर जो महसूस हो रहा हो।

रुद्र ने अचानक ऐसा ही कुछ महसूस किया। ईएमएफ मीटर का अलार्म अचानक ही चीखने लगा। रुद्र ने घबराहट में अपने कंपास की ओर देखा। कंपास की सूइयाँ भी बेतरतीब घूम रही थीं। चेहरे पर भय लिए हुए रुद्र ने मोहिनी की ओर देखा। मोहिनी ने भी पुर-इसरार मुस्कुराहट के साथ रुद्र को देखा। माहौल में अजीब-सी ठंडक खिंच गई थी। इसका मतलब था...

इसका मतलब था कि नैना आ चुकी है और अपनी जगह तलाश रही है। मगर उस जगह अब मोहिनी और उसके ज्ञान का कब्जा है। रुद्र ने देखा कि मोहिनी की आँखें बंद हो चुकी हैं और उसका बुदबुदाना शुरू हो चुका है। रुद्र समझ गया कि वह मंत्रोच्चार की स्थिति है।

रुद्र ने यह देखा कि चौमुखी दीप की लपटें बिना हवा के भी बेतरह काँप रही हैं और रुद्र ने यह भी देखा कि ठीक उस जगह जहाँ नैना कटी थी, एक छोटा-सा हवा का बवंडर-सा उठ रहा था। मगर रुद्र यह सब देखकर उतना नहीं डरा जितना एक आवाज ने उसे दहला दिया।

ट्रेन की सीटी की आवाज!

तो क्या ट्रेन आ रही है!

तो क्या सिद्धार्थ और चेतन ट्रेन को...

हाँ! ट्रेन आ रही थी। हुआ यह था कि सिद्धार्थ ने पटरियों की दुरुस्तगी का जितना वक्त सोचा था, उससे काफी कम वक्त में वह ठीक कर दी गई। व्यवस्था बहाल हो गई और सिग्नल हरी कर दी गई।

सिद्धार्थ और चेतन ने जब इतनी जल्दी बहाली देखी तो उनके पाँव तले जमीन खिसक गई। चेतन ने फोन कर रुद्र को बताना चाहा, मगर सिद्धार्थ ने उसे ऐसा करने से रोक दिया। इसके दो कारण थे। पहला यह कि सिद्धार्थ जानता था कि उस जगह पर ऐसे वक्त में मोबाइल की फ्रीक्वेंसी नहीं होती और दूसरा कारण यह कि वह अब भी कुछ सोच रहा था और सोचने के क्रम में ही उसने नजर इधर-उधर दौड़ानी शुरू कर दी। उसने झाड़ियों से ही ट्रैक के आगे की ओर देखना शुरू किया। उसने देखा कि आने वाली मालगाड़ी गुजरते वक्त एक परित्यक्त और पुराने रेलवे के जर्जर

पुल के नीचे से होकर ही गुजरेगी। उसका चेहरा कुछ सोचकर चमक उठा और उसकी आँखें तेजी से कुछ ढूँढ़ने लगीं। किस्मत शायद आज उसके साथ थी। उसे फौरन ही केले की लंबी पत्तियाँ दिखीं, जो संभवतः सब्जी या फल वाले लोकल ट्रेन से नीचे फेंके गए होंगे। उसने चेतन को इशारा किया और दोनों वहाँ से निकलकर चुपचाप आगे को आ गए। चलते-चलते ही सिद्धार्थ ने तीन चार बड़ी-बड़ी केले की पत्तियाँ बटोरीं और चल दिया। चेतन उसे हतप्रभ ऐसा करते देखता रहा। उसने दो एक दफा पूछने की कोशिश की मगर सिद्धार्थ ने उसे इशारे से चुप करा दिया।

पुल जर्जर था, मगर उसकी पुरानी सीढ़ियों से होकर उस पर चढ़ा जा सकता था। फिर भी सिद्धार्थ को शंका थी कि कहीं ऐसा न हो कि सीढ़ी या फिर पुल ही दो आदमियों का बोझ न उठा पाए। इसलिए उसने चेतन को नीचे ही छोड़ा और खुद केले की पत्तियाँ लेकर पुल पर चढ़ गया। अब ट्रेन के आने की इंतजारी थी और इंतजारी थी एक आखिरी कोशिश की।

ट्रेन ने सीटी दी।

ट्रेन ने सीटी दी और बस यही एक पल था जब मोहिनी का ध्यान भंग हुआ। और ध्यान भंग होते ही उसने वो नजारा देखा जिससे उसका जिस्म सिहर उठा। उसने देखा कि आग्नेय नेत्रों से उसे घूरती नैना चारों पैरों से चलती हुई उसकी ओर बढ़ी चली आ रही है। रुद्र कुछ देख नहीं पा रहा था। उसने बस अचानक ही चौमुखी दीप के दूर छिटक जाने की आवाज सुनी। उसे लगा जैसे किसी ने हाथ से मारकर दीपक को दूर फेंक दिया है। मगर उसका ध्यान अब मोहिनी और दीपक की तरफ था भी नहीं।

उसने देखा कि ट्रेन की पीली रौशनी की चमक आने लगी है। और उसी पीली रौशनी की चमक में उसने देखा कि वह किसी पुल जैसी आकृति के नीचे से आने को है। वही पुल जिस पर सिद्धार्थ ट्रेन के आने का इंतजार कर रहा था।

जैसे ही ट्रेन पुल के पास पहुँची, सिद्धार्थ ने केले के पत्ते दोनों हाथों में क्षैतिज लिए और उसे नीचे बिजली के समानांतर तारों के ऊपर डाला। पहला पत्ता नीचे गिर गया। सिद्धार्थ को खीझ हुई। मगर उसके पास अब खीझने का भी समय नहीं था। उसने जल्द दूसरा पत्ता उठाया और उसे फिर ठीक उसी तरह तारों पर गिरा दिया। अबकी दफा पत्ता समानांतर तारों पर अटक गया। और उसके साथ ही बिजली गुल हो गई। सर्किट में व्यवधान पड़ा और ट्रेन जहाँ थी, वहीं खड़ी हो गई।

ट्रेन खड़ी हो गई मगर वक्त भागता रहा। नैना मोहिनी के गर्दन पर अपना कसाव बढ़ाती रही। रुई के खिलौने के हाथों की तरह मोहिनी के हाथ बेजान से झूलने लगे थे। ऐसा लगा कि मोहिनी अब किसी भी वक्त जमीन पर बेजान-सी गिर पड़ेगी कि ठीक उसी वक्त वह पल गुजर गया जिस पल नैना की जान गई थी। ट्रेन आज नहीं गुजरी। मोहिनी ने महसूस किया कि उसकी गर्दन पर अचानक ही उसके हाथ का जोर कम हुआ और उसके हाथ मोहिनी के गर्दन पर से हट गए।

एक वैसी ही हौलनाक चीख की आवाज आई और मोहिनी ने किसी हवा को अपने

कानों के पास से गुजरकर अनंत में खो जाते हुए महसूस किया।

नैना जा चुकी थी। मोहिनी निढाल-सी गिर चुकी थी। वह बेजान थी मगर बेहोश नहीं।

भोर होने को थी। दीया बुझ गया था। थोड़ी ही देर में मोहिनी हिम्मत कर उठ बैठी। लंबी साँस ली। बिखर आए बालों को पीछे की ओर बाँधा और डरे हुए रुद्र को देखकर मुस्कुराते हुए अपने पाँवों के बाँध खोल दिए।

सिद्धार्थ और चेतन जब तक वहाँ पहुँचे तब तक ट्रेन जा चुकी थी। मोहिनी और रुद्र उसी पेड़ के नीचे बैठे चेतन और सिद्धार्थ के आने का इंतजार कर रहे थे। दोनों के आते ही मोहिनी ने एक दिलकश मुस्कान बिखेरी। सिद्धार्थ दौड़कर उसके गले लग गया।

सुबह की लालिमा बिखर गई थी। भारी वाहनों की चिल्ल-पों कानों तक पहुँचने लगी थी। सिद्धार्थ और मोहिनी उँगलियों में उँगलियाँ फँसाए पक्की सड़क पर आ गए थे और अगर दोस्त उन्हें याद न दिलाते तो उनका इरादा यूँ पैदल ही चलते जाने का था। दीन-दुनिया से महरूम एक-दूसरे के हाथ में हाथ डाले हुए।

***

# वो फिर आएगी

तीन महीने बाद।

लाइब्रेरी में मोहिनी को पढ़ता छोड़ सिद्धार्थ बाहर निकल आया। एक बात मगर उसे पिछले तीन महीने से खाए जा रही थी। एक ऐसी बात जो उसने मोहिनी से भी छुपाई थी। वह यह कि वह बंशी उसे भी दिखती थी। उसे लगा था कि पहले ही वह मोहिनी को ही भूत समझकर उसके आगे बेवकूफ बन चुका है। अब अगर वह यह बात भी बता देगा कि उसे भी बंशी दिखती थी तो मोहिनी उसे पक्का पागल ही समझेगी। इसीलिए उसने यह बात मोहिनी को नहीं बताई थी और अब क्योंकि मसला सुलझ गया था इसलिए उसने अपने दोस्तों को भी मोहिनी से इसका जिक्र करने से मना कर दिया था। आज जब लाइब्रेरी में पढ़ते हुए मोहिनी ने अपने थीसिस के विषय में बंशी का फिर जिक्र किया तो सिद्धार्थ को फिर एक नामालूम-सा डर घेर गया। यही कारण था कि वह मोहिनी को लाइब्रेरी में पढ़ता छोड़कर निकल आया था। लेकिन वह सवाल उसके जेहन में अटक-सा गया था। इसी उधेड़बुन में वह लाइब्रेरी की लिफ्ट में आ गया था। लाइब्रेरी की पुरानी लिफ्ट के लोहे वाले गेट को खोलने के क्रम में उसने महसूस किया लिफ्ट के सीखचों को काले रंग से आजकल में ही पेंट किया गया है। उसे पेंट की गंध से एलर्जी थी, इसलिए उसने अपनी साँस रोक ली।। लिफ्ट बंद कर लेने के बाद उसने एक अजीब बात देखी। उसने देखा कि लिफ्ट के सीखचों में काले बालों का एक गुच्छा चिपका हुआ है। उँगलियों में लपेटकर फेंक दिया हुआ लंबे बालों का गुच्छा। उसे यह बात हैरतअंगेज नहीं लगी। उसे लगा कि यह कहीं से उड़ता हुआ आकर गीली पेंट से चिपक गया होगा। उसने बालों का गुच्छा नोचकर जमीन पर फेंक दिया और लिफ्ट के नीचे जाने का इंतजार करने लगा। बालों के गुच्छे के जमीन पर गिरते ही एक अजीब बात फिर हुई। बंद लिफ्ट जो अब तक पेंट की दुर्गंध से भरी हुई थी अचानक ही ब्लैक ऑर्किड की मादक खुशबू से शराबोर हो गई। ब्लैक ऑर्किड! उसे थोड़ा अजीब लगा।

वह आगे सोच ही पाता कि उसका फोन घनघना उठा। उसने देखा कि फोन मोहिनी का ही था। उसने फोन उठा लिया। अगली आवाज मोहिनी की ही आई-

"अच्छा देखो! आज तुम्हें एक बात बताना भूल गई थी। बंशियों के बारे में और पढ़ते हुए मालूम हुआ कि वह उन्हें ही दिखती हैं जिन पर उन्हें आना होता है। और उनमें खुद आ जाने की शक्ति नहीं होती। इसलिए वह अपनी छुई हुई कोई चीज आस-पास छोड़ जाती हैं। जैसा तुमने बताया था। यशरंजन को सिंदूर, रवि को कागज, राजीव को बिछिया और इसी तरह असगर सर के लिए भी कुछ छोड़ गई होगी। बंशियों की सीरत बाकी रूहों से..." मोहिनी अभी कुछ कह ही रही थी कि लिफ्ट में कनेक्टिविटी चली गई। सिद्धार्थ को अचानक ही नीची उतरती लिफ्ट में सिहरन-सी महसूस हुई। उसे लगा कि उसके ठीक पीछे कोई है। उसे यह भी लगा कि किसी की साँसों की सर्द हवा उसके गर्दन पर फैल रही है। पीछे देखने की

उसकी हिम्मत नहीं हुई। वह नीचे गिरे बालों के गुच्छे को ही देखता रहा। लिफ्ट नीचे आती रही।

सिद्धार्थ जब लिफ्ट से निकला तो अकेला नहीं था।

*नींद न आने की बीमारी

*स्प्लैटर्स- डरावनी, हिंसक, **वॉइयर- छुपकर देखना

*खवातीन- औरतें

*पारानॉर्मल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी